देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Mukeria Seminar
Volume 2021

Impact Factor
3.811

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 13 | ISSUE-5(2) | (MAY- 2021) | ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :

डॉ. कर्मजीत कौर

प्राचार्या, दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक्क अल्लाह बख्श, मुकेरियां (पंजाब)

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. रीना कुमारी

विभागाध्यक्ष हिन्दी,

विशेषांक उप–सम्पादक :

प्रो. शिवानी नारद

अध्यक्ष, संगीत विभाग

विशेषांक उप–सम्पादक :

डॉ. आकांक्षा वर्मा

अध्यक्ष, ललित कला विभाग

दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक्क अल्लाह बख्श, मुकेरियां (पंजाब)

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल–एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)

विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी–127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. कुसुम कुंज मालाकार
हिन्दी विभाग,कॉटन विश्वविद्यालय
गुवाहाटी, असम

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा 'शंकी'
पूर्व जि.शि.अधिकारी, च. दादरी

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. राजपाल
राजकीय पी.जी. महाविद्यालय
हिसार, हरियाणा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पार्वती गोंसाई
सरदार पटेल वि.वि.,
गुजरात।

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र
बिहार।

डॉ. विनोद कुमार शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्होत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध–पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव–10, कृतिदेव–21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :– उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र; टेलीफोन, मोबाईल नं., ई–मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

☐ शोध पत्र 2000–2500 शब्दों (4–6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

☐ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

☐ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

☐ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/– रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/– रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	**पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)**
खाता धारक का नाम	:	**गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी**
बैंक खाता संख्या	:	**1182000109078119**
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

क्रम मंजूषा नारी त्रिवेणी विशेषांक-मई 2021

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	शुभकामना संदेश	डॉ. कर्मजीत कौर	9-10
2.	सम्पादकीय	डॉ. रीना कुमारी	11-11
3.	उप-सम्पादक की कलम से	प्रो. शिवानी नारद	12-12
4.	उप-सम्पादक की कलम से	डॉ. आकांक्षा वर्मा	13-13
5.	ਵਰਤਮਾਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਦਾ ਸਥਾਨ	ਡਾ. ਕਰਮਜੀਤ ਕੌਰ	14-21
6.	आधुनिक युग में महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार का प्रयास	बाल किशोर राम भगत डॉ. अर्चना सिंह	22-26
7.	बौद्ध दर्शन एवं महिलाएँ	डॉ. सन्जू चलाना बजाज	27-31
8.	गिरीश पंकज के व्यंग्यों में चित्रित नारी-जीवन का संघर्ष एवं समस्याएँ	डॉ. आर.के. पाण्डेय, चुन्नीलाल	32-37
9.	कुमाऊंनी लोकगीत और सामाजिक परम्परा	महिपाल सिंह कुटियाल	38-42
10.	भारतीय क्लासिकल संगीत में महिलाओं का योगदान	डॉ. तमसा	43-47
11.	वर्तमान परिदृश्य में महिलाओं की स्थिति	मुकेश चौहान	48-52
12.	मनुस्मृति और नारी जाति	डॉ. विवेक आर्य	53-54
13.	भारतीय रंगमंच में बहुआयामी भूमिका निभाती स्त्री रंगकर्मियों का रंग विमर्श	शबनम	55-59
14.	भारतीय नारी का बदलता स्वरूप समकालीन हिन्दी कहानियों में	डॉ. सूसन अलक्स	60-68
15.	ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ : ਔਰਤ ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ	ਡਾ. ਮਨਿੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ	69-73
16.	ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਤ੍ਰਾਸਦੀ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ -'ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ'	ਡਾ.ਕੁਲਵੰਤ ਸਿੰਘ ਰਾਣਾ	74-78
17.	ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ	ਡਾ. ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ	79-83
18.	**Where do women stand today? An enquiry**	**Avijit Mandal**	**84-88**
19.	**Education and Women Empowerment**	**Iqbal Kaur**	**89-94**

20.	Research paper on Living beyond life : Decoding Amrita Sher-gill through her Art practice	Rippendeep Kaur	95-106
21.	Status of Women in India : A Historical and Contemporary Perspective Portrayal of Women in Indian Art	Prabhjot Kaur	107-111
22.	Portrayal of Women in Indian Art	Prabhjot Kaur	112-116
23.	Mai Mussamat 'The Ladder of Success' of	Maharaja Ranjit Singh Ruchika	117-123
24.	Position of Women during Earliest Socio-Religious Reform Movements in Medievl Punjab	Dr. Sarita Rana	124-135
25.	Women Empowerment : Challenges and Opportunities	Supriya Jyoti Naryal	136-141
26.	सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्	डॉ. रीना कुमारी	142–148
27.	शास्त्रीय संगीत द्वारा चरित्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका	डॉ. गीतांजलि अरोड़ा	149–153
28.	मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में मीराबाई का योगदान	शाहबाज आलम	154–158
29.	धर्म की वास्तविक अवधारणा	डॉ. निशा चौहान	159–163
30.	साहित्य, समाज और हिन्दी सिनेमा	डॉ. नसरीन जान	164–167
31.	A General Study : New Media and Political Communication	Vikash Berwal	168-172
32.	A Critical Study on Freedom Struggle and Values of Journalism	Rohtash	173-179

शुभकामना संदेश

दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक्क अल्ला बख्श मुकेरियां नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त संस्था गुरु गोविन्द सिंह एजुकेशनल ट्रस्ट के अंतर्गत श्री रविंदर सिंह चक्क (एस. जी. पी. सी. समिति सदस्य, श्री अमृतसर) जी की सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली के अधीन चल रही प्रगतिशील संस्था है। मैं प्राचार्या डॉ. कर्मजीत कौर (प्राचार्या) यह बताते हुए हर्ष का अनुभव कर रही हूँ कि कॉलेज की आर्ट एण्ड कल्चर सोसायटी एवं गुगनराम एजुकेशनल एंड सोशल वैलफेयर सोसायटी भिवानी के संयुक्त तत्वावधान में नारी त्रिवेणी (संगीत, कला और साहित्य के संदर्भ में) विषय पर 24 मार्च 2021 को ''एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्टी'' का आयोजन किया गया जिसमें मुख्याध्यक्ष (चेयरमैन) श्री रविंदर सिंह चक्क संचालनकर्त्ता, डॉ. नरेश सिहाग, डॉ. रीना कुमारी (हिन्दी विभागाध्यक्ष), श्रीमती शिवानी नारद (संगीत विभागाध्यक्ष), डॉ. आकांक्षा वर्मा (फाइन आर्ट्स विभागाध्यक्ष) संलग्न रहे। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता डॉ. पंकज माला (एक्स चेयरपर्सन, एक्स डीन, डिज़ाईन एंड फाइन आर्ट्स संकाय की चेयरपर्सन, प्रो. संगीत विभाग पंजाब यूनिवर्सिटी) जी ने संस्कृति विषय को प्राचीन श्रचाओं के माध्यम से बड़े ही मनोहारी ढ़ंग से प्रस्तुत किया। उनके पश्चात् मुख्य वक्ता श्री राकेश शंकर भारती जी, यूक्रेन (इंडो यूरोपियन लिटरेरी डिस्कोर्स के संस्थापक और अनुवादक) ने आधुनिक जीवन के यथार्थ को लेकर नारी की स्थिति को बड़े ही सुंदर तरीके से विद्वतजनों के समक्ष प्रस्तुत किया। आर्ट एंड कल्चर सोसायटी के प्रयत्नों से और डॉ. नरेश सिहाग जी के सफल मार्गदर्शन द्वारा संगोष्ठी का सफल आयोजन संभव हो पाया।

संस्कृति प्रत्येक देश की कार्यवाहिका होती है। हमारी सोसायटी का प्रधान लक्ष्य संस्कृति के विभिन्न अंगों संगीत, कला, साहित्य को युवाओं में पुर्नजीवित करके इसका महत्व प्रतिपादित करते हुए श्रेष्ट युवा वर्ग का निर्माण करना है जो सर्व कला परिपूर्ण हो और युगदृष्टा बन सके।

सोसायटी अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक उत्सव रंगमंचीय उत्सव कवि दरबार, सम्मेलन, संगोष्टियां, मेले, वर्कशॉप आदि का आयोजन करके संस्कृति रक्षा हेतु प्रयासरत्त है।

मैं खुश हूँ कि कॉलेज सोसायटी एवं गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (भिवानी) के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक (शोध जर्नल) 'बोहल शोध मंजूषा (पीयर रिव्यूड) आई.एस.

एस.एन. नं. 2395:7115 इंपैक्ट फैक्टर 3.811 में 'नारी त्रिवेणी : संगीत, कला व साहित्य के संदर्भ में' विषय पर विशेष अंक प्रकाशित किया जा रहा है। जिन विद्वतजनों, शोधार्थियों, शिक्षार्थियों ने अपने बहुमूल्य शोध पत्र पत्रिका में छपने हेतु भेजे हैं, मैं उन सभी का हार्दिक अभिनन्दन करती हूँ और भविष्य में भी ऐसी गतिविधियों में संलग्न रहने की कामना करती हूँ। मैं डॉ. नरेश सिहाग जी का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूँ कि उनके सद्मार्गदर्शन से पत्रिका को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। सभी विद्वतजनों के प्रति कृतज्ञ।

डॉ. कर्मजीत कौर
प्राचार्या,
दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक्क अल्लाह बख्श,
मुकेरियां (पंजाब)

सम्पादकीय-

दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज (नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त) चेयरमैन श्री रविंदर सिंह चक्क (एस. जी. पी. सी. समिति सदस्य, श्री अमृतसर) एवं प्राचार्या डॉ. कर्मजीत कौर जी की कार्यप्रणाली अधीन चल रही कला, संगीत और साहित्य की त्रिवेणी है। कॉलेज की आर्ट एण्ड कल्चर सोसायटी एवं गुगनराम एजुकेशनल एंड सोशल वैलफेयर सोसायटी भिवानी के सहयोग से 24 मार्च 2021 को ''एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्टी'' का आयोजन प्राचार्या डॉ. कर्मजीत कौर, डॉ. नरेश सिहाग (कन्वीनर), डॉ. रीना कुमारी (हिन्दी विभागाध्यक्ष), श्रीमती शिवानी नारद (संगीत विभागाध्यक्ष), डॉ. आकांक्षा वर्मा (फाइन आर्ट्स विभागाध्यक्ष) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। जिसमें डॉ. पंकज माला (मुख्य वक्ता), डॉ. राकेश शंकर भारती, यूक्रेन (मुख्य वक्ता) ने नारी त्रिवेणी (कला, संगीत और साहित्य के संदर्भ में) विषय पर अपना व्याख्यान दिया एवं ज्ञान पिपासुओं की पिपासा को शांत किया एवं समृद्ध किया। सोसायटी का मुख्य लक्ष्य समाज में युवा वर्ग को विभिन्न कलाओं से अवगत करवाकर युगदृष्टा बनाना है।

मैं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रही हूँ कि डॉ. नरेश सिहाग जैसी विलक्षण प्रतिभा ने मुझे आगामी प्रकाशित हो रहे ''बोहल शोध मंजूषा'' पत्रिका में सम्पादकीय लिखने का सुअवसर प्रदान किया जिसके लिए मैं उनकी कृतज्ञ हूँ। प्रस्तुत शोध पत्रिका का अंक नारी त्रिवेणी (कला, संगीत और साहित्य के संदर्भ में) विद्वतजनों के ज्ञान का संचित कोष है जिसके लिए मैं सभी का आभार प्रकट करती हूँ। जिन्होंने ज्ञान के क्षीर सागर से अमूल्य रत्न अपने विचारों के रूप में इस पत्रिका के रूप में छपने हेतु दिए और हम पत्रिका का सफल मुद्रण एवं टंकन कर पाने में सफल हुए। भविष्य में आपके सहयोग के लिए प्रार्थी।

-डॉ. रीना कुमारी

विभागाध्यक्ष हिन्दी,

दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक्क अल्लाह बख्श,

मुकेरियां (पंजाब)

उप-सम्पादक की कलम से.....

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसाइटी एवं दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक अल्ला बख्श मुकेरियां के संयुक्त तत्वाधान से डॉ. नरेश सिहाग एवं डॉ. करमजीत कौर के सांनिध्य में सम्पन्न हुई एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन सेमिनार 'नारी त्रिवेणी (संगीत कला एवं साहित्य के परिपेक्ष में) में पढ़े गए शोध आलेखों का प्रकाशन शोध पत्रिका के इस विशेषांक को पाठक गणों के समक्ष प्रस्तुत करने जा रहे है। इस पत्रिका के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों की अभिव्यक्ति करने के लिए पूर्णता स्वतंत्र है आज मुझे यह भाग्यशाली अवसर प्राप्त हुआ है कि मैं इस प्रकाशित होने वाले अंक के लिए उप संपादकीय लिखूं जिसके लिए मैं डॉ. नरेश सिहाग जी का दिल से धन्यवाद करती हूं जिन्होंने मुझे इस कार्य के योग्य समझा।

कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में प्रकाशित होने वाले इस अंक में सभी विद्वतजन अपने विचारों का प्रस्तुतीकरण करने जा रहे हैं। कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में नारी का योगदान चाहे वह साहित्य क्षेत्र में हो संगीत एवं कला के क्षेत्र में हो, महिला के योगदान के विषय पर विचारों को प्रकाशित किया जा रहा है। अतः मैं दिल की गहराइयों से उन सभी विद्वतजनों को धन्यवाद करती हूं जिन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा हमारे इस अंक को प्रकाशित करने के लिए अपना योगदान दिया।

-प्रो. शिवानी नारद

अध्यक्ष, संगीत विभाग

दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक अल्ला बक्श, मुकेरियां

उप-सम्पादक की कलम से.....

गुगनराम एजुकेशनन एण्ड सोशल वेलफेयर सोसाइटी से डॉ. नरेश सिहाग तथा आर्ट एंड कल्चर सोसायटी दशमेश गर्ल्स कॉलेज अल्ला बख्श मुकेरिया से प्रिंसिपल डॉक्टर करमजीत कौर के संयुक्त तत्वाधान तथा मार्गदर्शन में एक दिवसीय अंर्तराष्ट्रीय ऑनलाइन सेमिनार नारी त्रिवेणी (संगीत, कला एवं साहित्य के परिप्रेक्ष्य में) का आयोजन किया गया। शोध पत्रिका का यह अंक सेमिनार नारी त्रिवेणी ऑनलाइन सेमिनार मैं आए शोध पत्रों पर आधारित है। पत्रिका के इस अंक में कला संगीत तथा साहित्य से जुड़े विभिन्न शोध पत्रों के माध्यम से सभी को संगीत कला तथा साहित्य में नारी की विलक्षण भूमिका तथा प्रतिभा से जुड़े नई परिप्रेक्ष्य पढ़ने को मिलेंगे। आज मैं अपने आपको अत्यंत भाग्यशाली महसूस करती हूं कि आर्ट एंड कल्चर सोसायटी दशमेश गर्ल्स कॉलेज मुकेरिया से जुड़ने तथा इस शोध पत्रिका इस अंक के लिए उप संपादकीय लिखने का अवसर प्राप्त हुआ

मैं आशा करती हूं कि शोध पत्रिका के इस विशेष अंक में प्रकाशित महत्वपूर्ण विचार सभी पाठक गणों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक होंगे। इस अंक में कला संगीत तथा साहित्य के क्षेत्र में नारी की भूमिका, नारी का योगदान, नारी के लिए विलक्षण परिस्थितियां, नारी के लिए चुनौतियां के विषय में प्राचीन काल से लेकर अभी तक बात की गई है तथा आज के इस महामारी के दौर में सभी कुछ ऑनलाइन होते हुए कैसे विद्वान जन नारी की भूमिका को दर्शाते हैं यह अत्यंत सराहनीय तथा ध्यान देने योग्य बात है। अतः अंत में मैं एक बार फिर से धन्यवाद करती हूं डॉ नरेश सिहाग एवं डॉक्टर करमजीत कौर जी का जिन्होंने मुझे यह अवसर प्रदान किया।

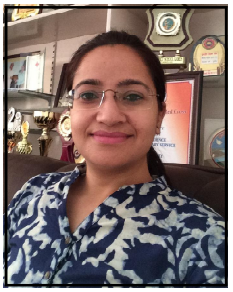

-डॉ. आकांक्षा वर्मा

अध्यक्ष, ललित कला विभाग

दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक्क अल्ला बख्श मुकेरियां

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 14-21
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਵਰਤਮਾਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਦਾ ਸਥਾਨ

ਡਾ. ਕਰਮਜੀਤ ਕੌਰ

ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਦਸ਼ਮੇਸ਼ ਗਲਰਜ਼ ਕਾਲਜ, ਚੱਕ ਅਲ੍ਹਾ ਬਖ਼ਸ਼ (ਮੁਕੇਰੀਆਂ), ਪੰਜਾਬ

ਵਿਚਾਰ ਅਧੀਨ ਵਿਸ਼ਾ ਬੜਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ। ਔਰਤ-ਮਰਦ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਬਾਰੇ ਸਦਾ ਹੀ ਸੰਵਾਦ ਰਚਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਆਪਣਾ ਬਣਦਾ ਸਥਾਨ ਲੈਣ ਲਈ ਔਰਤ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਯਤਨਸ਼ੀਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਮਾਜ ਦੇ ਕਾਨੂੰਨ/ਨਿਯਮ ਕਦੇ ਉਸ ਨੂੰ ਗੁਲਾਮੀ ਵੱਲ ਲਿਜਾਂਦੇ ਰਹੇ ਅਤੇ ਕਦੇ ਕੁੱਝ ਛੋਟਾਂ ਵੀ ਦਿੰਦੇ ਰਹੇ। ਸਮਾਜ-ਸੁਧਾਰਕਾਂ ਅਤੇ ਵਿਕਸਤ ਵਰਗਾਂ ਦੀ ਬਦੌਲਤ ਔਰਤ ਨੇ ਆਪਣੇ-ਆਪ ਨੂੰ ਸੰਗਠਿਤ ਕਰਕੇ ਮਰਦਾਂ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਪਣੀ ਹੋਂਦ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਪਰ ਨਾਕਾਫ਼ੀ ਰਹੀ। ਇਸ ਵਿਸ਼ੇ ਦੇ ਮਾਹਰ ਸੀਮਨ ਬੁਆਰ ਨੇ ਠੀਕ ਹੀ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ-

> ਔਰਤ ਨੇ ਕਦੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਸੰਗਠਿਤ ਕਰਕੇ ਮਰਦਾਂ ਦੇ ਰੂ-ਬ-ਰੂ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋਣ ਦਾ ਯਤਨ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ।[1]

ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਵਰਗਾਂ ਵਿੱਚ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਔਰਤ ਦਾ ਸਥਾਨ ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਬਣਨ ਵੱਲ ਵਧਿਆ ਹੈ, ਪਰੰਤੂ ਘੱਟ-ਪੜ੍ਹੇ, ਅਨਪੜ੍ਹ ਅਤੇ ਕਬੀਲਾਈ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਉਸ ਦੀ ਹੋਂਦ ਅਜੇ ਵੀ ਦੁਜੈਲੇ ਸਥਾਨ ਉੱਪਰ ਹੈ। ਕਾਨੂੰਨੀ ਸ਼ਿਕੰਜੇ ਤੋਂ ਭਾਂਵੇਂ ਉਹ ਮੁਕਤ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਸਮਾਜਿਕ ਬੰਧਨ ਅਜੇ ਵੀ ਉਸ ਦੇ ਗਲੇ ਦਾ ਫੰਦਾ ਹਨ। ਨਰ ਨਾਲੋਂ ਸ਼ਰੀਰਕ ਤੌਰ ਉੱਤੇ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਅਤੇ ਪਰੰਪਰਾਵਾਂ ਦੀਆਂ ਬੇੜੀਆਂ ਕਰਕੇ ਉਸ ਨੂੰ ਸੰਪੂਰਨ ਆਜ਼ਾਦੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲੀ। ਮੀਡੀਆ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਅਗਰਸਰ ਹੋਣ ਦੀਆਂ ਖ਼ਬਰਾਂ ਦੱਸਦੀਆਂ ਹਨ ਕਿ ਪਹਿਲਾਂ ਨਾਲੋਂ ਸਥਿੱਤੀ ਸੁਧਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਆਰਥਿਕ ਮੁਹਾਜ ਉੱਪਰ ਵੀ ਮਜ਼ਬੂਤੀ ਪਕੜਨਾ ਉਸ ਲਈ ਇੱਕ ਸ਼ੁਭ ਸੰਦੇਸ਼ ਹੈ। ਪਰੰਤੂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਮੁੱਦੇ ਅਜਿਹੇ ਹਨ ਜੋ ਨਾਰੀ ਲਈ ਦੁਖਦੀ ਰਗ ਵਾਂਗ ਚੱਲ ਰਹੇ ਹਨ। ਸਵਰਨਜੀਤ ਸਵੀ ਅਜੇਹੀ ਭਾਵਨਾ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦਾ ਹੈ-

> ਸੂਰਜ ਤੇਰਾ ਵੇਸ ਨੀ ਬਣਨਾ।
> ਕਿਰਨਾਂ ਤੇਰਾ ਦੇਸ਼ ਨੀ ਬਣਨਾ।
> ਕੱਲਮੁਕੱਲੀ ਤੂੰ ਜੰਮੀ ਸੀ।
> ਕਲਮੁਕੱਲੀ ਮਰਨਾ- ਮਿੱਟੀਏ ਅਣ ਸਿੰਜੀਏ।[2]

ਆਓ, ਇਤਿਹਾਸ-ਮਿਥਿਹਾਸ ਉੱਪਰ ਇੱਕ ਪੰਛੀ-ਝਾਤ ਮਾਰੀਏ-

ਇਸ ਕਾਇਨਾਤ ਉੱਤੇ ਜਦੋਂ ਵੀ ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਆਇਆ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਨਿਸ਼ਚਤ ਹੀ ਇਹ ਜੋੜੇ (ਮਰਦ, ਔਰਤ) ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਹੋਵੇਗਾ। ਕੁਦਰਤ ਦਾ ਮੂਲ-ਸਿਧਾਂਤ ਵੀ ਨਰ ਅਤੇ ਮਾਦਾ ਤੋਂ ਹੀ ਵਿਕਸਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਨਿਰਸੰਦੇਹ ਇਹ ਇੱਕ-ਦੂਜੇ ਦੇ ਪੂਰਕ ਹਨ। ਧਾਰਮਿਕ ਸੰਦੇਸ਼ ਦੇਣ ਸਮੇਂ ਵੀ ਆਤਮ-ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਮੇਲ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣ ਵਾਸਤੇ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਦੀ ਉਦਾਹਰਣ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਅਜੇਹੇ ਬਹੁਤ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਾਂਤ ਹਨ।

ਕੁਦਰਤੀ ਤੌਰ ਉੱਤੇ ਮਾਦਾ, ਨਰ ਤੋਂ ਸਰੀਰਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੈ ਪਰ ਇਹ ਇੱਕ-ਦੂਜੇ ਦੇ ਪੂਰਕ ਹਨ। ਇੱਕ-ਦੂਜੇ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਅਧੂਰੇ ਹਨ। ਪੁਰਾਤਨ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਉਪਰੋਕਤ ਧਾਰਨਾਂ ਦੇ ਕਈ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਾਂਤ ਹਨ-

> ਪਹਿਲਾਂ ਸਭ ਆਤਮਾ ਹੀ ਸੀ। ਉਸ ਦਾ ਆਕਾਰ ਪੁਰਸ਼ ਵਰਗਾ ਸੀ। ਉਸ ਨੂੰ ਕੋਈ ਭੈਅ ਨਹੀਂ ਸੀ ਪਰ ਇਕੱਲੇ ਰਹਿਣ ਵਿੱਚ ਆਨੰਦ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਉਸ ਨੇ ਦੂਸਰੇ ਦੀ ਚਾਹਨਾਂ ਕੀਤੀ। ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਦੋ ਭਾਗਾਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡਿਆ, ਜਿਸ ਤੋਂ ਨਰ-ਨਾਰੀ ਅਥਵਾ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਬਣੇ।[3]

ਸਾਡੇ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਪੁਰਾਤਨ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਗੁਣਾਂ ਨਾਲ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹੋਈਆਂ। ਭਾਂਵੇਂ ਇੰਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਬਹੁਤੀਆਂ ਦਾ ਸੰਬੰਧ ਰਾਜ-ਘਰਾਣੇ ਨਾਲ ਸੀ। ਇਹ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਜਾਂ ਸੰਸਕਾਰਾਂ ਦਾ ਹੀ ਅਸਰ ਸੀ ਕਿ ਔਰਤ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਫ਼ਰਜ਼ਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਸੁਚੇਤ ਹੁੰਦੀ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀ ਅਧੀਨਤਾ ਰੱਬ ਸਮਝ ਕੇ ਸਵੀਕਾਰਦੀ ਸੀ।

ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ ਆਪਣੇ ਪੀ.ਐਚ-ਡੀ. ਖੋਜ-ਕਾਰਜ ਵਿੱਚ, ਪੁਰਾਤਨ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਦੇ ਕੇ, ਇਸ ਗੱਲ ਨੂੰ ਇੰਝ ਲਿਖਦੇ ਹਨ-

> ਭਾਰਤੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਵਿੱਚ **ਰਮਾਇਣ**, **ਮਹਾਂਭਾਰਤ** ਵਰਗੇ ਕਈ ਧਾਰਮਿਕ ਗ੍ਰੰਥ ਰਚੇ ਗਏ। ਇੰਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਚਰਦੀਆਂ ਨਾਰੀਆਂ ਬਾਰੇ ਜੋ ਜੀਵਨ-ਚਰਿੱਤਰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਉਹ ਭਾਰਤੀ ਨਾਰੀ ਲਈ ਆਦਰਸ਼ਕ ਹਨ। ਇਹ ਨਾਰੀਆਂ ਸਤਿਆਵੰਤੀ, ਕੁੰਤੀ, ਸੀਤਾ, ਦਰੋਪਤੀ, ਗੰਧਾਰੀ ਆਦਿ ਹਨ। ਇਹ ਨਾਰੀਆਂ ਸਬਰ, ਸੰਤੋਖ, ਤਿਆਗ, ਪਵਿੱਤਰਤਾ, ਪਤੀਬਰਤਾ ਆਦਿਕ ਨਾਂਰਿਤਾ (Feminine) ਗੁਣਾਂ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਹਨ।..... ਉਸ ਸਮੇਂ ਨਾਰੀ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀ ਅਧੀਨਤਾ ਰੱਬ ਸਮਝ ਕੇ ਮੰਨਦੀ ਸੀ..... ਇਹ ਉਸਦੀ ਸਵੈ-ਇੱਛਾ ਸੀ।[4]

ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਮਨੂੰ ਕਾਲ ਵੇਲੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਨੀਵਾਂ ਸਮਝਿਆ ਗਿਆ। **ਮਨੂੰ ਸਮ੍ਰਿਤੀ** ਵਿੱਚ ਅਜੇਹੇ ਸਮਾਜਿਕ ਰੁਤਬੇ (ਔਰਤੇ ਦੇ) ਬਾਰੇ ਜ਼ਿਕਰ ਹੈ ਕਿ-

ਇੱਕ ਤੀਵੀਂ ਨੂੰ ਤਿਆਗਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਤਲਾਕ ਦਿੱਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ,
ਜੇ ਉਹ ਬਾਂਝ ਹੈ ਜਾਂ ਕੇਵਲ ਪੁੱਤਰੀਆਂ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਜਾਂ ਫਿਰ
ਪਤੀ-ਭਗਤੀ ਵਿਰੁੱਧ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਾਲੀ ਹੈ।[5]

ਨਾਥ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਵੀ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਘਟੀਆ ਸ਼ਬਦਾਂ ਰਾਹੀਂ ਦੱਸਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਪਸ਼ੂਆਂ ਬਰਾਬਰ ਕਿਹਾ ਗਿਆ, ਜੋ ਬਹੁਤ ਨਿੰਦਣਯੋਗ ਹੈ-

ਬਾਘਨਿ ਜਿੰਦ ਲੇਇ, ਬਾਘਨਿ ਬਿੰਦ ਲੇਇ,
ਬਾਘਨਿ ਹਮਾਰੀ ਕਾਇਆ।
ਇਇਹ ਬਾਘਨਿ ਤ੍ਰੈ ਲੋਈ ਖਾਈ,
ਬਸਤਿ ਗੋਰਖਿ ਪਾਇਆ॥[6]

ਮੱਧ ਕਾਲ ਵਿੱਚ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਥਿੱਤੀ ਨੂੰ ਬਦਲਿਆ। ਸਾਰੇ ਦਸ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨਾਂ ਅਤੇ ਭਗਤਾਂ ਨੇ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਵਿੱਚ ਦਰਜ ਬਾਣੀ ਰਾਹੀਂ ਔਰਤ ਨੂੰ ਸਤਿਕਾਰ ਦਿੱਤਾ। ਗ੍ਰਹਿਸਤ ਧਰਮ ਨੂੰ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਨਿਆ। **ਆਸਾਂ ਦੀ ਵਾਰ** ਵਿੱਚ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਔਰਤ ਦੀ ਮਹਾਨਤਾ ਨੂੰ ਇੰਜ ਦੱਸਿਆ ਹੈ-

ਭੰਡਿ ਜੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਨਿੰਮੀਐ ਭੰਡਿ ਮੰਗਣ ਵੀਆਹੁ।
ਭੰਡਹੁ ਹੋਵੈ ਦੋਸਤੀ ਭੰਡਹੁ ਚਲੈ ਰਾਹੁ॥
ਭੰਡੁ ਮੂਆ ਭੰਡੁ ਭਾਲੀਐ ਭੰਡਿ ਹੋਵੈ ਬੰਧਾਨ।
ਸੋ ਕਿਉਂ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜੰਮਹਿ ਰਾਜਾਨੁ॥[7]

ਗੁਰਬਾਣੀ ਆਧਾਰਿਤ ਨਾਰੀ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਇਸ ਸੰਕਲਪ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸ ਉੱਤੇ ਅਸਰ ਪਾਇਆ। ਗੁਰੂ ਕਾਲ ਵਿੱਚ ਮਾਤਾ ਖੀਵੀ ਜੀ,, ਬੀਬੀ ਭਾਨੀ, ਮਾਤਾ ਗੰਗਾ ਜੀ, ਮਾਤਾ ਗੁਜਰੀ ਜੀ, ਮਾਤਾ ਸਾਹਿਬ ਕੌਰ ਜੀ, ਮਾਤਾ ਸੁੰਦੀ ਜੀ, ਮਾਤਾ ਭਾਗੋ ਜੀ ਅਤੇ ਬੀਬੀ ਸ਼ਰਨ ਕੌਰ ਸਮੇਤ ਅਨੇਕਾਂ ਨਾਰੀਆਂ ਨੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ। ਗੁਰਸਿੱਖਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂਆਂ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਨੂੰ ਮੰਨਦਿਆਂ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨ ਦੇਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ। ਇਸੇ ਕਰਕੇ ਅੱਜ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਸਿੱਖ ਨਾਰੀਆਂ ਰਾਜਨੀਤੀ, ਖੇਡਾਂ, ਸਾਹਿਤ, ਪੁਲਾੜ, ਵਿਗਿਆਨ, ਸਮਾਜਿਕ, ਸਿੱਖਿਆ, ਸੇਵਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਅੱਗੇ ਵੱਧ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ, ਅਜੀਤ ਕੌਰ, ਬਚਿੰਤ ਕੌਰ, ਮਹਿੰਦਰ ਕੌਰ ਗਿੱਲ, ਦਲੀਪ ਕੌਰ ਟਿਵਾਣਾ, ਵੀਨਾ ਵਰਮਾ, ਬਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ, ਬਲਵੀਰ ਕੌਰ ਸੰਘੇੜਾ, ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਕੈਲਾਸ਼ਪੁਰੀ ਅਤੇ ਡਾ. ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ਹੁਰਾਂ ਨੇ ਔਰਤਾਂ ਬਾਰੇ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਲਿਖਿਆ ਹੈ। ਲੰਮਾ ਸਮਾਂ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਰਾਹੀਂ ਭਾਰਤ ਉੱਤੇ ਹਮਲੇ ਹੁੰਦੇ ਰਹੇ। ਤੁਰਕ, ਗੁਲਾਮ, ਪਠਾਣ, ਗੌਰੀ, ਅਬਦਾਲੀ ਅਤੇ ਮੁਗਲਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ

ਤਖ਼ਤ ਨਾਲ ਇਸਲਾਮ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਵੀ ਕੀਤਾ। ਇਸਲਾਮੀ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਨੂੰ ਸਖ਼ਤੀ ਨਾਲ ਲਾਗੂ ਕੀਤਾ। ਔਰਤ ਉੱਪਰ ਤਿੰਨ ਤਲਾਕ, ਪਰਦਾਪੋਸ਼ੀ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਈ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਲਗਾਈਆਂ ਗਈਆਂ। ਇਹੀ ਕਾਰਣ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਲੰਮੇ ਵਿੱਚ ਰਜ਼ੀਆ-ਸੁਲਤਾਨ ਵਰਗੀਆਂ ਉਦਾਹਰਣਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਘੱਟ ਹੀ ਆਈਆਂ।

ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਆਉਣ ਨਾਲ ਪੱਛਮੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਵੀ ਆਇਆ। ਬਰਤਾਨਵੀ ਕਾਨੂੰਨ ਔਰਤ-ਮਰਦ ਦੀ ਬਰਾਬਰੀ ਦੇ ਹਾਮੀ ਸਨ। ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਆਉਣ ਨਾਲ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਅਤੇ ਬਾਲ-ਵਿਆਹ ਵਰਗੀਆਂ ਔਰਤ ਵਿਰੋਧੀ ਰਵਾਇਤਾਂ ਘੱਟ ਹੋਈਆਂ। ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੀ ਹੱਲਾਸ਼ੇਰੀ ਕਰਕੇ, ਕਈ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕਾਂ ਨੇ ਵੀ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਲਈ ਸ਼ਲਾਘਾਯੋਗ ਕੰਮ ਕੀਤਾ। ਸਿੱਖਿਅਤ ਨਾਰੀ ਆਪ ਵੀ ਜਾਗੀ। ਹਾਕਮਾਂ ਨਾਲ ਭਾਰਤੀ ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ ਈਸ਼ਵਰ ਚੰਦਰ, ਵਿਦਿਆਸਾਗਰ, ਰਾਨਾ ਡੇ, ਮੋਹਨ ਰਾਏ ਅੱਗੇ ਆਏ। ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਇੰਦਰਾ ਗਾਂਧੀ ਦਾ ਭਾਰਤ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨ-ਮੰਤਰੀ ਬਣਨਾ ਅਜੇਹੀ ਪੱਛਮੀ ਵਿੱਦਿਆ ਦਾ ਹੀ ਸਿੱਟਾ ਸੀ। ਆਪਣੇ ਹੱਕਾਂ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਲਈ ਏਸ਼ੀਆਈ ਔਰਤਾਂ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਯੂਰਪੀ ਔਰਤਾਂ ਇੱਕ-ਜੁੱਟ ਹੋਈਆਂ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਅਤੇ ਕੁੱਝ ਪ੍ਰਾਪਤੀਆਂ ਮਗਰੋਂ, ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਉੱਪਰ ਇਸਦਾ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਅਸਰ ਹੋਇਆ। ਡਾ. ਚਰਨਜੀਤ ਅਨੁਸਾਰ-

> ਯੂਰਪੀ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਸਥਿੱਤੀ ਨੂੰ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਕੇ, ਆਪਣੇ ਹੱਕਾਂ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਲੜਿਆ ਤੇ ਹੱਕ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ। ਉੱਥੇ ਪਹਿਲਾਂ ਉਤਪਾਦਨ ਸਾਧਨ ਬਦਲੇ, ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਅੰਦਰੂਨੀ ਵਿਕਾਸ ਦਾ ਸਿੱਟਾ ਸੀ।[8]

ਆਪਣੀ ਬਣਦੀ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਨਦੇਹੀ ਨਾਲ ਨਿਭਾਉਂਦੀ ਔਰਤ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਦਾ ਬੜਾ ਲੰਮਾ ਇਤਿਹਾਸ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ 'ਖੁੱਲ੍ਹਾ ਦਰ' ਇੱਕ ਚੰਗੀ ਖ਼ਬਰ ਹੈ। ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਮੱਲਾਂ ਮਾਰਦੀ ਔਰਤ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਲਈ ਇੱਕ ਸਿਹਤਮੰਦ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਹੈ। ਪਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਐਸ.ਆਈ. ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ-

> ਮਰਦ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਹੱਕਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਲੜਦੀ, ਜੂਝਦੀ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਔਰਤ।[9]

ਆਜ਼ਾਦ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ, 1947 ਸੰਨ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਲਗਾਤਾਰ ਔਰਤ ਦੇ ਹੱਕਾਂ ਲਈ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਔਰਤ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਈ, ਕਾਨੂੰਨੀ, ਰਾਜਨੀਤੀ ਅਤੇ ਨੌਕਰੀਆਂ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰਾਖਵਾਂਕਰਨ ਦੇ ਕੇ ਹੌਂਸਲਾ ਦੇਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਆਪਣਾ ਨਾਲ ਖੱਟਿਆ ਹੈ। ਪਿਛਲੇ ਕੁੱਝ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਰਾਜਨੀਤੀ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਉੱਚੇ ਮੁਕਾਮ ਵੀ ਔਰਤ ਨੇ ਹਾਸਲ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ, ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ, ਮੁੱਖ-ਮੰਤਰੀ, ਉੱਚ ਕਚਿਹਰੀ ਦੇ ਜੱਜ, ਖੇਡਾਂ, ਫ਼ਿਲਮਾਂ ਅਤੇ ਡਾਕਟਰੀ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਸ਼ਮੂਲੀਅਤ ਵੱਧ ਰਹੀ ਹੈ। ਸੰਸਦ ਮੈਂਬਰ, ਵਿਧਾਨ ਸਭਾਵਾਂ, ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ, ਕਾਲਜਾਂ ਅਤੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਨਿਸ਼ਚਤ ਹੈ। ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਅਤੇ ਸ਼ਹਿਰੀ ਨਗਰ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਵਧੀਆ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਭਾਰਤੀ ਔਰਤ, ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿੱਚ ਸੰਸਥਾਵਾਂ

ਦੀਆਂ ਮੈਂਬਰ ਅਤੇ ਮੁਖੀ ਬਣ ਕੇ 'ਸੰਸਾਰ ਪੱਧਰ' ਉੱਪਰ ਨਾਮਣਾ ਖੱਟ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਸੰਗੀਤ, ਸੋਸ਼ਲ, ਮੀਡੀਆ, ਟਰੈਵਲਰ ਅਤੇ ਸੁਰੱਖਿਆ ਫ਼ੋਰਸਾਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਰੋਲ ਅਹਿਮ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਲੇਖਕ, ਖੋਜਕਾਰ, ਵਿਗਿਆਨ ਅਤੇ ਪੁਲਾੜ ਵੱਲ ਔਰਤ ਦੇ ਕਦਮ ਵੱਧ ਰਹੇ ਹਨ।

ਔਰਤ ਲਈ ਆਰਥਿਕ ਤੌਰ ਉੱਤੇ ਨਿਰਭਰ ਹੋਣਾ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਨੌਕਰੀ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਅਤੇ ਘਰੇਲੂ ਔਰਤਾਂ ਦਾ ਵਖਰੇਵਾਂ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਅਜੇ ਉਹ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਿੱਕਤਾਂ ਤੋਂ ਆਜ਼ਾਦ ਨਹੀਂ ਹੋਈ। ਪ੍ਰੋ. ਕੁਲਵੰਤ ਸਿੰਘ ਔਜਲਾ ਆਪਣੇ ਲੇਖ 'ਸੰਘਰਸ਼ ਦਾ ਲੋਕਧਾਰਾਈ ਵਿਸ਼ਵਕੋਸ਼ : ਪਤਨੀਆਂ' ਵਿੱਚ ਲਿਖਦੇ ਹਨ ਕਿ–

> ਅੱਜਕੱਲ ਧੀਆਂ ਖ਼ੁਦ ਵੀ ਵਧੇਰੇ ਪੜ੍ਹ–ਲਿਖ ਗਈਆਂ ਹਨ ਤੇ ਨੌਕਰੀ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਪੜ੍ਹਣ–ਲਿਖਣ ਤੇ ਨੌਕਰੀ ਕਰਨ ਨਾਲ ਪ੍ਰਚੱਲਤ ਮਾਹੌਲ ਬਦਲਿਆ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਅਨੇਕਾਂ ਵੱਖਰੀ ਕਿਸਮ ਦੀਆਂ ਦਿੱਕਤਾਂ ਨੇ ਜਨਮ ਲੈ ਲਿਆ ਹੈ। ਧੀਆਂ ਪੜ੍ਹੀਆਂ ਹੋਣ ਜਾਂ ਅਨਪੜ੍ਹ ਹੋਣ, ਸਹੁਰੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਪਤਨੀ ਵਜੋਂ ਪ੍ਰਵਾਨ ਹੋਣਾ ਤੇ ਪਕੜ ਕਾਇਮ ਕਰਨੀ ਪੁਰਸਲਾਤ ਵਰਗਾ ਬਿਖੜਾ ਮਾਰਗ ਹੈ। ਤਰ੍ਹਾਂ–ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਦੁਸ਼ਵਾਰੀਆਂ ਹਨ।[10]

ਹਰ ਰੋਜ ਵੱਧ ਰਹੀ ਸੁਰੱਖਿਆ ਸੰਬੰਧੀ ਚੇਤਨਾ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਨਾਲ ਜਬਰ–ਜਨਾਹ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਘਟਣ ਦਾ ਨਾਂ ਨਹੀਂ ਲੈ ਰਹੀਆਂ। 'ਪੋਕਸੋ' ਵਰਗੇ ਸਖ਼ਤ ਕਾਨੂੰਨ ਬਨਾਉਣ ਅਤੇ ਜਲਦੀ ਫੈਸਲੇ ਹੋਣ ਉਪਰੰਤ ਵੀ ਬਾਲੜੀਆਂ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਬਜ਼ੁਰਗ ਔਰਤਾਂ ਤੱਕ ਸਭ ਨਾਲ ਇਹ ਸ਼ਰਮਨਾਕ ਵਰਤਾਰਾ ਵਾਪਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਔਰਤਾਂ ਜੋ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਘੁੰਮਣ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ, ਉਹ ਵੀ ਅਜੇਹੇ ਗਲਤ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਹੱਥੇ ਚੜ੍ਹ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਗੱਲ ਕੀ, ਘਰ, ਪਰਿਵਾਰ, ਦਫਤਰ, ਖੇਤ, ਕਾਰਖਾਨਾ ਅਤੇ ਬਾਹਰ ਕੋਈ ਵੀ ਮਹਿਫੂਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਸ ਚਿੰਤਾਜਨਕ ਬੁਰਾਈ ਬਾਰੇ ਸੁਖਪਾਲ ਸਿੰਘ ਗਿੱਲ ਲਿਖਦੇ ਹਨ–

> ਤਾਜ਼ਾ ਰਿਪੋਰਟਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਨੈਸ਼ਨਲ ਕ੍ਰਾਈਮ ਬਿਊਰੋ ਮੁਤਾਬਿਕ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਸਾਲ 2018 ਵਿੱਚ ਪੁਲਿਸ ਨੇ 33977 ਮਾਮਲੇ ਜਬਰ–ਜਨਾਹ ਦੇ ਦਰਜ ਕੀਤੇ। ਇਹ ਅੰਕੜਾ ਹੋਰ ਵੀ ਵੱਧ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਸ਼ਰਮ ਦੇ ਮਾਰੇ ਕਈ ਲੋਕ ਚੁੱਪ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਜੋ ਕਿ ਗਲਤ ਧਾਰਨਾ ਹੈ। ਅੰਕੜੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਹਰ 15 ਮਿੰਟ ਬਾਅਦ ਇੱਕ ਜਬਰ–ਜਨਾਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਮਾਜਿਕ ਬੁਰਾਈ ਕਿਉਂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਬਹੁਤ ਗਹਿਰੇ ਅਧਿਐਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਅਤੇ ਖਾਸਕਰ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਅਮੀਰ ਸਭਿਅਤਾ ਹੈ.....।[11]

ਕੁੱਝ–ਕੁ ਉਦਾਹਰਣਾਂ ਵੀ ਮਿਲ ਰਹੀਆਂ ਹਨ, ਜਿਸ ਤੋਂ ਔਰਤਾਂ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਮੁੱਦਿਆਂ ਉੱਤੇ

ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲਤਾ ਵਿਖਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਗਰੇਟਾ ਥਨਬਰਗ ਅਜੇਹੀ ਨੌਜਵਾਨ ਲੜਕੀ ਹੈ ਜੋ 17 ਸਾਲ ਦੀ ਸਵੀਡਨ ਸਕੂਲੀ ਵਿਦਿਆਰਥਣ ਹੈ। ਥਨਬਰਗ ਨੇ 20 ਅਗਸਤ, 2018 ਨੂੰ ਵਾਤਾਵਰਨ ਸੁਧਾਰ ਲਈ ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ, ਫੇਰ ਉਸ ਨੇ–

> ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਸ ਨੇ ਸਵੀਡਨ ਦੀ ਪਾਰਲੀਮੈਂਟ ਅੱਗੇ ਵਿਰੋਧ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਕੀਤੇ ਅਤੇ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ 2015 ਵਿੱਚ ਹੋਏ ਪੈਰਿਸ ਸਮਝੌਤੇ ਅਧੀਨ ਕਾਰਬਨ ਦੀ ਨਿਕਾਸੀ ਨੂੰ ਘੱਟ ਕਰਨ ਲਈ ਸੁਚੇਤ ਕੀਤਾ। ਵਾਤਾਵਰਨ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਦੀ ਗੰਭੀਰਤਾ ਨੂੰ ਦੇਖਦਿਆਂ ਹੋਰ ਦੇਸ਼ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਯੂਰਪ ਦੇ ਲੋਕ, ਉਸਦੀ ਲਹਿਰ ਨਾਲ ਜੁੜਦੇ ਗਏ।..... ਉਸ ਨੂੰ ਡੇਢ ਦਰਜਨ ਪੁਰਸਕਾਰ ਮਿਲ ਚੁਕੇ ਹਨ।[12]

ਔਰਤ ਨੂੰ ਪਰਿਵਾਰਕ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸਮਾਜਿਕ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਵਿਚਰਨਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਚੱਲ ਰਹੇ ਕਿਸਾਨੀ ਅੰਦੋਲਨ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਬਰਾਬਰ ਹਿੱਸਾ ਪਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਟਰੈਕਟਰ ਚਲਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਕਈ ਔਰਤਾਂ ਸ਼ਹੀਦ ਵੀ ਹੋ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਗੁਰਬਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਮਾਣਕ ਲਿਖਦੇ ਹਨ–

> ਕਿਸਾਨੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਨੂੰ ਮਘਾਉਣ ਵਿੱਚ ਕਿਸਾਨ ਬੀਬੀਆਂ ਤੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਹੋਰ ਖੇਤਰਾਂ ਦੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਬਹੁਤ ਵਿਲੱਖਣ ਤੇ ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ ਹੈ।[13]

ਸਮਾਜੀ ਬੁਰਾਈਆਂ ਨਾਲ ਜੂਝਦੀ ਔਰਤ ਹੁਣ ਆਪਣੇ ਆਤਮ-ਸਨਮਾਨ ਪ੍ਰਤੀ ਸੁਚੇਤ ਵੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਅੰਤਰ-ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਔਰਤ ਦਿਵਸ ਉੱਪਰ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਗੱਲ ਇੰਝ ਕਹੀ–

ਮਨਜੀਤ ਕੌਰ ਪੀ.ਪੀ.ਐਸ. ਲਿਖਦੀ ਹੈ ਕਿ–

> ਅਜੋਕੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਲਈ ਵਿਕਸਤ ਹੋਣ ਦੀਆਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਸੰਭਾਵਨਾਵਾਂ ਮੌਜੂਦ ਹਨ।[14]

ਇੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ ਖੋਸਾ ਲਿਖਦੇ ਹਨ–

> ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਹੀ ਔਰਤਾਂ ਸਮੇਤ ਹਰ ਵਰਗ ਲਈ ਨਿਆਂ ਦੇ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਖੋਲ੍ਹਦੀ ਹੈ।[15]

ਔਰਤਾਂ ਵੱਲੋਂ ਮੀਡੀਆ ਰੱਖਿਆ ਅਤੇ ਸੋਲੋ ਟਰੈਵਲਰ ਵਰਗੇ ਨਵੇਂ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਆਉਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਫ਼ੋਗਾਟ ਭੈਣਾਂ, ਪ੍ਰੀਤੀ ਗਿੱਲ, ਮਾਰਿਆ ਬਿਲਟ, ਨੀਨਾ ਪੁਰੇਵਾਲ, ਲੂਈਸ ਗਲਕ, ਕਮਲਾ ਹੈਰਿਸ, ਐਂਜਲਾ ਮਾਰਕਰ, ਅਰਚਨਾ ਰਾਓ, ਮਾਨ ਕੌਰ, ਸੀਮਾ ਢਾਕਾ, ਕੁਮਦਿਨੀ ਤਿਆਗੀ ਅਤੇ ਨਿਲਾਂਸੀ ਪਟੇਲ ਸਮੇਤ ਅਨੇਕਾਂ ਔਰਤਾਂ ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਮੱਲਾਂ ਮਾਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਡਾ. ਰਮਨੀਤਾ ਸ਼ਾਰਦਾ ਦੀ ਗੱਲ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ–

ਔਰਤ ਨੂੰ ਹੀ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਆਤਮ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਜਗਾਉਣਾ ਹੋਵੇਗਾ।[16]

ਐਸ.ਪੀ. ਅਵਨੀਤ ਕੌਰ ਸਿੱਧੂ ਅਨੁਸਾਰ,

ਧੀਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਪੁੱਤਰਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਅੱਗੇ ਵਧਣ ਦੇ ਮੌਕੇ ਦੇਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ।[17]

ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਇਹ ਆਵਾਜ਼ ਨਿਸ਼ਚਤ ਹੀ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਹੈ।

ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਸਿੱਟਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਔਰਤ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਫ਼ਰਜ਼ ਪੂਰੇ ਕਰਦੀ ਮਮਤਾਮਈ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਦੇਵੀ ਤੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ। ਮਰਦ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਦਾ ਤਲਿਸਮ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਟੁੱਟ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਨ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਦੀ ਰੋਸ਼ਨੀ ਵਧਣ ਨਾਲ ਔਰਤ ਪਹਿਲਾਂ ਨਾਲੋਂ ਸੁਧਾਰ ਵੱਲ ਚੱਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਕੁੱਝ ਉਸਦੀ ਆਪਣੀ ਸਖ਼ਤ ਮਿਹਨਤ, ਗੁਣਾਂ ਅਤੇ ਸਿਆਣਪ ਕਰਕੇ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਆਪਣੇ ਕਾਰਜਾਂ ਕਰਕੇ ਇਹ ਸਿੱਧ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਹ ਵੇਲੇ ਦੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਕੁੱਝ-ਕੁ ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲ ਅਗਾਂਹ-ਵਧੂ ਸੰਸਥਾਂਵਾਂ ਔਰਤ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਵਿੱਚ ਸਾਥ ਦੇ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਔਰਤ ਪ੍ਰਤੀ ਸਮਾਜਿਕ ਸੋਚ ਬਦਲਣ ਦੀ ਅਸਲ ਲੋੜ ਹੈ। ਆ ਰਹੀਆਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਰੁਕਾਵਟਾਂ, ਨਿਸ਼ਚਤ ਹੀ ਇੱਕ ਦਿਨ ਦੂਰ ਹੋਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਬਣਦਾ ਸਥਾਨ ਜ਼ਰੂਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਵੇਗੀ। ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਉਸਦਾ ਮਰਦ-ਔਰਤ ਦਾ ਬਰਾਬਰ ਦਾ ਸਥਾਨ ਬਣਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਕਿ ਉਸ ਨੂੰ ਮਿਲਣਾ ਹੀ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ :

1) Beaviour, Simone De- The Second Sex, Page 13, 29 ਹਵਾਲਾ- ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ, (ਪੀ.ਐਚ-ਡੀ. ਖੋਜ-ਕਾਰਜ), ਸਵਰਨਜੀਤ ਸਵੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸੰਵੇਦਨਾ, ਟਾਂਟੀਆ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਗੰਗਾਨਗਰ, 2019, ਪੰਨਾ 40-41

2) ਸਵਰਨਜੀਤ ਸਵੀ, (ਕਿਤਾਬ) 'ਤੇ ਮੈਂ ਆਇਆ ਬੱਸ, (ਕਵਿਤਾ) ਮਿੱਟੀ ਅਣਸਿੰਜੀਏ, ਕਾਲਾ ਹਾਸ਼ੀਆ ਤੇ ਸੂਹਾ ਗੁਲਾਬ, ਪੰਨਾ 103

3) ਬ੍ਰਿਹਦਾਰਣਯਕ ਉਪਨਿਸ਼ਦ, ਹਵਾਲਾ, ਕਲਿਆਣ, 1948, ਨਾਰੀ ਅੰਕ, ਪੰਨਾ 50

4) ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ, (ਪੀ.ਐਚ-ਡੀ. ਖੋਜ-ਕਾਰਜ) ਸਵਰਨਜੀਤ ਸਵੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸੰਵੇਦਨਾ, ਟਾਂਟੀਆ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਗੰਗਾਨਗਰ, 2019, ਪੰਨਾ 5

5) ਰਾਮਾ ਸ਼ੰਕਰ ਤ੍ਰਿਪਾਠੀ, ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ ਕਾ ਇਤਿਹਾਸ, ਪੰਨਾ 59, ਹਵਾਲਾ- ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ, (ਪੀ.ਐਚ-ਡੀ. ਖੋਜ-ਕਾਰਜ), ਸਵਰਨਜੀਤ ਸਵੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸੰਵੇਦਨਾ, ਟਾਂਟੀਆ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਗੰਗਾਨਗਰ, 2019, ਪੰਨਾ 6

6) ਨਾਥ ਸਾਹਿਤ (ਗੋਰਖ), ਪੰਨਾ 149, ਹਵਾਲਾ- ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ, (ਪੀ.ਐਚ-ਡੀ. ਖੋਜ-ਕਾਰਜ), ਸਵਰਨਜੀਤ ਸਵੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸੰਵੇਦਨਾ, ਟਾਂਟੀਆ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਗੰਗਾਨਗਰ, 2019, ਪੰਨਾ 6

7) ਆਦਿ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ, ਪੰਨਾ 473

8) ਚਰਨਜੀਤ ਕੌਰ, ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ, ਚੰਡਿਕਾ ਪ੍ਰੈਸ, 1999, ਪੰਨਾ 38

9) ਪਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ, ਐਸ.ਆਈ., ਅਜੀਤ, 8 ਮਾਰਚ, 2021, ਪੰਨਾ 7

10) ਪ੍ਰੋ. ਕੁਲਵੰਤ ਸਿੰਘ ਔਜਲਾ, (ਲੇਖ) ਸੰਘਰਸ਼ ਦਾ ਲੋਕਧਾਰਾਈ ਵਿਸ਼ਵਕੋਸ਼ : ਪਤਨੀਆਂ, ਅਜੀਤ ਮੈਗਜ਼ੀਨ, ਐਤਵਾਰ, 4 ਅਪ੍ਰੈਲ, 2021, ਪੰਨਾ I

11) ਸੁਖਪਾਲ ਸਿੰਘ ਗਿੱਲ, ਵੱਧਦੇ ਜਬਰ ਜਨਾਹ ਮਾਮਲੇ, ਅਜੀਤ (ਪੰਜਾਬੀ), 7 ਅਪ੍ਰੈਲ, 2021, ਪੰਨਾ 4

12) ਅਸ਼ਵਨੀ ਚਤਰਥ, (ਲੇਖ) ਅਦੁੱਤੀ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ- ਗਰੇਟਾ ਥਨਬਰਗ- ਬਾਲ ਸੰਸਾਰ, ਅਜੀਤ (ਪੰਜਾਬੀ), 3 ਅਪ੍ਰੈਲ, 2021, ਪੰਨਾ II

13) ਗੁਰਬਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਮਾਣਕ, (ਲੇਖ) ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਮਘਾਈ ਕਿਸਾਨੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੀ ਲਾਟ, ਅਜੀਤ ਮੈਗਜ਼ੀਨ, 10 ਜਨਵਰੀ, 2021, ਪੰਨਾ I

14) ਮਨਜੀਤ ਕੌਰ (ਪੀ.ਪੀ.ਐਸ.), ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਔਰਤ ਦਿਵਸ, ਅਜੀਤ, 8 ਮਾਰਚ, 2021, ਪੰਨਾ 7

15) ਇੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ ਖੋਸਾ, ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਔਰਤ ਦਿਵਸ, ਅਜੀਤ, 8 ਮਾਰਚ, 2021, ਪੰਨਾ 7

16) ਡਾ. ਰਮਨੀਤਾ ਸ਼ਾਰਦਾ, ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਔਰਤ ਦਿਵਸ, ਅਜੀਤ, 8 ਮਾਰਚ, 2021, ਪੰਨਾ 7

17) ਡਾ. ਨਵਜੀਤ ਕੌਰ ਸਰਾਂ, ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਔਰਤ ਦਿਵਸ, ਅਜੀਤ, 8 ਮਾਰਚ, 2021, ਪੰਨਾ 7

e-Mail ID : karamjitkaur5000@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 22-26
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आधुनिक युग में महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार का प्रयास

–बाल किशोर राम भगत
शोधार्थी / सहायक प्राध्यापक.हिन्दी, के.एम.टी.शासकीय कन्या महाविद्यालय, रायगढ़ (छ.ग.)
–डॉ. अर्चना सिंह
सहायक प्राध्यापक हिन्दी, कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़।

सारांश :–

विश्व के लगभग सभी समाजों में महिलाओं का स्तर पुरूषों के समान नहीं है। वर्तमान सामाजिक ढाँचे में पुरूषों को अधिक अधिकार, संसाधन और निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त है। महिलाओं को परंपरागत भूमिकाएं सौंपी गई है। गाँवों में महिलाएं खेती का अधिकांश कार्य बीज छींटना, पौधारोपण, खाद–पानी, फसल की कटाई एवं उन्हें घर लाने तक सभी कार्य करती हैं, फिर भी महिलाओं को कृषक की श्रेणी में नहीं रखा गया है। एक समान कार्य के लिए पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं को कम वेतन, कम मजदूरी दी जाती है। नौकरियों में भर्ती एवं पदौन्नति में भी भेदभाव किया जाता है। जीवनभर माँ–पिता की सेवा के बावजूद मुखाग्नि देने का अधिकार केवल पुरूषों को है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर भी घर के मुख्य निर्णयों की जिम्मेदारी उन्हें नहीं सौंपी जाती। सशक्तिकरण एक व्यापक शब्द है, जिसमें अधिकारों और शक्तियों का स्वाभाविक रूप से समावेश है। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया से है, जिसमें महिलाओं के लिए सर्वसम्पन्न और विकसित होने हेतु संभावनाओं के द्वार खुले, नये विकल्प तैयार हो, भोजन, पानी, घर, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधायें, शिशुपालन, प्राकृतिक संसाधन, बैंकिंग सुविधायें, कानूनी हक और प्रतिभाओं के विकास हेतु पर्याप्त रचनात्मक अवसर प्राप्त हो।

किसी भी सदस्य एवं विकसित समाज के निर्माण में स्त्री एवं पुरूष दोनों की सहभागिता आवश्यक है। परन्तु यह एक विडंबना ही है कि समाज में उन्हें बराबरी का दर्जा शायद ही कभी प्राप्त हुआ हो। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार द्वारा महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिये अनेक योजनायें बनायी गयी। स्कूल कालेजों में पढ़ाई के साथ उनके लिये विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी। तभी आज देश में सामाजिक–आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में महिलायें अपने गुण और शिक्षा के दम पर बड़ी संख्या में डॉक्टर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, वकील और इंजीनियर तक नजर आती हैं। कला–साहित्य एवं राजनीतिक क्षेत्र में भी काफी मात्रा में महिलाओं ने अपनी पहुँच बनायी है। लेकिन साथ ही यह भी सच है कि आर्थिक, सामाजिक क्षेत्रों के साथ राजनैतिक क्षेत्र में जिस अनुपात में उन्हें अपनी उपस्थिति दर्ज करानी चाहिए थी उतनी संभव नहीं हो पायी है।

भारत में महिलाओं की साक्षरता दर 54.16 प्रतिशत है केरल में यह सर्वाधिक 87.86 प्रतिशत तथा बिहार में निम्नतम यानी 33.57 प्रतिशत है अर्थात वहां 66.43 प्रतिशत महिलायें निरक्षर है, जबकि बिहार जनसंख्या में तीसरा स्थान रखता है। और कुल जनसंख्या का 8.07 प्रतिशत है। आँकड़े बताते हैं कि भारत में हर 101 मिनट में दहेज के कारण एक मृत्यु होती है। पूरे देश में हर वर्ष लगभग 5000 महिलाओं की दहेज के कारण मौत की सूचना पायी जाती है। उत्तर प्रदेश में दहेज के कारण औसतन 100 मौतें होती है। जो देश में सर्वोपरि है। तत्पश्चात महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश तथा बिहार का नाम लिया जाता है। भारत में हर वर्ष 6 लाख महिलायें गर्भपात कराती है। जिनमें से जानकारी तथा तकनीकि अभाव के कारण अनेक महिलाओं की अकाल मौत हो जाती है। एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत कामकाजी महिलायें कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का सामना करती है एवं 85 प्रतिशत महिलायें उच्चतम न्यायालय के निर्णय से अनभिज्ञ है। 68.26 प्रतिशत महिलायें सीटी बजाने, कटाक्ष, कामुक टिप्पणी तथा यौन संकेतों के कारण मानसिक उत्पीड़न का सामना करती है। 25.17 प्रतिशत महिलायें स्पर्श जैसे शारीरिक उत्पीड़न का सामना करती है।

वैश्वीकरण के युग में शोषण एवं उत्पीड़न के बावजूद महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है, चाहे वो राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, संगीत, लेखन, फिल्मजगत, गायन, नृत्य, खेल जगत व जनसंचार का क्षेत्र, चाहे वो 1957 के विद्रोह हो, चाहे वो समाज के अन्य क्षेत्र हो सभी क्षेत्रों में अपना पंचम लहराया है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 14 में महिलाओं और पुरूषों को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। अनुच्छेद 15 महिलाओं को समानता का अधिकार प्रदान करता है। अनुच्छेद 16 सभी नागरिकों को रोजगार का समान अवसर देता है। अनुच्छेद 39 सुरक्षा तथा रोजगार का समान कार्य के लिए समान वेतन भी स्थापित करता है।

महिलाओं के विभिन्न संवैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिये सरकार ने महिलाओं को विशेष ध्यान में रखकर उनसे संबंधित अनेक कानून बनाये हैं, ताकि उन्हें शोषण उत्पीडन से बचाकर पूरा सम्मान दिया जा सके। सभी पंचवर्षीय योजनाओं में महिलाओं के विकास को महत्व दिया गया है। इनके अतिरिक्त महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार हेतु समेकित बाल विकास योजना तथा आर्थिक विकास हेतु ग्रामीण महिला एवं शिशु विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। वर्ष 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित कर महिला सशक्तिकरण नीति तैयार की गयी साथ ही महिला कल्याण हेतु सभी राज्यों के द्वारा अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। महाराष्ट्र में संचालित कामधेनु योजना के तहत अपंग परित्याग व आश्रयहीन महिलाओं को स्वरोजगार उपलब्ध कराने के लिये सहायता दी जाती है। बिहार सरकार ने 11 से 18 वर्ष की लड़कियों के पोषण तथा स्वास्थ्य स्तर में सुधार लाने एवं अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से उन्हें अक्षर एवं अंक ज्ञान देने के उद्देश्य से किशोरी बालिका योजना प्रारंभ की है। उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वस्थ सखी योजना के तहत आठवीं कक्षा तक पढ़ी 18 से 35 वर्ष आयु की अनुसूचित जाति की महिलाओं को मिडवाइफ के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है और चयनित महिलाओं को 500 रूपये प्रतिमाह प्रदान किया जाता है।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सिर पर मैला ढोने की प्रथा पर रोक लगाये जाने के परिणामस्वरूप बेरोजगार हुये लोगों के पुनर्वास के उद्देश्य से सैनेट्री मार्ट योजना आरंभ की गई है। इस योजना के तहत दुकानें स्थापित करने के लिये ढाई लाख रूपये तक के ऋण की व्यवस्था सरकार द्वारा की गई है। बालिकाओं के भविष्य को

सुरक्षित रखने के उद्देश्य से 2 अक्टूबर 1994 से हरियाणा सरकार ने अपनी बेटी अपना धन योजना प्रारंभ की इस योजना के तहत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के परिवारों की नवजात बालिकाओं के नाम से 2500/– रूपये सरकार द्वारा इंदिरा विकास पत्र के माध्यम से निवेश कर दिया जाता है। आंध्रप्रदेश में बालिकाओं को संरक्षण एवं समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिये राज्य सरकार ने बालिका संरक्षण योजना प्रारंभ की। इस योजना में 60 हजार से अधिक ऐसी बालिकाओं को दिया जाता है जो निर्धन परिवारों की है, जिनकी वार्षिक आय 1100/–रूपये से कम है। योजना का मुख्य उद्देश्य कम से कम माध्यमिक स्तर तक बालिकाओं को शिक्षित करना तथा 18 वर्ष के बाद ही उनका विवाह सुनिश्चित करना है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा 1 नवम्बर 1991 से विशेषतः ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्र की महिलाओं के कल्याण एवं विकास हेतु पंचधारा योजना आरंभ की गई। इस योजना में पाँच उपयोजनाएं शामिल है। प्रसवकाल में महिलाओं को बुनियादी स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान कराने के लिए वात्सल्य योजना, ग्रामीण महिलाओं को लघु व्यवसाय आरंभ करने हेतु कार्यशील पूंजी प्रदान करने के लिए ग्राम्य योजना, अति निर्धन महिलाओं के बीमार होने पर उनके उपचार एवं पौष्टिक आहार का प्रबंध कराने के उद्देश्य से आयुष्मति योजना, निराश्रित विधवाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना तथा आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में अनुसूचित जाति/जनजाति की महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कल्पवृक्ष योजना लागू किया गया है।

देश की महिलाओं को राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास में बराबरी की भागीदारी के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति 2001 की घोषणा की गई और इनमें किये गये प्रावधानों को भली–भाँति लागू करने का दृढ़ निश्चय भी व्यक्त किया गया है। महिला सशक्तिकरण वर्ष में सरकार द्वारा आर्थिक सशक्तिकरण हेतु नयी विकास और कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा करते हुए उन्हें संचालित भी किया गया। जैसे– न्यू मॉडल चरखा योजना 1987, नौराड प्रशिक्षण योजना 1989, महिला समाख्या योजना 1989, मृत एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम 1992, राष्ट्रीय महिला कोष की मुख्य ऋण योजना 1993, ऋण प्रोत्साहन योजना 1993, स्वयं सहायता समूह योजना 1993, मार्जिन मनी ऋण योजना 1995, ग्रामीण महिला विकास परियोजना 1996, राज राजष्वरी बीमा योजना 1997 आदि को भी अधिक व्यापक पैमाने पर संचालित करने का प्रयास किया गया।

नई संचालित योजनाओं में किशोरी शक्ति योजना, महिला स्वयंसिद्ध योजना, महिला स्वाधार योजना, महिला उद्यमियों हेतु ऋण योजना, स्वशक्ति योजना, किशोरी शक्ति योजना, बालिका समृद्धि योजना, जननी सुरक्षा योजना आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। सांविधिक संस्था महिला आयोग अधिनियम 1990 के तहत राष्ट्रीय महिला आयोग गठित की गई है। यह संविधान तथा अन्य कानूनों के अंतर्गत महिलाओं की सुरक्षा से संबंद्ध प्रावधानों की समीक्षा करती है। यह महिलाओं की शिकायतों को दूर करने के लिए याचिकाएं स्वीकार करती है और महिलाओं की प्रगति के लिए अनुसंधान कार्य भी करती है। यह आयोग महिलाओं से संबंधित विषयों/ मुद्दों के बारे में सम्मेलन, सभाएं आदि आयोजित कर के जागरूकता बढ़ाने में सक्रिय रूप से योगदान करता है।

73वें व 74वें संविधान संशोधनों द्वारा पंचायतों तथा नगर पालिकाओं में महिलाओं के लिये एक तिहाई आरक्षण की व्यवस्था की गई है। इसी क्रम में महिला सशक्तिकरण के लिये बिहार सरकार ने पंचायतों में

महिलाओं के लिये 50 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया है। पैतृक संपति में बेटे के समान ही बेटी को अधिकार देने वाला कानून 9 सितंबर 2005 को सरकारी अधिसूचना जारी होने के साथ ही प्रभावी हो गया। हिन्दू उत्तराधिकार कानून की 6 में संशोधन के माध्यम से जहाँ पैतृक संपति और स्वअर्जित संपति में पुत्रियों को समान अधिकार दिया गया है, वहीं एक अन्य संशोधन के द्वारा विवाहित पुत्रियों को भी संपत्ति में अधिकार मिलेगा। एक अन्य संशोधन के साथ बेटों के बच्चों के समान ही पुत्रियों के बच्चों को भी इनमें समान दर्जा देने की व्यवस्था की गई है।

राष्ट्रीय महिला आयोग ने ग्रामीण महिलाओं को सशक्त और जागरूक बनाने के लिए ''चलो गाँव की ओर'' परियोजना शुरू की है। केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह ने 3 फरवरी 2006 को नई दिल्ली में इस परियोजना का उद्घाटन किया। चलो गाँव की ओर परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक हर लिहाज से सशक्त और दक्ष बनाना है। इसके तहत कानूनी परामर्श से लेकर शैक्षणिक योजनाओं और स्वास्थ्य सेवाओं से लेकर कमाई के संसाधनों और अवसरों की उन्हें जानकारी दी जाती है। इसमें महिला और बाल विकास विभाग, शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, पंचायती राज, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद समेत तमाम संस्थानों और संगठनों से सहायता ली जाती है।

देश में महिलाओं की स्थिति में सुधार एवं समानता के लिए हमारे संविधान निर्माताओं ने 16 विशेष कानून बनाकर महिलाओं को सम्मानित किया गया। ये विशेष कानून इस प्रकार है– हिन्दू विवाह अधिनियम 1955, विशेष विवाह अधिनियम 1954, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956, हिन्दू दत्तक पुत्र एवं अनुरक्षण अधिनियम 1956, बाल विवाह प्रतिरोध अधिनियम 1952, कारखाना अधिनियम 1948, वृक्षारोपण श्रमिक अधिनियम 1951, खान अधिनियम 1952, मातृत्व हितलाभ अधिनियम 1976, समान परिश्रमिक अधिनियम 1976, दहेज निरोध अधिनियम 1961, महिलाओं के अभद्र प्रस्तुतीकरण अधिनियम 1986 एवं सती आयोग अधिनियम 1987 पारित किया गया। महिलाओं और महिला संगठनों/संस्थानों को जिन्होंने सामाजिक स्तर पर उत्कृष्ट स्तर का योगदान करने वाले को केन्द्र सरकार द्वारा प्रतिवर्ष ''श्री शक्ति पुरस्कार'' से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है। ताकि उनके उत्कृष्ट कृत्यों की समाज में जानकारी मिल सके और उन्हें पहचान मिल सके। इन पुरस्कारों को देश की पाँच शीर्ष स्तरीय बीरांगानाओं के नाम रखा गया है, जो इस प्रकार है– 1. देवी अहिल्याबाई होल्कर पुरस्कार 2. रानी लक्ष्मीबाई 3. माता जीजा बाई 4. रानी गैदलियू जेलियांग पुरस्कार एवं 5. कन्नागी पुरस्कार।

सरकार द्वारा महिलाओं के लिए अतिरिक्त कदम उठाये गये है। महिलाओं के लिये देश में उपलब्ध कानूनी प्रावधानों की व्यापक समीक्षा हेतु ''टास्क फोर्स का गठन किया गया ताकि उनको अधिक व्यावहारिक और उपयोगी बनाने हेतु आवश्यक कदम उठाये जा सके। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं के सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु डी.डब्ल्यू.सी.डी, इग्नू तथा आई.एस.आर.ओ. के सहयोग से ''डिस्टेन्स एजूकेशन परियोजना'' प्रारंभ की गयी। महिलाओं के प्रति हिंसा रोकने के लिये जिला स्तरीय समितियों का गठन तथा इस समितियों के भली–भांति कार्य निष्पादन हेतु मार्ग निर्देशों का जारी किया जा रहा है। महिलाओं के आर्थिक स्वावलम्बन हेतु ''महिला आर्थिक कार्यक्रम'' द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन के लिये कई नयी परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान किया गया।

देश में स्त्रियों की स्थिति में सुधार का प्रयास उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। उन्हें स्वावलम्बी होने की सुविधायें

दी जा रही है। सम्पत्ति के उत्तराधिकार के लिए भी कानून बजाएं जा रहे हैं। संविधान में स्त्रियों की समस्या सुलझाने के लिए विभिन्न नियमों का समावेश किया गया है। उन्हें पुरूषों जैसी स्वतंत्रता दी गई है, उनके लिए किसी प्रकार के काम पर रोक नहीं रखी गई है। काम और वेतन की समानता के विषय में संविधान में स्पष्ट निर्देश है। महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा उठाये गये विभिन्न कदमों को एक मुहिम मानकर लगन, उत्साह और प्रतिवद्धता के साथ चलाया जाता रहे और लिये गये निर्णय और उठाये गये विशेष कदमों का वर्षानुवर्ष अनुश्रवण मूल्यांकन होता रहे और रास्ते में आने वाली बाधाओं और कठिनाईयों को प्राथमिकता के आधार पर निरन्तर हल खोजा जाता रहे। केवल कुछ नये कानूनों को पास कराने या कुछ नयी योजनाओं की घोषणा कर उन्हें कागजों पर लागू करने मात्र से काम चलने वाला नहीं है। जरूरत इस बात की है कि इन कानूनों और योजनाओं की घोषणाओं को वास्तविक धरातल पर उतारा जाय ताकि संबंधित लोगों और वर्गो तक इनकी पहुँच भी सुनिश्चित की जा सके। जिससे उनमें जागरूकता का संचार हो सके और वे अपने अधिकारों की लड़ाई स्वयं लड़ने में सक्षम हो सके। तभी वास्तविक अर्थो में महिला सशक्तिकरण की दिशा में किये गये प्रयास सार्थक कहे जा सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. भारत में सामाजिक समस्याएं–एन.एन.ओझा, क्रॉनिकल पब्लिकेशन्स प्रा.लि. पुस्तक प्रभाग पृष्ठ–425–443
2. राजहंस हिन्दी निबन्ध, राजहंस प्रकाशन मन्दिर मेरठ–पृष्ठ–385, 373
3. साहित्य और उसके सामाजिक सरोकार, प्रमोद शर्मा, विश्वभारती प्रकाशन, धनवटे चेम्बर्स, सीताबर्डी, नागपुर पृ. 155, 197

पत्र व्यवहार का पूरा पता–
दर्राडीपा, वार्ड क्रमाक–08, कृष्णा डायमण्ड हिल्स के पीछे, रायगढ़ (छ.ग.)
मो.नं. 9981634746
kishorebhagat884@gmail.com

पत्र व्यवहार का पूरा पता–
MIG 2/72 pt. RSS Nagar Korba 495677 (C.G.)
मो.नं. 9039973568
drarchanasingh72@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 27-31
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

बौद्ध दर्शन एवं महिलाएँ

–डॉ. सन्जू चलाना बजाज
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, भाग सिंह कॉलेज फॉर वूमैन, काला टिब्बा, अबोहर, जिला फाजिल्का

प्रस्तुत शोध पत्र में बौद्ध दर्शन में नारी का क्या स्थान था। इस पर पर्याप्त प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। जिस समय महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ उस समय का समाज बौद्धिक संकट से गुजर रहा था, मानवीय तर्को का कोई स्थान नही था। ऐसे युग में बौद्ध दर्शन का प्रादुर्भाव होता है। इन्होने हजारों वर्षों के धार्मिक अन्धविश्वासों को झकझोर दिया। बौद्ध संघों ने नारी को संघ में सम्मिलित कर नारी के प्रति उदारता का परिचय दिया। इस हक से जो नारी समाज में उपेक्षित व शोषित थी उसका उत्थान करने में सहयोग दिया।

महात्मा बुद्ध के समय में महिलाओं की स्थिति कैसी थी यह जानने के लिए इससे पहले की परिस्थितियों को जानना आवश्यक है। क्योंकि छठी सदी ईसा पूर्व का समय जब महात्मा बुद्ध का अवतरण हुआ था। परम्परागत रूढिवादिता, अन्धविश्वास व कर्मकांडों का समय था। पुरूष प्रधानता व पितृसतात्मकता भारतीय समाज के मुख्य स्तंभ थे। जिसमें परिवार जैसे सामाजिक ढांचे के माध्यम से महिलाओं को नियमित व सुरक्षित रखना अति आवश्यक माना जाने लगा। बहुपत्निप्रथा, हरम व वैश्यावृत्ति जैसी कुरीतियां समाज में आमतौर पर प्रचलित थी। पत्नी की पिटाई आम बात थी और ऐसी महिला को आदर्श पत्नी माना जाता था जो खुद को पति के सामने समर्पित कर देती थी उसे पूजती थी और उसके चरणों में गिरकर खुद का धन्य समझती थी।

दहेज आज की तरह एक सच्चाई थी और महिलाएँ यदा कदा वस्तुओं की भांति बेची जाती थी। नारी के पैरों में बेड़िया थी। समस्त अधिकार पुरूषों के पास थे वे अपने जीवन में कुछ ज्यादा पा नहीं सकती थी। क्योंकि उसकी पहुंच नगण्य वस्तुओं तक ही सीमित थी। उनके जीवन की धारा, जन्म से मृत्यु तक पिता भाइयों, पति व अन्ततः पुत्रों के अधीन थी। पुरूष प्रधान समाज में महिला पक्षीय रूख की ज्यादा आशा नहीं की जा सकती थी। यह देखने योग्य है कि अधिकतर धार्मिक परम्पराओं में जिन्होंने भी अभिलेखन किया है। यहां तक कि विभिन्न धर्मग्रन्थों में भी पुरूषों को प्रधानता दी गयी थी।

दुःख इस बात का है कि वर्तमान पांडित्य का ध्यान भी धार्मिक परम्पराओं की तरह मुख्य तौर पर पुरूष नायकों के विवरण पर ही केन्द्रित है। महात्मा बुद्ध के समय स्त्री को भिक्षुणी बनकर स्वायत्त जीवन जीने की स्वतन्त्रता तो दी परन्तु इससे उसके बारे में न तो प्रचलित धारणा बदली और न ही उसको इंसानी दर्जा मिला "विनय" में ऐसे ब्राहम्रणों के कई उदाहरण है जिन्होनें भिक्षुणियों को वेश्याएँ कहा। उदाहरण के तौर पर उस समय कई भिक्षुणियां कौसल प्रदेश होते हुए श्रावस्ती जा रही थी। शाम में किसी गाँव पहुँचने पर उन्होंने एक ब्राहमण परिवार में रात बिताने हेतु शरण मांगी तब उस ब्राहमणी ने भिक्षुणियों से यह कहा, आप तब तक प्रतीक्षा कीजिए जब तक ब्राहमण आ नहीं जाते। तब वह ब्राहमण रात में आता और ब्राहमणी से पूछता है कौन है ये?

"स्वामी ये भिक्षुणियां है।"

यह कहते हुए इन सिर–मुड़ी रंडियों को बाहर निकालो वह उन्हे घर से बाहर निकाल देता है।

ऐसी परिस्थितियों में बुद्ध द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान दिए गए अधिकार क्रान्तिकारी रूख रखते थे। उस समय के लिए यह एक असाधारण बात थी। बुद्ध का युग गंगा नगरीकरण के उदय व विकास के साथ ही साथ व्यक्तिवाद के उदय और तत्कालीन ब्राहमण संस्कृति के हाशिए पर सामाजिक व आध्यात्मिक रूप से रह रहे लोगों पर इसके प्रभाव का गवाह था। उभरती हुई सामाजिक व्यवस्था विधमान सामाजिक मूल्यों के बचाव में कम दिलचस्पी थी और ऐसे वातावरण में महिलाएं व निचले सामाजिक तबके के लोग आमतौर पर अपनी पसन्द के धार्मिक लक्ष्य को पाने व प्रकट करने में अधिक स्वतन्त्र थे। जिस प्रकार बुद्व द्वारा स्थापित लक्ष्य किसी खास वर्ग में पैदा हुए लोगों के लिए नहीं था उसी प्रकार यह केवल पुरूषों तक ही सीमित नही था। बुद्ध ने संघ संघ के भीतर महिलाओं को पुरूषों के समान दर्जा दिया।

बुद्ध ने नारी को ज्ञानी, मातृत्वशाली, सृजनात्मक, भद्र व सहिष्णु के रूप में स्वीकार किया। अब बहुत सी महिलाओं ने बुद्ध द्वारा मुहैया कराए गए अवसरों का लाभ उठाया। अनेक महिलाएँ बुद्व की हितकारिणी थी जो इस बात का संकेत है कि उस समय न केवल बड़ी संख्या में स्वतन्त्र साधनों वाली महिलाएं थी बल्कि नवजात संघ को पालने पोसने में उनकी भूमिका भी प्रशंसनीय थी। बुद्ध की शिष्याओं में कुछ साधारण शिष्याएं ही बनी रही और कुछ ने भिक्षुणियां बनने के लिए सांसारिक मोहमाया को त्याग दिया।

त्रिपिटिक में उपलब्ध सूचना के अनुसार महिलाओं में ऐसे अर्हतों के कई उदाहरण मिलते है जिन्होने सांसारिक जीवन त्याग दिया था और यहां तक कि मगध के राजा की पटरानी खेमा जैसी महिलाओं के कुछ उदाहरण भी है जिन्होंने गृहस्थ जीवन त्यागने से पहले ही पूर्णतः बुद्धत्व प्राप्त कर लिया था। पाटाचारा व सोना जैसी कई प्रसिद्व महिलाएं अनुचर धर्म प्रवचन में निपुणता के लिए जानी जाती थी। खेमा बुद्ध की नजरों में उच्च व श्रद्धा की प्रतीक थी। सुक्का एक अच्छी वक्ता थी। कहा जाता है उसका भाषण सुनने के लिए भीड़ नगर के बाहर एकत्र हो जाती थी। कुछ भिक्षुणियों का अपना व्यक्तिग शिष्य समुदाय था जो न केवल धर्म प्रस्तुत करने में समर्थ थी, बल्कि वे बुद्ध या कुछ दूसरे वरिष्ठ भिक्षुओं की मध्यस्थता के बिना भी नए महत्वाकांक्षियों को सम्पूर्ण मुक्ति तक पहुंचा सकती थी।

त्रिपिटिक में बहुत सी महिलाओं ओर दूसरी महिलाओं को शिक्षिकाओं के रूप में प्रस्तुत किया गया लेकिन फिर भी इन ग्रन्थों के प्रति संकुचित मानसिकता रखने वाले संपादकों ने धम्मदिन्ना जैसी महिलाओं के वृतान्त बचाकर रख लिए थे। चुल्वेदल्लसुत्त में बताया गया है कि विसाख जो कि धम्मदिन्ना का पूर्व पति था उसके द्वारा सिद्धान्त व व्यव्हार के पहलुओं से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देती है।

अटूट कथाओं से पता चलता है कि विसाख एक व्यापारी व बौद्व शिक्षक था। विसाख इस बात से महात्मा बुद्ध को अवगत कराते है तो बुद्ध खुश होकर कहते है कि वे भी बिल्कुल धम्मदिन्ना की तरह ही उत्तर देते है। यह इस बात का प्रमाण है कि महिलाएं न केवल आरम्भिक बौद्ध समुदाय में स्पष्ट रूप से उपस्थित थी बल्कि साधिकाओं व शिक्षिकाओं दोनो ही रूपों में प्रमुख व सम्माननीय जगह भी बनाए हुए थी।

प्रारम्भिक बौद्धधर्म में न केवल महिलाओं के लिए धर्मपंथ खुला था। बल्कि वास्तव में यह रास्ता महिलाओं व पुरूषों दोनों के लिए एक ही प्रकार का था। ऐसी बात नही कि लिंग भेद नही थे परन्तु वे मुक्ति प्राप्त करने

में बाधक नही थे। जब सामावती सहित राजा व उनकी 500 पत्नियां उद्देन जल मरी तो इस दुःखद स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहा "भिक्षुओं इनमें से कुछ महिलाएं प्रवाह विजेता, कुछ एक बार लौटने वाली और कुछ कभी न लौटने वाली थी। इसका स्पष्ट अर्थ है कि महिलाएं मुक्ति मार्ग के उन विभिन्न चरणों को प्राप्त करने में पूरी सक्षम मानी गयी थी। जिसके माध्यम से अहर्त बन जाता था।

"और चाहे महिला हो या पुरूष उनके लिए
ऐसा रथ प्रतीक्षा करेगा उसी रथ पर चढकर
वे निर्वाण की स्थिति में पहुँच जाऐंगे।"

इस प्रकार के पद्य यह बताते है कि जो परम्परागत सीमाएं महिलाओं पर थोपी गयी है उन्हें न तो बौद्ध रीति रिवाज से किसी भी रूप से अलग रखा जा सकता है और न ही अंतिम लक्ष्य, अर्थात निर्वाण प्राप्त करने से रोका जा सकता था। बौद्ध धर्म ने महिलाओं को विधमान ब्राहमणवाद की तुलना में अधिक अच्छे अवसर प्रदान किए।

गृहस्थ स्त्री को भी बौद्ध धर्म ने हिन्दू धर्म से अधिक स्वतन्त्रता दी। उस समय परिवार में स्त्रियों की तीन भूमिकाएँ प्रमुख थी। प्रथम पत्नी, गृहणी की भूमिका प्रत्येक स्त्री के लिए आमतौर पर विवाह आवश्यक था। विवाह का अर्थ पति सेवा तथा गृहस्थी चलाना था। दूसरी गणिका। नगरवधु भी बन सकती थी। गणिका के सम्बन्ध कई पुरूषों से होते थे। इस वजह से उनका उस पर वर्चस्व होता था। वह अपनी सम्पत्ति की मालकिन तथा प्रबन्धक होती थी। अपनी सम्पत्ति का क्रय और विक्रय भी कर सकती थी। जहां ठीक लगे वहा दान भी दे सकती थी। दान देना आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति थी। क्योंकि इससे लक्षित होता है कि सम्पत्ति पर स्त्रियों का अधिकार था। ऐसी स्त्रियों का उनकी योग्यता के अनुसार आदर किया जाता था। बुद्ध के काल में आग्रपाली, बसन्तसेना, रागमंजरी और चन्द्रसेना का साहित्य में उल्लेख है जो नगर वधु कहलाती थी।

तीसरी भूमिका भिक्षुणी की थी। भिक्षुणी ही पूर्णरूप से पितृसत्ता के अलग अलग प्रकार के पालि शिकंजों से मुक्त होती थी। पति त्रिपिटक में कुछ संदर्भ मिलता है जिनमें महिलाओं की उपस्थिति को स्वीकार ही नही किया गया बल्कि उनकी प्रशंसा भी की गई है। उदाहरण के लिए खेमा को बुद्ध ने स्वयं अनुदेशित किया था, किवदन्ती के अनुसार जब उसकी शिक्षा पूरी हुई तब वह धर्म व इसके अर्थ पर पूर्ण पकड़ के साथ अर्हत्व पा चुकी थी। किसा गौतमी ने भी बुद्ध द्वारा दिए गए धर्म उपदेश को समझने के बाद अर्हत्व प्राप्त किया। भिक्षुणी सभा के बारे में कहा जाता है कि उसने आनन्द के उपदेशों को सुना और इस प्रकार अर्हत बन गई। चिता को महाप्रजापति गौतमी ने धर्म में दीक्षित किया था। जिसके बाद उसने अर्हत्व प्राप्त किया था। सभी उदाहरण सिद्व करते है कि बुद्ध ने महिलाओं का पुरूषों के समान ही आदर किया व उनसे से कई को अपनी शिक्षाएं स्वयं प्रदान की।

महात्मा बुद्ध ने भिक्षुणियां बनाई। फिर उन्हे संघ में प्रविष्ट तो कराया परन्तु ऐसे नियम बना दिए कि बौद्व भिक्षुणियों को भिक्षुओं के बराबर सम्मान प्राप्त न हो सका। एक सौ साल की भिक्षुणी भी किसी भिक्षु को पहले नमस्कार करती थी उसे भिक्षु के सामने खड़ा होना पड़ता था। हाथ जोड़कर नमस्कार करना पड़ता था और झुकना भी पड़ता था। चाहे वह भिक्षु अभी अभी बना हो। भिक्षुणियों को भिक्षुओं से बात करने की इजाजत नही थी।

परन्तु गहराई से अगर देखा जाए तो ऐसा लगता है कि बुद्ध को इस वास्तविकता का अहसास था कि भिक्षुणियों को समाज की प्रताड़ना न सहनी पड़े व पुरूष हिंसा से वे बची रहे। इसलिए कुछ नियमों का होना

आवश्यक है। जैसा कि रीटा ग्रास ने संकेत किया है कि इन नियमों द्वारा महिलाओं के अकेली यात्रा व श्रम करने पर समान्यतः प्रतिबंध लगाया गया था। ठीक उसी प्रकार जैसे कि आज हम प्रायः महिलाओं को असामान्य समय में असुरक्षित जगहों पर न जाने का सुझाव देते हुए उन पर संभावित पुरूष हिंसा का प्रतिकार करते है। उन्हे लगता था कि विहारों की स्थापना मानवीय व स्त्रियों की बाहरी सीमा पर की गयी थी। जिससे भिक्षुणियों की सुरक्षा को खतरा था।

विनय पिटक के अनुसार लोग भिक्षुणियों पर दोषारोपण करने की ताक में रहते थे। भिक्षुणियों व भिक्षुओं के प्रति लोगों की चुगलखोरी व उन पर दोषारोपण की घटनाएँ इस विनय में भी भरी पड़ी है। यह ध्यान देना जरूरी है कि भिक्षुओं की अपेक्षा भिक्षुणियों को ही तिरस्कार झेलना पड़ता था। किसी भिक्षुणी के द्वारा कोई गलती करने पर लोग उन्हें प्रायः सिर मुंडी वेश्याएँ कहकर धिक्कारते रहते थे। इसके विपरीत जब भिक्षुओं से कोई गलती होती थी तो उनके बारे में इतने अपमानजनक शब्दों का प्रयोग नही करते थे जितना भिक्षुणियों के लिए किया जाता था। भिक्षुणियों व भिक्षुओं की आलोचनाओं की तुलना से पता चलता है कि प्राचीन भारतीय समाज में लोग भिक्षुओं की अपेक्षा भिक्षुणियों की गलती के प्रति अधिक क्रोधित होते थे। इस तथ्य से यह भी संकेत मिलता है कि इसी कारण इस श्रेणी में भिक्षुओं की अपेक्षा भिक्षुणियों के लिए अधिक नियम बनाए गए। समाज सामान्यतः महिलाओं के घरेलू जीवन त्यागने के पक्ष में नही था। समानता की धारणा को मान लिए जाने के बावजूद महिलाओं को खुद अपना नियन्त्रण व संरक्षण कर पाना सामाजिक तौर पर असंभव था।

आई. बी. हार्नर के विचार में इस बात की काफी संभावना थी कि वे आमतौर पर भिक्षुओं की अपेक्षा योग्यता में कम आंकी जाती थी और इसलिए बिना किसी उद्देश्य के संघ में प्रवेश करने वाली भिक्षुणी को छांटने के लिए उनकी कड़ी जांच की जाती थी।

इस बात से इंकार नही किया जा सकता है कि भिक्षुणी संघ की स्थापना से बुद्ध ने महिलाओं को जिस स्तर पर धर्मपरायणता का अवसर दिया वह विश्व के इतिहास में आने वाले लंबे समय तक एक अद्वितिय बात रही। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी मृत्यु के पश्चात कुछ व्यावहारिक तर्को को नारी स्वभाव की कमियों के बारे में अटकलबाजी करने के बहाने का आधार बना लिया गया। बुद्वोत्तर काल में जैसे जैसे बौद्व धर्म अधिक संस्थागत व पुरूष प्रधान बन गया। इस तरह की मानसिकता बोद्व धर्म की विशेषता बन गयी थी। फिर भी महिलाओं ने विहारों में अपना रचनात्मक धार्मिक जीवन कायम रखा। बुद्व की मृत्यु के बाद कुछ शताब्दियों तक ऐसा कहा। लेकिन बौद्ध धर्म के बढते हुए ब्राहमणीकरण व तापसीकरण के कारण भिक्षुणी संघ के जीवन हाशिए की ओर धकेला जा रहा था। प्राचीन भारत में प्रारम्भिक सफलता के बाद भिक्षुणी संघ का पतन होना प्रारम्भ हो गया। क्योंकि उपासक भिक्षुणियों की अपेक्षा भिक्षुओं का समर्थन ज्यादा खुशी से करते थे। सबसे अधिक अचंभित करने वाली बात तो यह है कि भले ही हाशिए पर लेकिन लम्बे समय तक भिक्षुणी संघ विघमान रहने में सफल रहा।

यह कोई हैरानी की बात नहीं है कि बौद्वोत्तर काल का साहित्य नारी द्वेष व नारी आलोचना से भरा पड़ा है। पालित्रिपिटिक के अंतिम तह में पाया गया। साहित्य नारी की प्रति शुद्वतापूर्ण रूख रखने वाला है। नारी का मानव जाति के पतन व आध्यात्मिक प्राणी की मृत्यु के लिए जिम्मेदार पाया गया है। उनको असभ्य नीच, लालची, सनकी, धूर्त, मूर्ख, नासमझ, व असंख्य दुर्गुणों का शिकार बताया गया है। जातक इस तरह के विशाक्त रूख का

सर्वात्तम उदाहरण है। इस प्रकार की मानसिकता के फलस्वरूप यह बताया गया है कि नारी का पुरूष द्वारा दमन किया जाना चाहिए उसे नियन्त्रण में रखा जाना चाहिए तथा उस पर विजय पानी चाहिए।

नारी लैंगिकता, संस्कृति, समाज तथा धर्म के लिए खतरा समझा जाने लगा और इस तर्क का योग सभी महिलाओं को हाशिए के जीवन में धकेलने के लिए किया जाने लगा। महापरिनिर्वाणौत्तर बौद्व संघ में सामान्य तथा वही महिलाएं प्रवेश कर पाती थी जो या तो सम्राट अशोक की पृत्री संघमित्रा की भांति समाज की नैतिकता के आम नियमों से उपर थी या फिर वे औरते जिनका आगे पीछे कोई नही था और जो समाज की नैतिकता की सीमा से बाहर निकल चुकी थी। लेकिन दशा या परिस्थितियां जैसी भी रही हो महिलाओं को एक अच्छा अवसर मिला। बोद्व धर्म ने महिलाओं को इस सब संस्थाओं से केवल मुक्ति पाने का बल्कि उन्हे खुद को संयोजित करने का मौका भी दिया। इस प्रकार के वातावरण में पेरीगाथा जैसे एक अद्वितिय ग्रंथ कीरचना की गयी। जिसका नाम हर बार तब लेना चाहिए जब भी बौद्व धर्म में महिलाओं की बात की जाए।

इस तरह थैरी गाथा की भिक्षुणियां इस तथ्य का प्रमाण है कि बुद्व के महासंघ में जाति व वर्ण का नही, नारी का महत्व था। जिसमें समानता का भाव अपने आप झलकता था। बुद्व दर्शन ने जातिगत, वर्णगत मतभेदों को नकारा, वहीं नारी को पुरूष के समकक्ष लाने का प्रयास किया। यह उनका मानवतावादी दर्शन था कि बौद्व धर्म नारी को बुराई के रूप में नहीं देखता था, उसे भोग की वस्तु के रूप में नही देखता था। बुद्व यह मानते थे कि मानसिक धरातल पर स्त्री और पुरूष दोनों समान हो।

संक्षेप में स्त्रियों की दशा पर श्री नेत्र पाण्डेय लिखते है "इस काल में बालकों की भांति बालिकाओं के पालन पोषण तथा उनकी शिक्षा दीक्षा का ध्यान रखा जाता था, संगीत का ज्ञान तथा गृह के कार्य में प्रवीणता बालिकाओं का प्रधान गुण समझा जाता था। यद्यपि कन्याओं का विवाह उनके माता पिता अथवा संरक्षक ही तय करते थे परन्तु कुछ कन्याएँ स्वयं वर चुन लिया करती थी। स्त्रियों का घर में सम्मानपूर्वक स्थान था और चरित्रवान स्त्रियां समाज में बड़े आदर के साथ देखी जाती थी। यद्यपि पर्दे की जटिल प्रथा का प्रकोप इस युग में न था। परन्तु स्त्रियों को शील, लज्जा तथा पुरूषों से थोड़ा आवरण रखना पड़ता था। यद्यपि स्त्रियों को भिक्षुणी अथवा परिव्राजिका बनने का अधिकार नहीं था, परन्तु बाद में उन्हे यह अधिकार प्राप्त हो गया था। कुछ स्त्रियां गणिका अथवा वेश्या का भी धर्म करती थीं।"

इस प्रकार महात्मा बुद्व ने अन्धविश्वासी परम्परावादी समाज पर अपने विचारों से सीधा प्रहार किया। उन्होने अपने उपदेशों में नैतिक जीवन, वचन या वाणी की सत्यता और कार्य पर जोर दिया। उन्होंने समाज में प्रचलित अनेक रूढ़ियों को तोड़ा व स्त्री को पुरूष के समकक्ष रखा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. प्रो. के. टी. एस. सराओ, प्राचीन भारतीय बौद्व धर्म, उद्भव, स्वरूप और पतन, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. भरत सिंह उपाध्याय, बुद्व और बौद्व साधक, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
3. डॉ. सद्वातिस्स, बुद्व जीवन और दर्शन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
4. श्री नेत्र पाण्डे, भारतवर्ष का वृहत इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. डॉ. सुमन राजे, हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2006

फोन नः 9316345002

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 32-37
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

गिरीश पंकज के व्यंग्यों में चित्रित नारी-जीवन का संघर्ष एवं समस्याएँ

-डॉ. आर.के. पाण्डेय, शोध निर्देशक,
विभागाध्यक्ष, संत गुरु घासीदास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुरूद, जिला-धमतरी (छ.ग.)
-चुन्नीलाल, शोध-छात्र
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

'नर-नारी एक गाड़ी के दो पहिये के समान हैं' इन दोनों की सहभागिता के बगैर सामाजिक जीवन अधूरा है। वैदिक काल में नारी को देवी का दर्जा प्राप्त था, वे पुरुषों के साथ धार्मिक-सामाजिक अनुष्ठानों में साथ रहा करती थीं। मध्यकाल तक आते-आते उन पर अत्याचार, हिंसा, शोषण शुरू हो गए। उन्हें घर की दासी, अबला-अशक्त, भोग-विलास की वस्तु समझा गया साथ ही उन्हें शिक्षा से वंचित कर दिया गया। उन पर विभिन्न प्रथाएँ थोप दी गई, जैसे- सती-प्रथा, बाल-विवाह, जौहर-प्रथा, पर्दा-प्रथा, बहु विवाह, विधवा विवाह निषेध, तत्पश्चात् अंग्रेजी शासन काल के समय राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर, सावित्री बाई फूले जैसे समाज-सुधारक सामने आए और महिला उत्थान, नारी-चेतना के अंतर्गत इन प्रथाओं का विरोध किया तथा नारी-शिक्षा और उनकी सामाजिक उपादेयता को स्थापित करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।

21वीं सदी अर्थात् आधुनिक भारत में नारी को पुरुषों के समानांतर खड़ा करने के लिए उन्हें शिक्षा, रोजगार, विभिन्न सामाजिक अवसरों एवं नवाचार से जोड़ा जा रहा है। अनेक अधिकार प्रदान किए गए हैं, फिर भी पुरुष सत्तात्मक परिवार में नारी उपेक्षित है। विभिन्न तरह के यातनाओं की शिकार है, समाज में बालिकाएँ सुरक्षित नहीं हैं। वर्तमान समय में देश और समाज परिवर्तन, विकास, प्रगति की ओर जिस तेजी के साथ बढ़ रहा है, उस तेजी के साथ महिलाओं का विकास अवरूद्ध है। आज भी समाज के भीतर महिलाएँ उपेक्षित हैं। लड़कियों, स्कूली छात्राओं पर विभिन्न तरह की अपराधिक घटनाएँ घट रही हैं, जिसे गिरीश पंकज ने अपनी व्यंग्य-रचनाओं में पिरोकर सामाजिक जागरूकता एवं लोगों के मन-मस्तिष्क में चेतना स्थापित करने का प्रयास किए हैं।

गिरीश पंकज ने अपनी व्यंग्य-रचनाओं के माध्यम से नारी-समाज एवं लड़कियों, बालिकाओं के ऊपर होने वाले अत्याचार, हिंसा, अपराध, यथा- दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, तलाक-प्रथा, पति एवं सास-ससुर, ससुराल पक्ष द्वारा यातनाएँ देना, भ्रूण-परीक्षण, शारीरिक-मानसिक प्रताड़ना, दफ्तरों में महिलाओं- लड़कियों के साथ छेड़छाड़, बलात्कार आदि शर्मसार घटनाओं का व्यंग्य-चित्रण किया है, जिसकी बानगी शोध-सारांश में दृष्टव्य है-

'ऐसी सास का सत्यानाश' दहेज–प्रथा देश एवं समाज के लिए एक अभिशाप है। इसकी रोकथाम के लिए कानून भी बने हैं और कड़ी सजा का प्रावधान भी है, फिर भी लोग बिना डरे–सहमे माँग करते हैं और देते भी हैं। इस प्रथा के चलते अनेक बहू–बेटियाँ आज भी प्रताड़ित हैं, घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं। कई दफा परिस्थितियाँ इतनी गंभीर निर्मित होती है कि बहू को मौत के मुँह में झोंक दिया जाता है। रचनांतर्गत दहेज लोभी ससुराल पक्ष पर करारा व्यंग्य है– ''कल फिर एक सास ने अपनी बहू को मार डाला। क्यों? मामला वही था शाश्वत यानी दहेज। पता नहीं ये सासें, ये पति, ये ससुरे कब दहेज से परहेज करेंगे। बेटे की नालायकी पर माँ आँसू नहीं बहाती और अपनी बहू को खलनायिका बनकर प्रताड़ित करती है– 'लारे ला पैसा ला ऐसे ला वैसे ला, ला रे ला पैसा ला....' ।''[1]

कुछ सास तो इतनी अत्याचारी होती हैं कि दहेज के लिए बहू को 'मौत के घाट' पहुँचा देती हैं और सामाजिक दिखावे के लिए कुछ क्षण ढोंगिया आँसू बहाकर दूसरे ही दिन से अपने पुत्र के लिए नई वधू की तलाश शुरू कर देती हैं– ''एक सास की बहू मर गई या मार दी गई। जो भी हुआ हो हम शोक जताने पहुँचे। उस शोक के अवसर पर भी हमारा अचानक उस घड़ी मनोरंजन होने लगा, जब हमने देखा कि बहू पर हमेशा अत्याचार करने वाली सास इस तरह छाती पीट–पीट कर रो रही है, गोया उसकी बेटी मर गई हो। सास की अदा देखकर सारे लोग मन–ही–मन हँस रहे थे। सास के कुछ शब्द तो देखें– 'हाय–हाय, मेरी बेटी। मेरी लाजो। मेरी बहू... ये तुने क्या किया। मुझको खाना खिलाए बिना ही चली गई। हाय–हाय, मेरा बेटा अब कैसे जिएगा तेरे बिना ? हाय रे भगवान, पहले मुझे क्यों न उठा लिया'। बदकिस्मती देखिए, सास को उठाने फौरन दो यमदूत भी आ गए। सास घबराई, कहने लगी– 'मुझे अभी धरती पर रहने दो। मुझे अपनी दूसरी बहू की सेवा करनी है।''[2]

'सु–वर की तलाश' व्यंग्य रचनांतर्गत दहेज लोभी पिता पर कटाक्ष है। वर्तमान समय में किसी लड़की के पिता के लिए सबसे मुश्किल कार्य है अपनी बेटी के लिए एक योग्य वर की तलाश, उसके पश्चात् ससुराल में उसके सुखमय जीवन की कामना एवं चिंता। कुछ पिता अपने पुत्र का 'रेट' तय कर रखे हैं, मानो लड़का नहीं बाज़ार की कोई वस्तु हो, लेकिन लड़की का पिता चाहता है एक सज्जन–सुयोग्य वर, जहाँ उसकी बेटी सुख से जीवन–यापन कर सके– ''लड़की का बाप कंझाकर कहता है– 'बोलते क्यों नहीं कि सिंचाई विभाग में बाबू है। खैर, क्या लोगे, वर–बिक्री का ?'

'एक लाख!'

'इतना रेट? यूनिवर्सिटी वाला तो इक्कीस हजार में तैयार है।'... 'अरे भई, ये सिंचाई विभाग है। बॉस खींचता है तो बाबू भी खींच लेता है। ऊपरी कमाई इतनी है कि आपकी बेटी राज करेगी राज।'... लड़की का बाप– 'नमस्ते, फिर मिलेंगे। 'जगह मिलने पर साइड दी जाएगी' स्टाइल में आगे बढ़ जाता है। अनेक वरों के घर जाता है और कोसता है मँहगाई को, बढ़ते हुए झूठे बाज़ारवाद को। कोई तो हो जो अपने लड़के को जो है, जैसा है, पेश कर नीलाम करे। घटी हुई दर (अधिक उमर वाले) के वर का रेट भी एक लाख से कम नहीं होता। डिप्टी कलेक्टर है तो बताएँगे बस कलेक्टर होने ही वाला है और जो कलेक्टर है तो बस है। बोलो, कितना दोगे? बाज़ार में वर की तलाश जारी है। परेशान है लड़की का पिता। कोई पैसा माँगता है, तो कोई रुपया। कोई सीधे माँगता है कोई घुमाकर। लड़की का पिता चाहता है योग्य वर। अपनी हैसियत का जहाँ उसकी

लड़की सुख–शांति के साथ रह सके।''[3]

इसी प्रकार 'तीन तलाक हो गया लॉक' व्यंग्य रचनांतर्गत मुस्लिम समाज की तलवार रूपी तलाक–प्रथा को झेलने वाली महिलाओं पर संवेदना के भावाभिव्यक्ति है और मुस्लिम पुरुष प्रधान समाज पर कटाक्ष है। कुछ एक मुस्लिम घरानों में एक समय तक औरतों को घर की दासी, पैरों की जूती समझा जाता था। वे विभिन्न तरह की यातनाओं का शिकार थीं, छोटी सी नोंक–झोंक, तकरार पर उन्हें मारा–पीटा जाता था, तीन बार तलाक बोल देने से उनका बसा–बसाया घर उजड़ जाता था। पति के घर, परिवार, जीवन से बेदखल होना पड़ता था, लेकिन मुस्लिम समाज की इस अमानवीय प्रथा को सुप्रीम कोर्ट ने खत्म कर तीन तलाक के खिलाफ मुस्लिम माता–बहनों को उचित अपीलीय कानूनी अधिकार प्रदान किया, जिससे कि उनकी वैवाहिक जीवन सुरक्षित हो सके। ''सुप्रीम कोर्ट ने आखिरकार तीन तलाक को लॉक कर ही दिया। उसके बाद तो शादीशुदा मोहतरमाओं की निकल पड़ी। एक ने अपने मियां को उस दिन खुशी के मारे चाय पिलाना भूल गई। मियां जी गुस्से में आ गए और बोले– 'जाओ मैं तुम्हें तलाक देता हूँ, तलाक! तलाक!! तलाक!!!' उसकी बीबी हँस पड़ी और जोर–जोर से हँसती रही और बोली कुबूल नहीं! कुबूल नहीं!! कुबूल नहीं!!!' शौहर जी हमेशा की तरह भड़क उठे– 'अरे ओ पैरों की जूती, तेरी इतनी हिमाकत? हमको जवाब दे रही है? लाहौल विलाकूवत। पहली बार मेरी हुक्मउदूली कर रही है? अपने शौहर की? या अल्लाह, ये क्या माज़रा है? तलाक! तलाक!! तलाक!!!' उनकी बीवी फिर तीन बार हँसी और बोली– 'वो दिन हवा हुए जब पसीना गुलाब था। मर्दों के दिन बीत गए। औरत का जमाना आया है। सोते से जागे हो शायद, पता नही क्या कि तीन तलाक अब इतिहास हो गया है। अवैध ! अब मुझे तलाक दोगे तो मैं थाने चली जाऊँगी, तुम देखते रहियो।''[4]

'औरतों पर डंडा' व्यंग्य–रचना में अपने अधिकारों एवं हितों की सुरक्षा को लेकर आंदोलन करने वाली महिलाओं पर लाठी बरसाने वाले पुलिस प्रशासन को व्यंग्य के घेरे में लिया है– ''हमने कहा– 'आपने बड़ा ही पवित्र काम किया। वीरों को यह कार्य शोभा भी देता है। हिजड़े ये काम नहीं कर सकते। आप हिजड़ों से कुछ श्रेष्ठ हैं। वे महिलाएँ पिटने लायक काम कर रही होंगी, तभी आपने उन पर डंडे बरसाए होंगे?' सिपाही अकचकाते हुए बोला– 'जी हाँ, आप ठीक कह रहे हैं। महिलाएँ अपनी सुरक्षा की माँग को लेकर धरना दे रही थीं। ये क्या बात हुई? क्या वे अपनी सुरक्षा खुद नहीं कर सकती थी? बेफालतू में हम सबकी नींद हराम कर रही थीं। रात–रात भर बैठी रहतीं थी धरने पर हमारे साहब को यह बुरा लग रहा था। उनकी नींद हराम हो रही थी। देखिये बर्दाश्त की सीमा होती है? जब बर्दाश्त नहीं हुआ तो साबजी ने लाठी–चार्ज का आदेश दे दिया। बस क्या था, हमको मौका मिल गया। जी भर कर भड़ास निकाली और लड़कियों को दौड़ा–दौड़ा कर पीटा।''[5]

'रमंते तत्र बलात्कारी' कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक बलात्कार की घटनाएँ घट रही है। आज देश का ऐसा कोई राज्य, जिला, कस्बा अथवा गाँव नहीं जो इन नर–पिशाचों से बचा हो। क्या बूढ़ी, क्या जवान, मासूम बच्ची जो इनकी नज़र में पड़ जाए, कुकर्म करके फरार हो जाते हैं। देश एवं राज्यों में इस अपराध को रोकने के लिए कड़े कानून बने, लेकिन अब तक इस तरह की पशु–प्रवृत्तियाँ घटनाएँ रूकी नहीं। नारी को पूजने वाले देश में उनकी अस्मत लूट की घटनाएँ बढ़ती ही जा रही है। ''मैंने पूछा– 'तुम्हारी कोई लड़की है?' वो बोला– 'दो–दो लड़कियों का बाप हूँ। अब ये मत कहना कि अभिशाप हूँ।' मैंने कहा– 'तुम बहुत बड़े अभिशाप हो। सोचो, कल को तुम्हारी बच्चियों से कोई गलत काम करे तो तुमको कैसा लगेगा?' वो बोला– 'मार डालूँगा

उसको।' 'लेकिन वो भी फरार हो गया तो? न मिला तो?' मेरी बात सुनकर बलात्कारी गंभीर हो गया, बोला– 'ठीक कहते हैं आप, मुझे सोचना चाहिए। मेरे साथ भी हो सकता है।' मैंने कहा– 'अब तुमको अकल आ रही है? कुकर्म करने के पहले सोचा कि जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, वो एक दिन खुद उसी में गिरता है।' बलात्कारी मौन हो गया, मैंने कहा– 'हमारे यहाँ स्त्रियों की पूजा होती है। कन्या–भोज की प्रथा है। देवियों को पूजता रहा है देश और तुम जीवित देवियों के साथ गलत काम करते हो ? पिछले जन्म में कोई शैतान रहे शायद?''[6]

आगे गिरीश पंकज 'आज की जनधारा' पत्रिका के माध्यम से समाज में बलात्कार की बढ़ती घटनाओं पर संवेदना अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं कि आज बलात्कारियों को कानून की नहीं जनता के हाथों सौंपने की जरूरत है, क्योंकि ये आरोपी बड़ी आसानी से कानून के शिकंजे से बच निकलते हैं। इनके लिए जन–अदालत ही सही है। वर्तमान में महिलाओं और बच्चियों को इन भेड़ियों से संभलकर रहने की आवश्यकता है। हो सके तो वे हमेशा परिवार या झुंड में रहें, अपने बचाव के लिए कुछ हथियार साथ रखें, ताकि इन दरिंदों से अपनी जिस्म–आबरू की रक्षा कर सकें–

''भेड़िऐ बचकर जाने न पाएं,
संभल कर रहना इस बस्ती में कि
उग आए हैं घने आदमखोर से जंगल।
जहाँ घूम रहे हैं चंद भेड़िए
सूँघते रहते हैं कोमल जिस्मों को
और मौका पाते ही टूट पड़ते हैं यकायक।
ओ लड़कियों !!
रखना ही होगा तुमको अपने पास
धारदार हथियार तभी बचेगी जान
चौकस निगाह देखती रहे चारों ओर।
एक से भले दो हो तो बेहतर
हर आदमखोर जानवर से निपटने के लिए
हथियार के साथ–साथ चाहिए हिम्मत
उसे भी रखना होगा संजोकर।
बेहद खतरनाक समय में जी रहे हैं हम सब
हर युग में स्त्री जूझती रही है नीचों से
अब फिर से जूझना है मगर पूरी तैयारी के साथ
अब भेड़िए बचकर जाने न पाएँ।''[7]

इसी प्रकार 'चमत्कारी बाबा उर्फ बलात्कारी बाबा' में ऐसे पाखंडी साधु बाबाओं पर व्यंग्य–प्रहार है जो धर्म–कर्म, भक्ति–साधना के नाम पर आश्रम स्थापित करके अथवा विभिन्न तरह के लालच दिखाकर भोली–भाली औरतों, लड़कियों की अस्मत लूटते हैं। इस तरह के कई एक ढोंगी बाबा कानून के पींजरे में कैद हैं तो कई

आज भी पाखंड का दरबार लगाए समाज में खूले सांड की भाँति घूम रहे हैं। ''रात को बाबा लोग एक ही पाप करते हैं भाई, बलात्कार नामक प्रिय क्रिया। इसका उनको लम्बा अभ्यास रहता है। मुझे एक बार बलात्कारी बाबा ने बताया था कि यह भी एक तरह का योग है। रेप–योग। इसके लिए लम्बी साधना चाहिए। लड़कियों को अपने जाल में फँसाना पड़ता है। पैसे का लालच दो, नौकरी लगाने का झांसा दो, उसके घर के लोगों की कुछ मदद करो और उसके बाद अपने योग को सिद्ध करो। कोई लड़की बस में नहीं आ रही है तो उसे ज़हर दे दो मार कर आश्रम में ही दफना दो।''[8]

'गर्भ हिंसा हिंसा न भवति' भ्रूण हत्या या गर्भपात कानूनन अपराध है, इसके लिए सजा का प्रावधान भी निर्धारित है। फिर भी लोग–बाग 'पुत्र–रत्न' की इच्छा में डॉक्टरों से लिंग–परीक्षण कराकर लड़कियों को माँ के पेट में ही मार डालते हैं। ''राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो से प्राप्त जानकारी के अनुसार 2011 के दौरान देश में कन्या भ्रूण हत्या के कुल 132 मामले दर्ज किए गए। इस सिलसिले में 70 लोगों को गिरफ्तार किया गया, 58 के खिलाफ आरोप–पत्र दायर किया गया और 11 को दोषी ठहराया गया।''[9] रचनांतर्गत भ्रूण परीक्षण एवं गर्भ हत्यारों पर व्यंग्य–प्रहार है– ''हम लोग नई सदी की बात करते हैं, लेकिन दिमागी तौर पर मध्ययुगीन मानकिता के गलियारे में टहल रहे हैं। ज़्यादातर लोग नहीं चाहते कि लड़की हो। ये लोग सोचते हैं लड़की होने का मतलब है जीवन भर की जमा–पूँजी स्वाहा। मित्र ने कहा– 'क्योंकि लोग आज भी औरत को कुचलने– मसलने के पक्षधर हैं। अब तीन तरह के लोग पाए जाते हैं।

एक सती–प्रथा के समर्थक, दूसरे बहू को जलाकर मार डालने के पक्षधर और तीसरे गर्भ–परीक्षण के बाद कन्या की भ्रूण–हत्या के समर्थक।' मित्र थोड़ी देर चुप था, फिर बोला– 'कन्या विरोधी लोगों से एक प्रष्न पूछा जाना चाहिए कि अगर पचास–साठ साल पहले भ्रूण–परीक्षण संभव रहता और पुरुष प्रधान समाज कन्याओं का जन्म न होने देता तो वर्तमान पीढ़ी कैसे पैदा होती? मतलब साफ है कि औरत न केवल सृष्टि का विस्तार करती है, वरन् हमारी परंपरा को भी विकसित करती है, जिसके कारण हम माँ–बहन, बेटी जैसे रिश्तों के बिना या यूँ कहें तो सचमुच औरत के बिना ये दुनिया कितनी मनहूस हो जाएगी। ममता और प्रेम का पहला पाठ तो औरत ही पढ़ाती है। उसका रूप कैसा भी हो। अच्छा हो कि हम गर्भ–परीक्षण की मानसिकता को इतिहास के गर्भ में ही पड़े रहने दें।''[10]

वर्तमान में नारी–समाज घर की बंद चौखट से निकल कर सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक अर्थव्यवस्था और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में तथा आधुनिक भारत की विभिन्न पहलूओं में अपना लोहा मनवा रही हैं, किंतु समाज में उनके प्रति उपेक्षा का भाव थमा नहीं है, वह आज भी शोषण, अत्याचार, हिंसा की शिकार है, समाज में पशु–वृत्तिय घटनाएँ दिनों–दिन बढ़ती जा रही है, माँ के गर्भ तक में बेटियाँ सुरक्षित नहीं हैं। श्रम–शक्ति में नारी–समाज की भागीदारी और उनकी सुरक्षा का मुद्दा कई बार उठता रहा है, फिर भी प्रभाव निष्क्रिय दिखलाई पड़ते हैं। अतः गिरीश पंकज ने नारी–समाज के जिन संघर्षों एवं समस्याओं को अपनी व्यंग्य–रचनाओं में अभिव्यक्त किया है, वह बहुत ही गंभीर, मार्मिक एंव संवेदनशील और विचारणीय विषय हैं। गिरीश पंकज ने नारी–समाज पर हो रहे अत्याचार, हिंसा, शोषण को अपने व्यंग्य का निशाना बनाकर उन्हें सुरक्षा प्रदान एवं जागरूक करने और अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने का संदेश दिया है।

संदर्भ-ग्रंथ :-

1. पंकज, गिरीश. मूर्ति की एडवांस बुकिंग. रायपुर : शताक्षी प्रकाशन, 2010, पृ. 100.
2. वही, पृ. 101.
3. वही, पृ. 123.
4. पंकज, गिरीश. मौसम है सेल्फियाना. कानपुर : अमन प्रकाशन, 2019, पृ. 160.
5. वही, पृ. 126.
6. पंकज, गिरीश. पूँजीवादी सेल्फी. नई दिल्ली : किताब वाले प्रकाशन, 2019 पृ. 120.
7. आज की जनधारा. वर्ष–29, अंक–14, रायपुर, सोमवार 02, दिसम्बर 2019, पृ. 8.
8. पंकज, गिरीश. मौसम है सेल्फियाना. कानपुर : अमन प्रकाशन, 2019, पृ. 151.
9. vikaspedia.in – स्रोत महिला एवं बाल विकास विभाग, पत्र सूचना कार्यालय.
10. पंकज, गिरीश. मौसम है सेल्फियाना. कानपुर : अमन प्रकाशन, 2019, पृ. 65–66.

मो. 9302148050, chunnisahu92@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 38-42
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

कुमाऊंनी लोकगीत और सामाजिक परम्परा

–महिपाल सिंह कुटियाल
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, इतिहास, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेरीनाग, पिथौरागढ़

सार :–

संगीत एक बहुआयामी कला है और पहाड़ की संस्कृति, लोक साहित्य ओर लोक कलाओं को संगीत से भी दर्शाया जाता है, क्योंकि यहां के संगीत का मानव समाज, प्रकृति, वन, जंगल, परम्परायें, संस्कार के साथ घनिष्ट सम्बंध है। इसलिये संगीत सभी कलाओं में सबसे अच्छा माना जाता है। संगीत समाज की संस्कृति, इतिहास, समस्त जीवन का परिचय और भाषा एवं शारीरिक विकास का माध्यम माना गया है। वह चाहें किसी भी प्रदेश या देश का हो सदैव मधुरता, सरसता, शुद्वता को बयान करता है। क्योंकि कलाकारों, कवियों, नर्तकों, मूर्तिकार और संगीत उस राष्ट्र के संस्कृति को उजागर करता है।

प्रस्तावना :–

भारतीय इतिहास में सभी शासकों ने अपने शासनकाल में संगीत को बढ़ाया दिया। क्योंकि संगीत एक दिव्य कला है जो हमारी संस्कृति में मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। वेद, स्मृतियां, पुराण, उपनिषद और पौराणिक ग्रंथों में भी संगीत का उल्लेख मिलता है। भारतीय संगीत का आधार ही सत्यं शिवं सुंदरम के भाव से घिरा रहता है। संगीत सत–चित–आनंद प्राप्ति का साधन हैं। सामवेद से निकला संगीत मानव समाज के लिये सदा ही लाभकारी सिद्व रहा है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक क्षेत्रों में समान रूप से उपकारी, चिकित्सकीय आधार पर प्रयोग किया जाता रहा है। हिमालय में मानव का निवास आदिकाल से ही था। जो यहां के मनुष्य की चित्रकारी, नृत्य तथा अभिनय लोकगीतों से अभिव्यक्त किया जाता रहा है। पर्वतीय लोक गीतों की परम्परा बहुत पुरानी है, यहां के लोकगीत धार्मिक, रीति–रिवाजों से परिपूर्ण होने के साथ–साथ प्रकृति और प्रर्यावरण–सामाजिक चेतना से जुड़े हैं। ये भी सच है, कि यहां के लोक गीत का मूल रूप सुरक्षित नहीं है।

पहाड़ों में सबसे पहले अपने पित्रों को पूजा जाता है उनसे आशीर्वाद लेने की प्रथा है, कि जो धार्मिक, या संस्कार, या कोई परम्परा को सामाजिक रूप से पूरा करने के लिये उनका आह्वान किया जाता है। इस आहवान में आप हमें शक्ति दो, हमारे मार्ग को आसान बनाओं। पर्वतीय क्षेत्रों के गीतों का सम्बंध प्रकृति मानव, पशु पक्षी से भी सम्बंधित रहता है। इसमें न्यौली गायन पद्वति का सम्बंध प्रेमी के वियोग, श्रृंगार आदि से है। पर्वतीय स्थलों में कोयल की भांति काले रंग की मादा पक्षी का नाम न्यौली है जो अपने प्रेमी पक्षी से अथाह प्रेम करता था परंतु प्रियतम के बिछड़ जाने से उसे वनों, जंगलो, में ढुंढता रहता और उसके वियोग में मधुरगीत गाकर उसे खोजता, आज ये न्यौली पहाड़ी क्षेत्रों में प्रेमी वियोग गीत के रूप में गाया जाता है। पहाड़ी परम्परा में न्यौली का अर्थ नई नवेली अर्थात नये गीतों का सार है। जब पर्वतीय क्षेत्रों में नई नवेली बहु अपने पति के

याद में अपने पशु पक्षी के लिये चारा लाने जंगल जाती है तो वो भी अपने प्रेमी के याद में न्यौली गाकर इस परम्परा को सार्थक करते है। यह गीत वियोग के सम्पूर्ण विरह दशाओं का मार्मिक और सजीव समाज की स्थितियों का वर्णन करता है।

"चमचम चमक छी त्यार नाकै की फूली,
धार में धेकालि भै छै, जनि दिशा खुली।"

अर्थात– ऐ प्रेमी तेरे नाक की फूली चमचम चमकती रहे, तुम जब शिखरों पर प्रकट हुए तो दिशांए खुल गयी हो।

जोड़ गीतों में लोक कलाकार समाज के लोक जीवन में व्याप्त विभिन्न आस्था और कल्पनाओं को व्यक्त करते हैं। यह भी सच है कि न्यौली में लयात्मक अंतरा जोड़कर जो गीत गाया जाता है उसे जोड़ कहा जाता है। इसमें धार्मिकता, आस्था, प्रेम भाव, सुंदरता, संयोग और विप्रलंभ का वर्णन कर गाया जाता है। जैसे –बरत बरुँलो। नथुली ले पॉसो लगै, छात्यूनी मरूँलो। अर्थात इस अंतरा में मन की स्थितियों को दर्शाया गया है जैसे नदी की भांति छलकता पागल यौवन किसी की परवाह किये बगैर अपने हृदय में बस एक ही मूर्ति को बसाता है और कहता है यदि मुझे भुलाने का प्रयास करोगे तो ऐ प्रेमी तेरी छाती पर ही फांसी खा कर मर जाऊंगी।

कुमाऊं में नृत्य दृताल और संगीत की विशिष्ट शैली को चॉचरी कहा जाता है, यह मेलों, उत्सवों और पर्वों तथा त्यौहारों पर गाये जाने वाला गीत है। यह नृत्य गीत होने के कारण इसमें सामूहिक रूप से स्त्री पुरूष दोनो भाग लेते हैं। इसमें गायक गोल घेरे के मध्य में और पुरूष तथा स्त्री दोनो गोल घेरे में एक दुसरे के कंधों पर हाथ रखकर दो कदम आगे फिर एक कदम पीछे की और रखकर चॉचरी नृत्य किया जाता है। इसमें मुख्य गायक को चॉचरियां या दुहरिया कह कर पुकारा जाता है। कई स्थानों पर इसे झोडा भी कहा जाता है। इसमें लोक कलाकार वाद्य यंत्र के रूप में हुडका बजाया करते हैं। चॉचरी की शुरूआत ईश्वर की वंदना, मंगल गीत के साथ साथ इसमें इसमें धार्मिक, लोकविश्वास, राजनीती, रीति–रिवाज के विभिन्न रूपों का उल्लेख कर गाया जाता है। चॉचरी में पर्वतीय पर्व, उत्सव के झांकियों को गीतों व नृत्यों के माध्यम से दर्शाया और दिखाया जाता है।

ऐसे अन्य नृत्य शैली के गीतों में छपेली प्रमुख है जो विवाह, मेलों, त्यौहारों के अवसर पर प्रेम सम्बंध पर हंसी–ठिठोली, नोक–झोंक करते हुए गाये जाते हैं इसलिये इसे दो प्रेमियों का नृत्य भी कहा जाता है। इसमें एक मुख्य गायक, एक नर्तकी व समूह में गाने वाले भी शामिल होते है। प्राचीन समय में नर्तकी एक स्त्री होती थी परंतु समय के साथ–साथ अब नर्तकी का स्थान पुरूष ने ले लिया है। इस नृत्य और गीत की विशेषता यह है कि अंतिम पंक्ति के साथ टेक पदों का प्रयोग कर द्रुत गति में गाया जाता है। जिसमें नर्तकी अपने अंग संचालन और भाव–भंगिमा से गीत के भावार्थ को अभिनय के द्वारा स्थानीय समाज की दशा प्रेम भाव को प्रदर्शित करता है।

दातुला की धार, भोलिया की हार।
काणा कमस्यार, पड़नी तुस्यार।
त्यार छन खेलीं ख्याला; मै नि औनी सार।

संगीत कला भी एक मानव व्यवहार है, जिसका उद्देश्य मानव व्यवहार को स्वर तथा ताल के माध्यम से

आंतरिक भावों द्वारा अभिव्यक्त करना है। जागर धार्मिक गाथाएं है जो किसी जीवित शरीर में मृत प्राणी या लोक देवता का अवतरण करने के लिये गाया जाता है। इसमें स्वर और लय की प्रधानता रहती है जिसकी सहायता से देवता का नृत्य करते हुए अपने चमत्कारों का प्रदर्शन रहता है। जागर के कई प्रकार भी है जैसे घणेली, बैसी, ख्याला, नौर्त। वहीं कुमाऊंनी समाज में देवी देवताओं के मंदिरों में सामूहिक रूप से जागर लगाई जाती है। जागर शब्द जागरण से लिया गया है। कुमाऊंनी समाज में ये मान्यता प्राचीन समय से चली आ रही है, यहां धार्मिक आस्थाओं पर बहुत विश्वास किया जाता है। घणेली जागर का ही एक रूप है जो कुमाऊंनी परम्परा और संस्कृति की पहिचान है। कुमाऊं में प्राचीन काल से ही घणेली में देवी देवताओं की गाथाओं को गाया जाता है, कुछ लोग इसे घटियाली भी कहते हैं। इस गायन शैली में जागर की भांति ड़मरू के साथ कांसे की थाली जिसे तांबे के तौली के ऊपर रखा होता है, दो पीतल की छड़ी से बजाया जाता है। ड़मरू लकड़ी का एक खोलनुमा आकृत है जिसमें दोंनो और बकरी की खाल की पुड़ी लगाई जाती है। इस डमरू का प्रयोग कुमांऊनी संस्कृति में घणेली के समय बहुत अधिक मात्रा में किया जाता है, क्योंकि यह अवनद्य वाद्य यंत्र के अंतर्गत आता है। जो व्यक्ति इस वाद्य यंत्र को बजाता है ओर शणेली (जागार) गाता है उसे जगरिया कहकर पुकारा जाता है।

उत्तराखंड के लोकगीत का सामाजिक जन चेतना व लगाव इतना अधिक था कि हर पर्व को वे प्रकृति से जोड़ते हैं। फूलदेई जो चैत के महीने मनाया जाता है इसे फूल देली औए फूल संक्रांत भी कहा जाता है सर्दी और गर्मी के बीच चैत माह का आगमन एक नये साल का, नई ऋतु का, नई फूलों के आने का संदेश के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने के लिये भी मनाया जाता है।

फूलदेई, फूलदेई, छम्मा देई
वैणी द्वार, भरी भकार
त्वें देली पूजूं बारम्बार
तू देली ऊनी रैं, मैं चौली पूजनी रौ
फूलदेई फूलदेई, तुमार भकार भरी जैं
हमार टुपर भरी जैं, फूल देई, फूल देई।

प्योंली, बुरांश, कचनार, सिलपाडी, सरसों, लाल, सफेद, पीले फूल के साथ गुड़ चावल और काष्ठ कला व वन सम्पदा से प्राप्त रिंगाल, निंगाल की टोकरी की सजावट कर गांव, मुहल्ले, के आबाद और खुशहाली के लिये बालिकायें प्रत्येक घर के दरवाजे पर जाकर ये गीत गाते हैं। इसमें प्रकृति को बचाने का संदेश भी रहता है। फूलदेई में बालिकायें कहते हैं कि तुम्हारे घर अन्न–धन का भंडार हो जैसे तुम्हारे दरवाजे (देहरिया) फूलों से भरी है वैसे ही सम्पन्नता बनी रहे। इस पर्व में यह भी संदेश दिया जाता है कि सभी को प्रकृति के साथ अपना सम्बंध बनाना चाहिये। इस लोक पर्व की कई कथाए हैं।

एक बार भगवान शिव अपनी शीतकलीन तपस्या में लीन हुए, कई वर्ष, कई ऋतुए बीत गये लेकिन भगवान शिव की तंद्रा नहीं टुटी। जिस कारण मां पार्वती और नंदी आदि शिव गण उदास रहने लगे, तब माता पार्वती ने महादेव की तंद्रा को तोड़ने के लिये कैलाश में प्योंली के पीले फूल को तोड़कर पीताम्बरी माला बनाकर सबको बालक रूप परिवर्तित कर इन प्योंली के फूलों को भगवान शिव पर बरसाया ताकि इन फूलों की खुशबु से उन्हे जगाया जाये। सभी ने ऐसा ही किया परंतु महादेव के तंद्रा भंग से उन्हें क्रोध न आ जाये। इसलिये

सभी को बालक रूप दिया। यदि उनकी तंद्रा टुटी तो वो बच्चों को देख क्रोध न करें। ऐसा ही हुआ जब भगवान शिव पर वो प्योलीं के फूल बरसाये गये तो वो फूलों से खेलने लगे तभी से यह पर्व मनाया जाता है। क्योंकि उस दिन चैत मकर सक्रांत के साथ नये ऋतु का समय भी था। तभी से इस पर्व को मनाया जाता है।

फूलदेई पर्व के साथ चौतुआ लोक गीत गाने वाले गायक घर–घर जाकर गीत गाते हैं, जिसके बदले में इन लोगो को अन्न, वस्त्र और वस्तुऐं दिये जाने की परम्परा है। इसी चैत के महीने में कुमांऊ और गढवाल के पर्वो में भिटौली एक महत्वपूर्ण परम्परा है। यह उत्सव प्रेम सम्बंधों का प्रतीक है। चैत माह में पुत्री और बहिन को माईके की और से दी जाने वाली भेंट को ही भिटौली कहा जाता है। इस चौतुआ गीत में सामाजिक सम्बंधों को उजागर किया जाता है। चैत्र मास में गाये जाने वाले इस गीत के बारे में लोक कथा यह है कि– मानदेव की पत्नी कौशिला को स्वप्नलोक में पाताल के राजा कालीनाग के बाग़ में एक अद्भूत फल का पेड़ दिखा और उस फल को खाने की इच्छा व्यक्त की। तो राजा मानदेव कई दिनों की यात्रा के बाद पाताल लोक पहुंचा। कालीनाग ने इस शर्त पर वह फल कोशिला को दिया, कि यदि उनकी पुत्री हुई तो उसका विवाह कालीनाग से करना होगा। कालान्तर में उनकी पुत्री गोरिधना और पुत्र सचदेव का जन्म हुआ और शर्त के अनुसार मानदेव ने अपनी पुत्री का विवाह कालीनाग के साथ कर दिया। विवाह के पश्चात गोरिघन माईके कभी नहीं आ पाई। जिस कारण बारह वर्ष के पश्चात सचदेव उससे मिलाने पाताल लोक गया दोनों के मिलन से कालीनाग की बहिन भागा को ईर्ष्या होने लगी। जब सचदेव अपनी बहिन को माईके लेकर आ रहा था। तब भागा ने अपने भाई कालीनाग को कहा, कि सचदेव गोरिघन का भाई नही लगता अवश्य कोई प्रेमी होगा। इस प्रकार के लांछन लगने पर सचदेव ने आत्महत्या कर ली। जब कालीनाग को सच पता चला तो उसने भी आत्महत्या कर ली। कथा के अनुसार इस घटना के बाद विवाहिता पुत्री, बहिन को माईके वालों के और से चैत माह में भिटौली दी जाती है।

ऐगे ऋतुरैणा, मेरी बैणा, नरैणा, यो भेटूली को मैणा
मिलत बोली चब्वे, भूला आलू।
खाजा कलेऊ मी कूं ल्यालू।।

मेरी बहिन नरैणा, ऋतुरैण बसंत आ गयी है यह भिटौली का महिना है बहिन आश लगाती है कि भैया आयेगा खाजा, कलेवा लायेगा। पर्वतीय लोक जीवन में यहाँ के लोगो का स्थानीय देवताओं में बहुत आस्था रहता है। पत्नी लोक देवता से अपने पति को सकुशल घर लौटा लाने की प्रार्थना करती है। मंगल गीत गाते हैं।

उत्तराखण्ड में प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के लिए हरेला पर्व मनाया जाता है और इस दिन पहाड़ के लोग ऋतु पर्व के रूप में लोक गीत गाकर जन चेतना और जागरूकता के लिए वृक्षों का रोपड़ की परम्परा को सदियों से निभाते आ रहे हैं जैसे–

लाग सातूँ – लाग आठूँ।
लाग दशै– लाग हरियाली।।
लाग सिरी – पंचमी लाग बग्वाली।
जी रयै जागि रयै, हिमालयन में यू छन जाणै।।
दुबाक जाड़ा छन जाणौ, गंगा कवलू छन जाणौ।

जी रयै जाबक रयै।

तात्पर्य यह है, कि वन सम्पदा को हम अपने सिर माथे पर लगाते हैं, और यह कामनायें करते हैं कि हिमालय की चोटियां में बर्फ रहने तक, दूब घास की जड़े रहने तक, गंगा में जल रहने तक चिरंजीवी रहो, जीते रहो। यह पर्व बताता है कि दूब घास, पेड़ पत्तियां, गंगा नदी और प्रकृति के होने तक ही मनुष्य का अस्तित्व है। इसलिये हमारा कर्तव्य है, कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करें।

निष्कर्ष :-

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, नया पुराने को प्रचलन से बाहर कर देता है। लेकिन कुमाऊँ अंचल में गाये जाने वाले गीत काफलिया, रूडी एवं हिनौल, ऋतु गीत आज प्रचलन में नही है। क्योंकि इन लोक गीतों के लिए आज खेती के पुराने तौर तरीके न रहे, जमींदारी न रही, तब श्रम गीत हुडकी बौल भी न रहा वन, जंगल काटते गये तो पशु को हेय समझा जाने लगा। घसियार और घसियारिन न रही तो न्यौली, शगनौल कोन गाने लगा। प्रेम जनित त्याग को पागलपन समझने वाले मालूशाही, सुनपति शौका की पुत्री राजुली के अमर प्रेम को भूल गए। परन्तु यहाँ बसंत आगमन पर बसंत पंचमी मनाई जाती है। शीतकाल के बाद सम्पूर्ण प्रकृक्ति में नव जीवन संचार होता है, तो चैत के महीने में ऋतुरैणा गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में सुख–दुःख के भाव के साथ विरह वेदना और करुणागीत शामिल रहते हैं। वर्षा ऋतु में हरियाली की पूजा और वन सम्पदा हरा भरा रहे इसके लिए हरियाला या हरेला पर्व मनाया जाता है। यहाँ की लोक गाथाओं में इतिहास का मिश्रण स्थानीय विशेषताओं को उल्लेखित करता है, आज जरुरत है, अपने क्षेत्रों की लोक बोलियाँ, लोकगीतों के संरक्षण की और ध्यान देंने की। ताकि सामाजिक व प्राकृतिक जीवन में समरसता बना रहे पौराणिक गाथाओं का पुन संकलन किया जाये और अपने लोक गीतो के माध्यम से इनका प्रसार किया जाये।

संदर्भ :-

1. जोशी, दिनेश, 1988, कुमाऊंनी लोकगीतों में पर्यावरण शिक्षा, पिथौरागढ, हिमालयन अध्ययन, पेज – 22
2. शर्मा, डी०डी०, 2007, उत्तराखण्ड़ के लोकोत्सव एवं पर्वोत्सव, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी, पेज 60
3. पोखरिया, देव सिंह, 2005, न्यौली सतसई 1, ज्ञानोदय प्रकाशन नैनीताल, पेज 13, पेज 24
4. डा० दिवा भट्ट, 2012, हिमालयी लोक जीवन, प्रकाश पब्लिकेशन, अल्मोडा, पेज 159,160,164
5. डा० पोखरिया, देव सिंह, 1994, लोक संस्कृति के विविध आयाम मध्य हिमालय के संदर्भ, अल्मोडा, अल्मोडा बुक डिपो, पेज 63
6. डा० पोखरिया, देव सिंह, 1996, कुमाऊंनी लोक जीवन, अल्मोडा बुक डिपो, पेज 2, पेज 10, पेज 14
7. बिष्ट, प्रो०, शेर सिंह, 2008, पर्यावरण एवं भारतीय संस्कृति, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी, पेज 123
8. चातक, गोविंद, 1996, गढ़वाली लोक गाथाएं, नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, पेज 78
9. वैष्णव, यमुनादत्त, 1977, कुमाऊं का इतिहास, मार्डन बूक स्टोर्स, पेज 295
10. कृष्ण चंद्र, उत्तराखण्ड पत्रिका, अक्टूबर –2018, पेज 28, पेज 30

mahipalkutiyal@gmai.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 43-47
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय क्लासिकल संगीत में महिलाओं का योगदान

–डॉ. तमसा

सहायक प्राध्यापिका संगीत (वादन), राजकीय स्नात्तकोत्तर नेहरू महाविद्यालय, झज्जर।

संगीत का इतिहास कलाकारों के संघर्ष का इतिहास हैं। कलाकार चाहें पुरुष हो अथवा महिला, ईश्वर की अदभुत् देन हैं। हमारा इतिहास सुसंस्कृत महिलाओं की कलाकृतियों से परिपूर्ण है। क्षेत्र चाहे वीरता का हो अथवा कला का हमारे देश की महिलाओं ने उसमें प्रशंसनीय योगदान दिया हैं। कलाकृतियों में जीवन के संकटों को झेलने की अदम्य शक्ति होती हैं। इतिहास की तमाम शिकायतों, अत्याचारों और मजबूरियों के बोझ में दबी हुई महिला जीवन में यदि कुछ हासिल कर लेती हैं, तो उसके लिए वह सचमुच ही एक उपलब्धि हैं। मुसीबतों, तकलीफों एवं संघर्ष के गर्भ से ना जाने कितनी महान विभूतियों का जन्म हुआ जिन्होंने अपने युग को पूर्ण रूप से प्रभावित कर उनकी विभिन्न दिशाओं को बदल दिया। ऐसी महान विभूतियाँ युग विशेष की धारा में स्वयं प्रभावित नहीं होती वरन अपने प्रवाह में युग को बहा देती है। ऐसी ही अनगिनत भारतीय संगीत महिलाये हैं जिनके पद चिह्नों के निशान आज भी संगीत की पृष्टभूमि पर देखे पढ़े व सुने जा सकते है। कुछ संगीतज्ञ महिलाओं के संगीत सफर का जिक्र कर रही हूँ।

शास्त्रीय गायन महिलाएँ :–

1. लक्ष्मीबाई बड़ौदकर :–

आपका मूल नाम श्रीमती लक्ष्मीबाई जाधव। कोल्हापुर–राज्य में सन 1902 ईसवी में, मराठा–कुल में आपका जन्म हुआ। आपकी माता का नाम यशोदा बाई तथा पिता का नाम परशुराम था। गायन सम्राट स्वर्गीय अल्लादिया खां साहब के भाई, खां साहब हैदर खां के द्वारा अपने संगीत की शिक्षा ली। सन 1922 से 45 ईस्वी तक बड़ौदा–दरबार में दरबार–गायिका के पद पर आप रही। बाद में आप मूल स्थान कोल्हपुर चली गई। संगीत –कार्येक्रम मैसूर, इन्दौर, कश्मीर, नागपुर, राजपूताना और कठियावाड़ा आदि में सफलतापूर्वक हुये, जिससे आपकी ख्याति चारों और फैल गई। हिज मास्टर्स वॉयस तथा यंग इंडिया कंपनी द्वारा आपके लगभग 50 ग्रामोफोन रेकार्ड प्रकाशित किये गए। आकाशवाणी, बॉम्बे–केन्द्रो से आपके संगीत कार्य्रक्रम प्रसारित होते रहे। ख्याल ठुमरी में आपकी विशेषता रही। लक्ष्मीबाई की आवाज मीठी व् सुरीली होने के कारन सारंगी के साथ ऐसे मिल जाती, जैसे दूध में पानी। आपकी ताने दानेदार जिसमें स्वाभिक कम्पन भी रहा।

2. मोघूबाई कुड़ीकर : –

महिला गायिकों में शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करने वाली श्रीमती मोघूबाई को जिन व्यक्तियों ने सुना, उन्हें भली प्रकार विदित है कि संगीत की बैठकों में आदि से अंत तक शास्त्रीय संगीत के प्रेमी कितने दतचित होकर

आपका गयां सुनते। आपका जन्म सन 1904 हुआ। एक बार प्रसिद्ध गायक उस्ताद अल्लादिया खां को मोघूबाई का गाना सुनने को अवसर मिला। इनकी सुरीली आवाज से उस्ताद बहुत प्रभवित हुए और इन्हें तालीम देने और अपनी गायकी सिखाने को तैयार हो गए। कुछ समय तक उस्ताद से संगीत शिक्षा पाने के पश्चात् मोघूबाई बॉम्बे जा कर रहने लगी। बॉम्बे में अपने वशीर खां तथा आगरा वाले विलायत हुसैन साहब से तालीम प्राप्त की। उस्ताद अल्लादिया खां बॉम्बे आकर रहने लगे। मोघूबाई ने फिर से अपनी तालीम शुरू करने की प्रार्थना की। मोघूबाई को घराना बदलने में बड़ी असुविधा का सामना करना पड़ा। अपने गुरु के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखते हुए, तालीम जारी रखी। गोद में बच्चा और एक हाथ में तानपूरा लेकर आप रियाज करती थी तथा घर–गृहस्थी के सभी कामो को पूरा करते हुए संगीत शिक्षा के लिए समय निकाल लेती थीं। मोघूबाई का संगीत के प्रति अटूट अनुराग देखकर अपने घराने की कठिन गायकी को उस्ताद ने इन्हे लगन से आतमसात कराया।

आज खां साहब अल्लादिया खां के घराने की गायकी को सही रूप में प्रदर्शित करने वाली गायिकाओं में मोघूबाई और केसरबाई केरकर के नाम आज भी आदर से लिए जाते है। कौन सा स्वर, किस परिणाम में, कितने समय तक और कितने विस्तार में लेना चाहिए, यह संतुलन आपकी गायकी की महत्वपूर्ण विशेषता रही। श्रोताओं के ऊपर स्वरों के अनुकूल प्रभाव डालने में जिस संयम और धैर्य की आवश्यकता होती है, उसे भी आप अच्छी तरह समझती थीं। ताल की एक आवृति में किसी भी मात्रा से सम पर आते समय मुखड़े की बंदिश में बारम्बार नवीनता पैदा करना मोघूबाई की मौलिक कल्पना–शक्ति का परिचायक रहा। सन 1969 में आपको संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार मिला। सन 1974 में भारत सरकार ने इन्हें पदमभूषण के अलंकरण से विभूषित किया। 10 फरवरी 2001 बॉम्बे में आप अपनी सांसारिक यात्रा पूरी कर गई।

3. एम.एस.सुब्बलक्ष्मी :–

संगीत भाषा की सीमाओं से परे है और उसकी अपनी भाषा है। मैं नहीं मानती कि हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत को एक दूसरे के निकट लाने की आवश्यकता है। अच्छा होगा हर संगीत पद्धति अपनी परम्परा कायम रखे और मिश्रण के लिए बाध्य करने का प्रयास न किया जाए। उपयुक्त विचार दक्षिण–भारत की विख्यात गायिका श्रीमती एम. एस. सुब्बलक्ष्मी के है, जिन्होंने काफी प्रतिष्ठा अर्जित की। दक्षिण–भारत की ये गायिका भारत के कोने–कोने में तो लोकप्रिय हुई ही, विदेशों में भी काफी ख्याति मिली। यह इस गायिका की प्रतिभा का ही परिणाम है कि जिस प्रकार दक्षिण के श्रोता उनके गायन से प्रभावित होते रहे, उसी प्रकार उतर–भारत के श्रोता रसिक। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, मलाया, बर्मा, दक्षिण–अफ्रीका, पूर्वी–अफ्रीका, ब्रिटेन, अमेरिका, संयुक्त अरब गणतंत्र आदि देशों में सुब्बलक्ष्मी लोकप्रियता उनके व्यक्तित्व, कर्णस्वर आवाज, कठोर साधना, जन्मजात प्रतिभा, गायन चातुर्य, चरित्र एवं विन्रमता के कारण। सुब्बलक्ष्मी का जन्म ही संगीत–परिवार में हुआ और महान पोषक उनकी माता उनकी पथ–प्रदर्शक रहीं। दस वर्ष की आयु में वह अपनी माता के गायन में संगति करने लगीं। सत्रह वर्ष की आयु से ही वह मद्रास–संगीत–अकादमी जैसी संस्थाओं में एकांकी कार्यक्रम प्रस्तुत करने लगीं।

सन 1944 में बॉम्बे में आयोजित अखिल–भारतीय संगीत सम्मेलन में उनके कार्यक्रम तथा मीरा फिल्म प्रदर्शित होने के बाद सुब्बलक्ष्मी की ख्याति पूरे भारत में फैल गई। सन 1954 में राष्ट्रपति ने आपको पदमभूषण के अलंकरण से विभूषित किया और सन 1956 में शास्त्रीय कर्नाटक–संगीत के लिए उन्हें राष्ट्रपति–पुरस्कार

प्रदान किया गया। सन 1968 में सुब्बलक्ष्मी ने एडिनबरा अंतराष्ट्रीय समारोह में भाग लेने के लिए प्रथम बार यूरोप की यात्रा की। इस महान गायिका को भारत के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 1998 में भारत रत्न से नवाजा गया। 11 दिसंबर 2004 मद्रास में आप अपनी सांसारिक यात्रा पूरी कर गई।

4. उमा देवी (टुन-टुन) :-

एक ऐसी पार्श्वगायिका जिन्हें हास्य अभिनय के लिए जाना जाता है। शरीर में भारीपन और मोटे होने के कारन उन्हें टुन–टुन नाम दिया गया और वो इसी नाम से जानी गई, याद भी आ गया होगा। उमा देवी का जन्म 11 जुलाई 1923 में उत्तरप्रदेश में हुआ, पर क्या आप जानते है उमा देवी २३ वर्ष की आयु में मुंबई–नगरी में आई। यहाँ उमा देवी संगीत वाग्गेकर (Composer) नौशाद अली से मिली और अपने गायन के शौक को बया किया। उन्होंने नौशाद अली, ए.आर.केदार, एस.एस.वसन जैसे संगीत निदेशको, फिल्म–निर्माताओं के साथ काम किया। उमा देवी ने सबसे पहले फिल्मी दुनिया में एक पार्श्वगायिका के रूप में कदम रखा। उनके गाये गये गीत आज भी उतने ही मनमोहक लगते है जितनी लोकप्रिता उन गीतों की तब रही जब ये गाये गए।

1947 में नौशाद अली निर्देशक द्वारा तैयार गीत अफसाना लिख रही हूँ दिल–ए–बेकरार का ये प्रसिद्ध गीत आज भी कई संगीत महफिलो की रौनक है। इस गीत के अलावा ये कौन चला मेरी आँखों के सामने, आज मची है धूम झूम खुशी में झूम, बेताब है दिल–दर्द–ए–महोब्बत के असर से, काहे जिया डोले, दिल को लगा के हमने कुछ भी न पाया, साँझ की बेला जैसे बेहतरीन गीतों को गाने वाली मधुर आवाज आजभी दिल को छू लेती है। उमा देवी का पहला गीत अफसाना लिख रही हूँ दिल–ए–बेकरार का आँखों में रंग भर के तेरे इंतजार का इस गीत में उनकी आवाज सुन कर लगता है कि जब वह मुंबई आई कितने सपने ,रंग और बहुत मधुर आवाज अपने साथ लेकर आई। हर क्षेत्र में चुनौतियों का सामना सभी के लिए है। उमा देवी के लिए ये चुनौतियां इतनी बडी हो गयी की एक मधुर आवाज की पार्श्वगयिका हास्य अभिनेत्री बन कर रह गई और फिल्मी दुनिया को इस शख्सियत की आवाज से महरूम होना पड़ा। 24 नवम्बर 2003 में मुंबई में इनका निधन हो गया।

शास्त्रीय वादन महिलाएं :-

1. अन्नपूर्णा देवी –

उस्ताद अल्लाउदीन खां उदय शंकर की नृत्य–पार्टी के साथ विदेश भ्रमण पर थे, मैहर नामक कस्बे में सन 1927 में पूर्णिमा के दिन उनकी पुत्री का जन्म हुआ। मैहर के राजा ने उस लड़की का नाम अन्नपूर्णा रखा। बचपन से ही अन्नपूर्णा को खां साहब ने सितार की शिक्षा देनी आरम्भ कर दी थी। सितार की शिक्षा 1940 तक चली, इसके बाद उस्ताद ने सितार की शिक्षा बंद कर सुरबहार का अभ्यास शुरू करा दिया। सन 1941 में पंडित रवि शंकर साथ इनका विवाह हुआ। तत्पश्चात पिता की आज्ञा लेकर पति–सहित इप्टा संस्था के साथ अन्नपूर्णा शंकर भारत भ्रमण के लिए निकल पड़ी। पंडित जवाहरलाल नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया मंच पर अभिनीति की जा रही थी। इसमें पार्श्व से अन्नपूर्णा शंकर वादन किया करती थीं।

श्रीमती अन्नपूर्णा को रागों में यमन कल्याण और मालकौंस तथा तालों में चौताल और धमार बहुत प्रिये रही। सेनी घराने की सारी विशेषताएँ नई कल्पनाओ और नए रूप को लेकर इनके वादन में दृष्टिगोचर होती थीं। जनता में श्रीमती अन्नपूर्णा बहुत काम अपना प्रदर्शन करती थीं। इसका कारण पूछने पर आप प्रत्युत्तर में कहती थीं –मेरे पिता जी ने मेरे शिक्षण काल में मुझसे कहा था कि मेरा संगीत जनता में प्रदर्शित करने के लिए

नहीं होगा, बल्कि आत्मानन्द और स्वयं के विकास तक ही सीमित रहेगा। लेकिन उस स्थान पर प्रदर्शित करने में मैं कभी नहीं हिचकिचाती, जहाँ कि संगीत के गंभीर पारखी होंगे ये विचार अन्नपूर्णा जी के रहे। पर मुंबई और दिल्ली में अनुरोध करने पर कई बार सुरबहार–वादन कर प्रस्तुत कर चुकी थीं और देखा गया है कि शास्त्रीय संगीत की और थोड़ी भी अभिरुचि रखने वाले श्रोता उनके जोड़ और आलापचारी के अंगो से प्रभावित संगीत में आत्म–विभौर हो जाते थे। 13 अक्टूबर 2018 में इनका स्वर्गवास हो गया।

2. शरन रानी :–

पहली सरोद वादिका शरन रानी जिन्हें सरोदरानी कहा गया। इनका जन्म 9 अप्रैल 1929 को दिल्ली के चांदनी चौक, जुगल किशोर हवेली में हुआ। वह दिल्ली के लिए मिसाल बन गई। शरन रानी ने एक ऐसा वाद्य चुना जो अब तक केवल पुरुषों द्वारा ही बजाया जाता रहा। उन्होंने सरोद जैसे कठिन वाद्य को अपनी संगीत शिक्षा का एक माध्यम चुना। सरोद एक शास्त्रीय वाद्य है, गुरु की जरुरत तो थी ही। सरोद के स्वरों को समझने के लिए उसकी तारों में उलझने की जरुरत थी, ताकि उसके मनमोहक जादू को पहचाना और महसूस किया जा सके। एक कार्यक्रम में उनकी मुलाकात सरोद उस्ताद अल्लाउद्दीन खां साहब से हुई और शरन रानी ने सरोद सीखने की बात खां साहब के समक्ष रखी तो खां साहब ने कहा–तुम सितार सीखो। तब शरन रानी ने कहा यह मेरे लिए कठिन है कि प्यार किसी से और शादी किसी और से यहाँ कैसे हो सकता है।

यहाँ प्रमाण था कि खां साहब ने उन्हें अपना शिष्य बनाने की स्वीकृति देनी पड़ी। गुरुद्वारा प्राप्त तालीम में सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि बाबा (अलाउद्दीन खां) प्रांरम्भ में स्वर साधना गले से करवाते थे और इसके साथ–साथ वाद्य यंत्र की साधना चलती रहती थी। शरन रानी ने मैहर अपने गुरु घर पर रह कर लगातार दस–बारह वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की। शरन रानी सरोद जैसे कठिन वाद्य को लेकर मंच पर उतरने वाली पहली कलाकार रही। उन्होंने सरोद वाद्य की खोज पर पूरे भारत का भ्रमण किया और अपनी सारी खोज एक सुन्दर सी पुस्तक THE DIVINE OF SAROD के रूप में, प्राचीनतम एवं विकाश पर लिखी उनकी पहली और आखरी रचना रही। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात भारतीय संगीतज्ञों में वह प्रथम महिला थे जिन्होंने विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत में रूचि पैदा की। शरण रानी ने अपने जीवन के लगभग 60 वर्ष संगीत को दिए और इस दौरान साजों का संग्रह करना उनका उद्देश्य रहा। उन्होंने पुराने दुर्लभ वाद्यों का अनूठा संग्रह नई दिल्ली जनपथ पर स्थित शरण रानी बाकलीवाल गैलरी ऑफ इंस्ट्यूमेंट्स, नैशनल म्युजियम 30 अक्टूबर 1980 को पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गाँधी द्वारा उद्घाटन करके इसे राष्ट्र को समर्पित किया। शरन रानी को अनेक पुरस्कारों, उपाधियों से नवाजा गया। जनवरी 1968 में पदमश्री पुरस्कार, 1974 में साहित्य कला परिषद् पुरस्कार, 1986 संगीत नाटक अकादमी, 1999 में पदमभूषण पुरस्कार, 2000 में दिल्ली में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2005 भोपाल से कला परिषद पुरस्कार। 8 अप्रैल 2008 को प्रातः वह घड़ी आ गए जब वह सबको छोड़ कर चली गई।

3. एन.राजम :–

डॉ. (श्रीमती) एन. राजम का जन्म परम्परागत संगीतज्ञों के परिवार में सन 1938 में हुआ। चार वर्ष की उम्र से उन्हें वॉयलिन वादन की तकनीक की शिक्षा लेनी आरंभ की। आरंभ कर्नाटक संगीत से हुआ और यह श्रीमती राजम के कुशल बुद्धि का ही परिणाम था कि एक वर्ष में ही वे कर्नाटक संगीत के वर्णम बजाने लगी। पाँच वर्षो के बाद ही श्रीमती राजम मद्रास रेडियो से कार्यक्रम प्रसारित करने लगी। श्रीमती राजम ने मद्रास संगीत

अकादमी द्वारा आयोजित संगीत प्रतिस्पर्धा में भाग लिया और प्रथम पुरस्कार के रूप में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। श्री केलकर से शिक्षा ग्रहण करते समय श्रीमती राजम को पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के रिकॉर्ड सुनने का अवसर मिला और इनका प्रभाव इतना अधिक था कि वे पंडित जी कि शिष्या बनने का स्वपन देखने लगी। इस स्वपन को साकार रूप मिला 1955 में, उन्हें पंडित जी से मिलने और उनके समक्ष वॉयलिन बजाने का अवसर मिला। श्रीमती राजम उनसे शिक्षा ग्रहण करते हुए 1957 की घटना स्मरणीय रही, जब पंडित जी ने श्रीमती राजम को संगति करने के लिए आमंत्रित किया।

1959 में श्रीमती राजम ने बनारस हिन्दू विश्वविधालय में हिंदुस्तानी संगीत (वॉयलिन) में लेक्चरार का पद स्वीकार किया। 1960 में श्रीमती राजम में रेडियों के नेशनल प्रोग्राम में भाग लिया और 1965 में अपने भ्राता विख्यात वॉयलिन वादक श्री टी. एन. कृष्णन के साथ कर्णाटक युगल संगीत कार्यक्रम में भाग लिया। इनके गायन की विशेषता गायकी अंग है। हिंदुस्तानी और कर्नाटक दोनों पद्धतियों में निपुणता के कारण उनकी अपनी प्रणाली है, किन्तु ओंकारनाथ ठाकुर जी की गायकी का प्रभाव स्पष्ट दिखा देता है। श्रीमती राजम ने दोनों पद्धतियों में वॉयलिन वादन के लिए स्वर्ण–पदक प्राप्त किए और 1967 में सुरसिंगार–संसद ने उन्हें सुरमणि की उपाधि से विभूषित किया। इस समय आप मद्रास में अपना जीवन व्यतीत कर रही है। संगीत जगत अपनी चिर आयु की कामना करते है।

4. जरीन दारूवाला :–

कुमारी जरीन दारुवाला प्रतिभाशाली सरोद वादिका है। इनका जनम 9 अक्टूबर 1946 को मुंबई में हुआ। उन्होंने श्री हरिपद घोष, पंडित भीष्मदेव वेदी, पंडित वी.जी. जोग, पंडित एस सी.आर.भट्ट, पदमभूषण डॉ. एस. एन.रातंजनकर से संगीत शिक्षा पाई। इनका सरोद पर अच्छा नियंत्रण है और हाथ भी सुरीला है इनकी वादन शैली अपनी विशिष्ट है। इन्हे एक स्वर्ण पदक व कई ट्रॉफियां मिल चुकी है। १३ वर्ष की आयु में उन्होंने दिल्ली स्पर्धा में भाग लिया, उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार मिला। जरीन ने देश के विभिन्न भागों में सरोद वादन पेश किया। उन्होंने राज्यपालों, विदेशों, कूटनीतिज्ञों एवं प्रतिनिधि मंडलों के समक्ष सरोद वादन पेश किया। इन्होने 1961 में इंग्लैण्ड की महारानी के समक्ष कार्यक्रम पेश किया। वास्तव में जरीन ने 3 वर्ष की आयु में संगीत में अपनी रूचि प्रदर्शित की। उनके पिता उस समय शौकिया वॉयलिन बजाते थे। पुत्री के रूचि संगीत में देखकर हारमोनियम ले आए। जरीन ने हारमोनियम सीखा और उनके कई कार्यक्रम भी पेश किए। उस्ताद अली अकबर खान को सुकर सरोद सिखने की तीव्र लालसा जरीन के मन में जागृत हुई, जरीन ने गायन भी सीखा, जिससे एक स्वस्थ पृष्ठभूमि बनती है। उन्होंने सरोद वादन की प्रतिभा के बल पर अनेक पुरस्कार प्राप्त किये है। उन्हें 1988 में संगीत नाटक अकादमी, 1990 में महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार, 2007 दादा साहब फाल्के जैसे सम्मानित पुरस्कारों से अलंकृत किया गया। आज भी ये संगीत सेविका के रूप में संगीत के सेवा कर रही है। हम इनके स्वस्थ जीवन की कामना जीजी करते है।

सन्दर्भ :–

1. हमारे संगीत रत्न, लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस – उत्तरप्रदेश।
2. संगीत विशारद, बसंत, संगीत कार्यालय, हाथरस – उत्तरप्रदेश।
3. नारी कलाकार, आशा रानी व्होरा, ज्ञानगंगा प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दुस्तानी संगीत के रत्न, डॉ सुशील कुमार चौबे, हिन्दी ग्रंथ अकादमी – लखनऊ।
5. हिन्दुस्तानी संगीत में तंत्र वादकों का योगदान, वीणा शर्मा, कनिष्क पब्लिकेशन – दिल्ली।

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 48-52
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वर्तमान परिदृश्य में महिलाओं की स्थिति

–मुकेश चौहान
एम. फिल शोधार्थी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, कामरूप, (असम)

अगर देखा जाए तो महिलाओं की स्थिति सदा एक सामान नहीं रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होता रहता हैं। यह स्थिति वैदिक काल से आरंभ होकर आधुनिक काल तक आते–आते अनेक उतार–चढ़ाव एवं विभिन्न स्तरों से गुजरते हुए आ रहा है तथा उनके अधिकारों में भी तदनरूप परिवर्तन भी होता रहा है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ थी, परिवार तथा समाज में उन्हें इज्जत एवं सम्मान प्राप्त था। भारतवर्ष में महिलाओं की स्थिति में पिछले कुछ दशकों में कई बड़े बदलाव देखा गया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ समानता की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई समाज सेवियों द्वारा महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार को बढ़ावा दिए जाने तक। भारतवर्ष में महिलाओं का इतिहास काफी विकसित एवं चलायमान रहा है। आज के वर्तमान समय में स्त्रियां राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, खेलकूद, संगीतकला, नाट्यकला, वैज्ञानिक तकनीकी, प्रशासनिक सेवा, चिकित्सा सेवा आदि जैसे क्षेत्रों में अपना स्थान एवं वर्चस्व स्थापित करने में सफलता पाई है। वह सिर्फ स्थान ही नहीं बनाई बल्कि अपने–अपने क्षेत्रों में शीर्ष पदों पर आसीन रहकर न केवल खुद का अपितु पूरे देश का मान एवं गौरव बढ़ाया है।

वर्तमान समय में भारत के परिपेक्ष में महिलाओं की स्थिति अनेक उठा–पटक के साथ परिवर्तित होता रहा है। पर इस विषय पर बारीकी से चर्चा किया जाए तो हमारे समक्ष यह प्रश्न उठता है कि महिलाओं की यह स्थिति, उनके अधिकारों एवं समाज में पुरुषों को समान हक एवं समानता की बात करने की जरूरत ही क्यों आन पड़ी है? जब हम इस विषय से संबंधित विविध पहलुओं पर ध्यान आकृष्ट करते हैं, तो हम पाते हैं कि पुरुष द्वारा स्थापित समाज में पुरुष खुद तो अपने जीवन यापन के लिए मानदंड तैयार करता ही है साथ ही महिलाओं के हक एवं अधिकार भी पुरुषों द्वारा ही तय किए जाते हैं। जिससे पुरुष समाज के मान्यताओं एवं परंपराओं को अपने मुताबिक ढालने एवं संचालित करने का प्रयत्न करते हैं। जिसके चलते वह खुद के अधिकार एवं हक के मामले में महिलाओं की तुलना में ज्यादा सहज एवं ज्यादा छूट पाना चाहता है।

पर मुझे ऐसा लगता है कि वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति आज जो है उससे और ज्यादा बेहतर हो सकता था, क्योंकि अगर पुरुष समाज अपने सभी मानदंड खुद तैयार कर सकता है तो महिलाएं भी इस मामले में पुरुषों की तुलना में कहीं से भी कम नजर नहीं आती। कम से कम महिलाओं के हित एवं उनके क्षमताओं, आकांक्षाओं एवं अधिकारों को ध्यान में रखा जाना भी पुरुषों का आवश्यक दायित्व एवं कर्तव्य है। किसी भी समाज का निर्माण पुरुष एवं स्त्री दोनों के मेल एवं सहभागिता से ही संभव है। क्योंकि समाज में जितना हक

पुरुष को है, उतना ही एक स्त्री को भी। हिंदी के बहुत ही प्रतिष्ठित एवं राष्ट्रवादी कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित निबंध 'अर्धनारीश्वर' में भी इसी बात को प्रमाणित करते हुए साक्ष्य प्रस्तुत करता है। जिसके अनुसार आधा नारी और आधे पुरुष के संयोग से इस संसार का निर्माण एवं सृष्टि हुआ तो फिर आज के समाज में महिलाओं के हितों को, उनके अधिकारों को समझे बिना हम किसी भी समाज एवं देश के विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं।[1]

21वीं शताब्दी में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार देखने को मिला है। आज महिलाओं की स्थिति में सुधार ने देश का नक्शा ही बदल कर रख दिया है। यद्यपि हम यह तो नहीं कह सकते हैं कि महिलाओं की दशा पूरी तरह से बदल गई है पर हां पहले की तुलना में काफी हद तक सुधार देखा गया है। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति पहले से अधिक सचेत एवं जागरूक नजर आती हैं। आज की महिलाएं अपने पेशे वाली जिंदगी चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कोई भी क्षेत्र हो, सभी के प्रति अधिक कर्तव्यनिष्ठ हैं।

वर्तमान समय में हमारे देश में भारतीय महिलाओं के उत्थान के लिए अनेकों योजनाएं एवं कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। पर वास्तव में इन योजनाओं की आवश्यकता ही क्यों है? क्योंकि पुरुष समाज के लिए या उसके उत्थान के लिए तथा समाज में उसके महिलाओं के समान अधिकार के लिए किसी प्रकार की योजनाओं की आवश्यकता नहीं होती, तो फिर महिलाओं के लिए ही क्यों? क्योंकि आरंभ से ही पुरुष प्रधान समाज महिलाओं के प्रति अपनी संकीर्ण मानसिकता एवं समाज में उनकी स्थिति को लेकर दोहरे चरित्र को प्रदर्शित करता रहा है। जिसके बदौलत आज महिलाओं के स्थिति एवं उनको भी पुरुषों के समान सम्मान एवं हक दिलाने के लिए विभिन्न प्रकार के योजनाओं की आवश्यकता जान पड़ी है।

आज देश में महिला सशक्तिकरण, नारी शक्ति, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, जैसी अनेक योजनाएं लागू की जा रही है ताकि महिलाएं भी पुरुषों के समान सम्मान एवं अधिकार प्राप्त कर सकें। पर वास्तव में इन योजनाओं का लाभ समाज के निचले तबके के स्त्रियों तक नहीं पहुंच पाता है और इसका मुख्य कारण है इन योजनाओं का संचालन उचित तरीके से ना हो पाना। सच तो यह है कि आज के समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी कुछ परिवर्तन आ गया है पर फिर भी अभी आने को ऐसे क्षेत्र हैं जहां वह पुरुष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है। जैसे उदाहरण के तौर पर हम भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को उदाहरण स्वरूप ले सकते हैं। जिसमें आज भी महिलाओं की संख्या एवं हिस्सेदारी को लेकर अभी बहुत कार्य करना शेष है।

इसे और अधिक प्रमाणित एवं सुव्यवस्थित ढंग से समझने के लिए स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गई यह पंक्तियां अधिक सार्थक सिद्ध हो सकती है– "किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहां की महिलाओं की स्थिति। हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुंचा देना चाहिए, जहां वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। हमें नारी शक्ति के उद्धारक नहीं, वरन उनके सेवक और सहायक बनना चाहिए। भारतीय नारियां संसार की किसी भी अन्य नारियों की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने का क्षमता रखती हैं। आवश्यकता है उन्हें अवसर देने की। इस आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की संभावनाएं सन्निहित है।"[2]

महात्मा गांधी ने नारी के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए उनके अधिकारों के मामले में किसी प्रकार का समझौता न करने वाला घोषित किया था। उनका मानना था कि समाज के पुनर्निर्माण में स्त्रियों को एक

सुनिश्चित भूमिका अदा करनी है। और सामाजिक न्याय पाने के उनकी क्षमता के अधिकार को मान्यता देना एक अनिवार्य कदम है। स्त्रियों के मताधिकार दान को भी उन्होंने अपना सतत और संपूर्ण समर्थन दिया था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्रियों के भारी संख्या में भाग लेने के साथ मिलकर गांधी जी के इस प्रयास ने सामाजिक एवं राजनीतिक संभ्रांत वर्ग पर जिसने महिलाओं को भी सम्मिलित करने का प्रत्यक्ष प्रभाव डाला।

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'यशोधरा' महाकाव्य में भी यशोधरा के माध्यम से न केवल भारतीय नारियों के बल्कि मानव जाति द्वारा निर्मित समाज में बस–बास कर रही नारियों के वेदना को उकेरा गया है। इसमें एक नारी की पीड़ा एवं उसके विरहजन्य जीवन को विशेष रुप से महत्व दिया गया है। जिसमें यशोधरा को पति द्वारा छोड़कर जाना तथा उसे बच्चे राहुल के प्रेम पास के बदौलत मजबूरन जीवन घुट–घुट कर जीना एक नारी के विवशता को प्रदर्शित करता है। गौतम बुध अपने कर्तव्य पथ से विचलित होकर खुद के मानोकांक्षा हेतु निर्माण खोज को चले जाते हैं। वह भी चोरी–चोरी। परंतु यशोधरा अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने दायित्व का निर्वहन करती है। आंचल में दूध को छिपाए हुए तथा आंखों में पानी लिए वह जीवन यापन करती है। इसी परिपेक्ष में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित यशोधरा की यह पंक्तियां दृष्टव्य है :–

"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।"[3]

आज के इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में नारियों ने कृषि से लेकर अंतरिक्ष तक अनेक क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर स्थान हासिल कर लिया है, परंतु आज भी ज्यादातर महिलाएं अपनी मौलिक अधिकारों सं वंचित रहने को विवश हैं। महिला सशक्तिकरण के जितने भी प्रयास किये जा रहे हो पर नारी को अपने अस्तित्व की सबसे बड़ी चुनौति उसे अपने घर में, मां की कोख से ही मिल रही है। इससे बच भी गयी तो धरती पर आने के बाद उसके लिए जैसे चनौतियों का अम्बार लगा हुआ है। भूण हत्या, लैंगिक भेदभाव, घरेलु हिंसा, दहेज निर्यातना, यौन उत्पीड़न, छेड़छाड़, शोषण, दमन, बलात्कार, तिरष्कार, मानसिक यंत्रणा आदि अनेको समस्याएँ हैं जिनसे हर पल महिलाओं का सामना होता रहता है। प्रकृति ने नर–मादा का समन्वय करके सृष्टि की निरंतरता को बनाए रखा। पुरुष और नारी में शारीरिक और स्वभावगत भिन्नताएं हैं, एक कठोर है और एक कोमल, पुरुष स्वभाव से अहंकारी और नारी त्याग करने वाली। इतिहास के अनुसार वैदिक काल की नारियों को सामाजिक संपन्नता प्राप्त थी, नारी शिक्षा, शास्त्र अध्ययन, यज्ञ में पुरुषों के बराबर भागीदारी, स्वेच्छा से विवाह करना आदि अनेको उदाहरण है।

वास्तव में जब लोगों की मानसिकता नहीं बदलेगी, दृष्टिकोण नहीं बदलेगा तब तक महिलाओं की स्थिति नहीं सुधरेगी। अगर समाज की किसी बेटी में अपनी बेटी या बहन जैसा भाव आ जाये तो महिलाएं सिर उठाके चल पाएंगी। पुरुषत्व की सार्थकता महिलाओं को सुरक्षा और सम्मान देने में है, उनका शोषण करना तो कायरता है। यहीं भारत की पहचान है। कदाचित् इस मंत्र को लोग भूल गये हैं, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। नारी का सम्मान जहां है, संस्कृति का उत्थान वहां है। अभी और चिंतन की आवश्यकता है, नारी हीं शक्ति है, उसे नुकसान पहुंचे तो समाज शक्तिहीन हो जाएगा, अतः पुरुषों कों अधिक संवेदनशील होना पड़ेगा तभी महिलाओं का उत्थान संभव है।

भारत में लगभग सभी धर्मों और वर्गों के लोगों में लंबे समय से समाज की मुख्यधारा में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को लेकर अधिक स्वीकार्यता नहीं रही है। वर्तमान में भी देश के कई हिस्सों में महिलाओं को घरेलू

कामकाज या अध्यापक अथवा नर्स आदि जैसी भूमिकाओं में ही कार्य करने को प्राथमिकता दी जाती है। सामाजिक दबाब और विरोध के भय से कुछ पारंपरिक क्षेत्रों को छोड़कर आमतौर पर अन्य क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी कम ही रही है। भारतीय समाज में व्याप्त इस भेदभाव की शुरुआत बच्चे के जन्म से ही हो जाती है, इस भेदभाव को भारत में जन्म के समय लिंगानुपात में भारी असमानता के आधार पर समझा जा सकता है।

पिछले दो दशकों में देश में प्रारंभिक शिक्षा के मामले में व्याप्त लैंगिक असमानता को दूर करने में बड़ी सफलता प्राप्त हुई है, हालाँकि उच्च शिक्षा और पेशेवर प्रशिक्षण संबंधी कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी में कमी अभी भी बनी हुई है। कार्य क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी शिक्षा और रोज़गार के अवसरों की उपलब्धता के साथ आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता पर भी निर्भर करती है। देश में अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों या छोटे शहरों में घर से कार्यस्थल की दूरी, 24 घंटे यातायात के सुरक्षित साधन, सार्वजनिक स्थलों पर प्रसाधन या अन्य आवश्यक संसाधनों का न होना और इनकी वहनीयता भी महिलाओं की भागीदारी में कमी का एक प्रमुख कारण है। इन संसाधनों की अनुपलब्धता का प्रभाव उनके स्वास्थ्य और कार्यक्षमता पर भी पड़ता है। कार्यस्थलों पर होने वाला भेदभाव महिलाओं के विकास में एक बड़ी बाधा रहा है, देश में सक्रिय सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के अधिकांश संस्थानों में शीर्ष निर्णायक पदों पर महिला अधिकारियों की कमी इस भेदभाव का एक स्पष्ट प्रमाण है। कृषि क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भूमिका अधिक होने के बावजूद भी समाज के साथ–साथ सरकार की योजनाओं में इसकी स्वीकार्यता की कमी दिखाई देती है।

अब महिलाएं अन्याय नहीं सहती है और हर परिस्थतियों से मुकाबला करने की हिम्मत रखती है। आज महिलाएं ऊँचे पदों पर कार्य करती है, आत्मविश्वास के साथ परिवार में अपनी भूमिका निभाती है। समाज का बहुमुखी विकास तभी होगा जब नारी को उनका उचित सम्मान और दर्जा मिलेगा। आज नारी ने यह समझा दिया है कि अगर उन्हें अधिक मौके दिए गए, तो वह पुरुषों से अधिक अपने आपको बेहतर साबित कर पाएगी। नारी में जन्म से दया, त्याग, प्रेम जैसे गुण होते है। आज समाज में इस परिवर्तन के कारण, उनमें शक्ति, हिम्मत, आत्मविश्वास जैसे गुण भी विकसित हो गए है। नारी को इस आधार पर एक महान देवी के रूप में चित्रित किया गया और उसके प्रति विश्वास और श्रद्धा वन होने के लिए कहा जाता है, कि नारी कैसे श्रद्धेय और पूज्य स्वरूप को स्वीकारना है। कविवर श्री जयशंकर प्रसाद ने अपनी महाकृति कामायनी में लिखा है कि–

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नगयगतल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।।[4]

इस दृष्टिकोण के आधार पर नारी पूज्य और महान है। जिससे जीवन अमृत तुल्य बन जाता है। नारी का सम्मानिय स्वरूप प्राचीन काल में बहुत ही सशक्त और आकर्षक रहा है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि लक की नारी और आज कि नारी में बहुत फर्क है। कल जहा नारी केवल दासी का रूप अदा करती थी। वही आज न केवल किचन ओर घर, बच्चो को संभालने के साथ घर के बहार भी अपना वर्चस्व लहरा रही है। जहां नर में कोई मात्रा नहीं होती वही नारी में दो मात्राएं लगती

है। महिलाएं परिवार बनाती है, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है। इसका सीधा सीधा अर्थ यही है की महिला का योगदान हर जगह है। महिला की क्षमता को नज़रअंदाज करके समाज की कल्पना करना व्यर्थ है। शिक्षा और महिला ससक्तिकरण के बिना परिवार, समाज और देश का विकास नहीं हो सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अर्धनारीश्वर दिनकर संपादक गोपाल राय ग्रंथ निकेतन, उदयांचल, पटना, पृष्ठ संख्या 196
2. डॉक्टर राज नारायण स्त्री विमर्श और सामाजिक आंदोलन।
3. यशोधरा मैथिलीशरण गुप्त साहित्य सदन चिरगांव, झांसी, पृष्ठ संख्या 112
4. कामायनी माहाकाव्य, जयशंकर प्रशाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी पृष्ठ संख्या –24
5. शोधगंगा।
6. माधुक्षी सिंह, (2002) सर्वांगीण ग्रामीण विकाश में महिलाओं की भूमिका–एक सामाजिक अध्ययन, पृष्ठ संख्या– 22–28
7. स्वेता मिश्रा, (1998) "पंचायाती राज एम्पावरिंग द पीपुल योजना", जुलाई।

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 53-54
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मनुस्मृति और नारी जाति

–डॉ. विवेक आर्य

वैदिक विद्वान, नई दिल्ली।

भारतीय समाज में एक नया प्रचलन देखने को मिल रहा है। इस प्रचलन को बढ़ावा देने वाले सोशल मीडिया में अपने आपको बहुत बड़े बुद्धिजीवी के रूप में दर्शाते है। सत्य यह है कि वे होते है कॉपी पेस्टिया शूरवीर। अब एक ऐसी ही शूरवीर ने कल लिख दिया मनु ने नारी जाति का अपमान किया है। मनुस्मृति में नारी के विषय में बहुत सारी अनर्गल बातें लिखी है। मैंने पूछा आपने कभी मनुस्मृति पुस्तक रूप में देखी है। वह इस प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर एक नया कॉपी पेस्ट उठा लाया। उसने लिखा–

'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी सकल ताड़ना के अधिकारी।'

मेरी जोर के हंसी निकल गई। मुझे मालूम था कॉपी पेस्टिया शूरवीर ने कभी मनुस्मृति को देखा तक नहीं है। मैंने उससे पूछा अच्छा यह बताओ। मनुस्मृति कौनसी भाषा में है? वह बोला ब्राह्मणों की मृत भाषा संस्कृत। मैंने पूछा अच्छा अब यह बताओ कि यह जो आपने लिखा यह किस भाषा में है। वह फिर चुप हो गया। फिर मैंने लिखा यह तुलसीदास की चौपाई है। जो संस्कृत भाषा में नहीं अपितु अवधी भाषा में है। इसका मनुस्मृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। मगर कॉपी पेस्टिया शूरवीर मानने को तैयार नहीं था। फिर मैंने मनुस्मृति में नारी जाति के सम्बन्ध में जो प्रमाण दिए गए है, उन्हें लिखा। पाठकों के लिए वही प्रमाण लिख रहा हूँ। आपको भी कोई कॉपी पेस्टिया शूरवीर मिले तो उसका आप ज्ञान वर्धन अवश्य करना।

मनुस्मृति में नारी जाति :–

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रऽफलाः क्रियाः। मनुस्मृति 3/56

अर्थात जिस समाज या परिवार में स्त्रियों का सम्मान होता है, वहां देवता अर्थात् दिव्यगुण और सुख–समृद्धि निवास करते हैं और जहां इनका सम्मान नहीं होता, वहां अनादर करने वालों के सभी काम निष्फल हो जाते हैं।

पिता, भाई, पति या देवर को अपनी कन्या, बहन, स्त्री या भाभी को हमेशा यथायोग्य मधुर–भाषण, भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि से प्रसन्न रखना चाहिए और उन्हें किसी भी प्रकार का क्लेश नहीं पहुंचने देना चाहिए। –मनुस्मृति 3/55

जिस कुल में स्त्रियां अपने पति के गलत आचरण, अत्याचार या व्यभिचार आदि दोषों से पीड़ित रहती हैं। वह कुल शीघ्र नाश को प्राप्त हो जाता है और जिस कुल में स्त्री–जन पुरुषों के उत्तम आचरणों से प्रसन्न रहती हैं, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है। –मनुस्मृति 3/57

जो पुरुष, अपनी पत्नी को प्रसन्न नहीं रखता, उसका पूरा परिवार ही अप्रसन्न और शोकग्रस्त रहता है और यदि पत्नी प्रसन्न है तो सारा परिवार प्रसन्न रहता है। – मनुस्मृति 3/62

पुरुष और स्त्री एक–दूसरे के बिना अपूर्ण हैं, अतः साधारण से साधारण धर्मकार्य का अनुष्ठान भी पति–पत्नी दोनों को मिलकर करना चाहिए।–मनुस्मृति 9/96

ऐश्वर्य की कामना करने हारे मनुष्यों को योग्य है कि सत्कार और उत्सव के समयों में भूषण वस्त्र और भोजनादि से स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें। मनुस्मृति

पुत्र–पुत्री एक समान। आजकल यह तथ्य हमें बहुत सुनने को मिलता है। मनु सबसे पहले वह संविधान निर्माता है जिन्होंने जिन्होंने पुत्र–पुत्री की समानता को घोषित करके उसे वैधानिक रुप दिया है– ''पुत्रेण दुहिता समा'' (मनुस्मृति 9/130) अर्थात्–पुत्री पुत्र के समान होती है।

पुत्र–पुत्री को पैतृक सम्पत्ति में समान अधिकार मनु ने माना है। मनु के अनुसार पुत्री भी पुत्र के समान पैतृक संपत्ति में भागी है। यह प्रकरण मनुस्मृति के 9/130 9/192 में वर्णित है।

आज समाज में बलात्कार, छेड़खानी आदि घटनाएं बहुत बढ़ गई है। मनु नारियों के प्रति किये अपराधों जैसे हत्या, अपहरण, बलात्कार आदि के लिए कठोर दंड, मृत्युदंड एवं देश निकाला आदि का प्रावधान करते है। सन्दर्भ मनुस्मृति 8/323, 9/232, 8/342

नारियों के जीवन में आनेवाली प्रत्येक छोटी–बडी कठिनाई का ध्यान रखते हुए मनु ने उनके निराकरण हेतु स्पष्ट निर्देश दिये है।

पुरुषों को निर्देश है कि वे माता, पत्नी और पुत्री के साथ झगड़ा न करें। मनुस्मृति 4/180 इन पर मिथ्या दोषारोपण करने वालों, इनको निर्दोष होते हुए त्यागने वालों, पत्नी के प्रति वैवाहिक दायित्व न निभाने वालों के लिए दण्ड का विधान है। मनुस्मृति 8/274, 389, 9/4

मनु की एक विशेषता और है, वह यह कि वे नारी की असुरक्षित तथा अमर्यादित स्वतन्त्रता के पक्षधर नहीं हैं और न उन बातों का समर्थन करते हैं जो परिणाम में अहितकर हैं। इसीलिए उन्होंने स्त्रियों को चेतावनी देते हुए सचेत किया है कि वे स्वयं को पिता, पति, पुत्र आदि की सुरक्षा से अलग न करें, क्योंकि एकाकी रहने से दो कुलों की निन्दा होने की आशंका रहती है। मनुस्मृति 5/149, 9/5–6 इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि मनु स्त्रियों की स्वतन्त्रता के विरोधी हैद्य इसका निहितार्थ यह है कि नारी की सर्वप्रथम सामाजिक आवश्यकता है –सुरक्षा की। वह सुरक्षा उसे, चाहे शासन–कानून प्रदान करे अथवा कोई पुरुष या स्वयं का सामर्थ्य।

उपर्युक्त विश्लेषण से हमें यह स्पष्ट होता है कि मनुस्मृति की व्यवस्थाएं स्त्री विरोधी नहीं हैं। वे न्यायपूर्ण और पक्षपातरहित हैं। मनु ने कुछ भी ऐसा नहीं कहा जो निन्दा अथवा आपत्ति के योग्य हो।

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 55-59
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय रंगमंच में बहुआयामी भूमिका निभाती स्त्री रंगकर्मियों का रंग विमर्श

–शबनम

शोधार्थी, इण्डियन थिएटर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़–160014

सार :–

रंगमंच में स्त्री की अहम भूमिका है। भारतीय रंगमंच में स्त्रियों द्वारा अभिनय के प्रति समाज के कुछ प्रांतों को छोड़ पूरा समाज लज्जा हीनता और घृणा का भाव लिए हुए था। घर से बाहर हर क्षेत्र में स्त्रियों को संघर्ष करना पड़ा और उसका भाग्य चार दीवारों के भीतर तक ही सीमित रह गया। जिसकी वजह से मंच पर अपना स्थान बनाने में स्त्रियों ने सर्वाधिक संघर्ष किया है। यह शोध–पत्र बहुआयामी भूमिका निभाती महिला रंगकर्मियो के संघर्ष का अध्ययन करेगा। यह भारत में रंगमंच के विकास के साथ–साथ समकालीन रंगमंच के दृश्य का एक ऐतिहासिक अवलोकन प्रदान करता है। यह इस बात पर भी विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करता है कि स्त्री की अस्मिता और पहचान को लेकर कई स्तरों पर वह अपने विचारों को किस प्रकार व्यक्त करती हैं?

संकेत शब्द – रंगमंच, आधुनिक रंगमंच, स्त्री की भूमिका, नाटककार, स्त्रीवादी आदि।

प्रस्तावना :–

सन् 1960 के बाद जब नयी चेतना का बोलबाला था तब एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में सामाजिक स्तर पर स्त्री चेतना भी जागृत हुई। जिसकी अभिव्यक्ति कई स्तरों जैसे सामाजिक परिदृश्य में, साहित्य में रंगमंचीय प्रस्तुतियों एवं मीडिया आदि में दृष्टिगत होती है। जैसे की हम जानते है कि रंगमंच के इतिहास में एक युग ऐसा भी था, जब स्त्री का मंच पर पांव धरना भी वर्जित था। और एक युग ऐसा भी आया, जब स्त्री खुले मन से रंगमंच पर विचरित हुई। कई नाटककारों ने स्त्री की भावनाओं, इच्छाओं और उनकी महत्वाकांक्षाओं को लेकर नाटक रचे। और समाज में पुरूष वर्चस्व एवं सामंतवाद समाज की विडंबनाओं का परिचय दिया। स्त्री के संघर्ष, रिश्तों की प्रतिकूलता और समाज की जकड़न से मुक्ति की ओर उसकी यात्रा, इन नाटककारों के नाटकों का अभिन्न विषय बनी। बीसवीं सदी के अंत तक रंगमंच में पुरुष कलाकार ही स्त्रियों की भूमिका निभाया करते थे। जैसे मराठी रंगमंच में 'बालगंधर्व' के नाम से प्रसिद्ध गायक एवं रंगमंच में स्त्री प्रतिरूपण के लिए प्रसिद्ध कलाकार थे। इसी प्रकार गुजराती रंगमंच में 'जयशंकर सुंदरी' के नाम से। प्रसिद्ध ऐसे कलाकार थे जिन्हें स्त्री पात्रों के अभिनय के लिए आदर्श और गौरव का प्रतीक माना जाता था।

नैमिचन्द्र जैन नें अपनी पुस्तक, 'रंग परंपरा' में कहा है, ''.....देश की अन्य भाषाओं के रंगमंच पर आम तौर पर बीसवीं शताब्दी के मध्य तक ही स्त्रियाँ नाटकों में काम करना शुरू कर पायीं। यहाँ तक कि महाराष्ट्र के पारंपरिक नाट्य तमाशा में शुरू से स्त्रियों की साझेदारी के बावजूद, आधुनिक मराठी रंगकर्म में भी स्त्रियों की भूमिकाओं में पुरुष का एकछत्र राज्य रहा।''

समाज के बाकी क्षेत्रों की तरह रंगमंच भी पुरुषों का ही क्षेत्र था। लेखन, अभिनय, मंचन और प्रस्तुति की प्रक्रिया में भी पुरुष ही प्रधान था। भारत में 50 के दशक के बाद से औपचारिक रूप से स्त्री ने रंगमंच पर प्रवेश किया। उसने सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक मान्यताओं की चुनौतियों को स्वीकारा। रंगमंच एक ऐसा क्षेत्र है जहां काम का समय अनिश्चित होता हैं। और आर्थिक दृष्टि से भी कोई लाभ प्राप्त नही होता। इसके साथ सम्पूर्ण परिवार की, पति और बच्चों की जिम्मेदारी औरत की ही थी। उन्होंने जीवन एवं रंगमंच में भी दोहरी तिहरी भूमिकाएं निभाई। और फिर धीरे–धीरे अपनी पहचान बनाई। बीसवीं शताब्दी का आरम्भ ही नाट्य साहित्य के एक संपूर्ण नाट्य आंदोलन से हुआ हैं। स्वाधीनता आंदोलन में भागीदारी के कारण स्त्रियाँ राष्ट्रीय और सामाजिक स्तर पर सशक्त भूमिका में नजर आई हैं।

स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय रंगमंच ने एक नई विचारधारा अपनाई और नयी कल्पनाओं और नयी सामाजिक समस्याओं के साथ, एक नये युग की ओर कदम रखा। उस समय कई नाटककार जैसे : बादल सरकार, विजय तेन्दुलकर, मोहन राकेश, गिरीश कार्नाड, सुरेंद्र वर्मा, बलवंत गार्गी और अन्य कई थे जिन्होंने स्त्री की इच्छाओं, भावनाओं और उनकी महत्वाकांक्षाओं को विषय बनाकर नाटक लिखे। उन्होने जिस स्त्री की व्याख्या की वह पुरुष प्रभुत्व से स्वयं के लिए विद्रोह करने वाली, अपनी इच्छाओं के लिए लड़ने वाली, अपना आत्मसम्मान हासिल करने वाली थी। मोहन राकेश ने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में 'मल्लिका' को भावमयी, त्यागमयी और निष्ठावान दिखाया गया है जो जीवन के कड़वे सच के परे, एक भावनात्मक दुनिया में चली जाती है। वह एक आदर्श औरत है जो अपने समर्पण एवं त्याग से प्रसन्न है। इसके विपरीत उन्होंने नाटक 'आधे अधूरे' में एक मध्यवर्गीय कामकाजी स्त्री के संघर्ष को प्रस्तुत किया हैं। जो घर से बाहर पूर्णता की तलाश में समाज की हिंसा का शिकार होती है और इसी कारण वे घर में नरक भोगने के लिए विवश है। मोहन राकेश ने 'सावित्री' को घर की कैद से मुक्त नहीं किया या फिर यह भी कह सकते हैं कि उसकी पुरुषवादी सोच के कारण वह उसे मुक्त करना नही चाहता? गिरीश कर्नाड ने 'हयवदन' में 'पद्मिनी' को व्यक्तिवादी और महत्वकांक्षी स्त्री के रूप मे के रूप में प्रस्तुत किया है। विजय तेन्दुलकर के नाटकों में स्त्री पात्र स्वतंत्र, स्वावलंबी और स्व–आग्रही हैं।

इन नाटककारों और इनके स्त्री पात्रों की तुलना जब स्त्री नाटककारों के पात्रों से करें तो कुछ अलग तथ्य सामने आते हैं। पुरुष नाटककार की स्त्री कहीं ज्यादा आक्रोश, आक्रामक और विद्रोही है जबकि स्त्री नाटककारों के पात्र विन्रम, सहानुभूति, शांत, संयमी और मानवीय हैं। यह विनम्र भाव से अपना विद्रोह व्यक्त करते हैं। मृदुला गर्ग का 'एक और अजनबी', मन्नू भंडारी का 'बिना दीवारों के घर', शांति मल्होत्रा का 'ठहरा हुआ पानी' नाटक इत्यादि के स्त्री पात्र इसका सशक्त उदाहरण है। सन् 1970 तक रंगमंच में औरतें बहुत कम थी और जो

थी उनकी आवाज कोई सुनना नही चाहता था। पश्चिम रंगमंच में सन् 1980 तक स्त्रियों की लगभग ऐसी ही स्थिति थी। वहां नारीवाद आंदोलन भी बहुत हुए हैं। इसी बीच हेंनरिक इब्सन के नाटक 'डॉलस हाउस' के पात्र 'नोरा' ने स्त्री की महत्वाकांक्षाओं को एक रूप दे दिया। 'नोरा' जो अपने पति के मुँह पर दरवाजा बंद करके घर से बाहर एक अनिश्चित भविष्य में कदम रखने का साहस करती है। 'नोरा' स्त्री लेखिकाओं के लिए एक महत्वपूर्ण पात्र बनी। भारत में स्त्री रंगकर्मियो की परिवर्तन की प्रक्रिया सन् 1970 के बाद 1980 आसपास शुरू हुई थी। त्रिपुरारी शर्मा एक नाटककार, एक अभिनेता के साथ–साथ एक निर्देशक भी हैं। जिन्होनें अपने नाटकों में स्त्री की दशा और सामाजिक सरोकार को बयान किसा हैं। त्रिपुरारी शर्मा ने नाटक 'बहू' और 'एक पहेली' पर काफी चर्चा हुई। वह लिखती हैं – '' 'बहू' का किरदार ही मेरे रंगमंच के साथ रिशते को परिभाषित भी करता हैं। मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम, रंगमंच ही है।'' त्रिपुरारी शर्मा ने हमारे समाज में औरतों की कड़वी सच्चाई को प्रस्तुत किया। नाटककार, अभिनेत्री और निर्देशक की भूमिका में एक साथ कार्यरत, अमाल अलाना लिखती है – ''ज्यादातर नाटककार पुरुष ही होते हैं। उन्होंने स्त्री की मनोभूमि में प्रवेश भी किया हो चाहे उनका संवेदनशील चित्रण भी किया हो परन्तु उनके नाटकों में पुरुष दृष्टि ही प्रमुख रहेगी।''

भारतीय रंगमंच में बहुआयामी भूमिकाएं निभाती स्त्री रंगकर्मियों ने रंगमंच के कई स्तर पर काम किया है। अनुराधा कपूर, अमाल अल्लाना, उषा गांगुली, त्रिपुरारी शर्मा, विजय मेहता, सुधा शिवपुरी सुषमा सेठ, सुरेखा सीकरी, उत्तरा बावकर, नादिरा बब्बर, हेमा सिंह, प्रतिभा अग्रवाल, संजना कपूर इत्यादि ऐसे स्त्री रंगकर्मी है जिन्होंने स्क्रिप्ट लेखन, अभिनय, निर्देशन, रंग शिल्प और मंचन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। सन् 2001 में एक नाट्य उत्सव 'पुर्वा' के आयोजन से इन स्त्री रंगकर्मियों की उपलब्धियों और विशेषताओं को पहचाने की एक सार्थक पहल की गई। इस उत्सव में कई एशियाई एवं भारतीय प्रसिद्ध रंगकर्मीयों ने विभिन्न भाषाओं में अपने नाटकों को प्रस्तुत किया था। अमाल अल्लाना ने मंच पर भव्य दृश्य एवं परिदृश्य को विभिन्न रंगों से सृजित किया। उन्होने स्त्री की पहचान उसकी आस्मिता और स्त्री–पुरुष के संबंधों आदि को लेकर कई स्तरों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। उषा गांगुली ने कथ्य को मंच पर नृत्य संरचना से अभिभूत किया। अनुराधा कपूर ने आधुनिक तकनीक, मल्टीमीडिया आदि का प्रयोग रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया। कीर्ति जैन ने बड़ी सादगी एवं संवेदनशीलता से दर्शकों को बाधा। समस्त नाट्य प्रस्तुतियों में चाहे वे देशी थी या विदेशी सभी में एक बात समान थी उनके 'कथ्य का चुनाव', सभी कथाओं का केंद्र औरत की स्थिति, उनकी सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर के सच को प्रस्तुत करना था। उनके जीवन की विसंगतियों, विरोध, अवरोधों, घुटन, दर्द, कुंठा, असमानता और रूढ़ि छवि से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का चित्रण ये प्रमुख विषय थे। जो पुरूषों द्वारा चित्रित नाटकों से विभिन्न है। इनके नाटकों में उन समस्त स्त्रियों की छवियां निहित रहती हैं जो दूसरे क्षेत्रों में अपने होने को सिद्ध करने के लिए कठोर परिश्रम कर रही हैं। रंगमंच से जुड़ी रंगकर्मियों ने अपने परिवार और रंगमंच के कार्यक्षेत्र के बीच एक मजबूत संतुलन बनाया और रंगकर्म के क्षेत्र में अपनी नई पहचान एवं प्रतिष्ठा बनाई।

भारतीय रंगमंच में कुछ और स्त्री रंगकर्मियो ने अपनी अलग पहचान दी। मन्नू भंडारी, कुसुम कुमार, मृदुला गर्ग, शांति मेहरोत्रा, और मृणाल पांडे (हिंदी थिएटर), जमीला निशात (उर्दू थिएटर), वर्षा अदलजा

(गुजराती), अनुराधा कपूर, मंजुला पद्मनाभन (अंग्रेजी), त्रिपुरारी शर्मा (अंग्रेजी और हिंदी), कुसुम कुमार (हिंदी), गीतांजलि श्री (हिंदी), इरपिंदर भाटिया (हिंदी), रानी बलबीर कौर (पंजाबी), नीलम मानसिंह चौधरी (पंजाबी), बिनोदिनी (तेलुगु), बी.जयश्री (कन्नड़), शनोली मित्रा (बंगाली), उषा गांगुली (हिंदी), शांता गांधी (गुजराती), सुषमा देशपांडे (मराठी), वीणापानी चावला (मराठी), और कडसिया जदी (उर्दू) कुछ प्रमुख महिला नाटककारों में से हैं। उन्होंने अपने नाटकों में स्त्री दृष्टिकोण भी सामने रखा है और अपने पात्रों को नया रूप दिया है। रंगमंच की सुप्रसिद्ध अभिनेत्रियों ने भी इन नाटककारों द्वारा निरूपित स्त्री चरित्रों को विभिन्न अंदाज से मूल एवं अनुदित रूप से प्रस्तुत किया है। उनमें कुछ मुख्य नाम हैं – सुधा शिवपुरी, उत्तरा बावकर, सुरेखा सिकरी, रोहिणी हतंगड़ी, सीमा बिसवास। कई रंगकर्मियों ने इन नाटकों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कर विश्व भर में इसका सफल प्रदर्शन किया है।

उपसंहार :–

इस परिदृश्य में, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, महिला रंगकर्मियो के प्रयासों ने समाज में जो बदलाव लाये है यहां भी चर्चा के लायक है। आज के रंगमंच में औरतों ने स्क्रिप्ट लेखन, अभिनय, निर्देशन मंचन, शैली, शिल्प सभी क्षेत्रों में अद्‌भुत कार्य किया है। अपना एक विशेष स्थान बनाया है। कई तरह के नए–नए प्रयोग किये हैं। रंगमंच भी नई शैलियों का लिया है और लोक मंच की शैलियों को भी प्रयोग में लाया गया। औरतों ने रंगमंच पर औरतों के स्टीरियोटाइप को तोड़ा। उसे रूढ़ी छवि से बाहर निकालकर उसे बहुआयामी पहचान दी। उनका रंगमंच के प्रति अलग दृष्टिकोण था। उन्होंने नाटक की संरचना में पात्रों की शिल्प और रंगमंच प्रस्तुति की पुरानी मान्यताओं से आगे, इनको एक नई भूमिका में प्रस्तुत किया है। इनकी संरचना एक तरफा नहीं है कई अभिव्यक्ति की धाराएं साथ आती हैं और अदृश्य हो जाती हैं। इन्होने रंगमंच की एक नई भाषा का इन्होंने अविष्कार किया। स्त्री रंगकर्मियों ने रंगमंच को एक नई पहचान दी। नाटकों की कथा के तथ्यों का चुनाव इस प्रकार से किया जो औरत के जीवन से संबंधित हो। इनके कारण अभिनेता और निर्देशक के संबंधों में बदलाव आया। एक रंगमंच का अपना दर्शक वर्ग बना। स्त्री रंगकर्मियों ने कई नए प्रयोग किए। पुरुष वर्चस्व के समांतर रंगमंच में स्त्री वर्चस्व की स्थापना हुई।

स्त्रीवादी रंगमंच महिला पात्रों पर केंद्रित है और स्त्रीवादी नाटक, रिश्ते, भाईचारे, कामुकता और स्त्री स्वायत्तता के विषयों की पड़ताल करता है। इसने जीवन के पुरुष–केंद्रित दृष्टिकोण और पुरुष–प्रधान विमर्श पर सवाल उठाया। नारीवादी रंगमंच का लक्ष्य सशक्तिकरण है। यह महिलाओं को अपनी आवाज देने में सक्षम बनाता है। विभिन्न परिप्रेक्ष्य से देखे तो, इनके नाटकों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है, कट्टरपंथी विचारधारा से हटकर समाज में महिला नायिका का निर्माण करना। जहाँ एक महिला अपनी पहचान और सम्मान की जगह स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रही हैं। उनकी महिला आधुनिक सोच की उपज हैं। जो अपनी इच्छाओं को हासिल करने के लिए विद्रोह करती है, वह पुरूष प्रधान समाज के दृष्टिकोण को ध्वस्त कर देना चाहती है।

समकालीन रंगमंच की स्त्री रंगकर्मी कलाकारों पर कोई सामग्री प्राप्त नही होती। केवल एक–दो कलाकारों पर ही पुस्तकें थी और जो जानकारी उपलब्ध है, वह भी अंग्रेजी में। हिन्दी में ऐसी कोई पत्रिका एवं

पुस्तक नही जो हमें रंगमंच में स्त्री के योगदान पर एक पूरा परिदृश्य प्रस्तुत कर सके। मैं चाहती हूँ कि मेरे काम की परख एक व्यापक दृष्टि से रंगमंच में स्त्री की भूमिका के तहत हो। जो किसी विद्यार्थी को भविष्य में जानकारी उपलब्ध करा सको। अंत में हम यही कहेंगे कि स्त्री ने अपने जीवन के अंधेरे सच की कई परतों को खोला है वहीं उनकी उपलब्धि और विशिष्टता हैं।

संदर्भ सूची :-

1. नैमिचन्द्र जैन, रंग परंपराः भारतीय नाट्य में निरंतरता और बदलाव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1996
2. रंग प्रसंगः अप्रैल–सितम्बर, 2010 में प्रकाशित, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली 2010
3. नटरंग, भारतीय रंगमंच का त्रैमासिक पत्रिका, खण्ड 20, 2006, संपादक : अशोक वजपायी एवं रश्मि वाजपायी,
4. डॉ. रीतारानी पालीवाल, रंगमंचः नया परिदृश्य, वाणी प्रकाशन 2018
5. डॉ. वैशाली देशपांडे, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन
6. मिथिलेश गुप्ता, मोहन राकेश की कृतियों मे स्त्री–पुरूष संबंध
7. Aston Elaine, An Introduction to Feminism and Theatre, London, Routledge, 1995.

फोन न. 9478582110, Email: shabnamsunny08@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 60-68
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय नारी का बदलता स्वरूप समकालीन हिन्दी कहानियों में

–डॉ. सूसन अलक्स

असिसटेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सरकारी कॉलेज, कोट्टयम, केरल

समकालीन हिंदी कहानी नारी की स्थिति को लेकर बदलाव की स्पष्ट अवधारणा प्रस्तुत करती है। समाज व साहित्य का संबंध गहरा होने के नाते कहानी साहित्य भी नारी की बदलती सामाजिक स्थिति के प्रति जागरूक दिखती है। हिंदी कहानी की लंबी यात्रा के दौरान अनेक महिला रचनाकार उभरीं जो अपनी रचनाओं के माध्यम से समसामायिक नारी की बदलती मन:स्थिति को उजागर करने में सक्षम रहीं। संपूर्ण विश्व भूमंडलीकरण से उत्पन्न सांस्कृतिक बदलाव से गुज़र रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। उत्तराधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में भारतीय नारी भी अपने अस्तित्व की तलाश करती दीखती है। आधुनिकता के आगे समकालीन युगबोध ही नारी अस्मिता की तलाश को वाणीबद्ध करने में सक्षम है। देश की सामाजिक , सांस्कृतिक परिस्थिति में नारी जीवन में भी आमूल परिवर्तन दृष्टिगोचर है। ऐसी परिस्थिति में अपनी अस्मिता को तलाशते नारी जीवन की आशा- आकांक्षाओं को अपनी रचनाओं में उकेरने को समकालीन महिला कहानीकार अपनी प्रतिभा दिखाती है।

उत्तराधुनिक विचारसधारा के अंतर्गत परिस्थिति, दलित व नारी विमर्श उभर आये। हाशियेकृत समूहों की स्वत्व की खोज ही उत्तराधुनिक विचारधारा का आधार है। व्यक्ति का जीवन बहुत हद तक समाज की रीति रिवाज़ों से बंधी है। सभ्यता और संस्कृति के विकास क्रम अपना 'स्पेज़' ढूँढती नारी की विह्वलताएँ और विवशताएँ उभारने में नारी लेखन की विशेष भूमिका है। संसार भर में नारी मुक्ति आंदोलन स्त्री जाति की उन्नति व विकास की अनेक योजनाओं में कार्यरत है। हर देश की परिस्थिति के अनुसार नारी जीवन की स्थिति में भिन्नता है। भारतीय नारी मुक्ति आंदोलन पाश्चात्य जगत के आंदोलनों से सर्वथा भिन्न है। हमारे देश में संविधान पुरुष और स्त्री को समान अधिकार प्रदान करता है। नारी को कानूनी संरक्षण भी प्राप्त है। लेकिन सामाजिक अंतर्धाराओं और अंतर्विरोधों में जकड़ी होने से नारी को वह सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं है जिसका वह अधिकारी है। इसलिए उसे अपने अधिकारों के लिए पुरुष समाज से भिड़ना पड़ता है। देश का वास्तविक विकास तभी संभव है जब पुरुष व नारी कंधे से कंधा मिलाकर विकास के मार्ग में अग्रसर रहें। अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 1975 के अवसर पर प्रसारित अपने संदेश में श्रीमति इंदिरा गाँधी का वक्तव्य इस ओर इशारा करता है- 1. **"नारी स्वतंत्रता भारत के लिए विलासिता नहीं है, अपितु राष्ट्र की भौतिक, वैचारिक व आत्मिक संतुष्टि के लिए अनिवार्य बन गई है।"**

दुनिया भर नारीवादी आंदोलनों के इतने कार्यकलापों के बावजूद भी हमारे देश में सामान्य जनता या तो इन सब से अनभिज्ञ है या तटस्थ है। डॉ. बबनराव बोडके के मत में 2. **"स्त्री विमर्श अथवा नारीवाद पुरुष और स्त्री के बीच नकारात्मक भेदभाव की जगह स्त्री के प्रति सकारात्मक पक्षपात की बात करता है। वस्तुत इस रूप में देखा जाए तो स्त्री विमर्श अपने समय और समाज के जीवन की वास्तविकताओं को तथा संभावनाओं को तलाश करनेवाली दृष्टि है। यह दृष्टि एक ओर संपूर्ण सामाजिक जीवन को देखने और रचने का माध्यम बनाती है, तो दूसरी ओर साहित्य में जीवन की जटिल वास्तविकताओं और अनुभूतियों की शक्ति भी है।"**

स्त्री विमर्श के साहित्य में महिला लेखिकाओं की ही भूमिका महत्वपूर्ण है। स्वानुभवों के साथ दूसरों के अनुभवों को सहज रूप से समझने में लेखिकाएं सक्षम हैं। साधना अग्रवाल जी का मत इस अवसर पर महत्वपूर्ण है- 3. **"महिला होने के नाते स्त्री वर्ग की कठिनाइओं को लेखिकाओं ने सहज स्वाभाविक रूप से पकड़ा है और निसंकोच उसकी अभिव्यक्ति की है"।**

भारतीय सामाजिक जीवन धार्मिक, जातीय जैसी भिन्न भिन्न श्रेणियों में विभक्त है। भारतीय परिवार अपने सांस्कृतिक बंधनों में इस तरह जकड़ा है कि बड़े बूढ़े लोग रूढ़ियों से अपने को हटने नहीं देते। शिक्षा के प्रचार प्रसार से नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। लेकिन पुरुष वर्चस्ववादी समाज सामंती मानसिकता से मुक्त नहीं हो पा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति से परिचय, शिक्षा का प्रभाव, औद्योगीकरण, बदलती आर्थिक, सामाजिक परिस्थिति आदि के कारण पारिवारिक ढ़ांचे में भी आमूल परिवर्तन हो रहा है। नारीवादी साहित्य बदलते हुए जीवन मूल्यों को मानवीय स्तर पर प्रतिष्ठित करता दीखता है। इसमें मानवीय विसंगतियों का खुलासा है। नव पूंजीवाद, भूमंडलीकरण और उदार बाज़ार व्यवस्था ग्रामीण जीवन को भी बदल डाला है।

जीवन की इन बदलती परिस्थितियों की नब्ज़ पकड़कर महिला लेखिकाएँ अपनी रचनाओं में उन्हें उकेरने में सक्षम दीखती है। कोई भी साहित्यक रचना वास्तव में तत्कालीन युगबोध का परिचायक है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवेश मानव जीवन को प्रभावित करता है। समकालीन मानव जीवन समसामायिक जटिल परिस्थितियों से आबद्ध है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जनजीवन गाँधीवादी आदर्श से अपने को बिलकुल अलग पाता है। समाज में भ्रष्टाचार ही अब आदर्श है। नयी आर्थिक व्यवस्था में पूरी दुनिया एक बाज़ार है। इस विश्व बाज़ार में सब कुछ बिकाऊ है। ज्ञान- विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से सारी दुनिया आज एक 'क्लिक' में सिमट गई है। घर के अंदर बैठकर इंटरनेट के माध्यम से खरीदारी और बिक्री आज संभव है। दुनिया की दूरियाँ मिट गई हैं। लेकिन मानव-मानव में आपसी दूरियाँ बढ़ गईं। मानव अब यंत्रवत जीवन जीने केलिए विवश है। यांत्रिकता की इस भागदौड़ में मानवीय मूल्य नष्ट होते जा

भारत की सांस्कृतिक धरोहर प्राचीन है। प्रौद्योगिकी के विकास क्रम में देश की भौगोलिक सीमाएँ जैसे मिट रही हैं। पूरे विश्व में बाज़ारवादी संस्कृति का फैलाव है। इस नई व्यवस्था में हर कोई या तो खरीददार है या बिक्री की चीज़। ऐसी स्थिति में नारी जीवन दुगने संकट में है। मध्यकालीन विलासिता के फलस्वरूप भारतीय नारी भोग की वस्तु रह गई थी। स्वतंत्रता आंदोलन के समय नारी का आदर्श रूप सामने आया जो देश की स्वतंत्रता के लिए मर मिटता है। स्वातंत्र्योत्तर परिस्थिति में शिक्षा के माध्यम से नारी पढ़ी लिखी हुई और कामकाजी बनी पर उसके पैरों मे पुरुषसत्तात्मक समाज द्वारा डाली अनदिखी बेड़ियाँ हैं। नारी क्या करे, क्या पहनें, क्या बोले इसका निर्धारण समाज के ठेकेदार करते हैं। एक हद तक उसे आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त है। आज भी अगर कोई नारी अकेली रहना पसंद करती है तो समाज उसे शक की दृष्टि से देखता है। समाज नारी का शरीर मात्र देखता है, उसके मन और आत्मा को नज़र अंदाज़ करता है। नारी जीवन संक्रमण काल से गुज़रता दीख पड़ता है। इस संदर्भ में डॉ.हरदयाल का कथन उल्लेखनीय है- 4. **"भारतीय समाज ने अपनी मध्यकालीन स्थिरता और स्तब्धता को तोड़कर जैसे ही आधुनिक काल में प्रवेश किया है, वैसे ही उसी क्षण से भारतीय जीवन निरंतर बदलता जा रहा है, उसका परिवेश बदलता रहा है। इस परिवेशगत बदलाव ने भारतीय जीवन के हर अंश को प्रभावित किया है।** ... जब हमारे देश ने मध्यकालीन परिवेश से आधुनिक परिवेश में प्रवेश किया तो मध्यकालीनता और आधुनिकता के बीच द्वंद्व उत्पन्न हुआ, हम संक्रमण की स्थिति से गुज़रे।"

नारी शिक्षित हो या अशिक्षित, उसे शोषण का शिकार होना पड़ता है। पुरुष अपनी नारी दोस्त से खुलकर बर्ताव करता है, उसकी स्वतंत्रता की ड़ींग मारता है, पर पत्नी को घर के अंदर दबाकर रखना पसंद करता है। नारी को परिवार और समाज के लिए अपनी इच्छाओं का बलिदान देना पड़ता है। वह खुद अपनी एक पहचान बनाने के लिए विवश दीख पड़ती है। आज की नारी घर के चार दीवारों के अंदर अपने को बंद रखना नहीं चाहती है। वह ठोस यथार्थ से जूझकर परिवार और समाज में अपने लिए एक 'जगह' को तलाशती है। डॉ. गीता सोलंकी लिखती है- 5.."**आज की नारी भावनाओं के धागों में ख्वाबों के मोती पिरोकर ज़िंदगी जीना नहीं चाहती। वह चाहती है एक ऐसा ठोस धरातल और यथार्थ दृष्टि जो उसके भविष्य को सुरक्षा प्रदान कर सके। 'पति देवो भव:' की आदर्शवादिता से दूर वह अब परिवार और समाज में अपना अस्तित्व खोजने लगी है।**" समसामायिक हिंदी कहानी नारी की अस्मिता की तलाश में उसके साथ निभाती दृष्टिगोचर है। स्त्री की स्थिति को लेकर स्पष्ट बदलाव कहानी साहित्य में परिलक्षित है।

बदलाव की दहलीज़ पर खड़ा नारी जीवन : चंद्रकांता की कहानियों में

हिंदी कथा साहित्य के विशाल पट पर चन्द्रकांता जी ने अपनी अमिट छाप छोड़ी हैं। अपने विशाल रचना संसार द्वारा उन्होंने मानव मन की विह्वलताओं को , विशेष्कर नारी जीवन की आशा- निराशा और आकांक्षाओं को बखूबी उभारा है। मानव अधिकारों के प्रति उनके समान उनके पात्र भी सचेत हैं। समसामायिक जीवन की ज्वलंत समस्याओं को उभारने में चन्द्रकांता जी विशेष रूप से सक्षम है। प्रतिष्ठित व्यास सम्मान सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त चन्द्रकांता जी की कुछ रचनाएँ विविध भाषाओं में अनूदित है।

3 दिसंबर 1938 को श्रीनगर कश्मीर में जन्मी चन्द्रकांता जी ने अनुभव किया कि युद्ध तथा सामाजिक – राजनैतिक दुर्व्यवस्था नारी जीवन को ही ज़्यादा बेबस बनाती है। नारी ही इसके शिकार होती है। उनकी कहानियाँ अंधविश्वास, आतंकवाद और रूढ़ी मान्यताओं के विरुद्ध आवाज़ मुखरित करती है। ये कहानियाँ संकुचित विचारों से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता के पक्षधर होकर मूल्यों और मानव अधिकारों की पुन: स्थापना पर बल देती है। वैश्वीकरण की इस अंधी दौड़ में नारी सोच में आए बदलाव को उजागर करनेवाली ये कहानियाँ नारी की गहन आंतरिक शक्ति का भी परिचायक हैं। यहाँ विचार के लिए 'अलकटराज देखा' और 'दहलीज़ पर न्याय ' कहानियाँ चुनी गई है।

अलकटराज देखा

यह छवि की कहानी है जो यूनिवर्सिटी में बेस्ट गर्ल का खिताब पाई लड़की है, ए ग्रेड होल्डर, सुन्दर और स्मार्ट। एक्स्ट्रा करिक्यूलर एक्टिविटीज़ , ड्रामा, डिबेट, खेल के मैदान में, कहाँ नहीं थी वह। आज अपने पति रवि के साथ सैनफ्रेंसिस्को में आकर वह खुद को अलकटराज की जेल के उम्र कैदी के बराबर पाती है।

छवि सोचती है कि इस शहर में रात बाहर है या भीतर। भीतर स्याह अंधेरा है और बाहर रोशनी का आलम। खूबसूरत परदों से ढके- मूँदे बेडरूम में झिर्री भर जगह नहीं कि हवा का नन्हा झोंका भी भीतर घुसने की हिम्मत करे। छवि को बंद कमरे में नींद नहीं आतीं। सांसें रुकने लगती है। जब वह अपने देश में थी तब घर में खिड़कियाँ खोलकर सोने की आदत थी। लेकिन वह नींद और सपने बाकी न रहे। छवि को अब चैन नहीं है, 6.**"एक देश है जो सालता रहता है, एक तिलमिलाहट, जो भीतरी रसायन में खलबली मचा उसे बेकरार करती रहती है।"**

छवि धीरे से उठकर परदा सरका देती है। यहाँ से नज़र की ओट, सागर के बीच, अलकटराज का द्वीप है, उम्र- कैदियों का अंतिम रिहायश, जहाँ चौबीसों घंटों काली रात आवाज़ाही करती रहती है। एक बार छवि गई थी मिसेज़ संघू के साथ अलकटराज की जेल देखने। छवि को लगता है, वह सैनफ्रेंसिस्को शहर के बंगले में नहीं, अलकटराज के टापू में उम्र कैद काट रही है।

रवि के साथ उसकी शादी कराके माँ- बाप खुश हैं। वे सोचते हैं कि बेटी खुशकिस्मत है, रवि जैसा साथी मिला है उसे। छह फुटा हैंडसम जवान, होनहार, सुलझा हुआ। कइयों से रवि के बारे में पता लगाया। सभी ने अनुकूल उत्तर दिया। यानि कि दुनिया भर की नियामतें छवि की झोली में आ गिरी है। पापा ने निष्कर्ष निकाले कि रवि को पाते ही वह पीछे मुड़कर देखना भूल जाएगी। और उस पोनीटेलवाले कवि रघु की कविताई भी। एक बार स्टेज पर छवि शकुंतला बनी और दुष्यंत बना वह लंबे बालोंवाला रघु। वहीं से आपसी मेल- मुलाकातें बढ़ीं। माँ -बाप चिंतित हुए। रघु छवि को क्या दे पाएगा। पापा ने बेटी के लिए बड़े सपने देखे थे। रघु पी. एच. डी के लिए दिल्ली चला गया और छवि को उसकी खाली जगह का सूनापन महसूस होने के पहले मंच पर रवि का अवतरण हो गया। रवि ने कहा कि वहाँ औरत- मर्द दोनों के हक बराबर है, वह चाहे आगे पढ़ाई करे ,या जॉब करे , उसकी मर्ज़ी। आखिर छवि राज़ी हो ही गई।

पन्द्रह दिन रवि उसे शहर दर शहर घुमाता रहा। वे दिन हवा के पंखों पर सवार थे। हनीमून बीता भी नहीं कि उसके भीतर नई हलचलें जन्म लेने लगी। रवि बहुत खुश हुए। एक छोटा सा 'गेट टुगेदर' रखा घर में। चार जोड़ी करीब दोस्तों को बुलाया। इसी बीच रवि के खास दोस्त कमल का जिक्र हुआ जो पार्टी में उपस्थित न था। कुछ दिन बाद कमल से मुलाकात हुई। दुबला जिस्म, लड़कीनुमा गोरा-शर्मीला सा चेहरा। कमल के आने से रवि में अजीब सी तब्दीलियाँ आने लगी। छवि से दूरी बढ़ने लगी। घर में हर जगह कमल नज़र आने लगा। ऑफिस में देर रात तक रवि- कमल व्यस्त रहते। परमजीत ने समझाया कि कमल रवि की कमज़ोरी है। तुम्हें उसकी आदत डालनी होगी। छवि पूछ बैठती है कि फिर रवि ने शादी क्यों की। उसने कहा, 7. **"छवि, यह सैनफ्रेंनसिस्को नगर है, ए फ्री कंट्री। कुछ भी गलत नहीं। रही शादी की बात, तो रवि एक्सपेरिमेंट करना चाहता है कि शायद वह गृहस्थ जीवन पसंद करे या शायद पिता बनना चाहता है। है तो मेल शोवनिस्ट ही। पुरुष की प्रकृति को समझना भई, मुझे तो आसान नहीं लगता, पर यह मान लो, वह कमल को छोड़ नहीं सकता।"**

छवि के भीतर तूफ़ान उठा, कि रवि ने उसे 'गिनिपिग' बनाया है। एक्सपेरिमेंट। पिता होने का प्रमाण पाने के लिए। छवि की सहनशक्ति जवाब दे गई। वह कहती है, 8. **"मुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलेगा तो, मैं तुम्हारे पिता होने का सपना नहीं होने दूँगी। मान लो कि मैं गिनिपिग नहीं हूँ"** । छवि की आवाज़ में जाने कैसी चुनौती थी कि रवि ने खुद को अपराधी महसूस किया। छवि का यह रूप वह पहली बार देख रहा था। रवि ने आग्रह किया कि छवि ऐसा कोई कदम न उठाए कि बच्चा नष्ट हो। जेल से भागनेवाले उम्रकैदी की जीवनेच्छा और साहस को अपने मन में बटोरकर एक निर्णय लिया कि कोख में पलते नन्हे जीव को जन्म देने के लिए इंतज़ार करना था। वह उसका अपना अंश था। नन्हीं बेटी कोयल के जन्म के तीनेक महीने बाद छवि रवि को शादी के कॉण्ट्राक्ट से आज़ाद करके अपना जीवन अपने ढंग से जीने का निर्णय लेती है। रवि ने एलिमनी में छवि को अपना बंगला दिया। बच्ची को छवि के पास छोड़ने पर मज़बूर हुआ। छवि अब बेडरूम की खिड़कियाँ खोलकर अलकटराज का द्वीप देखती है। अब यह उसे डराता नहीं, क्यों कि अब वहाँ कोई कैदी नहीं रहता।

दहलीज़ पर न्याय

यह रुक्की की जीवन गाथा है जो अपने बच्चे के वास्ते अपना न्याय खुद निर्धारित करती है। समाज व धर्म के नाम पर चलती रूढ़ियों के खिलाफ़ वह अपने अधिकार और न्याय के लिए लड़ने में ज़रा भी हिचकती नहीं।

रुक्की की शादी के पाँच साल बाद ही उसकी कोख हरी हुई। काकी माँ का आग्रह था कि छोरे को महंत के पास ले जा। माथे पर हाथ फेर देगा। महंत ने बच्चे को घूरते हुए ,सख्त आवाज़ में रुक्की से कहा 9 **"देवी माँ को तेरे बच्चे की ज़रूरत है।"** उसकी बलि देगी तो दस गबरू जनेगी। लेकिन रुक्की ने आगे की बात न सुनी। उसकी देह तो देह आत्मा तक काँप उठी थी। वह घर लौटकर चुप्पा- गूँगी हो गई। लेकिन गाँव भर में दबी- दबी आवाज़ें उभरने लगी थी, महंत की बात। उसका पति राधे तो पत्थर हो गया था। रुक्की के पेट में चीरा लगाकर बेटा जन्मा है। डॉक्टरनी कह गई थी कि दूसरा बच्चा नहीं होगा। राधे ने जब यह बात महंत से कहा तो उसकी आँख क्रोध से लाल हो गई। वह दांत पीसकर बोला, 10. **"डॉक्टरनी देवी से ज़्यादा जानती है। बच्चे की उम्र एक माह एक दिन लिख गई है धर्मराज के बही खाते में। इसे पत्थर की लकीर समझो।"**

राधे समझाते, पाँव पकड़ते हार गया, लेकिन महंत का दिल न पसीजा। गाँव के बड़े –बूढ़े भी प्रकारांतर से महंत की बात का समर्थन करने लगे थे। रुक्की किसी को न समझा सकी। राधे जान गया कि महंत अपनी ज़िद पूरा करके ही रहेगा। कितने तो गुंडे पाल रखे हें। देवी के नाम पर उसका बच्चा बलि चढ़ेगा और वह अपनी आँखों से यह अत्याचार देख न पाएगा। राधे उसी दिन गाँव छोड़कर भाग गया।

रुक्की अकेली पड़ गई। लेकिन वह हार माननेवाली नहीं थी। वह न्याय के दरवाज़े खटखटाने की हिम्मत जुटाती है। वह पुलिस –दरोगा के सामने सारा कच्चा –चिट्ठा खोलकर रख देगी। गाँव में कोई भी महंत के खिलाफ़ एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। लेकिन रुक्की अड़ गई। यह रुक्की का अपना मामला है। सूर्य उगने से पहले वह पुलिस चौकी पर पहूँच गई थी। पुलिसवालों से उसे अच्छा व्यवहार नहीं मिला। घंटे भर में दारोगा वर्दी में आ गया। रिपोर्ट पढ़ने के बाद थानेदार ने पूरे गाँव में आदमी दौड़ाए। लेकिन कोई भी गवाही देने केलिए तैयार नहीं हुआ। रुक्की खून का घूँट पीकर रह गई। उसने अपना मन पक्का कर लिया। वह मन में निश्चय करती है, 11. " **वह अकेली लड़ेगी। बिलकुल अकेली। वह न्याय केलिए लड़ेगी। मरना होगा तो इंसाफ़ की देहरी पर सिर फोड़कर मरेगी।** दारोगा ने उसे रात भर रोके रखने की हिदायत की। रुक्की का दिल बैठ गया। लच्छू पुलिस बार-बार पूछता कि आराम से तो हो रुकमिनी, अपने दारोगा साहब की बड़ी ताकत है, उन्हें तू ज़रा खुश कर दे, बस। बाकी समझ ले कि न्याय आपे चलकर तेरे दरवाज़े पर खड़ा हो जाएगा। लेकिन रुक्की इस तरह न्याय लेने के पक्ष में नहीं थी। उसकी पहलवानी यहाँ किस काम की, उसको दिमाग से काम लेना पड़ेगा। वह वहाँ से किसी न किसी प्रकार खुद को बचाकर भाग निकली। भागते- भागते पानी के लिए एक घर का दरवाज़ा खटखटाया। वहाँ की स्त्री से सरदार अतरसिंह के बारे में जान गई। अपने बच्चे के साथ रुक्की वहाँ पहूँच जाती है। उसने बताया कि वह काम माँगने आई है। वह कहती है,12 **"लेकिन कोई गलत काम नहीं करूँगी.....मैं वह काम नहीं करूँगी जो मर्द लोग औरत को मज़बूर समझकर कराते है।"** उसके इस कथन में उसका चरित्र साफ़ खुलता है।

रुक्की को वहाँ काम मिल गया। महीना भर उसने काम किया, जी- जान से । सरदार ने उसकी दुख गाथा सुनी और कहा कि वह उसे किसी बड़े वकील से मिलाएगा। महंत को सज़ा दिलाएगा और बच्चा 'कन्हैया' को न्याय दिलाएगा। एक दिन अचानक शहर से तार आया- सरदारनी के पिता बीमार है, वह घर –बार रुक्की को सौंप शहर चली गई। इसी बीच सरदार को सर्दी हो गई। रुक्की पानी लाने गई तो सरदार ने मतलब की बात कही। रुक्की आसमान से धरती पर गिर पड़ी। सरदार ने बच्चे को दाएँ हाथ से उठाया और बाएँ हाथ से रुक्की को अपनी तरफ़ खींच लिया। सरदार ने धमकी दी कि ज़्यादा चूँ- चपड़ की तो इस मरियल पिल्ले को धरती पर पटक दूँगा। रुक्की ने पल भर में चेहरा मुलायम बनाकर अपनी बाँह छुड़ा दी। सधे कदमों से चौके में गई। वहाँ से मीट काटनेवाला छुरा लाकर सरदार के पीछे खड़ी हो गई। रुक्की पर भूतनी सवार हो गई। उसने सरदार की बाँह में बत्तीसों दाँत गड़ा दिए और बच्चे को उसके हाथ से खींचकर परे लुढ़का दिया। सरदार की चीख जब तक संभले, वह फुरती से उसकी छाती पर चढ़ बैठती। छुरी की नोक सरदार के गले पर थी और ज़रा भी हिलने से उसकी सांस की नली काट सकती थी। सहसा रुक्की ने अपना हाथ पीछे खींच लिया। सरदार का सिर पलंग की पाटी पर मारकर अलग हट गई। थर्राती आवाज़ घर के सूने कोने अंतरों को हिलाने लगी। रुक्की कहती है, 13. **"जेहल-फाँसी से तुझ जैसे धर्मी-कर्मी ही डरते हैं, शरीफ़ज़ादे। मैं ते तुम्हारे कानून से डर गई। कल्ल के जुर्म में मुझे फाँसी मिल जाती तो शायद मेरा इंसाफ़ हो जाता रे पापी, पर मेरे इस कलजुगी कन्हैया के साथ कौन इन्साफ़ करता।"** वह अपने लिए न्याय की दहलीज़ खुद निर्धारित करती है।

आशा प्रभात जी की कहानियों में चित्रित नारी जीवन

आशा प्रभात जी लेखिकाओं में अपना विशेष स्थान बरकरार रखती है। उनकी रचनाएँ स्त्री जीवन का खुला दस्तावेज़ है। उनके साहित्य में बदलती भारतीय नारी का पूरा चित्र सामने आता है। वैचारिक दृष्टि से बदली यह नारी समाज में एक नया दृष्टिकोण पैदा करने का भरसक प्रयास करती दीखती है। विचार केलिए आशा प्रभात जी की चार कहानियाँ चुनी गयी हैं जो उनके 'कैसा सच' संग्रह में संग्रहीत है।

कैसा सच

सुबह –सुबह रमन भैया आकर कह गया कि परसों माँ आ रही है। गाँव से उनका छोटा भाई आया है खबर लेकर। यह खबर सुनकर चाहिए यह था कि वह खुशी से उछाल पड़ती लेकिन मन में उत्साह का कोई हल्का सा आभास भी नहीं हुआ। स्वाती के मन में अपराध करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया एक अपराधी का जैसा विचार उमड़ रहा था।

स्वाती को यहाँ महानगर दिल्ली में आये चार वर्ष हुए। इतने वर्षों के बीच माँ से उसका कोई संपर्क नहीं था। न कोई चिट्ठी ,न फोन। लेकिन उसे अपने गाँव, भाई और माँ की याद बराबर आती थी। वहाँ की खोज- खबर वह रमन भैया से लेती थी जो पड़ोसी गाँव में रहता था। साल में वे एकाध बार गाँव हो आते और माँ की खैरियत की खबर ले आते। जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी तभी से मां गुस्सैल और ज़िद्दी रहने लगी। बिना कसूर दोनों भाई-बहनों को डाँटती, फटकारती। अपने कृश शरीर को फिर भूखा रहकर सज़ा देती।

पिता की असमय मृत्यु ने माँ के साथ- साथ दोनों भाई- बहनों को भी अभावग्रस्त जीवन की ओर धकेल दिया। भाई दस वर्ष का था और उससे तीन वर्ष बड़ी वह। माँ की उम्र का पता नहीं था। यह बात उसको तब मालूम हुई जब शहर की एक संस्था लोगों का मेडिकल करवाने गाँव आई थी। गाँव की हर औरत मुँह पर आँचल रखती, धीरे हँसती और फिर कहती कि अहीं बता दू न हमरा देखके। हमरा की पता।

नर्स ने जब कहा कि पैंतालीस की औरतें यहाँ बूढ़ी होकर झुक जाती है तब यह सुनकर इस सच्चाई पर उसे घोर आश्चर्य हुआ। गाँव की औरतों की हालत ऐसी ही है। माँ अभी झुकी नहीं थी। लेकिन पिता की मृत्यु के बाद माँ की कमर भी झुकने लगी थी। माँ अपनी बच्ची को औरत बनते देख सहम उठी थी। बच्ची की शादी करवाने के जुगाड़ में जुट गई। लेकिन माँ के लिए यह इतनी आसान बात नहीं थी।

पहले माँ हँसमुख और खुशमिज़ाज़ हुआ करती थी। पर कभी कभी उनके चेहरे पर उदासी छा जाती जब उसका शहरवाली मौसी के यहाँ आना जाना होता। दोनों भाई-बहन को वहाँ बहुत अच्छा लगता। खासकर बड़े-बड़े स्नानघर और साथ में साफ़ सुथरा पाखाना घर। वैसा पाखाना घर गाँव में किसी के यहाँ नहीं था। लेकिन मौसी के घर माँ अपने को तुच्छ मानती और उसका स्वाभिमान तड़प उठता।

लेकिन शहर की ये यात्राएँ माँ के मन में बच्चों की पढ़ाई के प्रति उत्साह भरने में सक्षम रही। पढ़े लिखे लोगों का रहन- सहन और बोली- बहस देखकर बच्चों को पढ़ाने की ललक उनके मन में जागृत हो उठी। जब तक पिता जी ज़िंदा थे वे दूकान संभालते। पिता के जाने के बाद माँ दूकान पर बैठती पर भीतर के दरवाज़े पर। यह कथन गाँव की रीति रिवाज़ो की ओर इशारा देता है- 14. **"गाँव में पर्दा अनिवार्य था। जाति का गरूर गरीबी को भी नहीं बख्शता था उसूलों के मामले में । सख्ती से लागू था वह, कोठियों से लेकर झोंपड़ियों तक। उसे किसी के अभावों से कोई मतलब नहीं था"।** गाँव में लड़कियाँ प्राथमिक तक ही पढ़ पाती थी। जब स्वाति छठी कक्षा में जाने के साल पिता किसी जोड़ तोड़कर एक छोटा सा ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी. लाए थे। गाँव में बिजली न रहने के सूरत में पिता बैट्री भी लाए थे। टी.वी. की दुनिया तो अलग एक दुनिया है। कभी- कभी स्वाति सोचती कौन सी दुनिया है ये जहाँ ये लोग रहते हैं। टी.वी. की दुनिया का यह सच अगर सच है तो कैसा सच है यह। लड़कियाँ भी लड़कों की तरह पोशाक पहनें, स्वतंत्र, स्वच्छंद घूमती। स्वाति सोचती है- 15. **"एक उसका गांव है जहाँ कुछ नहीं बदला था, न रहन-सहन, न खान- पान....न ही सोच"।** शहर से महिलाओं का प्रशिक्षण देने हेतु आयी बसुमति जी यह सुनकर चकित रहती है कि गाँव में बहुओं को भर –पेट खाना नहीं दिया जाता क्योंकि अगर दिन में शौच में जाना पड़े तो उनकी इज्जत चली जाएगी।

गाँव जहाँ लड़कियों का जवान होना दुनिया का सबसे बड़ा अभिशाप था। माँ ने स्वाति की शादी के लिए पंडित रामरख का सहारा लिया। जब भी रामरख जी स्वाति के लिए गाँव से कोई रिश्ता ले आता तो उसके शरीर में भय के हज़ारों कैक्टस उगते। वह अपनी गरीबी और मज़बूरी पर खीझ उठती थी। अंत में सुहेश का रिश्ता या जो दिल्ली में किसी फैक्टरी में काम करता है। उसका छोटा घर भी वहाँ है। स्वाति सोचती है , दिल्ली बहुत बड़ा शहर है, फिर तो वहाँ पाखाना घर ज़रूर होगा। वह इस बात को लेकर मां से बगावत भी करती है।

और स्वाति ब्याह कर दिल्ली आई। दिल्ली की पहली सुबह। उसने सोये पति को जगाकर शौचालय के बारे में इशारा से पूछा था कि वो कहाँ है। पति ने पड़ोसन को आवाज़ दी। पड़ोसन उसे लिए हुए पहूंची थी यमुना के किनारे बबुल की झाड़ियों में और बोली थी, आसपास ही निबट लो। अब स्वाति को यह प्रश्न खाए जा रही है कि अगर माँ ने पूछ लिया कि तेरा शौचालय कहाँ है तो वह क्या जवाब देगी।

नारी की सोच में बदलाव ज़रूर आया है लेकिन समाज उसके अनुकूल रवैया बदलने के लिए तैयार नहीं है। अशा जी प्रस्तुत कहानी द्वारा इसी बात की ओर इशारा करती है कि यह जीवन का कैसा विचित्र सच है।

इसे भ्रम ही रहने दो

कहानी प्रथम पुरुष में लिखी गई है। आपबीती के रूप में लिखी गई प्रस्तुत कहानी में नायिका के साथ- साथ जो जो घटनाएँ घटती है उन पर वह विश्वास नहीं कर पा रही है। क्यों कि समाज में ऐसी घटनाएँ अप्रत्याशित है।

कहानी की शुरुआत में अनिमा बड़े सबेरे सवा पाँच बजे चौराहे पर पहूँची। जुलाई का आखिरी हफ्ता था और हल्की सी बूँदाबाँदी हो रही थी। उसे रिक्शा पकड़कर स्टेशन जाना है, नहीं तो छह बजे की गाड़ी छूट जाएगी। पैदल स्टेशन जाना नामुमकिन था। चोराहे पर चाय- पान की दूकानें खुली थीं पर भीड़ न के बराबर थी। पान की दूकान के बगल एक रिक्शा खड़ी थी। वह जल्दी उसके पास लपकी। पाँच मिनट के बाद अधेड़ उम्र का एक आदमी ने आकर पूछा कि कहाँ जाना है। उसने भीगी सीट पोंछा और वह बैठ गई। उसने कहा जल्दी करो , नहीं तो गाड़ी छूट जाएगी। उसने पलटकर देखा और जल्दी जल्दी पैडल चलाने लगा। अनिमा सोचती है- 16. **"उसका इस तरह पलटकर देखना उसकी आवाज़ से भी अजीब लगा"।** आये दिन कुछ रिक्शावाले भाड़े के लिए सवारियों से झगड़ा करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इन दिनों उसने रिक्शे से कहीं आना- जाना छोड़ दिया था। स्कूटी से ही आफिस आया जाया करती थी। आये दिन कुछ रिक्शावाले पुरुषों से कम, महिलाओं से किराये को लेकर ज्यादा बक- झक करने लगते। जान बूझकर हो- हल्ला मचाते ताकि अगल बगल से ताकती- झाँकती आँखों का तमाशा बनने से बचने के लिए महिलाएँ मुँह माँगा भाड़ा दे देती।

स्टेशन परिसर में रिक्शा रुका। पौने छह बज रहे थे। बहुत जल्दी पहूँचा दिया था उस रिक्शेवाले ने। अनिमा ने दस रुपए का नोट दिया। तय भाड़ तो सात रुपए था लेकिन यहाँ तो कुछ तय नहीं था। रुपए देकर वह पलटी तो रिक्शेवाले ने तीन रुपए वापस दिया। वह अवाक् रह गई। क्या वह सपने तो नहीं देख रही है। गाड़ी का इंतज़ार करती हुई वह सोचती है- 17. **"कोई भी बात जिसके हम आदी हो चुके होते हैं, उससे हटकर कुछ और होना हमें अचंभित कर देता है। समझ नहीं पाते, इसका सही स्वरूप क्या है"।**

वह गाड़ी में बैठ गई। यात्रियों में दो लड़कियाँ और उनकी मौसी थीं। जब टी.टी. आया तब भय की एक सिहरन से उसे हुई – खुद के लिए नहीं, इन यात्रियों के लिए। इनमें अधिकतर बिना टिकट यात्रा कर रहे होंगे। घोर आश्चर्य, बारी –बारी सब अपना टिकट दिखाने लगे थे। वह आश्चर्य में पड़ गई। क्या सतयुग तो नहीं आ गया रातों रात।

कोई बड़े स्टेशन से आठ- दस लड़के डिब्बे में घुसे थे। पहले कुप्पे में खाली सीट न देख इस कुप्पे के पास ठहर गये। एक दो खाली सीटों के लिए इधर – उधर नज़र दौड़ा रहे थे। तभी एक ने गाना शुरू किया। हँसती,चहकती , खुश होती लड़कियाँ चाबी वाली गुड़ियों की तरह खामोश हो सिमट गई। मौसी जिनकी आँखों में नींद शुरू स्टेशन से ही सवार थी, बच्चियों की तरफ़ सरक आई जैसे बाज को देख चूज़ों की हिफ़ाज़त के लिए सजग होती चिड़ियाँ। कुप्पे में अनजानी सी दशहत व्याप्त हो गई। बेचैनी तो उसके अंदर भी घुमड़ने लगी थी। आये दिन हो रही ट्रेनों की घटनाएँ याद कर। अनिमा सोचती है- 18. **"अगर कोई अनहोनी घटी तो ... आजकल बचाने का जोखिम कोई नहीं उठाना चाहता सफ़र मे कुछ भी हो सकता है, ऐसी धारणा सी बन गई थी लोगों की"।** तभी उन लड़कों में से एक ने दूसरों से कहा क्यों किसी को उठा रहे हैं, तीसरे स्टेशन में तो उतरना है। संभावित विपत्ति टल जाने पर उसने इत्मीनान की सांस ली।

अपने स्टेशन पर उतरते वक्त सीढ़ियों से नीचे उतरते चप्पल तिरछी पड़ गई। पाँव में भयानक दर्द उठा। अनजाना शहर, अनजाने चेहरे, कोई तो परिचित दिख जाए इस इच्छा के साथ वह बैठ गई। एक अधेड़ सज्जन मदद के लिए सामने आया। 'कोई बात नहीं, बेटी' कहकर उस सज्जन ने उसे रिक्शा तक पहूँचा दिया। अनिमा ने मीटिंग के ऑफ़िस पहूँचकर दवा ली। मीटिंग समाप्त होने पर शामवाली गाड़ी पकड़ने के लिए निकली। स्टेशन पर बड़ी भीड़ थी। वहाँ स्कूल से कॉलेज तक का सहपाठी सनातन मिला। जब अनिमा ने आज घटित घटनाओं के बारे में कहा तो उसने बताया कि ट्रेन में मजिस्ट्रेट चेकिंग था। रिक्शावाला कोई धर्मात्मा पुरुष होगा। अनिमा ने कहा- 19. **"छोड़ो इन बातों को। ....अगर यह सब मेरा भ्रम है तो इसे भ्रम ही रहने दो।"**

देश में हो रही कड़वी सच्चाइयों को कहानीकार हमारे सामने रखती है। अगर कुछ अच्छा घटता है तो उसे भ्रम लगता है। परिस्थितियाँ इतनी विसंगतिपूर्ण बन गई है कि अच्छाई देखकर भी लोगों को भ्रम लगता है। एक नारी की नज़रिए से समाज की इन विसंगतियों को उजागर करने में आशाजी सक्षम दीखती है।

ठेस

प्रस्तुत कहानी द्वारा कहानीकार यह दिखाने का प्रयास करती है कि पढ़ी लिखी और वैचारिक दृष्टि से प्रबुद्ध लड़की भी तलाक के विषय में कोई फ़ैसला लेती है तो समाज उसके विरुद्ध कैसा निषेधात्मक रवैया अपनाता है।

प्रथम पुरुष में यह कहानी कही गई है। सोमा लौट आई है। यह खबर आग की तरह सारे मुहल्ले में फैल गया। एक महीने पहले सोमा की शादी धूमधाम से हुई। किसी को कुछ समझ में नहीं आया कि क्या हो गया। सोमा मुहल्ले की सबसे ज्यादा पढ़ी लिखी लड़की थी। सोमा ने राँची में रहकर इंगलिश मीडियम से मेट्रिक के बाद बी.एस.सी ऑणर्स प्रथम श्रेणी में पास किया था। छुट्टियों में जब भी वह घर आती, दूसरे लड़कियों के लिए उसका व्यक्तित्व आश्चर्य और ईर्ष्या का विषय होता था। सब लड़कियाँ अपने अपने भाग्य को कोसती। दूसरी लड़कियों के अभिभावकों में उतनी हैसियत नहीं थी।

कई एकड़ ज़मीन के मालिक के यहाँ सोमा की शादी हुई थी। वर भी नौकरीवाला। सोमा देश की राजधानी दिल्ली में रहेगी। ग्रेजुएशन के बाद सोमा आगे पत्रकारिता करने की सोच रही थी, पर वक्त ने उसे मोहलत ही नहीं दी थी। घर बैठे आनेवाला इस रिश्ता पाकर सोमा के पिता ने ईश्वर को धन्यवाद दिया था। इन सब बातों के बावजूद सोमा लौट आई थी। ऐसी स्थिति में समाज का रवैया दिखाते हुए कहानीकार लिखती है- 20.**"कारण की तलाश में हर आदमी का दिमाग जासूस, आँखें एक्सरे मशीन और कान बारीक यंत्र बन गये थे"।**

एक दिन सोमा मुझसे मिलने आ गई। बिना भूमिका के पूछ बैठे कि तुम हाथ देखती हो न। जहाँ तक मैं उन्हें जानती थी वह कर्म पर ज़ोर देती थी न कि पामिस्ट्री और स्ट्रोलजी पर। फिर भी कहा कल तक देख लूँगी। जन्मपत्री देखने के बाद हाथ देखना ज्यादा उपयुक्त रहता है। वह आई और पूछा कि उसकी जन्मपत्री में डिवोर्स का योग है। मैं ने पूछा कि क्या खराबी है लड़के में। क्या वह पागल , शराबी है। इस पर सोमा पूछती है- 21. "**क्या अपना जीवन जीने का अधिकार नहीं होना चाहिए इंसान को**"। वह कहती है कि हर हाल में उसे तलाक चाहिए और नौकरी का योग भी देखकर रखना। तलाक के मामले में समाज का दृष्टिकोण ऐसा है- 22. "**हमारा सामाजिक, पारिवारिक ढाँचा कुछ इस तरह का है कि परिवार का एक सदस्य के सही आचरण से जहाँ ऊँचा उठता है, वहीं गलत आचरण से समूल ढह भी जाता है। यह समाज किसी एक के गुनाह को एक का गुनाह कभी नहीं मानता, बल्कि सारे परिवार का गुनाह समझ उसे प्रताड़ित व दंडित करता है"।**

सोमा तलाक और नौकरी की बात पर टिकी रहती है। उसकी माँ समाज के कायदे कानून और छोटी बच्चियों के बारे में सोचकर चिंतित है। फिर भी कहानीकार लड़कियों के विचार में आये बदलाव को अनदेखा नहीं करती है। वह सोचती है- 23. "**किसी भी विचार, परंपरा या कायदे का प्रभाव आहिस्ता- आहिस्ता ही खतम होता है। यही क्या कम था कि दबी ज़ुबान में ही औरतें अपनी मंशा, पसंद या नापसंद ज़ाहिर कर रही थी"।**

सोमा अपने पति के बारे में कहती है कि वह एक सैडिस्ट है। उसके सामने ही दूसरे औरतों को घर ले आता है। कुछ दिनों के बाद उसकी बहन नीलू से पता चला कि सोमा दिल्ली में पत्रकारिता का कोर्स कर रही है, होस्टल में रहकर। उसे तसल्ली सी हुई दिल में कि कोई ऐसी आग तो है जो बुझी नहीं है और उसे शोला बनना है।

लड़कियों के सोच में आये बदलाव को कहानीकार बखूबी अभिव्यक्ति देती दीखती है। आज की नारी समाज और परिवार के सदस्यों को अपने जीवन के आड़े नहीं आने देती। उसे खुद अपना जीवन जीना है। ऊँचाइयों को पकड़ना है। शिक्षा नारी के सोच में बदलाव के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह अपने अधिकारों के लिए सचेत होती दीखती है।

आदम और हव्वा

प्रस्तुत कहानी द्वारा आशा जी स्त्री और पुरुष के लिए प्रेम की नई अवधारणा स्थापित करती है। भारतीय सामाजिक परिस्थिति में प्रेम पुरुष के लिए मुक्ति है तो स्त्री के लिए चिर बंधन है। स्त्री के शरीर का भी वह खुद अधिकारी नहीं है। सदाचार का भार केवल नारी को ही वहन करना पड़ता है। सिद्धार्थ और शिप्रा दोनों सीढ़ियों पर बैठे हुए हैं। इस खुशनुमा शाम में यहाँ उपस्थिति का आग्रह सिद्धार्थ का था। बहुत देर दोनों के बीच खामोशी रही। अचानक सिद्धार्थ ने कहा कि मिज़ेज़ राय मुझे चाहने लगी है। सिप्रा के पाँव से सिर तक एक लहर दौड़ गई। वह सोचती है कि सिर्फ़ सिद्धार्थ यहाँ बैठा है, मौजूद कहीं और है। विगत कई हफ़्तों से उनके बीच ऐसे ही कुछ हो रहा था। सिद्धार्थ का यह रूप उसके सामने आ रहा था जब वह उसके साथ बहुत दूर निकल आई थी। जब शिप्रा ने बहुत ही सहजता से कहा ऐसा संभव है तो सिद्धार्थ आश्चर्य में पड़ गया। सिद्धार्थ ने पूछा कि क्या तुम्हें जलन नहीं है सुनकर। सह सुनकर शिप्रा तिलमिला उठी- 24.

"सदियों से औरत का ईर्ष्या से नाता जोड़कर, तुम्हारे समाज ने मानसिक शोषण के साथ-साथ उसके स्वाभिमान का भी माखौल उठाया है जब कि ईर्ष्या का पर्याय सदा तुम्हारा समाज रहा है। ख्वाह वह युद्ध का क्षेत्र हो, जीवन का हो या प्रेम का...."। शिप्रा ने कहा कि इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम लोगों को प्रेम हो गया है। शिप्रा कहती है- 25. **"प्रेम होने का अर्थ है किसी में अपना आइडियल देख अनायास आसक्त या आकर्षित हो जाना पर करने शब्द से ज़ाहिर होता है यत्नपूर्वक सुनियोजित ढंग से। तो वह किसी से भी हो सकता है जब फ्लर्ट ही करना हो"**।

दोनों रेस्तराँ पहूंचे। सिद्धार्थ कहता है कि तुम मेरी दोस्त और महबूब भी, तुम से नही कहूँगा तो किससे कहूँगा। वह एक जीनियस साहित्यकार होने के नाते मिज़ेज़ राय को रीड करना चाहता है। सिद्धार्थ के इस बदलाव वाले स्वभाव पर शिप्रा खीझ उठती है। सिद्धार्थ उसे मनाना चाहता है लेकिन शिप्रा उसके रवैये पर तड़प उठी है। शिप्रा सभी औरतों का प्रतिनिधित्व कर बोलती है- 26.. **"मैं उतनी कमज़ोर नहीं हूँ कि तुम्हारी बातों से भावुक होकर कोई अनिष्ट कर बैठूँगी या जान दे दूँगी। लेकिन तुम मानोगी भी कैसे। तुम्हें तो औरतों के हाँ, को हाँ, और न को भी हाँ में समझने की आदत जो है"**। सिद्धार्थ भावुकताओं को भूनानेवाला हथियार लेता है। लेकिन शिप्रा विचलित नहीं होती। वह सोचती है – 27. **"परंपराएं भी अब संवेदनशील कहाँ रह गई है। वह भी आधुनिकता का चोला बदल रही है, वक्त के साथ। बस एक एहसास रह गया था टूटे ढहे खंडहरों की तरह जिसका कोई उपयोग नहीं होता"**। शिप्रा कहती है कि प्रेम में जब सरसता चूकने लगती है तब जबरन तीसरे की उपस्थिति खींच लाता है। शिप्रा की मुस्कान पर सिद्धार्थ खीझ उठता है। वह कहता है कि मर्द की ज़िंदगी में कितनी ही औरतें आती हैं, यह कोई नहीं बात नहीं है। मेरी ज़िंदगी में किसी और के आने से तुम्हारे स्तर में कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा।

सिप्रा को लगा कि केवल युग बदला है, पुरुष मानसिकता नहीं बदली है। वह पूछती है- 28. **"यही वाक्य अगर मैं कहूँ कि मेरी ज़िंदगी में किसी और पुरुष के आने से तुम्हारे स्तर में कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा तो क्या उसे इसी सहजता के साथ स्वीकार लोगे तुम"**। इस प्रश्न पर सिद्धार्थ धक् से रह गया। दोनों फिर अपने अपने राह पकड़े।

निष्कर्ष

चंद्रकांता जी की कहानियों के विश्लेषण से इस निष्कर्ष पर पहँच जाता है कि चंद्रकांता जी अपनी कहानियों में मानव जीवन का यथार्थ चित्रण करती है। अन्याय के विरुद्ध लड़नेवाले उनके पात्र यथार्थ की धरती पर पैर टिकाते दीख पड़ते हैं। उनके नारी पात्र व्यवस्था के अनुकूल नाचती कठपुतलियाँ नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहनेवाली हैं। सामाजिक – धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्द लड़ने के लिए भी उनमें हिम्मत बाकी है। वे कल्पना जगत में विचरण करती परियाँ भी नहीं, ठोस धरती पर खड़ी मज़बूत पात्र हैं। 'अलकटराज देखा' की छवि और 'दहलीज़ पर न्याय' की रुक्की मातृत्व की महिमा को पहचाननेवाली हैं। पति से अलग होकर भी वे अपने बच्चे को अपना ही अंश मानती है। चंद्रकांता जी अपनी कहानियों के माध्यम से नारी के सोच और आत्मिक शक्ति को उजागर करने में सक्षम दीखती है। आज की बाज़ारी व्यवस्था में भी मानवीय मूल्यों को बरकरार रखने की क्षमता उनके पात्रों में है। मूल्यों की पुन: स्थापना भी उनका लक्ष्य दीखता है। यही उनकी कहानियों को लोकप्रिय बना रही है।

आशा प्रभात जी की कहानियों पर विचार करने पर यह विदित होता है कि वे समाज की सच्चाइयों से ही कहानियों के लिए 'प्लॉट' चुनती है। उनके व्यक्तित्व और रचनाधर्मिता के मूल तत्व में लेखन के प्रति संपूर्ण निष्ठा एवं सत्य की तलाश निहित है। नारी मन की विह्वलताएँ उनकी कहानियों में मुखरित है। नारी मनोविज्ञान के आधार पर भारतीय नारी जीवन का आकलन अवलोकन करने में आशाजी सक्षम दीखती है। सामाजिक परिस्थितियाँ नारी जीवन को असह्य गुलामी की ओर धकेलती दीखती है। इन अदृश्य बेड़ियों को तोड़ने का भरसक प्रयास करती नारी को उजागर करना आशा जी अपना लक्ष्य मानती है। शारीरिक व मानसिक शोषण भुगतना भारतीय नारी की नियति बन गई है। हर नारी मन घुटन का अनुभव करने के लिए विवश है। आशाजी का हर नारी पात्र इस शोषण से मुक्ति केलिए छटपटाती है। आशा प्रभात जी स्त्री को दोयम नागरिक के रूप में देखनेवाली सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ बुलंद करती है।

संदर्भ सूची

1. अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 1975के अवसर पर प्रसारित संदेश- इंदिरा गाँधी
2. डॉ. बबनराव बोड़के, बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं 2009, पृ.सं.22
3. साधना अग्रवाल, वर्तमान हिंदी महिला लेखन और दांपत्य जीवन , नई दिल्ली, प्र.सं.1995. पृ.सं.38

4. डॉ. हरदयाल: हिंदी कहानी परंपरा और प्रगति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2005 पृ.सं 142
5. डॉ. गीता सोलंकी : नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास, भारत पुस्तक भंडार, दिल्ली, प्र .सं 2007, पृ.सं 128
6. चंद्रकांता : अलकटराज देखा, चंद्रकांता की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2015, पृ.सं.70
7. चंद्रकांता : अलकटराज देखा, चंद्रकांता की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2015, पृ.सं.80
8. .चंद्रकांता : अलकटराज देखा, चंद्रकांता की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2015, पृ.सं.80
9. चंद्रकांता : दहलीज़ पर न्याय, चंद्रकांता की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2015, पृ.सं 170
10. चंद्रकांता : दहलीज़ पर न्याय, चंद्रकांता की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2015, पृ.सं 170
11. चंद्रकांता : दहलीज़ पर न्याय, चंद्रकांता की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2015, पृ.सं 179
12. चंद्रकांता : दहलीज़ पर न्याय, चंद्रकांता की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2015, पृ.सं 181
13. चंद्रकांता : दहलीज़ पर न्याय, चंद्रकांता की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2015, पृ.सं 184
14. आशा प्रभात, कैसा सच, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं. 82
15. आशा प्रभात, कैसा सच, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं. 85
16. आशा प्रभात, कैसा सच, इसे भ्रम ही रहने दो, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं 25
17. आशा प्रभात, कैसा सच, इसे भ्रम ही रहने दो, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.स. 27
18. आशा प्रभात, कैसा सच, इसे भ्रम ही रहने दो, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं. 30
19. आशा प्रभात, कैसा सच, इसे भ्रम ही रहने दो, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं.33
20. आशा प्रभात, कैसा सच, ठेस, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं. 105
21. आशा प्रभात, कैसा सच, ठेस, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं.107
22. आशा प्रभात, कैसा सच, ठेस, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं.107
23. आशा प्रभात, कैसा सच, ठेस, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं.2010, पृ.सं.109
24. आशा प्रभात, कैसा सच, आदम और हव्वा, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं. 2010, पृ.सं. 61
25. आशा प्रभात, कैसा सच, आदम और हव्वा, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं. 2010, पृ.सं. 61
26. आशा प्रभात, कैसा सच, आदम और हव्वा, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं. 2010, पृ.सं. 62
27. आशा प्रभात, कैसा सच, आदम और हव्वा, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं. 2010, पृ.सं. 63
28. आशा प्रभात, कैसा सच, आदम और हव्वा, राजकमल प्रकाशन, पटना, प्र.सं. 2010, पृ.सं. 64

डॉ. सूसन अलक्स, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सरकारी कॉलेज, कोट्टयम, केरल, नाट्टकम पोस्ट, पिन 686013 मोबाइल 9946665466 ई मेल susanalexv9@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 69-73
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ : ਔਰਤ ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ

-ਡਾ. ਮਨਿੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ
Asstt. Prof in Punjabi, Dasmesh Girls College, Mukerian

ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿ'ਚ ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਸਮਝਣਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿ'ਚ ਲਿਖਤੀ ਰੂਪ ਵਿ'ਚ ਸਾਨੂੰ ਰਿਗਵੇਦ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿ'ਚ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਹਿਤਕ ਤੇ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਸਰੋਤ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਹੀ ਨਾਰੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮੁ'ਢਲਾ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਪੁਰਾਣਾ ਸਮਾਂ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਵੈਦਿਕ ਸਾਹਿਤ ਤੋਂ ਭਾਵ ਉਹ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸਾਹਿਤ ਜਿਸ ਵਿਚ ਵੇਦ ਜਾਂ ਵੇਦਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਸ਼ਾਮਲ ਹੈ। ?ਵੇਦ ਸ਼ਬਦ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੀ ?ਵਿਦ? ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਬਣਿਆ ਹੈ ਜਿਸ ਦਾ ਅਰਥ ਉੱਤਮ ਜਾਂ ਧਾਰਮਿਕ ਗਿਆਨ। ?[1] ਮਨੁ'ਖਤਾ ਵਿ'ਚ ਜਦੋਂ ਚੇਤਨਾ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਨਿਵਾਸੀ ਕੁਦਰਤ ਦੀ ਰਸਣੀਕਤਾ ਨੂੰ ਗਾਉਣ ਲ'ਗ ਗਏ ਅਤੇ ਕੁਦਰਤੀ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਦੀ ਦੇਵਤਿਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕਲਪਨਾ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਉਸਤਤ ਗੀਤਾਂ ਵਿ'ਚ ਕਰਨ ਲ'ਗੇ। ?ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਵਿ'ਚ ਚਾਰ ਵੇਦ : ਰਿਗਵੇਦ, ਸਾਮਵੇਦ, ਯਾਜ਼ੁਰਵੇਦ, ਅਤੇ ਅਰਥ ਵੇਦ ਰਚੇ ਗਏ। ਰਿਗਵੇਦ ਨੂੰ ਹਿੰਦੂ ਸਭ ਤੋਂ ਉੱਚੀ, ਪਵਿ'ਤਰ ਅਤੇ ਪੁਰਾਣੀ ਬਾਣੀ ਮੰਨਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਵਿ'ਚ 1017 ਮੰਤਰਾਂ ਦਾ ਸਮੂਹ ਹੈ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿ'ਚ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾਵਾਂ ਦਰਜ ਹਨ। ?[2] ਵੈਦਿਕ ਸਮਾਜ ਵਿ'ਚ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦਾ ਬੜਾ ਉੱਚਾ ਸਥਾਨ ਸੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਦਰ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਵੇਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਪਰਦੇ ਦੀ ਰਸਮ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਨਹੀਂ ਸੀ ਅਤੇ ਇਸਤਰੀਆਂ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਰੋਕ ਦੇ ਮਰਦਾਂ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਦੀਆਂ ਸਨ। ਉਹ ਮਰਦਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉੱਚ ਸਿ'ਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦੀਆਂ ਸਨ। ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਵਿ'ਚ ਇਸਤਰੀ ਸੁੰਤਤਰ ਸੀ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਉਦਾਰਹਣਾਂ ਅਜਿਹੀਆਂ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਸਪਸ਼ਟ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ ਵਿ'ਚ ਔਰਤ ਦਾ ਦਰਜਾ ਬਹੁਤ ਉੱਚਾ ਸੀ ਤੇ ਹੁਣ ਨਾਲੋਂ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਵਧੇਰੇ ਵਿਸਤ੍ਰਿਤ ਸੀ। ਵੇਦ ਦੇ ਇ'ਕ ਪੂਜਾਗੀਤ ਵਿ'ਚ ਲਿਖਿਆ ਹੈ ਕਿ ?ਅਣਵਿਆਹੀ ਪੜ੍ਹੀ-ਲਿਖੀ ਲੜਕੀ ਦੀ ਸ਼ਾਦੀ ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਨੌਜਵਾਨ ਨਾਲ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਦੀ ਲੜਕੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਅਤੇ ਲੜਕੀ ਦੀ ਸ਼ਾਦੀ ਉ'ਚੀ ਸਿ'ਖਿਆ ਪੂਰੀ ਹੋਣ ਤੇ ਹੀ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ ਵਿ'ਚ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਮੰਤਰ ਬੋਲਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਸੀ। ਆਰੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਥਾਂ ਉੱਚੇ ਮਾਣ ਦਬਾਅ ਵਾਲੀ ਸੀ। ਵੇਦਾਂ ਦੀਆਂ ਕਈ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਦੀਆਂ ਲਿਖਣ ਵਾਲੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਵੀ ਸਨ। **ਵਿਸ਼ਵਵਰਾ, ਲੋਪਮੁਦਰਾ, ਸਰਸਵਤੀ** ਦੇ ਨਾਂ ਬੜੇ ਪ੍ਰਸਿ'ਧ ਹਨ। ਯਾਂਗਵਲਕ ਦੀ ਪਤਨੀ ਮੈਤਰੀ ਵੀ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ਸੀ। ਔਰਤ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਨ ਦੀ ਮਨਾਹੀ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਗਿਆਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿ'ਚ ਬੜੀ ਹੀ ਸ਼ਲਾਘਾਯੋਗ ਨਿਯੁਕਤੀਆਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀਆਂ। ਨ'ਚਣ ਵਾਲੀਆ ਲੜਕੀਆਂ ਜਿਨ੍ਹਾ ਨੂੰ ਦੇਵਦਾਸੀਆਂ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਜਿਹੜੀਆਂ ਮੰਤਰਾਂ ਵਿ'ਚ ਨ'ਚਣ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਦੀਆਂ ਸਨ ਅਤੇ ਮਗਰੋਂ ਜਾ ਕੇ ਅਨੈਤਿਕਤਾ ਦੇ ਖੂਹ ਵਿ'ਚ ਡਿ'ਗ ਪਈਆਂ ਸਨ। ਉਹ ਬੜੀਆਂ ਬੁ'ਧੀਮਾਨ ਅਤੇ ਹੁਸ਼ਿਆਰ ਹੁੰਦੀਆਂ ਸਨ। ?[3] ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਵਿ'ਚ ਅ'ਜ ਤੋਂ 4000 ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਭਾਰਤ ਵਿ'ਚ ਇਸਤਰੀ ਸਿ'ਖਿਆ ਨੂੰ ਉਦੋਂ ਹੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਹਾਸਲ ਜਿਹੜੀ ਮਰਦਾਂ ਦੀ ਸਿ'ਖਿਆ ਨੂੰ ਸੀ। ਉਹ ਮਰਦਾਂ ਵਾਂਗ ਪੁਸਤਕ ਵੀ ਲਿਖਦੀਆਂ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਵਲੋਂ ਲਿਖੀਆਂ ਵੈਦਿਕ ਤੁਕਾਂ

ਨੂੰ ?ਰਿਸਿਕਾ? ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਰਿਗਵੇਦ ਵਿ'ਚ ਸਾਨੂੰ **ਅਪਾਲਾ, ਇੰਦ੍ਰਾਸੀ, ਊਰਵਸ਼ੀ, ਘੋਸ਼ਾ, ਜੁਹੂ, ਵੇਦਜਾਮੀ, ਪੋਲੈਸੀ, ਯਮੀ, ਰੋਮਸਾ, ਲੋਪਾਮੁਦਰਾ, ਵਿਸ਼ਵਧਾਰੀ, ਸ਼ਰਧਾ, ਕਾਮਇਵੀ, ਸਾਵਿਤਰੀ** ਆਦਿ ਦੇ ਨਾਮ ਨਾਲ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਰਿਗਵੈਦਿਕ ਸਮਾਜ ਵਿ'ਚ ਔਰਤ ਦਾ ਬਹੁਤ ਵ'ਡਾ ਯੋਗਦਾਨ ਸੀ। ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਕੰਮ ਪਤੀ ਅਤੇ ਪਤਨੀ ਦੋਵੇ ਮਿਲ ਕੇ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਆਦਮੀਆਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਔਰਤਾਂ ਉੱਚੀ ਸਿ'ਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦੀਆਂ ਸਨ। **ਅਪਾਲਾ, ਵਿਸ਼ਵਰਾ, ਘੌਸ਼ਾ, ਲੋਪਾਮੁਦਰਾ, ਨਿਵਾਵਰਗ, ਯਮੀ, ਸ਼ਰਧਾ** ਆਦਿ ਕੁਝ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਤਾਂ ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਗਿਆਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿ'ਚ ਮ'ਲਾ ਮਾਰੀਆਂ। ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਲੜਾਈ ਦੇ ਮੈਦਾਨ ਵਿ'ਚ ਆਉਣ ਤੇ ਵੀ ਸੰਕੇਤ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ?ਅਗਸਤਯ ਦੇ ਪੁਰੋਹਿਤ ਪੇਡ–ਰਿਸ਼ੀ ਵਿਸ਼ਲਯਾ ਆਪਣੀ ਪਤੀ ਨਾਲ ਲੜਾਈ ਦੇ ਮੈਦਾਨ ਵਿ'ਚ ਗਈ ਪਰ ਹੈਰਾਨੀ ਦੀ ਗ'ਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਇੰਨੀ ਉੱਚੀ ਸਥਿਤੀ ਹੁੰਦੇ ਹੋਏ ਵੀ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਵਿ'ਚ ਲੜਕੀਆਂ ਦੀ ਬਜਾਏ ਲੜਕਿਆਂ ਦੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਇ'ਛਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ?[4] ਪੂਰਵ ਆਰੀਆ ਕਾਲ ਵਿਚ ਨਰ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਮਰਯਾਦਾ ਵਿ'ਚ ਅੰਤਰ ਨਹੀਂ ਸੀ। ?ਵੈਕਿਦ ਕਾਲ ਵਿਚ ਨਾਰੀ ਸੁੰਤਤਰ ਸੀ। ਉਹ ਘਰ ਚਾਰ ਦੀਵਾਰੀ ਅੰਦਰ ਬੰਦ ਰਹਿਣ ਜਾਂ ਬਾਹਰ ਜਾਣ ਸਮੇਂ ਪਰਦਾ ਕਰਨ ਲਈ ਮਜ਼ਬੂਰ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਉਸਨੂੰ ਹਰ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਕਾਰਜ ਕਰਨ ਦੀ ਨਾ ਕੇਵਲ ਖੁ'ਲ੍ਹ ਵੀ ਸੀ ਸਗੋਂ ਉਸਦੀ ਮੌਜੂਦਗੀ ਬਿਨਾਂ ਯ'ਗ ਸੰਪੂਰਨ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਸੀ। ਉਹ ਪਤੀ ਦੇ ਨਾਲ ਆਹੂਤੀ ਪਾਉਂਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਉਸਨੂੰ ਧਾਰਮਿਕ ਸਿ'ਖਿਆ ਦੇਣੀ ਜਰੂਰੀ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਉਸਨੂੰ ਧਾਰਮਿਕ ਸਿ'ਖਿਆ ਦੇਣੀ ਜਰੂਰੀ ਸੀ। ?[5] ਵਿਆਹ ਦੇ ਮਾਮਲਿਆਂ ਵਿ'ਚ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਆਜ਼ਾਦੀ ਸੀ। ਉਹ ਆਪਣਾ ਪਤੀ ਆਪ ਚੁਣ ਸਕਦੀਆਂ ਸਨ। ਕੰਨਿਆ ਆਪਣਾ ਪਤੀ ਚੁਣ ਸਕਦੀ ਸੀ ਪਰ ਇਸ ਵਿਚੋਂ ਵੀ ਕੋਈ ਸ਼ਕ ਨਹੀਂ। ਪਿਤਾ ਵੀ ਆਪਣੀ ਧੀ ਦਾ ਪਤੀ ਚੁਣਨ ਵਿ'ਚ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਉਂਦਾ ਸੀ। ?ਰਿਗਵੇਦ ਵਿ'ਚ ਇਹ ਸ਼ਲੋਕ ਜਿਸਦਾ ਅਨੁਵਾਦ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੈ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਆਪਣੇ ਚਾਹੁਣ ਵਾਲੇ ਦੇ ਧਨ ਦੇ ਲਾਲਚ ਵਿ'ਚ ਆ ਜਾਂਦੀਆਂ ਸਨ; ਪੰਰਤੂ ਕੋਮਲ ਸੁਭਾਅ ਅਤੇ ਸੁੰਦਰ ਰੂਪ ਵਾਲੀ ਇਸਤਰੀ ਅਨੇਕਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕੇਵਲ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰੀਤਮ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਪਤੀ ਚੁਣਦੀ ਸੀ। ?[6]

ਰਿਗਵੇਦ ਵਿ'ਚ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਪਤੀ ਦੀ ਮੌਤ ਦੇ ਪਿ'ਛੋਂ ਉਸਦੀ ਵਿਧਵਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਅ'ਗ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਜਲਾਉਂਦੀ ਸੀ, ਸਗੋਂ ਵਿਧਵਾ ਨੂੰ ਫਿਰ ਵਿਆਹ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸੀ। ਰਿਗਵੇਦ ਵਿ'ਚ ਦਿ'ਤੇ ਗਏ ਮੰਤਰਾਂ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲ'ਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਵਿਧਵਾ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ਆਮ ਤੌਰ ਆਪਣੇ ਦੇਵ ਨਾਲ ਹੀ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾਉਂਦੀ ਸੀ। ਆਰੀਆ ਵਿਚ ਇ'ਕ ਤੋਂ ਵ'ਧ ਪਤਨੀਆਂ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਬਹੁਤ ਘ'ਟ ਸੀ ਅਤੇ ਕੇਵਲ ਕੁਝ ਧਨੀ ਵਿਆਕਤੀਆਂ ਤ'ਕ ਸੀਮਤ ਸੀ। ਇ'ਕ ਤੋਂ ਵ'ਧ ਪਤੀ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਕੋਈ ਜਾਣਦਾ ਨਹੀਂ ਸੀ। ?ਭਰਾ ਵਿਹੁਣੀ ਕੰਨ੍ਹਿਆ ਦੇ ਵਿ'ਚ ਥੋੜੀ ਔਕੜ ਪੇਸ਼ ਆਉਂਦੀ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਇਸਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪੁ'ਤਰ ਉੱਤੇ ਨਾਨੇ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਪਿਤਾ ਦਾ ਨਹੀਂ। ਆਪਣੇ ਪੁ'ਤਰ ਦੁਆਰਾ ਹੀ ਪਿਤਾ ਦੀ ਵਿਰਾਸਤ ਵਿ'ਚੋਂ ਧਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ। ਜਿਵੇਂ ਅ'ਜ ਘਰ ਜਵਾਈ ਰ'ਖ ਕੇ ਪੁ'ਤਰ ਦੀ ਕਮੀ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ?[7] ਰਿਗਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਵਿ'ਚ ਇਸਤਰੀਆਂ ਨੂੰ ਮਾਣ ਸਤਿਕਾਰ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਸੀ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਗਤੀ ਵਿਧੀ ਤੇ ਕਿਸੇ ਕਿਸਮ ਦੀ ਰੋਕ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਉੱਚ ਸਿ'ਖਿਆ ਇਸ ਕਾਲ ਵਿ'ਚ ਮਹ'ਤਵਪੂਰਨ ਇਸਤਰੀਆਂ ਅਪਾਲਾ, ਘੋਸ਼ਾ, ਵਿਸ਼ਵਰਾ, ਮ੍ਰਿਦਦਾਲਿਨੀ ਤੇ ਲੋਪਾ ਮੁਦਰਾ ਸੀ। ਅਪਾਲਾ ਇ'ਕ ਸੰਤ ਔਰਤ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਅ'ਠਵੇਂ ਮੰਡਲ ਰਿਗਵੇਦ ਗ੍ਰੰਥ ਦਰਜ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਅਪਾਲਾ ਇ'ਕ ਸੁੰਦਰ ਔਰਤ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਬਦਲ ਗਈ। ਅਪਾਲਾ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਰਿਗਵੇਦ ਸੁਕਤਾ (Sukta) ਮੰਡਲ ਵਿ'ਚੋਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਈ। ਵੇਦਾਂ ਦੇ ਵਿ'ਚ ਬੁ'ਧੀ ਨੂੰ ਅਣਗਿਣਤ ਭਜਨਾਂ ਵਿ'ਚ ਵੰਡਿਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿ'ਚੋਂ 27 ਇਸਤਰੀਆਂ ਉਭਰਦੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਸੰਤ ਸਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਇ'ਕ ਦਾ ਨਾਮ ਘੋਸ਼ਾ ਸੀ ਜੋ ਦਰੀਗਾ ਤਮਾਸ ਦੀ ਪੋਤਰੀ ਸੀ ਤੇ ਕਕਸੀ ਵ'ਤ ਦੀ ਕੁੜੀ ਸੀ। ਉਹ ਦੋਵੇਂ ਸੰਗੀਤਕਾਰ ਸਨ ਤੇ ਘੋਸ਼ਾ ਦੇ ਦੋ ਭਜਨ ਉਸਦੀ ਦਸਵੀਂ ਕਿਤਾਬ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਸਨ, ਹਰ ਕਿਤਾਬ ਵਿਚ 14 ਭਾਗ ਸਨ। ਉਸ ਵਿ'ਚ ਪਹਿਲੀ ਪ੍ਰਸੰਸਾ ਅਸਵਿਨ ਦੀ ਸੀ ਜੋ ਕਿ ਇ'ਕ ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਚਕਿਤਸਕ ਸਨ। ਵਿਸ਼ਵਰਾ ਤੇ ਮ੍ਰਿਦਦਾਲਿਨੀ ਇਸਤਰੀਆਂ ਬਾਰੇ ਸਾਨੂੰ ਲਿਖਤੀ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕੋਈ ਵੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਲੋਪਾਮੁਦਰਾ ਨੂੰ ਕੌਸ਼ਕੀ

ਅਤੇ ਵੈਪਰਦਾ (Vyaprada) ਦੇ ਨਾਮ ਤੋਂ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਇਹ ਇੱਕ ਸੰਤ ਔਰਤ ਸੀ ਜੋ ਬਹੁਤ ਵੱਡੀ ਫਿਲਾਸਫ਼ਰ ਸੀ। ਉਹ ਰਿਸਿ ਆਗਤਿਆ ਦੀ ਪਤਨੀ ਸੀ। ?ਉੱਤਰ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਸਭਿਅਤਾ ਵਿੱਚ ਰਿਗਵੇਦ ਦੀ ਰਚਨਾ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸੌ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਵਿਕਸਿਤ ਹੋਈ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਸਾਨੂੰ ਧਾਰਮਿਕ ਗ੍ਰੰਥ ਮਿਲਦੇ ਹਨ ਜੋ ਰਿਗਵੇਦ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਲਿਖੇ ਹੋਵੇ ਸਾਮਵੇਦ, ਯਜੁਰਵੇਦ, ਅਰਥਵੇਦ ਵਿੱਚ ਸਭਿਅਤਾ ਲਗਭਗ 600 ਈ ਪਰ ਤੱਕ ਸਭਿਅਤਾ ਹੈ। ?[8]

ਉੱਤਰ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਵਿੱਚ ਕਈ ਤਾਕਤਵਰ ਰਾਜ ਸਥਾਪਤ ਹੋ ਗਏ ਸਨ। ਕਬੀਲਿਆ ਦੀ ਤਾਕਤ ਖਤਮ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਸੀ। ਰਾਜ ਵਿੱਚ ਮੈਂਬਰ ਇੱਕਠੇ ਹੋ ਕੇ ਬੈਠਦੇ ਤੇ ਰਾਜ ਦਾ ਕਾਰਜ ਸੰਭਾਲਦੇ ਸਨ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਬ੍ਰਹਾਮਣਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਵੱਧ ਗਿਆ ਸੀ। ਜਾਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਗੁੰਝਲਦਾਰ ਹੋ ਗਈ ਤੇ ਔਰਤਾਂ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਪਹਿਲੇ ਨਾਲੋਂ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਗਿਆ। ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਰਸਮਾਂ ਅਤੇ ਯੱਗ ਜਿਹੜੇ ਔਰਤ ਰਾਹੀਂ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਸਨ ਇਸ ਕਾਲ ਵਿੱਚ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾਂ ਰਾਹੀਂ ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਲੱਗੇ। ਪੁੱਤਰਾਂ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਵੱਧ ਗਿਆ। ਇਸ ਕਾਲ ਦੇ ਕਾਨੂੰਨ ਦੇ ਨਿਰਮਾਤਾ ਮੰਨੂ ਸ੍ਰਿਮਤੀ ਵਿੱਚ ਹੈ ਕਿ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ, ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਅਤੇ ਬੁਢਾਪੇ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਪੁੱਤਰਾਂ ਦੀ ਨਿਗਰਾਨੀ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ। ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਵਿੱਚ ਪਤਨੀ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀ ਪੂਜਾ ਕਰਦੀ ਹੈ ਭਾਵੇਂ ਉਹ ਸ਼ਰਾਬੀ ਅਤੇ ਚਰਿੱਤਰਹੀਣ ਵੀ ਕਿਉਂ ਨਾ ਹੋਵੇ। ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਪੁਰਸ਼ ਦੀ ਦਾਸੀ ਮੰਨਿਆ ਜਾਣ ਲੱਗਾ। ਪਰਦਾ, ਸਤੀ, ਕੁੜੀਆਂ ਨੂੰ ਮਾਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਇਸ ਕਾਲ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹੀਆਂ ਲਿਖੀਆਂ ਔਰਤਾਂ- ਗਾਰਗੀ ਵਾਕਕਨਾਵੀ ਅਤੇ ਮੈਤਰਲੀ ਸੀ। ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਰੂਪ ਇੱਕ ਬਰਾਬਰ ਨਹੀਂ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਨੀਰਾ ਦੀਸਾਈ ਅਨੁਸਾਰ ?ਔਰਤਾਂ ਵੈਦਿਕ ਯੁੱਗ ਵਿਚ ਮਰਦਾਂ ਨਾਲ ਖੁੱਲ੍ਹੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਫਿਰ ਸਕਦੀਆਂ ਸਨ ਤੇ ਮੇਲਿਆਂ ਅਤੇ ਤਿਉਹਾਰਾਂ ਉੱਪਰ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਸਨ। ਪਰ ਉੱਤਰ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਇਸ ਦੀ ਖੁੱਲ੍ਹ ਬੰਦ ਹੋ ਗਈ ?ਸਭਾ ਵਿਚ ਔਰਤਾਂ ਦਾ ਦਾਖਲਾ ਬੰਦ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ। ਔਰਤ ਨੂੰ ਜੂਏ ਵਿੱਚ ਦਾਅ ਤੇ ਵੀ ਲਗਾਇਆ ਜਾਣ ਲੱਗਾ ਸੀ। ?[10]

ਉੱਤਰ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਵਿੱਚ **ਗਾਰਗੀ** ਤੇ **ਮੈਤ੍ਰਈ** ਆਦਿ ਵਿਦਵਾਨ ਇਸਤਰੀਆਂ ਬਾਰੇ ਹੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਵੈਦਿਕ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਗਾਰਗੀ ਇੱਕ ਗਰਗ ਗੋਦ ਦੀ ਕੰਨਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਬੜੀ ਵੱਡੀ ਵਿਦਵਾਨ ਇਸਤਰੀ ਸੀ। ਇਹ ਮੈਤ੍ਰਯੀ ਦੀ ਭੂਆ ਸੀ। ਇਹਨਾਂ ਨੇ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਬ੍ਰਾਹਮਚਾਰੀ ਵਜੋਂ ਬਿਤਾਈ। ਇਹ ਕਥਾ ਬ੍ਰਿਹਦਾਰਣਯਕ ਉਪਨਿਸ਼ਦ ਵਿੱਚ ਆਈ ਹੈ। ਇਸ ਦੀ ਵਿਦਵਦਾ ਦਾ ਪਤਾ ਰਾਜਾ ਜਨਕ ਦੇ ਦਰਬਾਰ ਵਿੱਚ ਇਸ ਵਲੋਂ ਯਾਗਯਵਲਕਯ ਤੋਂ ਪੁੱਛੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨਾਂ ਤੋਂ ਲੱਗਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਘਟਨਾ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਗਾਰਗੀ ਤਰਕਸ਼ੀਲ ਸੀ। ਉਸਦੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਦੇ ਉੱਤਰ ਵਿੱਚ ਯਾਗਯਵਲਕਯ ਨੇ ਆਪਣੇ ਦਰਸ਼ਨ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ। ?[11] ਇਸ ਬਾਰੇ ਵਿਸ਼ਵਕੋਸ਼ ਵਿੱਚ ਵੀ ਹਵਾਲਾ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ?ਹਰੀ ਵੰਸ਼ ਪੁਰਾਣ ਵਿੱਚ ਦੁਰਗਾ ਨੂੰ ਵੀ ਗਾਰਗੀ ਕਿਹਾ ਗਿਆ। ?[12] ਪ੍ਰੋ ਪੂਰਨ ਸਿੰਘ ਨੇ ਆਪਣੀ ਇੱਕ ਕਵਿਤਾ ਗਾਰਗੀ ਵਿੱਚ ਇਸ ਨੂੰ ਮਨੁੱਖੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਅਤੇ ਨਿਰੋਲ ਨੰਗੇ ਸੋਚ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਬਣਾ ਕੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ। ?ਮੈਤ੍ਰਯੀ ਇਸਤਰੀ ਮਿਤ੍ਰ ਰਿਖੀ ਦੀ ਵੰਸ਼ ਵਿੱਚ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਯਾਗਯਵਲਕਯ ਦੀ ਇਸਤਰੀ ਸੀ ਜੋ ਮਹਾਨ ਪੰਡਿਤ ਸੀ। ?[13]

ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਰਮਾਇਣ ਅਤੇ ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਦਾ ਸਮਾਂ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਉਪਰੰਤ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਜਾਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦੇ ਬੰਧਨ ਦਿਨੋਂ ਦਿਨ ਗੁੰਝਲਦਾਰ ਹੁੰਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਸੀ। ?ਹਿੰਦੂਆਂ ਦੇ ਸਮਾਜਕ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਦਾ ਰਿਵਾਜ਼ ਐਨੀ ਡੂੰਘੀ ਜੜ੍ਹ ਫੜ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਹੁਣ ਇਸ ਨੂੰ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਦਾ ਹੀ ਇੱਕ ਭਾਗ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਧਾਰਮਿਕ ਰੀਤਾ-ਰਸਮਾਂ ਇੱਕ ਪ੍ਰਕਾਰ ਨਾਲ ਸੌਦੇਬਾਜ਼ੀ ਬਣ ਗਈਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਖਾਸਦਾਨੀ ਪ੍ਰੋਹਤੀ ਦਾ ਰਿਵਾਜ਼ ਆਮ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਨਵੀਨ ਹਿੰਦੂਪਨ ਆਖ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਜੋ ਕਿ ਵੈਦਿਸ ਜ਼ਮਾਨੇ ਤੋਂ ਉਕਾ ਹੀ ਅੱਡਰਾ ਹੈ। ?[14] ਰਮਾਇਣ ਤੇ ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਦੋ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਅਤੇ ਹਰਮਨ-ਪਿਆਰੇ ਮਹਾਂਕਾਵਿ ਮੰਨੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਰਮਾਇਣ ਦੇ ਰਚਣਹਾਰ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਕਵੀ ਬਾਲਮੀਕ ਮੰਨੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਡਾ. ਮੈਕਡੋਨਲ ਦੇ ਕਥਨ ਅਨੁਸਾਰ ?ਰਮਾਇਣ ਦੀ ਰਚਨਾ 500 ਈ. ਤੋਂ ਵੀ ਪਹਿਲਾਂ ਹੋਈ ਅਤੇ

ਇਸ ਦੇ ਕੁਝ ਭਾਗ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਦੂਜੀ ਸ਼ਤਾਬਤੀ ਵਿ'ਚ ਜੋੜੇ ਗਏ। ?[15] ਇਸ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਬੀਰ ਕਾਲ ਵਿ'ਚ ਰ'ਖਦੇ ਹਾਂ। ਬੀਰ ਕਾਲ ਵਿ'ਚ ਇਸਤਰੀ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿ'ਚ ਦੋ ਪ'ਖ ਵੇਖੇ ਗਏ, ਪਹਿਲਾ ਰਮਾਇਯ ਵਿ'ਚ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸੀਤਾ ਦਾ ਆਦਰਸ਼ ਰੂਪ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਿਨ੍ਹਾਂ ਕੁਸ਼ਲਿਆ, ਜੋ ਰਾਮ ਦੀ ਮਾਂ ਸੀ ਜਿਸ ਨੇ ਇਸ ਦਖਾਂਤ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕੀਤਾ ਕਿ ਰਾਮ ਨੂੰ ਚੌਦਾਂ ਸਾਲ ਦਾ ਬਨਵਾਸ ਤੇ ਉਸ ਉਪਰੰਤ ਹੀ ਪਤੀ ਦੀ ਮੌਤ ਦਾ ਹੋਣਾ। ਇਸ ਵਿ'ਚ ਹੋਰ ਇਸਤਰੀ ਪਾਤਰ **ਕੈਕਈ, ਸੁਮਿਤਰਾ, ਮੰਦੋਕਰੀ** (ਰਾਵਨ ਦੀ ਪਤਨੀ) ਹੈ ਜਿਸਨੇ ਆਪਣੇ ਅ'ਖਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀਆਂ ਵਧੀਕੀਆਂ ਨੂੰ ਸਹਿਣ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਆਦਰਸ਼ਵਾਦੀ ਪਤਨੀ ਦੇ ਰੂਪ ਇ'ਚ ਸੀਤਾ, ਦਰੋਪਤੀ ਤੇ ਗੰਧਾਰੀ ਹਨ।

ਹਿੰਦੂ ਸਮਾਜ ਵਿ'ਚ ਕਸ਼ਤਰੀ, ਬ੍ਰਾਹਮਣ, ਵੈਸ਼, ਸ਼ੂਦਰ ਆਦਿ ਨਾਂ ਦੀਆਂ ਜਾਤੀਆਂ ਹਨ। ਜਾਤੀ ਭੇਦ ਸਦਕਾ ਨੀਵੀਂ ਜਾਤੀ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਕਈ ਮੁਸ਼ਕਿਲਾਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਰਾਜ ਘਰਾਣਿਆਂ ਦੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦੁਖਾਂਤ ਦੀਆਂ ਭਾਗੀਦਾਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਵਰਗੇ ਮਹਾਂਕਾਵਿ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਉਪਰੰਤ ਨਾਰੀ ਆਪਣੇ ਹ'ਕਾਂ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਬਹੁ-ਵਿਆਹ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਵੀ ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ। ਪਾਂਡੂਦੇ ਦੋ ਵਿਆਹ ਹੋਏ ਸਨ। ਉਸਦੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਪਤੀਬਰਤਾ ਵਾਲਾ ਸਖੁਲ ਕਰਦੀਆਂ ਸਨ। ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਦੇ ਕਾਵਿ ਰੂਪ ਵਿ'ਚ ਵੇਖੀਏ ਇਸਤਰੀਆਂ **ਕੁੰਤੀ, ਗੰਧਾਰੀ, ਦਰੋਪਤੀ, ਸਵਿ'ਤਰੀ, ਸੁ'ਭਦਰਾ** ਆਦਿ ਇਸਤਰੀ ਪਾਤਰਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੀਆਂ ਨਾਰੀ ਪਾਤਰਾਂ ਦਾ ਵਿਅਕਤੀਤਵ ਕਾਫ਼ੀ ਹ'ਦ ਤ'ਕ ਸੁਤੰਤਰ ਸੀ। ?ਨਾਰੀ ਸੰਵੇਦਨਤਾ ਤੋਂ ਭਰਪੂਰ ਗੰਧਾਰੀ ਦਾ ਅਸਤਿਤਵ ਦੋ ਟੁ'ਕਰਿਆ ਵਿਚ ਖੰਡਿਤ ਦਿਸਦਾ ਹੈ। ਦੁਰਯੋਦਨ ਨੂੰ ਸੋਧਣ ਲਈ ਅਤੇ ਪਤੀ ਧ੍ਰਿਤਰਾਸ਼ਟਰ ਨੂੰ ਦੋਸ਼ੀ ਦ'ਸ ਕੇ ਪੁ'ਤਰ ਨੂੰ ਅਨੁਸ਼ਾਸ਼ਨ ਵਿਚ ਰ'ਖਣ ਦੀ ਗ'ਲ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਪਤੀ ਬਰਤਾ ਸਰਮ ਦੀਆਂ ਮਾਨਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਨਿਭਾਉਂਦੇ ਹੋਇਆ ਕਿਤੇ ਕਿਤੇ ਵਿਰੋਧ ਵੀ ਕਰਦੀ ਹੈ ਪਰ ਸਿ'ਟਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਵਿਰੋਧ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ। ਕੁੰਤੀ ਦਾ ਵਿਅਕਤੀਤਵ ਅਤੇ ਜੀਵਨ ਜਟਿਲ ਕਿਸਮ ਦਾ ਹੈ। ?[16]

ਭਾਰਤ ਵਿ'ਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਅਧਿਆਤਮਕ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਬਦਲਾਵ ਜੈਨਕਾਲ ਭਗਵਾਨ ਮਹਾਂਵੀਰ ਦੇ ਸਿਰ ਵੀ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਔਰਤ ਜੋ ਪੁ'ਤਰੀ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸੀ ਉਦੀ ਸਥਿਤੀ ਚੰਗੀ ਸੀ। ਜੈਨ ਕਾਲ ਵਿਚ ਜਨਨੀ ਰੂਪ ਵਿਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਬਹੁਤ ਇ'ਜ਼ਤ ਸੀ। ਇਸ ਦਾ ਰੂਪ ਸੁੰਤਤਰਤਾ ਵਾਲਾ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ **ਤ੍ਰਿਸ਼ਨਾ, ਪ੍ਰੀਆ ਦਰਸ਼ਨਾ** ਇਸਤਰੀਆਂ ਸਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿ'ਖਿਆ ਦਾ ਗਿਆਨ ਸੀ। ਮਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿ'ਚ ਔਰਤ ਦੀ ਬਹੁਤ ਇ'ਜ਼ਤ ਸੀ। ਬੁ'ਧਕਾਲ ਸਮੇਂ ਸਿ'ਖਿਆ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਪ੍ਰਸਿ'ਧ ਕੇਂਦਰ ਨਾਲੰਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਵੀ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਵੈਮਾਨ ਅਤੇ ਸੇਵਾ ਭਾਵਨਾ ਬਹੁਤ ਸੀ। ਉਹ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੀ ਮੂਰਤੀ ਸੀ। ਬੁ'ਧ ਕਾਲ ਸਮੇਂ ਔਰਤ ਤੇ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਸਨ। ਸੰਘ ਵਿ'ਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਣ ਲਈ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਲਾਈਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਸਨ। ਇਸ ਧਰਮ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਮੁ'ਖ ਇਸਤਰੀਆਂ ਗੌਤਮੀ, ਯਸ਼ੋਧਰਾ, ਅਮਰਪਾਲੀ ਹੋਈਆਂ ਹਨ।

ਇਤਿਹਾਸਕਾਰ ਉੱਤਰ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਜੈਨ ਅਤੇ ਬੁ'ਧ ਧਰਮ ਦੇ ਆਰੰਭਿਕ ਕਾਲ ਵਿਚਲੇ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਵੀਰ ਕਾਲ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਨਾਰਵਾਦੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਆਦਿ ਕਾਲ ਤੋਂ ਲਿਰੂਪ ਵਿਚ ਕੋਈ ਖਾਸ ਲਿਖਤਾਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀਆਂ। ਵੈਦਿਕ ਸਮਾਂ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਗ੍ਰਹਿਸਤ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਅਧਿਆਤਮਕ ਵ'ਲ ਤੋਰਦਾ ਹੈ। ਸਮਾਂ ਕੋਈ ਵੀ ਹੋਵੇ ਮਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿ'ਚ ਔਰਤ ਨੂੰ ਸਤਿਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਇਆ। ਪਰ ਅਜੋਕ ਸਮੇਂ ਵਿ'ਚ ਉਹ ਆਪਣਾ ਵਜੂਦ ਤਰਾਸ਼ ਕੇ ਕਾਫੀ ਅ'ਗੇ ਵ'ਧ ਗਈ। ਪਰ ਅਜੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਜਾਰੀ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ ਟਿਪਣੀਆਂ :-

1. ਡਾ. ਰਤਨ ਸਿੰਘ ਜ'ਗੀ, **ਸਾਹਿਤ ਕੋਸ਼**, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ-974
2. ਮੁਹੰਮਦ ਲਤੀਫ਼, ਅਨੁਵਾਦ, ਗੁਰਮੁ'ਖ ਸਿੰਘ ਗੁਰਮੁ'ਖ, **ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ, ਭਾਗ ਪਹਿਲਾ**, ਪੰਨਾ-57

3. ਡਾ. ਟੀ.ਆਰ. ਸ਼ਰਮਾ, **ਭਾਰਤੀ ਸਿੱਖਿਆ ਤੇ ਇਸਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ**, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ-28-29
4. ਡਾ. ਐਸ.ਡੀ. ਗਜਗਨੀ, **ਭਾਰਤ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ (ਮੁੱਢਕਾਲ ਤੋਂ 1000 ਈ. ਤੱਕ)** ਪੰਨਾ-44
5. ਕੁਲਜੀਤ ਕੌਰ, **ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਸਰੂਪ**, ਪੰਨਾ-12
6. **ਰਿਗਵੇਦ** (ਮੰਡਲ 10, ਸ਼ੁਕਤ 17 ਰਿਚਾ 12)
7. ਕੁਲਜੀਤ ਕੌਰ, **ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਟਕ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਸਰੂਪ**, ਪੰਨਾ-12
8. ਡਾ. ਐਸ.ਡੀ. ਗਜਗਨੀ, **ਭਾਰਤ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ (ਮੁੱਢਕਾਲ ਤੋਂ 1000 ਈ. ਤੱਕ)** ਪੰਨਾ-46
9. ਆਰ.ਕੇ. ਖੰਨਾ, **ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ**, ਪੰਨਾ-92
10. **ਮਨੂੰ ਸਮ੍ਰਿਤੀ**, ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ-149
11. ਭਾਈ ਕਾਨ੍ਹ ਸਿੰਘ ਨਾਭਾ, **ਮਹਾਨ ਕੋਸ਼ (ਗੁਰ ਸ਼ਬਦ ਰਤਨਾਕਰ)** ਭਾਗ ਦੂਜਾ, ਪੰਨਾ-745
12. **ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਸ਼ਵਕੋਸ਼** (ਜਿਲਤ ਨੌਵੀਂ), ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ, ਪੰਨਾ-34-35
13. **ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਕੋਸ਼** (ਭਾਗ ਦੂਜਾ), ਸੰਪਾ. ਸੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਕੋਹਲੀ, ਪੰਨਾ-245
14. ਮੁਹੰਮਦ ਲਤੀਫ਼, ਅਨੁਵਾਦ, ਗੁਰਮੁੱਖ ਸਿੰਘ ਗੁਰਮੁੱਖ, **ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ, ਭਾਗ ਪਹਿਲਾ**, ਪੰਨਾ-60
15. ਡਾ. ਐਸ.ਡੀ. ਗਜਗਨੀ, **ਭਾਰਤ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਰਤ (ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ ਤੋਂ 1000 ਈ. ਤੱਕ)** ਪੰਨਾ64
16. ਡਾ. ਸਾਰਿਕਾ ਸ਼ਰਮਾ, **ਨਾਰੀਵਾਦੀ ਚੇਤਨਾ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਕਾਵਿ**, ਪੰਨਾ-101

-DR. Maninderjit Kaur
Mob: 9815545218
dr.maninderjit2016@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 74-78
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਤ੍ਰਾਸਦੀ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ –'ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ'

–ਡਾ.ਕੁਲਵੰਤ ਸਿੰਘ ਰਾਣਾ
ਐਸੋਸੀਏਟ ਪ੍ਰੋਫ਼ੈਸਰ, ਪੋਸਟ ਗਰੈਜੂਏਟ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ, ਡੀ.ਏ.ਕਾਲਜ,ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ

ਆਧੁਨਿਕ ਸਮੇਂ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਵਾਰਤਕ ਲੇਖਿਕਾ ਡਾ. ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ਨੇ ਆਪਣੇ ਨਿਬੰਧਾਂ ਵਿਚ ਨਾਰੀਵਾਦੀ ਪਰਿਪੇਖ ਦੀ ਚਰਚਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਖੋਜ-ਪੇਪਰ ਦੀ ਆਧਾਰ ਸਮੱਗਰੀ ਵਜੋਂ ਲੇਖਿਕਾ ਦੀ ਪੁਸਤਕ 'ਚੁੱਖ ਦੀ ਚੀਖ਼' ਵਿਚ ਦਰਜ ਨਿਬੰਧਾਂ ਨੂੰ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਗੋਚਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਡਾ. ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ਦੀ ਪੁਸਤਕ 'ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼' ਵਿਚ 66 ਨਿਬੰਧ ਦਰਜ ਹਨ। ਹਰ ਇਕ ਨਿਬੰਧ ਔਰਤ ਦੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚਲੀ ਅਸਲ ਤਸਵੀਰ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। 'ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼' ਪੁਸਤਕ ਔਰਤਾਂ ਉੱਪਰ ਹੋ ਰਹੇ ਜ਼ੁਲਮਾਂ ਦੀ ਮੂੰਹ ਬੋਲਦੀ ਤਸਵੀਰ ਹੈ। ਲੇਖਿਕਾ ਦਾ ਮੁੱਖ ਮੰਤਵ ਸਮਾਜ ਵਿਚਲੀਆਂ ਸਮਾਜਿਕ ਕੁਰੀਤੀਆਂ, ਜਿਵੇਂ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ, ਦਾਜ ਪ੍ਰਥਾ, ਸਰੀਰਕ ਸ਼ੋਸ਼ਣ, ਮਾਨਸਿਕ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਅਤੇ ਜਬਰ ਜਨਾਹ ਵਰਗੀਆਂ ਮੰਦ ਭਾਗੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਨਾ ਹੈ ਜਿਹੜੀਆਂ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਘੁਣ ਵਾਂਗੂੰ ਅੰਦਰੋਂ ਅੰਦਰੀਂ ਖੋਖਲਾ
ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ।

ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ: ਗੈਰ ਕੁਦਰਤੀ ਤੌਰ 'ਤੇ ਭਰੂਣ ਨੂੰ ਮਾਰਨ ਦੀ ਕਿਰਿਆ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਲੇਖਿਕਾ 'ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆਂ: ਇਤਿਹਾਸ, ਅੱਜ ਤੇ ਭਵਿੱਖ' ਨਿਬੰਧ ਵਿਚ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਦੇ ਰੂਪ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਪ੍ਰਥਾ ਪੱਥਰ ਯੁੱਗ ਤੋਂ ਚਲਦੀ ਆ ਰਹੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਪੱਥਰ ਯੁੱਗ ਸਮੇਂ ਦੌਰਾਨ ਹੋਈਆਂ ਖੋਜਾਂ ਤੋਂ ਇਹ ਤੱਥ ਉੱਭਰ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦਾ ਕਿ ਉਸ ਸਮੇਂ ਲੋਕ ਭੁੱਖਮਰੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਦੌਰਾਨ ਆਪਣੇ ਹੀ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਵੱਢ ਕੇ ਖਾ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਭਾਵੇਂ ਉਦੋਂ ਤੱਕ ਆਦਮ ਜਾਤ ਨੂੰ ਖੇਤੀ-ਬਾੜੀ ਦਾ ਢੰਗ ਨਹੀਂ ਸੀ ਆਇਆ। ਲੇਖਿਕਾ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਮਿਲੇ ਸਬੂਤ ਵੀ ਇਹੋ ਦਰਸਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜੰਮਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪੰਜਾਹ ਪ੍ਰਤੀਸ਼ਤ ਨਵਜੰਮੀਆਂ ਬਾਲੜੀਆਂ ਨੂੰ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਾਪੇ ਮਾਰ ਕੇ ਖ਼ੁਰਾਕ ਦੀ ਕਮੀ ਪੂਰੀ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਵੀ ਨਰ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਹੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਉਸ ਸਮੇਂ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਕਮਾਉਣ ਦਾ ਸਾਧਨ ਸ਼ਿਕਾਰ ਸੀ ਤੇ ਨਰ ਨੇ ਹੀ ਜੰਗਲਾਂ ਵਿਚ ਜਾਣਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਮਰਦਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਤਿੰਨ ਗੁਣਾ ਵੱਧ ਸੀ। ਲੇਖਿਕਾ ਉਸ ਸਮੇਂ ਹੋਈ ਗੀਜ਼ਰ ਵਿਚਲੀ ਖ਼ੁਦਾਈ ਬਾਰੇ ਦੱਸਦੀ ਹੈ:

ਗੀਜ਼ਰ ਵਿਚਲੀ ਖ਼ੁਦਾਈ ਵਿਚ ਜਿੱਥੇ ਬੇਬੀਲੋਨੀਅਨ ਰੱਬੀ ਅਵਤਾਰ ਨੂੰ ਖ਼ੁਸ਼ ਕਰਨ ਲਈ ਨਿੱਕੇ ਬੱਚੇ ਵੱਡੀ ਮਾਤਰਾ ਵਿਚ ਵੱਢੇ ਗਏ ਸਨ। ਤਿੰਨ ਹਜ਼ਾਰ ਨਿੱਕੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀਆਂ ਹੱਡੀਆਂ ਬੁੱਚੜਾਂ ਵਾਂਗ ਵੱਢੀਆਂ ਮਿਲੀਆਂ ਸਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬਹੁਤੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਦੀਆਂ ਸਨ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼''21)

ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਗਰੀਸ ਦੇ ਕੁੱਝ ਹਿੱਸਿਆਂ ਵਿਚ ਤਾਂ ਨਵ ਜੰਮਿਆਂ ਬੱਚਾ ਮਾਂ ਵੱਲੋਂ ਪਿਉ ਨੂੰ ਵਿਖਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਤੇ ਪਿਓ ਨੂੰ ਸ਼ਕਲ ਪਸੰਦ ਆਉਂਦੀ ਤਾਂ ਬੱਚਾ ਰੱਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਮਾਰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਟਾਂਵਾਂ ਹੀ ਬੱਚਾ ਨਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ ਵਰਨਾ ਬਾਕੀ ਤਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਕੁੜੀਆਂ ਹੀ ਹੁੰਦੀਆਂ ਸਨ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼''22)

ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਮਨ ਉੱਤੇ ਪਏ ਬੋਝ ਪਾਏ ਬਿਨਾਂ ਬਾਲੜੀ ਨੂੰ ਕਿਨਾਰੇ ਕਰ ਦਿੰਦੇ ਸਨ । ਇਤਿਹਾਸਕ ਖੋਜਾਂ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਸਾਖੀ ਭਰਦੀਆਂ ਹਨ ਕਿ ਕਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਇਹ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਨੂੰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਢੰਗਾਂ ਦੇ ਨਾਲ

ਅੰਜਾਮ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਇਹ ਸਾਰੇ ਤੱਥ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਗਵਾਹੀ ਭਰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਪੱਥਰ ਯੁੱਗ ਤੋਂ ਇਹ ਪਰੰਪਰਾ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਬਣਾਈ ਹੈ। ਅੱਜ ਤਾਂ ਕੇਵਲ ਇਸ ਦਾ ਸਿਰਫ਼ ਰੂਪ ਹੀ ਬਦਲਿਆ ਹੈ ਨਾ ਕਿ ਇਹ ਸਮਾਜਿਕ ਬੁਰਾਈ ਜੜ ਤੋਂ ਖ਼ਤਮ ਹੋਈ: ਸੰਨ 2010 ਵਿਚ ਜਿੰਨੀਆਂ ਕੁ ਗਰਭਵਤੀ ਔਰਤਾਂ ਰਜਿਸਟਰ ਹੋਈਆਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਪੀ.ਐਨ.ਡੀ.ਈ.ਸੈੱਲ ਮੁਤਾਬਿਕ ਜਿੰਨੇ ਗਰਭ ਪੂਰ ਚੜ੍ਹੇ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਰਿਕਾਰਡ ਕੱਢਿਆ ਗਿਆ। ਅੰਕੜੇ ਬੜੇ ਭਿਆਨਕ ਸਨ, ਇਸ ਲਈ ਜਨਤਕ ਕੀਤੇ ਗਏ, ਕਿਉਂਕਿ ਸਿਰਫ਼ ਰਜਿਸਟਰਡ ਗਰਭਵਤੀ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਢਿੱਡਾਂ ਵਿਚੋਂ ਹੀ 75,000 ਮਾਦਾ ਭਰੂਣ ਗ਼ਾਇਬ ਹੋ ਗਏ ਸਨ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼'' 32)

ਦੁਨੀਆ ਭਰ ਵਿਚ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਵਾਸਤੇ ਅਨੇਕਾਂ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਾਏ ਗਏ ਹਨ, ਪਰ ਪਹਿਲਾਂ ਵੀ ਸਭ ਕੁੱਝ ਚੱਲਦਾ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤੇ ਅੱਜ ਵੀ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਲੇਖਿਕਾ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਹਾਮੀ ਭਰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਾਰਨਾਂ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਿਹੜੇ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਨੂੰ ਉਕਸਾਉਂਦੇ ਹਨ:

ਔਰਤ ਜਾਤ ਨੂੰ ਮਰਦ ਨਾਲ ਬਰਾਬਰੀ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿੱਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜਦ ਤੱਕ ਔਰਤ ਘਰੇਲੂ ਹਿੰਸਾ ਆਪਸੀ ਦੁਸ਼ਮਣੀ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ, ਜਿਸਮਾਨੀ ਵਧੀਕੀਆਂ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਅਤੇ ਜਬਰ ਜਨਾਹ ਵਰਗੇ ਸ਼ਿਕੰਜਿਆਂ ਵਿਚ ਫਸੀ ਰਹੇਗੀ। ਉਦੋਂ ਤੱਕ ਉਸ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰੀ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿੱਤੇ ਜਾਣ ਦੀ ਗੱਲ ਸਿਰਫ਼ ਮਜ਼ਾਕ ਹੀ ਗਿਣੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼''34)

ਗੁਰਦੀਸ਼ ਕੌਰ ਅਨੁਸਾਰ: ਔਰਤ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੇ ਦਾਇਰੇ ਵਿਚ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਅਪਰਾਧ ਦੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਰੂਪ ਦੇਖਦੇ ਹਾਂ। ਅਜਿਹੀ ਮੁਟਿਆਰ ਕੁੜੀ, ਜੋ ਕਿਸੇ ਵੀ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨਾਲ ਪ੍ਰਭਾਸ਼ਿਤ ਨਾ ਹੁੰਦੀ ਹੋਵੇ, ਉਸ ਦਾ ਭਵਿੱਖ ਕੀ ਹੋਵੇਗਾ? ਇਸ ਬਾਰੇ ਕਿਆਸ ਲਗਾਉਣਾ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਉਸ ਸਮਾਜ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰ ਰਹੀ ਹਾਂ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰ ਰਹੀ ਹਾਂ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਮੁੰਡਿਆਂ ਅਤੇ ਕੁੜੀਆਂ ਦਾ ਅਨੁਪਾਤ ਵਿਗੜਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ,ਪਰ ਕੋਈ ਚੇਤਨਾ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮਾਪਿਆਂ ਦੀ ਵੀ ਗੱਲ ਕਰ ਰਹੀ ਹਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੇਵਲ ਮੁੰਡਿਆਂ ਦੇ ਵਿਆਹੇ ਜਾਣ ਲਈ ਕੁੜੀਆਂ ਉਪਲਬਧ ਕਰਵਾਉਣ ਦਾ ਫ਼ਿਕਰ ਹੈ। ਮੈਂ ਉਸ ਵਾਤਾਵਰਣ ਦੀ ਗੱਲ ਵੀ ਕਰ ਰਹੀ ਹਾਂ ਜਿਸ ਨੇ ਅਜੇ ਤੱਕ ਔਰਤ ਨਾਲ ਸਿਰਫ਼ ਸੌਣਾ ਹੀ ਸਿੱਖਿਆ ਹੈ ਜਾਗਣਾ ਨਹੀਂ। ਮੈਂ ਸੋਚਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਪੰਘੂੜੇ ਪਈਆਂ ਬੱਚੀਆਂ, ਜਦੋਂ ਜਵਾਨ ਹੋਣਗੀਆਂ ਤਾਂ ਇਹਨਾਂ ਲਈ ਧਰਤੀ ਦਾ ਕਿਹੜਾ ਕੋਨਾ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਹੋਵੇਗਾ? ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹੜਾ ਸਮਾਜ, ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਦੀ ਧਰਤ ਦਿਵਾ ਸਕੇਗਾ। (ਅੱਛਰੂ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਵਾਲੀਆ (ਸੰਪਾ:) ''ਅਜੋਕੀ ਔਰਤ: ਦਸ਼ਾ ਤੇ ਦਿਸ਼ਾ'' 121)

ਜਿੰਨੀ ਦੇਰ ਤੱਕ ਇੱਕ ਔਰਤ ਨੂੰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਉਲਝਣਾਂ ਚੋਂ ਬਾਹਰ ਨਾ ਕੱਢਿਆ ਗਿਆ, ਓਨੀ ਦੇਰ ਤੱਕ ਬਰਾਬਰੀ ਦੀ ਗੱਲ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਦੂਰ ਹੈ। ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ ਲੇਖਿਕਾ ਇੱਕ ਡਾਕਟਰੀ ਪੇਸ਼ੇ ਚੋਂ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਆਪਣੀ ਰਾਏ ਦਿੰਦੀ ਹੈ:

ਨਿਰੋਧ ਜਾਂ ਗਰਭ ਰੋਕੂ ਗੋਲੀਆਂ ਆਦਿ ਵਰਤਣ ਦੀ ਰਾਇ ਵੀ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਕੁੱਝ ਹੱਦ ਤੱਕ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਤੇ ਠੱਲ੍ਹ ਪਾਈ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਖ਼ਾਸਕਰ ਉਹ ਜਿਹੜੇ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਸੰਬੰਧਾਂ ਰਾਹੀਂ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼'' 34)

ਅਨੇਕਾਂ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ, ਲੈਕਚਰ, ਸਰਕਾਰੀ ਏਜੰਡੇ ਕਾਨੂੰਨ ਮਾਦਾ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਰੋਕ ਸਕਦੇ, ਕਿਉਂਕਿ ਪੱਥਰ ਯੁੱਗ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਜੇਕਰ ਹੁਣ ਤੱਕ ਝਾਤ ਪਾਈਏ ਤਾਂ ਇਹ ਸਭ ਬੇਅਸਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਜਿੰਨੀ ਦੇਰ ਤੱਕ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਬਣਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿੱਤਾ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ ਉਦੋਂ ਤੱਕ ਇਹ ਗੱਲਾਂ ਸਿਰਫ਼ ਕਾਗ਼ਜ਼ਾਂ ਵਿਚ ਦੱਬ ਕੇ ਹੀ ਰਹਿ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਆਪਣੇ ਹੱਕਾਂ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪ ਹੀ ਲੜਨਾ ਪਵੇਗਾ। ਲੇਖਿਕਾ ਅਨੁਸਾਰ ਲੋੜ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਹੈ:

ਸਭ ਤੋਂ ਅਹਿਮ ਗੱਲ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਉੱਤੇ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਧਿਆਨ ਦੇਣਾ। ਸੋਚ ਬਦਲਣ ਵਾਸਤੇ ਅਤੇ ਉਸਾਰੂ ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਲਈ ਨਿੱਕੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਦਿਮਾਗ਼ਾਂ ਵਿਚਲੇ ਵਿਚਾਰ ਬਦਲਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਵਿਚ ਇਸ ਦੇ ਮਾੜੇ ਨਤੀਜਿਆਂ ਬਾਰੇ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ ਜਾਏ ਤਾਂ, ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬਹੁਗਿਣਤੀ, ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਤਲਾਂ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਆਵਾਜ਼ ਚੁੱਕਣ ਜੋਗੇ ਬਣ ਜਾਣ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼''34-35)

ਦਲੀਪ ਕੌਰ ਟਿਵਾਣਾ ਅਨੁਸਾਰ: ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਬਦਲਣ ਲਈ ਉਸ ਸਥਿਤੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਸਮਝਣੇ ਪੈਣਗੇ, ਕੰਨਟੈਂਪਲੇਟ ਕਰਨੀ ਪਵੇਗੀ। ਇਹ ਸਥਿਤੀ ਨਾ ਰੋ ਕੇ ਬਦਲਣੀ ਹੈ, ਨਾ ਹੀ ਤਰਸ ਮੰਗ ਕੇ ਤੇ ਨਾ ਹੀ ਕਾਨਫ਼ਰੰਸਾਂ ਉੱਪਰ ਭਾਸ਼ਣਾਂ ਨਾਲ, ਸਗੋਂ ਔਰਤ ਦੇ ਆਪ ਤਕੜੀ ਹੋਣ ਨਾਲ ਹੀ ਬਦਲੇਗੀ। ਇਸ ਵਿਚ ਮਰਦ ਨੂੰ ਔਰਤ ਦੀ ਮਦਦ ਕਰਨੀ ਪਵੇਗੀ ਤਾਂ ਜੋ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਭਵਿੱਖ ਲਈ ਉਹ ਕੋਈ ਵਧੀਆ ਰੋਲ ਅਦਾ ਕਰ ਸਕੇ। (ਅੱਛਰੂ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਵਾਲੀਆ (ਸੰਪਾ) ''ਅਜੋਕੀ ਔਰਤ:ਦਸ਼ਾ ਤੇ ਦਿਸ਼ਾ'' 45)

ਬੱਚੇ ਦਾ ਬਚਪਨ ਇੱਕ ਅਜਿਹੇ ਕੱਚੇ ਘੜੇ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਾਂਚੇ ਵਿਚ ਢਾਲਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਾਨ-ਸਨਮਾਨ ਦੇਣਾ ਹੈ, ਚਾਹੇ ਉਹ ਕਿਸੇ ਦੀ ਧੀ, ਭੈਣ ਜਾਂ ਮਾਂ ਹੋਵੇ, ਉਸ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਓਨੀ ਦੇਰ ਤੱਕ ਕੋਈ ਕਾਨੂੰਨ, ਕੋਈ ਧਾਰਮਿਕ ਹੁਕਮਨਾਮੇ ਜਾਂ ਸਰਕਾਰੀ ਏਜੰਡੇ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਰੋਕ ਸਕਣਗੇ, ਲੋੜ ਹੈ ਅਜਿਹਾ ਮਾਹੌਲ ਨੂੰ ਸਿਰਜਣ ਦੀ। ਜਿੱਥੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਦਾ ਬਣਦਾ ਮਾਣ ਸਤਿਕਾਰ ਮਿਲਦਾ ਹੋਵੇ। ਔਰਤ ਆਪ ਹੀ ਆਪਣੀ ਧੀ ਦੇ ਹੱਕਾਂ ਉੱਤੇ ਪਹਿਰਾ ਦੇਣ ਜੋਗੀ ਹੋ ਜਾਵੇ ,ਅਜਿਹੀ ਹਾਲਤ ਫਿਰ ਕਦੇ ਵੀ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ:

ਫ਼ੈਸ਼ਨ ਵੀ ਬਦਲ ਕੇ ਦੁਬਾਰਾ ਪੁਰਾਣੇ ਆਉਂਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਧੀਆਂ ਦੀ ਘਾਟ ਹਰ ਸਦੀ ਵਿਚ ਆਉਂਦੀ ਰਹੀ ਹੈ ਤੇ ਉਸ ਸਮੇਂ ਵੀ ਸੁਹਿਰਦ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਜੱਦੋ-ਜਹਿਦ ਸਦਕਾ ਧੀਆਂ ਜੰਮਦੀਆਂ ਰਹੀਆਂ ਹਨ ਹੁਣ ਵੀ ਬਦਲਾਓ ਜ਼ਰੂਰ ਆਏਗਾ। ਜੋ ਹੋਣਾ ਸੀ ਹੋ ਚੁੱਕਿਆ, ਹੋਰ ਨਾ ਅਣਹੋਣੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ। ਹੁਣ ਸ਼ੇਰਨੀਆਂ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ, ਰਾਖਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਰੱਸੇ ਪਾਉਣਗੀਆਂ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼'' 36)

'ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਦੀ ਨਵੀਂ ਸਿਖਰ' ਨਿਬੰਧ ਵਿਚ ਲੇਖਿਕਾ ਆਖਦੀ ਹੈ, ਹਰ ਔਰਤ ਨੂੰ ਸ਼ੇਰਨੀ ਬਣ ਕੇ ਆਪਣੇ ਹੱਕਾਂ ਲਈ ਪਹਿਰਾ ਦੇਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਉਸਨੂੰ ਆਪ ਹੀ ਆਪਣੇ ਬਲ ਦੇ ਸਹਾਰੇ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਲੈਣੇ ਪੈਣਗੇ:

ਜਿਵੇਂ ਪੱਧਰੀਆਂ ਸੜਕਾਂ ਤੇ ਕਾਰ ਚਲਾਉਣ ਵਾਲੇ ਵਧੀਆ ਚਾਲਕ ਨਹੀਂ ਬਣ ਸਕਦੇ। ਸ਼ਾਂਤ ਸਮੁੰਦਰ ਵਿਚ ਤੈਰਨ ਵਾਲੇ ਕਦੀ ਵਧੀਆ ਤੈਰਾਕ ਨਹੀਂ ਬਣ ਸਕਦੇ, ਉਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਗ਼ੈਰ ਹਿੰਮਤ ਵਾਲਾ ਇਨਸਾਨ ਵੀ ਨਹੀਂ ਬਣਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼''48)

ਇਸਤਰੀ ਜਦੋਂ ਤੱਕ ਗਤੀਸ਼ੀਲਤਾ ਨਾਲਾ ਚੁਨੌਤੀਆਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰ ਕੇ ਹੱਲ ਨਹੀਂ ਲੱਭਦੀ, ਉਦੋਂ ਤੱਕ ਉਸ ਦਾ ਕਲਿਆਣ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ।ਲੇਖਿਕਾ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਭਵਿੱਖ ਦਾ ਸ਼ੀਸ਼ਾ ਵੀ ਸਾਡੀ ਨਜ਼ਰੀ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇੱਕੀਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿਚ ਵੀ ਦੁਨੀਆ ਭਰ ਵਿਚ ਹਰ ਇੱਕ ਮਿੰਟ ਵਿਚ ਚਾਰ ਮਾਦਾ ਭਰੂਣਾ ਨੂੰ ਜਨਮ ਲੈਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕਤਲ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਲੇਖਿਕਾ ਅਜੋਕੇ ਸਮਾਜ ਦਾ ਸਿਰਫ਼ ਸ਼ੀਸ਼ਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦਿਖਾਉਂਦੀ, ਬਲਕਿ ਸਮਾਜਿਕ ਕੁਰੀਤੀ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਭਵਿੱਖਤ ਨਤੀਜਿਆਂ ਪ੍ਰਤੀ ਮਾਰਗ ਵੀ ਦਿਖਾਉਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਜੇਕਰ ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਤੇ ਠੱਲ੍ਹ ਨਾ ਪਾਈ ਗਈ ਤਾਂ ਇਸ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਬਹੁਤ ਭਿਅੰਕਰ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰਨਗੇ:

ਕੁੜੀਆਂ ਦੀ ਲਗਾਤਾਰ ਘਟਦੀ ਗਿਣਤੀ ਜਿਸਮਾਨੀ ਲੋੜਾਂ ਪੂਰੀਆਂ ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਵੱਲੋਂ ਕੀ ਕਹਿਰ ਬਰ ਪਾਏਗੀ। ਇਸ ਦਾ ਸੌਖਿਆਂ ਹੀ ਕਿਆਸ ਲਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। (ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ ''ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼'' 47)

ਔਰਤ ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਘਰ ਦੀ ਚਾਰ-ਦੀਵਾਰੀ ਵਿਚ 'ਕੈਦ' ਰਹੀ ਹੈ, ਪਰ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਵੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਹ ਘਰੇਲੂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ

ਦੀਆਂ ਨਿੱਕੀਆਂ-ਨਿੱਕੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਵਿਚ ਖਚਿਤ ਰਹੀ ਹੈ, ਪਰ ਸਰੀਰਕ ਖ਼ਤਰਿਆਂ ਤੋਂ ਸਦਾ ਬਚੀ ਵੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਸ ਨੂੰ ਬਹੁਤੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ ਗਈ, ਪਰ ਉਸ ਤੋਂ ਸਖ਼ਤ ਘਾਲਣਾ ਵਾਲੇ ਕੰਮ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕਰਵਾਏ ਗਏ।ਉਸ ਨੂੰ ਗਿਆਨਵਾਨ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ, ਪਰ ਉਸ ਨੂੰ ਭੈੜੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਦੀ ਅਗਿਆਨਤਾ ਦੇ ਸੁਖ ਜ਼ਰੂਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਘੁੰਮਣ ਫਿਰਨ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ ਗਈ, ਪਰ ਇਸੇ ਕਰ ਕੇ ਉਹ ਹਿੱਸਾ, ਬਲਾਤਕਾਰ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਵਿਰੁੱਧ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਹੋਰ ਅਪਰਾਧਾਂ ਤੋਂ ਬਚੀ ਵੀ ਰਹੀ ਹੈ। (ਕਪੂਰ ''ਵਿਆਖਿਆ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ'' 167)

ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਬਦਲਦੀਆਂ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਨੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਦੋਹਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜਿਉਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਵੀ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਵਧਦੀ ਮਹਿੰਗਾਈ ਨੇ ਘਰ ਦੀਆਂ ਵਧਦੀਆਂ ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰਦਿਆਂ, ਉਸ ਦੀ ਆਪਣੀ ਹੋਂਦ ਗਵਾਚ ਗਈ ਹੈ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਤਲਾਸ਼ਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ। ਲੋੜ ਹੈ ਆਪਣਿਆਂ ਬੱਚਿਆਂ ਵਿਚ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਨੂੰ ਭਰਨ ਦੀ, ਸੋਚ ਨੂੰ ਉੱਚਾ ਕਰਨ ਦੀ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਉਹ ਸਮਾਂ ਦੂਰ ਨਹੀਂ, ਜਦੋਂ ਦੋ ਤਿਆਹੀ ਮੁੰਡੇ ਅਗਲੇ ਪੰਦਰਾਂ ਸਾਲਾਂ ਵਿਚ ਕੁਆਰੇ ਰਹਿ ਜਾਣਗੇ।

ਜਬਰ ਜਨਾਹ:- ਜਬਰ ਜਨਾਹ ਇੱਕ ਭਿਆਨਕ ਰੋਗ ਹੈ, ਜਿਹੜਾ ਸਮਾਜ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਨਸਾਂ ਵਿਚ ਖ਼ੂਨ ਵਾਂਗ ਰਚਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸਰਕਾਰਾਂ ਦੁਆਰਾ ਬਣਾਏ ਗਏ ਨਿਯਮ ਵੀ ਕਈ ਵਾਰੀ ਖੋਖਲੇ ਨਜ਼ਰੀ ਪੈਂਦੇ ਹਨ। ਵਿਸ਼ਵ ਦੇ ਹਰ ਕੋਨੇ ਵਿਚ ਜਿੱਥੇ ਵੀ ਔਰਤ ਵੱਸਦੀ ਹੈ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਖ਼ੁਦ ਹੀ ਇਕੱਠੇ ਹੋ ਕੇ ਜ਼ੁਲਮ ਵਿਰੁੱਧ ਆਵਾਜ਼ ਉਠਾਉਣੀ ਪਵੇਗੀ ਕਿਉਂਕਿ ਇੱਕ ਔਰਤ ਵਿਚ ਉਹ ਸ਼ਕਤੀ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈ, ਜਿਹੜੀ ਸ਼ਾਇਦ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਵਿਚ ਨਹੀਂ। ਜਬਰ ਜਨਾਹ ਕਈ ਰੂਪਾਂ ਵਿਚ ਵਰਤਦਾ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ ਜ਼ਬਰਦਸਤੀ, ਲਾਲਚ, ਗਰੋਹ ਬਾਜ਼ੀ, ਵੇਸਵਾਗਾਮੀ ਆਦਿ।

ਡਾ. ਨਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਕਪੂਰ ਅਨੁਸਾਰ: ਔਰਤ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੈ ਨਹੀਂ, ਕਮਜ਼ੋਰ ਬਣਾ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ।ਜੇ ਪਹਿਲਾਂ ਇੱਕ ਪੁਰਸ਼ ਤਿੰਨ-ਤਿੰਨ ਚਾਰ-ਚਾਰ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾਉਂਦਾ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਕਾਰਨ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਪੁਰਸ਼ ਨੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਦੀ ਤੰਦਰੁਸਤ ਹੋਣ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਦਿੱਤਾ। ਮਾਸ ਉਹ ਨਹੀਂ ਸੀ ਖਾ ਸਕਦੀ, ਦੁੱਧ ਉਸ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਪੀਣ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ। ਬਾਹਰ ਉਸ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਘੁੰਮਣ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ, ਕੋਈ ਫ਼ੈਸਲਾ ਉਸ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਕਰਨ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ, ਉਹ ਜਿੱਥੇ ਵੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਨਾਲ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਲਾਮ-ਡੋਰੀ ਨਾਲ ਟੋਰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ, ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਔਰਤ ਜੀਵਨ ਭਰ ਕਦੀ ਆਰਾਮ ਕਰ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ ਸੀ। (ਕਪੂਰ ''ਵਿਆਖਿਆ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ'' 60)

ਇਸਲਾਮੀ ਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਅਜਿਹੇ ਸਖ਼ਤ ਕਾਨੂੰਨ ਹੋਣ ਕਰ ਕੇ ਹੀ, ਉੱਥੇ ਇਸਤਰੀ ਵਿਰੁੱਧ ਜਬਰ ਜਨਾਹ ਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਬਹੁਤ ਹੀ ਘੱਟ ਜਾਂ ਨਾਂ-ਮਾਤਰ ਹਨ:

ਦਰਬਾਰਾ ਸਿੰਘ ਢੀਂਡਸਾ ਅਨੁਸਾਰ: ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਲੇਖਕਾ ਨਿਲੰਜਨਾ ਐਸ.ਰਾਏ. 2011 ਦੇ ਸਰਵੇਖਣ ਨੂੰ ਆਧਾਰ ਬਣਾ ਕੇ ਲਿਖਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸ-ਕਿਸ ਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੇਵੋਗੇ ਕਿਉਂਕਿ ਅਧਿਆਪਕ, ਡਾਕਟਰ, ਦੁਕਾਨਦਾਰ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਹਿਫ਼ਾਜ਼ਤ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਪੁਲਿਸ ਅਤੇ ਘਰ ਦੇ ਜ਼ੁੰਮੇਵਾਰ ਮੈਂਬਰ ਵੀ ਬਲਾਤਕਾਰ ਦੀ ਸੂਚੀ ਵਿਚ ਦਰਜ਼ ਹਨ। ਦੇਸ਼ ਭਰ ਵਿਚ 7835 ਗਵਾਂਢੀ ਦੂਰੋਂ-ਨੇੜਿਉਂ, 1560 ਅੰਕਲ ਅਤੇ ਮਾਪਿਆਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ 267 ਪਿਉ, ਭਰਾ, ਬਾਬੇ ਤੇ ਨੇੜਲੇ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰ ਬਲਾਤਕਾਰੀਆਂ ਦੀ ਕਤਾਰ ਵਿਚ ਫਾਂਸੀ ਯੋਗ ਹਨ, ਭਾਵੇਂ ਮਨੁੱਖ ਨੇ ਕਾਫ਼ੀ ਤਰੱਕੀ ਕਰ ਲਈ ਹੈ ਅਤੇ ਚੰਨ 'ਤੇ ਦੁਨੀਆ ਵਸਾਉਣ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਪਰ ਫਿਰ ਵੀ ਮਰਦ ਵੱਲੋਂ ਔਰਤ 'ਤੇ ਅੱਤਿਆਚਾਰ ਜਾਰੀ ਹੈ। ਔਰਤਾਂ 'ਤੇ ਅਪਰਾਧਾਂ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ 2005 ਵਿਚ ਕੇਂਦਰ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਘਰੇਲੂ ਹਿੰਸਾ ਰੋਕੂ ਕਾਨੂੰਨ ਪਾਸ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਮੇਂ-ਸਮੇਂ ਸਰਕਾਰਾਂ ਨੇ ਹਿੰਦੂ ਮੈਰਿਜ ਐਕਟ 1955, ਦਾਜ ਮਨਾਹੀ ਕਾਨੂੰਨ 1961, ਗੁਜ਼ਾਰੇ ਸੰਬੰਧੀ ਕਾਨੂੰਨ, ਵਿਆਹ ਤੇ ਤਲਾਕ ਸੰਬੰਧੀ ਕਾਨੂੰਨ, ਐਂਟੀ ਡੋਰੀ ਐਕਟ, 1994 ਭਰੂਣ ਹੱਤਿਆ ਰੋਕੂ ਕਾਨੂੰਨ ਆਦਿ ਬਣਾਏ ਗਏ। ਦੋਸ਼ੀ ਫਿਰ ਵੀ ਅਦਾਲਤ ਵੱਲੋਂ ਵਰੀ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। (ਦਰਬਾਰਾ ਸਿੰਘ''ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਮਕਸਦ'' 15)

ਉਪਰੋਕਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਤੋਂ ਭਾਵ ਇਹੋ ਜਿਹੀ ਤਰੱਕੀ ਕਿਸ ਕੰਮ ਦੀ ਜੋ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਵਿਚਲਾ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਤੇ ਅਪਣੱਤ ਹੀ

ਖ਼ਤਮ ਕਰ ਦੇਵੇ। ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਵਿਚਰਦਿਆਂ ਕਿਹੜੇ-ਕਿਹੜੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੂੰ ਤਿਲਾਂਜਲੀ ਦੇਵੋਗੇ, ਅਜਿਹੇ ਕਿਹੜੇ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਨ, ਜਿਹੜੇ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਸੱਚ ਦਾ ਸਾਥ ਦੇਣ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਬਣੇ ਕਾਨੂੰਨ ਸਿਰਫ਼ ਕਿਤਾਬਾਂ ਵਿਚ ਦਰਜ ਹਨ। ਜਿੰਨੀ ਦੇਰ ਤੱਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹਕੀਕਤ ਵਿਚ ਲਾਗੂ ਨਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ, ਓਨੀ ਦੇਰ ਤੱਕ ਇਵੇਂ ਹੀ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਧੱਜੀਆਂ ਉੱਡਦੀਆਂ ਰਹਿਣਗੀਆਂ। ਹੈਦਰਾਬਾਦ ਵਿਖੇ ਡਾਕਟਰ ਪ੍ਰਿਅੰਕਾ ਰੇਡੀ ਨਾਲ ਵਾਪਰੀ ਘਟਨਾ ਨੇ ਸਾਰੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਝੰਜੋੜ ਕੇ ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਤੇ ਸਮੇਂ ਦੀਆਂ ਸਰਕਾਰਾਂ ਤੇ ਇੱਕ ਸਵਾਲ ਵੀ ਖੜਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਔਰਤ ਲਈ ਬਣਾਏ ਕਾਨੂੰਨ ਕਿੰਨੇ ਕੁ ਕਾਰਗਰ ਸਾਬਿਤ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ? ਜੇਕਰ ਲੋਕ ਧਰਮਾਂ ਦੀਆਂ ਲੜਾਈਆਂ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਉੱਠ ਕੇ ਕਦੇ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਵਰਤਾਰਿਆਂ ਬਾਰੇ ਧਿਆਨ ਦੇਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਨ ਤਾਂ ਸ਼ਾਇਦ ਇਹ ਮੁਲਕ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਰਹਿਣ ਲਈ ਸ਼ਾਇਦ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਹੋ ਸਕੇ।

ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਨਿੱਤ ਅਖ਼ਬਾਰਾਂ ਵਿਚ ਛਪਦੀਆਂ ਖ਼ਬਰਾਂ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਗਵਾਹੀ ਭਰਦੀਆਂ ਹਨ ਕਿ ਅਜੋਕੀ ਪੜ੍ਹੀ ਲਿਖੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਕਿਹੜੇ ਰਸਤਿਆਂ ਵੱਲ ਰੁੱਖ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਨਸ਼ੇ ਦੀ ਦਲਦਲ ਵਿਚ ਬਾਹਰ ਕੱਢ ਕੇ ਸਹੀ ਰਸਤੇ ਤੇ ਰੁਝੇਵੇਂ ਭਰਪੂਰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਅੰਦਰ ਨੈਤਿਕ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਨੂੰ ਭਰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਉਹ ਅੰਦਰ ਆਪਣੇ ਲਈ ਤੇ ਆਪਣੇ ਵਤਨ ਲਈ ਕੁੱਝ ਕਰਨ ਦੀ ਤਮੰਨਾ ਜਗਾਉਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਲੋਕ ਧੀਆਂ ਜੰਮਣ ਤੋਂ ਸ਼ਾਇਦ ਓਨਾ ਨਹੀਂ ਡਰਦੇ, ਜਿੰਨਾ ਮਾਪੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਵਾਪਰਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਡਰ ਗਏ ਹਨ। ਅੱਜ ਵੱਡੇ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਬੱਚੇ ਤੱਕ ਔਰਤਾਂ ਦਾ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਪਿਉ ਧੀ ਦਾ ਬਲਾਤਕਾਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਗ਼ੈਰਤਮੰਦ ਮਾਪਿਆਂ ਕੋਲ ਆਪਣੀਆਂ ਧੀਆਂ ਨੂੰ ਕੁੱਖਾਂ ਵਿਚ ਮਾਰਨ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਹੋਰ ਕੋਈ ਰਸਤਾ ਨਹੀਂ ਬਚਣਾ।

ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਰਣ ਵਿਚ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਬਾਲਾਂ ਲਈ ਬੁਨਿਆਦੀ ਘਾਟਾਂ ਦਾ ਲੇਖਾ-ਜੋਖਾ ਕਰਦਿਆਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਬਲਾਤਕਾਰ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਯੁਵਕ ਬਣਨ ਤੱਕ ਦੀਆਂ ਵਿੱਦਿਅਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਨੈਤਿਕ, ਸੰਸਕਾਰਕ ਨੀਤੀਆਂ ਨੂੰ ਵਿਗਿਆਨਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ, ਜੋ ਸੰਚਾਰ ਕੀਤਾ ਹੈ ਉਹ ਵਿਗਿਆਨਕ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ ਅਤੇ ਚਿਕਿਤਸਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਦਿੱਤੇ ਸੁਝਾਅ ਗੁਣਕਾਰੀ ਹਨ। ਔਰਤ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕ, ਨੈਤਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਅਵਸਥਾ ਬਦਲਣ ਲਈ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਸੋਚ ਦਾ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਮਰਦ ਦੀ ਸੋਚ ਬਦਲਣ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਜ਼ਰੂਰ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਸਰਕਾਰੀ ਕਾਨੂੰਨ ਬਦਲ ਕੇ ਔਰਤ ਨੂੰ ਹਰ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਬਰਾਬਰ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰ ਮਿਲਣੇ ਅਤਿ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹਨ।

ਪੁਸਤਕ ਸੂਚੀ :-

?ਅੱਛਰੂ ਸਿੰਘ (ਪ੍ਰੋ.) ਅਤੇ ਵਾਲੀਆ ਆਰੋਹੀ (ਡਾ.), ਅਜੋਕੀ ਔਰਤ: ਦਸ਼ਾ ਤੇ ਦਿਸ਼ਾ, ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਰਾਜ ਲੋਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, 2010.

?ਹਰਸ਼ਿੰਦਰ ਕੌਰ, (ਡਾ.), ਚੁੱਪ ਦੀ ਚੀਖ਼, ਸਿੰਘ ਬ੍ਰਦਰਜ਼, 2016.

?ਕਪੂਰ, ਨਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ (ਡਾ.), ਵਿਆਖਿਆ-ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ, ਲੋਕਗੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, 2014.

?ਢੀਂਡਸਾ, ਦਰਬਾਰਾ ਸਿੰਘ, ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਮਕਸਦ, ਲੋਕ ਗੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, 2016.

ਮੋਬਾਇਲ ਨੰਬਰ: 9417432619

ਓਮਓਿ- ਕੁਲਾਓਨਟਰਓਨਓ04ਗਓਮਲਿ.ਚੋਮ

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 79-83
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ

-ਡਾ. ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ

ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ ਤੇ ਨਾਰੀਵਾਦ ਆਦਿ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਨੂੰ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਤਰੀਕਿਆਂ ਨਾਲ ਉਲੀਕਿਆ ਤੇ ਪਰਖਿਆ ਹੈ। ਜਿਉਂਜਿਉਂ ਸਮਾਜ ਅੱਗੇ ਵਧਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਵਿਚ ਉਠਣ ਵਾਲੀ ਹਰ ਤਰੰਗ ਦੀ ਨਵਜ ਨੂੰ ਵਿਦਵਾਨ ਉਲੀਕਦਾ ਹੈ। ਬੇਸ਼ਕ ਇਸ ਦਾ ਮੰਤਵ ਹੈ ਕਿ ਨਾਰੀ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀਆਂ ਵਧੀਕੀਆਂ ਤੇ ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀਆਂ ਔਰਤ ਦੀ ਅਜੋਕੀ ਸਥਿਤੀ ਕਾਰਨ ਹੀ ਔਰਤ ਦੇ ਹੱਕ ਵਿੱਚ ਇਹ ਆਵਾਜ਼ ਉਠਾਈ ਗਈ।

ਜੇਕਰ ਸੋਚਿਆ ਜਾਵੇ ਤੇ ਅਜੋਕੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਨਾਰੀਵਾਦ ਹੀ ਕਿਉਂ ਚਲਾਉਣਾ ਪਿਆ, ਮਰਦਵਾਦ ਦੀ ਲੋੜ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਪਈ? ਕਾਰਨ ਇਹੋ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਮੌਜੂਦਾ ਸਮਾਜ ਵਿਵਸਥਾ ਦਾ ਕੇਂਦਰੀ ਧੁਰ੍ਹਾ ਲਿੰਗ-ਭੇਦ ਹੈ ਜਿਸਨੇ ਹੁਣ ਤੱਕ ਔਰਤ ਨੂੰ ਮਰਦ ਦੇ ਅਧੀਨ ਰੱਖਿਆ ਹੈ। ਨਾਰੀਵਾਦ ਦੇ ਉਦੇਸ਼ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਣ ਲਈ ਵਾਦ ਦੀ ਨੁਹਾਰ ਨੂੰ ਪਛਾਣਨਾ ਪਵੇਗਾ। "ਨਾਰੀਵਾਦ ਸ਼ਬਦ 'ਫੈਮੀਨਜ਼ਮ' (ਢਓਮਨਿਸਿਮ) ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਵਿਚ ਫਰੈਂਚ ਰਾਹੀਂ ਆਇਆ। ਨਾਰੀਵਾਦ ਦਾ ਅਰਥ ਲਿੰਗ ਦੇ ਅਧਾਰ ਤੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ, ਆਰਥਿਕ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸਮਾਨਤਾ ਤੋਂ ਹੈ।"[1] ਆਕਸਫੋਰਡ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਕੋਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ ਨਾਰੀਵਾਦ ਔਰਤ ਦੇ ਦਾਅਵੇ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਪਤੀਆਂ ਦੇ ਵਿਸਥਾਰ ਨੂੰ ਸਥਾਪਤ ਕਰਕੇ ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਅਤੇ ਰਾਏ ਨੂੰ

ਸਮਰਥਨ ਦੇਣਾ ਹੈ। ਵੈਬਸਟਰ ਇਨਸਾਈਕਲੋਪੀਡੀਆ (ੱਏਬਸਟਏਰ'ਸ ਓਨਚੇਚਲੋਪਏਦਓਿ) ਅਨੁਸਾਰ ਨਾਰੀਵਾਦ ਨਾਰੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਵਾਦ ਹੈ।

ਨਾਰੀਵਾਦ ਸ਼ਬਦ ਔਰਤ ਦੇ ਸਮਾਜਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਦਾ ਮਰਦਾਂ ਦੀ ਬਰਾਬਰੀ ਦਵਾਉਣ ਵਾਲਾ ਵਾਦ ਹੈ। "ਨਾਰੀਵਾਦ ਪੁਰਖ ਪ੍ਰਧਾਨਤਾ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋਣ ਦਾ ਉਪਰਾਲਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਹੋਂਦ ਪ੍ਰਤੀ ਸੁਚੇਤ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਿਥੇ ਹੁਣ ਤੱਕ ਮਰਦ ਵਲੋਂ "ਹਮ ਹੀ ਹੈ" ਦੀ ਸੁਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤੀ ਗਈ ਸੀ। ਉਸ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਵੱਲੋਂ "ਹਮ ਭੀ ਹੈ" ਦੀ ਸੁਰ ਨੂੰ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰਨ ਦਾ ਯਤਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।"[2] ਜਦੋਂ ਵੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਉਨਤੀ ਵੇਖਣੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਸ ਦਾ ਅੰਦਾਜ਼ਾ ਭੂਗੋਲਿਕ ਅਤੇ ਆਰਥਿਕ ਚੋਖਟੇ ਅਨੁਸਾਰ ਤਬਦੀਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਨਾਰੀਵਾਦ ਸੰਕਲਪ ਪਹਿਲਾਂ ਪੱਛਮੀ ਦੇਸ਼ਾਂ ਤੋਂ ਆਰੰਭ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਅੱਗੇ ਵਧਦਾ ਹੋਇਆ ਵੀਹਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਦੂਸਰੇ ਅੱਧ ਵਿਚ ਨਾਰੀਵਾਦ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਨਵੇਂ ਦੌਰ ਵਿਚ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। "ਯੂਰਪੀ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਮਹਿਸੂਸ ਕੇ ਆਪਣੇ ਹੱਕਾਂ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਲੜਿਆ ਅਤੇ ਹੱਕ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ। ਭਾਰਤੀ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਯੂਰਪੀ ਔਰਤ ਵਾਲੇ ਹੱਕ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਮਿਲੇ ਹੋਣ ਕਾਰਨ, ਉਸਦੀ ਹੱਕਾਂ ਪ੍ਰਤੀ ਚੇਤਨਤਾ ਵਿਚ ਉਹ ਡੂੰਘਿਆਈ ਜਾਂ ਪਕਿਆਈ ਨਹੀਂ ਜੋ ਪੱਛਮ ਦੀ ਔਰਤ ਵਿਚ ਹੈ।"[3]

ਉਨੀਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿਚ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰ ਲਹਿਰਾਂ ਨਾਲ ਰਾਸ਼ਟਰਵਾਦੀ ਲਹਿਰਾਂ ਦਾ ਆਰੰਭ ਹੋਇਆ ਜਿਸ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਵਜੋਂ 1910 ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਮਹਾਂ ਮੰਡਲ, 1917 ਵੋਮੈਣਜ਼ ਇੰਡੀਅਨ ਐਸੋਸੀਏਸ਼ਨ ਅਤੇ 1927 ਵਿਚ ਆਲ ਇੰਡੀਆ ਵੋਮੈਨਜ਼ ਕਾਨਫਰੰਸ ਸਥਾਪਤ ਹੋ ਗਈ। ਨਾਰੀਵਾਦ ਦਾ ਮੁੱਖ ਮੰਤਵ ਮਰਦ ਦਾ ਔਰਤ ਪ੍ਰਤੀ ਸਮਾਜਿਕ ਵਤੀਰਾ ਬਦਲਣ ਦਾ ਹੈ। ਪੁਰਾਤਨ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਤਰਸਯੋਗ ਰਹੀ ਹੈ। ਬੇਸ਼ਕ ਵੈਦਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ਗੌਰਵਪੂਰਨ ਸਥਾਨ ਸੀ, ਪਰ ਸਮੇਂ ਨਾਲ ਪਰਿਸਥਿਤੀਆਂ ਬਦਲਦੀਆਂ ਗਈਆਂ ਅਤੇ ਔਰਤ ਦਾ ਸਮਾਜਿਕ ਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਰੁਤਬਾ ਨੀਵਾਂ ਹੁੰਦਾ

ਗਿਆ। ਮੱਧਕਾਲੀਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਲਗਾਤਾਰ ਗਿਰਾਵਟ ਵੱਲ ਜਾ ਰਿਹਾ ਸੀ।

ਸਦਾਚਾਰਕ ਗੁਣਾਂ ਵਿਚ ਵਧੇਰੇ ਗਿਰਾਵਟ ਆ ਗਈ। ਮਨੂੰ ਸਮਰਿਤੀ ਦਾ ਬੋਲ-ਬਾਲਾ ਸੀ। "ਗੋਰਖ ਨਾਥ ਨੇ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਮੁਕਤੀ ਦੇ ਰਾਹ ਵਿਚ ਰੁਕਾਵਟ ਸਮਝ ਕੇ ਉਸਨੂੰ 'ਬਾਘਣ' ਦੀ ਸੰਗਿਆ ਦਿੱਤੀ। ਮਹਾਤਮਾ ਬੁੱਧ ਵੀ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਸੰਘ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰਨ ਦੇ ਹੱਕ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਸਨ। ਜੈਨ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਬੰਧਨ, ਮਾਇਆ ਆਦਿ ਕਿਹਾ ਗਿਆ।"[4] ਇਹੋ ਕਾਰਨ ਹੈ ਕਿ ਇਸਤਰੀ ਉੱਪਰ ਅਣਮਨੁੱਖੀ ਰੋਕਾਂ, ਪਰਦਾ, ਬਾਲ-ਵਿਆਹ, ਵਿਧਵਾ ਦਾ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ ਵਰਜਿਤ ਹੋਣਾ, ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ, ਕੰਨਿਆ ਹੱਤਿਆ, ਦਾਜ ਪ੍ਰਥਾ ਆਦਿ ਬੁਰਾਈ ਕਾਰਨ ਪੁਰਸ਼ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਬਣ ਕੇ ਰਹਿ ਗਿਆ। ਭਗਤੀ ਲਹਿਰ ਵਿਚ ਵੀ ਇਸਤਰੀ ਤ੍ਰਿਸਕਾਰ ਦੀ ਪਾਤਰ ਰਹੀ। "ਨਾਰੀ ਨੇਹੁ ਨ ਕੀਜੀਏ ਜੋ ਤੁਮ ਰਾਮ ਪਿਆਰ।"[5]

ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਸੂਫੀ ਸਾਹਿਤ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਸੂਫੀ ਕਵੀਆਂ ਦਾ ਨਜ਼ਰੀਆ ਔਰਤ ਪ੍ਰਤੀ ਨਿਰਲੇਪਤਾ ਵਾਲਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸੂਫੀ ਕਵੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਔਰਤ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਕੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ। ਕਈ ਸੂਫੀ ਕਵੀਆਂ ਨੇ ਜੇਕਰ ਆਤਮਾ ਤੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਮੇਲ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਹੈ ਤੇ ਆਤਮਾ ਨੂੰ ਔਰਤ ਤੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਤੀ ਦਾ ਰੂਪ ਦੱਸਿਆ ਹੈ।

"ਅੱਜ ਨਾ ਸੁਤੀ ਕੰਤ ਸਿਉ ਅੰਗ ਮੁੜੇ ਮੁੜਿ ਜਾਇ,
ਜਾਇ ਪੁਛਹੁ ਡੋਹਾਗਣੀ ਤੁਮ ਕਿਉ ਰੈਣ ਵਿਹਾਇ।"[6]

ਮੱਧਕਾਲ ਦੀ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਕਾਵਿ ਧਾਰਾ ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਵਿ ਧਾਰਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਾਵਿ-ਧਾਰਾ ਰਾਹੀਂ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਬਦਲਾਵ ਆਇਆ। ਇਸ ਬਦਲਾਵ ਰਾਹੀਂ ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਬਦਲੀ। ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਚਿੰਤਨ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਚੁਣਿਆ ਤੇ ਉਸ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਦਾ ਆਧਾਰ ਬਣਾਇਆ। "ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਸਿੱਖ ਵਿਰਸੇ ਦਾ ਪਾਵਨ ਗ੍ਰੰਥ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਮੱਧਕਾਲੀਨ ਭਾਰਤ ਦੀ ਮੁੱਲਵਾਨ ਸਾਹਿਤਕ ਅਤੇ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਟੈਕਸਟ ਵੀ ਹੈ।"[7] ਗੁਰਮਤਿ ਰਹਿਣੀ ਦਾ ਆਰੰਭ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਆਰੰਭ ਨਾਲ ਹੋਇਆ। ਸਿਧਾਂਤਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਵਿ ਗੁਰਮਤਿ ਅਤੇ ਕਾਵਿ ਦਾ ਸੰਜੋਗੀ ਰੂਪ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਗੁਰਮਤਿ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ - 'ਗੁਰੂ ਦੀ ਮਤਿ' ਜਾਂ ਗੁਰੂ ਦਾ ਜੀਵਨ ਦਰਸ਼ਨ ਜਦੋਂ ਕਿ ਕਾਵਿ ਸ਼ਬਦ ਸਾਹਿਤਕਤਾ ਵੱਲ ਸੰਕੇਤ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਗੁਰਮਤਿ ਜੀਵਨ-ਜਾਂਚ ਦੀ ਪ੍ਰਤਿਨਿਧਤਾ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਕਾਵਿਧਾਰਾ ਹੋ ਨਿਬੜਦੀ ਹੈ।"[8]

ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਵਿ ਧਾਰਾ ਦੁਆਰਾ ਹੀ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦਾ ਪ੍ਰਥਮ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ 1604 ਈ. ਵਿੱਚ ਹੋਇਆ। ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਮੁਸਲਿਮ ਤੇ ਹਿੰਦੂ ਬਾਣੀਕਾਰਾਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦਰਜ ਹੈ ਜੋ ਬਾਰਵੀਂ ਤੇ ਸਤਾਰ੍ਹਵੀਂ ਸਦੀ ਤੱਕ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਛੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬਾਨ, 15 ਭਗਤ, 11 ਭੱਟ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਘਰ ਦੇ ਸੰਬੰਧੀ, ਬਾਬਾ ਸੁੰਦਰ ਜੀ, ਭਾਈ ਮਰਦਾਨਾ, ਸੱਤਾ, ਬਲਬੰਡ ਦੀ ਬਾਣੀ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੈ। "ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕਿਸੇ ਇਕ ਕੌਮ, ਧਰਮ, ਵਰਗ ਜਾਂ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਹੀਂ ਇਹ ਯੂਨੀਵਰਸਲ ਅਪੀਲ ਦਾ ਸੁਆਮੀ ਹੈ। ਦਰਗਾਹੀ ਦੈਵੀ ਗਿਆਨ ਉੱਪਰ ਕਿਸੇ ਇੱਕ ਧਰਮ ਦਾ ਕਬਜ਼ਾ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਹ ਮਨੁੱਖੀ ਜਾਤ ਦਾ ਸਰਬ ਸਾਂਝਾ ਸਰਮਾਇਆ ਹੈ।"[9] ਪ੍ਰੋ. ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਅੰਦਰਲੀ ਬਣਤਰ ਦਾ ਬਾਰੀਕੀ ਨਾਲ ਅਧਿਐਨ ਕਰਨ ਉਪਰੰਤ ਇਸ ਦਾ ਵੇਰਵਾ ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਉਹ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੈ:-

"ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮੂਲ ਮੰਤ੍ਰ ਹੈ ਜੁ ਗੁਰੂ ਪ੍ਰਸ਼ਾਦਿ ਤੇ ਮੁੱਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਅਗਾਂਹ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲੀ ਬਾਣੀ ਜਪੁ ਸਾਹਿਬ ਹੈ। ਜੋ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਉਚਾਰੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ 38 ਪਉੜੀਆਂ ਹਨ, ਦੋ ਸ਼ਲੋਕ ਵੀ ਹਨ।ਬਾਣੀ ਰਾਗਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਦਰਜ ਹੈ। 10 ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ 36 ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਵਿਅਕਤੀਆਂ, ਗੁਰੂ ਘਰ ਦੇ ਸੰਬੰਧੀ, ਰਬਾਬੀਆਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਮੱਧਕਾਲੀ ਸੰਤਾਂ, ਭਗਤਾਂ ਅਤੇ ਸੂਫੀਆਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦਰਜ ਹੈ।"[11]

ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਵਿ ਦਾ ਸਿਰਜਣਾ ਕਾਲ 12ਵੀਂ ਤੋਂ 17ਵੀਂ ਸਦੀ ਤੱਕ ਫੈਲਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। 8ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਆਰੰਭ ਵਿੱਚ ਸਿੰਧ ਉੱਪਰ ਹਮਲੇ ਹੋਣੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਏ ਤੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਸਲਾਮ ਦੇ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਦਾ ਮੁੱਢ

ਬੰਨ੍ਹ ਦਿੱਤਾ। ਇਸ ਨਾਲ ਸਮਾਜ ਤੇ ਆਰਥਿਕਤਾ ਉੱਤੇ ਵਧੇਰੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਿਆ। ਇਸ ਪ੍ਰਭਾਵ ਸਦਕਾ ਹੀ ਔਰਤ ਪਿਸਦੀ ਨਜ਼ਰ ਆਈ। ''ਦਸਵੀਂ ਸਦੀ ਤੋਂ ਪੰਦਰ੍ਹਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਇਸ ਦੌਰ ਨੂੰ ਮੁਸਲਿਮ ਹਾਕਮਾਂ ਦੇ ਸੱਤ ਖਾਨਦਾਨਾਂ ਵਿਚ ਵੰਡਿਆ ਹੈ। 12 ਕਈ ਸਦੀਆਂ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤਕ ਉੱਥਲ-ਪੁੱਥਲ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਆਖਿਰਕਾਰ ਪੰਦਰ੍ਹਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਬਾਬਰ ਦੇ ਹਮਲੇ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਮੁਗਲ ਹਕੂਮਤ ਕਾਇਮ ਹੋ ਗਈ ਅਤੇ ਕਈ ਸਦੀਆਂ ਤੱਕ ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਰਾਜ ਰਿਹਾ। ਇਸ ਮੁਗਲ ਰਾਜ ਵਿੱਚ ਹਿੰਦੂ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਬ੍ਰਾਹਮਣਵਾਦੀ ਕਰਮਕਾਂਡ ਅਤੇ ਜਾਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਵਰਗੀਆਂ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਪ੍ਰਚੱਲਤ ਸਨ ਜੋ ਨਿਮਨ ਵਰਗ, ਦਲਿਤ ਜਾਤੀਆਂ, ਆਰਥਿਕ ਸ਼ੋਸ਼ਣ, ਅਨਿਆਂ, ਔਰਤ ਦੀ ਦੁਰਗਤੀ ਦੇ ਪੱਖ ਸਾਹਮਣੇ ਆਏ। ''ਬਾਹਰਲੇ ਹਮਲਾਵਰਾਂ ਦੇ ਹਮਲਿਆ ਦੇ ਕਾਰਨ ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਬਦ ਤੋਂ ਬਦਤਰ ਹੁੰਦੀ ਗਈ। ਔਰਤਾਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਕਿਹਾ ਜਾਣ ਲੱਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕੇਵਲ ਦੋ ਵਾਰੀ ਘਰ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇੱਕ ਡੋਲੀ ਵਿਚ ਬੈਠ ਕੇ ਪਿਤਾ ਤੋਂ ਵਿਦਾਇਗੀ ਸਮੇਂ ਅਤੇ ਦੂਸਰਾ ਕੇਵਲ ਮੌਤ ਸਮੇਂ ਸਹੁਰਿਆਂ ਦੇ ਘਰੋਂ ਅਰਥੀ ਤੇ ਸਵਾਰ ਹੋ ਕੇ ।

ਜੇਕਰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਬਾਣੀਕਾਰਾਂ ਦਾ ਵਿਚਾਰ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਪੁਰਖ ਅਤੇ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਦੇ ਪੂਰਕ ਤੱਤਾਂ ਵਜੋਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਇਸ ਤੱਥ ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਕਿ ਇੱਕ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਦੂਜੇ ਦੀ ਹੋਂਦ ਅਧੂਰੀ ਹੈ।

ਪੁਰਖ ਮਹਿ ਨਾਰਿ, ਨਾਰਿ ਮਹਿ ਪੁਰਖਾ ਬੂਝਹੁ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ।
ਧੁਨਿ ਮਹਿ ਧਿਆਨੁ ਧਿਆਨ ਮਹਿ ਜਾਨਿਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਅਕਥ ਕਹਾਨੀ ॥3॥ [13]

ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਹਾਂ ਪੱਖੀ ਬਿੰਬ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਆਤਮਾ ਜਾਂ ਜੀਵ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਬਣਾ ਕੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਪਹਿਲੇ ਦਾਰਸ਼ਨਿਕ ਹੋਏ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸਤਰੀ ਪ੍ਰਤੀ ਪ੍ਰਚੱਲਿਤ ਰਾਜਸੀ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਬੁਰਾਈ ਵਿਰੁੱਧ ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਆਵਾਜ ਉਠਾਈ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਵਿਚ ਸੁਹਾਗਣ, ਸੁੱਚਜੀ ਗੁਣਵੰਤੀ, ਗੁਰਮੁੱਖ, ਸਿਆਣੀ, ਸ਼ੀਲਵੰਤੀ, ਅਚਾਰਵੰਤੀ ਅਤੇ ਜਨਨੀ ਜਿਹੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਣਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੋਧਿਤ ਕੀਤਾ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ:-

ਜਾਇ ਪੁਛਹ ਸੁਹਾਗਣੀ ਤੁਸੀ ਰਾਵਿਆ ਕਿਨੀ ਗੁਣੀ। (ਮਹੱਲਾ ਪਹਿਲਾ ਪੰਨਾ-17)
ਸਾਚੁ ਸੀਲ ਸਚੁ ਸੰਜਮੀ ਸਾ ਪੂਰੀ ਪਰਵਾਰਿ (ਮਾਰੂ ਮਹੱਲਾ ਪਹਿਲਾ ਪੰਨਾ-1088)
ਧਨੁ ਸੋਹਾਗਣਿ ਨਾਰਿ ਜਿਨਿ ਪਿਰੁ ਜਾਣਿਆ ਜੀਉ।(ਧਨਾਰਸੀ ਛੰਦ ਮਹੱਲਾ ਪਹਿਲਾ ਪੰਨਾ-689)

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਪੀੜਾਂ ਨੂੰ ਵੇਖਿਆ ਕਿ ਉਹ ਵਿਧਵਾ ਦੀ ਹਾਲਤ ਵਿੱਚ ਕਰੁਣਾਮਈ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚੋਂ ਲੰਘਦੀ ਹੈ।

ਗੁਰੂ ਅਮਰਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਔਰਤ ਦੇ ਸੰਕਲਪ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ। ''ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਰਿਵਾਜ਼ ਨਾਰੀ ਤੇ ਭਾਰੀ ਸੀ। ਹਿੰਦੂ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਮਨੂੰ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੇ ਤਹਿਤ ਇਸਤਰੀਆਂ ਨੂੰ ਪੁਰਸ਼ਾਂ ਦੇ ਅਧੀਨ ਰੱਖਣ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਸੀ। ਸਤਵੀਂ ਸਦੀ ਤੋਂ ਹੀ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਰਿਵਾਜ਼ ਚਲ ਪਿਆ ਸੀ।''[14]

''ਸਤੀਆ ਏਹਿ ਨ ਆਖੀਅਨਿ ਜੋ ਮੜਿਆ ਲਗਿ ਜਲੰਨਿ॥
ਨਾਨਕ ਸਤੀਆ ਜਣੀਅਨਿ ਜਿ ਬਿਰਹੇ ਚੋਟ ਮਰੰਨਿ॥ [15]

ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ਰੂਪ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਲੀਕਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਔਰਤ ਬਾਰੇ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਹੈ:-

ਬਤਹਿ ਸੁਲਖਣੀ ਸਚੁ ਸੰਤਤਿ ਪੁਤ
ਆਗਿਆਕਾਰੀ ਸੁੱਘੜ ਸਰੂਪ॥ (ਪੰਨਾ-371)

ਸਿਮ੍ਰਤੀਆਂ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਬੜੀ ਦੁਰਦਸ਼ਾ ਸੀ। ਉਸ ਨੂੰ ਮਰਦ ਦੇ ਅਧੀਨ ਹੀ ਰੱਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਰਿਹਾ। ਵਿਆਹ

ਤੋਂ ਪਹਿਲਾ ਪਿਤਾ ਦੇ ਅਧੀਨ, ਉਪਰੰਤ ਪਤੀ ਦੇ, ਵਿਧਵਾ ਹੋਣ ਤੇ ਪੁੱਤਰਾਂ ਦੇ ਵੱਸ ਰਹਿਣ ਦੀ ਆਗਿਆ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਅਮਰ ਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਬਹੁ ਵਿਆਹ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ, ਵਿਧਵਾ ਵਿਆਹ ਤੇ ਅੰਤਰ ਜਾਤਿ ਵਿਆਹ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦਿੱਤੀ ਅਤੇ 22 ਮੰਜੀਆਂ ਦੇ ਪ੍ਰਚਾਰਕਾਂ ਵਿਚੋਂ ਵੀ 3 ਮੰਜੀਆਂ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਚਾਰਕ ਇਸਤਰੀਆਂ ਹੀ ਸਨ। "ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਬੇਟੀ ਬੀਬੀ ਅਮਰੋ ਦੀ ਸੁਰੀਲੀ ਆਵਾਜ਼ ਵਿੱਚ ਗੁਰਬਾਣੀ ਦਾ ਪਾਠ ਸੁਣ ਕੇ ਗੁਰੂ ਅਮਰਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਕਾਇਆ ਕਲਪ ਹੋ ਗਈ ਤੇ ਉਹ ਗੁਰੂ ਘਰ ਦੇ ਸ਼ਰਧਾਲੂ ਬਣ ਗਏ। ਗੁਰੂ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਬੇਟੀ ਬੀਬੀ ਵੀਰੋ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਲਈ ਗੁਰੂ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਹੱਥ ਲਿਖਤ ਪੋਥੀ ਅੱਜ ਵੀ ਕੀਰਤਪੁਰ ਦੇ ਗੁਰਦੁਆਰੇ ਸ੍ਰੀ ਮੰਜੀ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਮੌਜੂਦ ਹੈ।"[16]

ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਤਾਂ ਇਸਤਰੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਘਰ ਕਰ ਚੁੱਕੀ ਹੀਣਤਾ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰਨ ਲਈ ਉਸਨੂੰ ਪੰਜ ਕਕਾਰ ਧਾਰਨ ਕਰਨ ਤੇ ਪੁਰਸ਼ਾਂ ਨਾਲ ਇਕੋ ਬਾਟੇ ਵਿੱਚ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਦੇ ਕੇ ਉਸ ਦੇ ਨਾਮ ਨਾਲ ਕੌਰ ਲਗਾਇਆ। ਮਾਤਾ ਸਾਹਿਬ ਕੌਰ ਨੂੰ ਖਾਲਸਾ ਪੰਥ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿੱਤਾ। ਜੰਗ ਦੇ ਮੈਦਾਨ ਵਿਚ ਮਾਈ ਭਾਗੋ ਨੂੰ ਬੀਰਤਾ ਦਾ ਜੋਹਰ ਦਿਖਾਉਣ ਦਾ ਅਵਸਰ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤਾ। ਸੱਤੇ ਤੇ ਬਲਵੰਡੇ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਵਿੱਚ ਮਾਤਾ ਖੀਵੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਸਾ ਕੀਤੀ:

"ਬਲਵੰਤ ਖੀਵੀ ਨੇਕ ਜਨ ਜਿਸ ਬਹੁਤੀ ਛਾਉ ਪਤ੍ਰਾਲੀ॥
ਲੰਗਰਿ ਦਉਲਤਿ ਵੰਡੀਐ ਰਸੁ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਖੀਰਿ ਘਿਆਲੀ॥ [17]

ਬਾਬਾ ਸ਼ੇਖ ਫਰੀਦ ਜੀ ਨੇ ਔਰਤ ਪ੍ਰਤੀਕ ਦੇ ਰੂਪਕ ਵੰਨਗੀ ਨੂੰ ਵਾਚਿਆ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਵਿਆਹੀ ਨਾਰ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀਕ ਵਧੇਰੇ ਸਿਰਜੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਵੱਲ ਇਸ਼ਾਰਾ ਕਰਕੇ ਵਿਆਹੀ ਔਰਤ ਨੂੰ ਪਤੀ ਲਈ ਲੋਚਾ ਕਰਦੀ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਮਹਿਸੂਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਸਭਿਆਚਾਰ ਤੇ ਕਦਰਾਂ ਕੀਮਤਾਂ ਦੇ ਮੱਦਈ ਜਾਪਦੇ ਹਨ। ਨਾਲ ਹੀ ਉਹਨਾਂ ਇੱਕ ਬਿਹਰਣ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਔਰਤ ਦੇ ਅੱਲ੍ਹੜਪਣ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।

ਅੱਜ ਨ ਸੁਤੀ ਕੰਤ ਸਿਉ ਅੰਗੁ ਮੁੜੇ ਮੁੜਿ ਜਾਇ॥
ਨਾਤੀ ਧੋਤੀ ਸੰਬਹੀ ਸੁਤੀ ਆਇ ਨਚਿੰਦੁ॥ (ਪੰਨਾ-1379)

ਗੁਰਮਤਿ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ ਵਿਚ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ ਇੱਕੋ ਹੀ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ਨਾਮ ਆਉਂਦਾ ਹੈ "ਮਾਤਾ ਖੀਵੀ, ਜੋ ਲੰਗਰ ਪ੍ਰਥਾ ਦੀ ਜਿੰਦ ਜਾਨ ਸੀ। ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀ ਜਾਤ ਦੀ ਨਿਵੇਕਲੀ ਹਸਤੀ ਉੱਪਰ ਛਾਪ ਲਾਉਂਦੇ ਹਨ, ਸਗੋਂ ਦੈਵੀ ਗੁਣਾਂ ਦੀ ਉਪਮਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਸਿੱਖ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਕਈ ਉੱਘੀਆਂ ਤੇ ਮਹਾਨ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦਾ ਉਲੇਖ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਬੇਬੇ ਨਾਨਕੀ, ਮਾਤਾ ਖੀਵੀ ਜੀ, ਬੀਬੀ ਭਾਨੀ, ਮਾਤਾ ਗੁਜਰੀ, ਮਾਤਾ ਸੁੰਦਰੀ, ਮਾਤਾ ਸਾਹਿਬ ਕੌਰ ਜੀ, ਮਾਈ ਭਾਗੋ, ਰਾਣੀ ਸਾਹਿਬ ਕੌਰ ਆਦਿ। ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਇੱਜ਼ਤ-ਮਾਣ ਕਰਨ ਦੇ ਸੰਕੇਤ ਵਿਚ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਦੀਆਂ ਵਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਸੰਕੇਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਸੰਬੋਧਿਤ ਕਰਕੇ ਆਖਿਆ ਔਰਤ ਨੂੰ ਹੀਣ ਭਾਵਨਾ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਵੇਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਸਗੋਂ ਧੀਆਂ, ਭੈਣਾਂ, ਮਾਵਾਂ ਸਮਝ ਕੇ ਪੂਰੀ ਇੱਜ਼ਤ ਤੇ ਮਾਣ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਦੇਖਿ ਪਰਾਈਆਂ ਚੰਗੀਆਂ ਮਾਵਾਂ ਭੈਣਾਂ ਧੀਆਂ ਜਾਣੈ॥ [18]

ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਵਿਚਰਦਿਆਂ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਨੇ ਹਰ ਦੁੱਖ-ਸੁੱਖ ਤੇ ਨਿਰਾਸ਼ਾ ਦਾ ਅਨੁਭਵ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਧਰਮਾਂ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦਾ ਗਿਆਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਸਮਾਂ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਚਲ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਸਮੇਂ-ਸਮੇਂ ਅਨੁਸਾਰ ਔਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਲੋਕ ਸਮੂਹ ਨੂੰ ਸਮਝ ਕੇ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿੱਚ 12ਵੀਂ ਤੋਂ 17ਵੀਂ ਸਦੀ ਤੱਕ 500 ਵਰ੍ਹੇ ਦਾ ਭਾਰਤੀ ਅਧਿਆਤਮਕ ਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਵਿਰਸਾ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਹੈ। "ਆਦਿ ਗ੍ਰੰਥ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਗ੍ਰੰਥ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਰਹੱਸਵਾਦੀ ਅਨੁਭਵਾਂ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਅਦਵੈਤਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰ ਸਾਗਰ ਹੈ। ਇਹ ਇਸ ਪੱਖੋਂ ਵੀ ਮਹਾਨ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਗੁਰਿਆਈ ਦੇ ਆਸਨ ਉੱਤੇ ਸ਼ੁਸੋਭਿਤ ਹੈ।"[19]

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੋ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਲਈ ਇੱਕ ਪੂਜਨੀਕ ਗ੍ਰੰਥ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਮਾਤ ਭੂਮੀ

ਤੇ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਵਡਿਆਈ ਕੀਤੀ ਹੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਉਸਨੂੰ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਸਤਿਕਾਰ ਯੋਗ ਸਥਾਨ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ। ਕਦੇ ਉਸ ਨੂੰ ਦੇਵੀ, ਮਾਤਾ ਤੇ ਜਨਨੀ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਪੂਜਿਆ ਗਿਆ। ਪਰਿਵਾਰ ਦੀ ਸਾਰਥਕਤਾ ਨਾਰੀ ਦੀ ਹੋਂਦ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਇਸਤਰੀ ਜਨਨੀ ਅਤੇ ਸਾਥਣ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਕੁਟੰਬ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਤੋਰਦੀ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਲੰਮੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਕੁਰਾਹੇ ਪਈ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਘਰ, ਪਰਿਵਾਰ, ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਉਸਦਾ ਯੋਗ ਸਥਾਨ ਦਿਵਾਇਆ ਅਤੇ ਜਗਤ-ਜਨਨੀ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਸਤਿਕਾਰ ਦੀ ਹੱਕਦਾਰ ਬਣਾਇਆ। ਅਜੋਕੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਤਰੱਕੀ ਦੇ ਨਵੇਂ ਮੌਕੇ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤੇ ਗਏ। ਇਸਤਰੀ ਸਮਾਜ ਨਾਲ ਮੋਢੇ ਨਾਲ ਮੋਢਾ ਜੋੜ ਕੇ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਨਿਰਬਾਹ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ ਤੇ ਟਿੱਪਣੀਆਂ :-

1. ਂਇਬਇਸਟਇਰ ਓਨਗਲਸਿਹ ਧਚਿਟੌਨਿਓਰੇ
2. ਡਾ. ਬਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਬਰਾੜ - ਨਾਰੀਵਾਦ ਸਿਧਾਂਤ, ਚਿੰਤਨ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ - ਪੰਨਾ 15
3. ਡਾ. ਚਰਨਜੀਤ ਕੌਰ - ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ, ਚੰਡਿਕਾ ਪ੍ਰੈਸ, ਪੰਨਾ 38
4. ਦਲਜੀਤ ਸਿੰਘ - ਮੱਧਕਾਲੀਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਦਾ ਸਥਾਨ, ਲੇਖ ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ 372
5. ਨਾਥ ਸਾਹਿਤ - ਪੰਨਾ 149
6. ਜੀਤ ਸਿੰਘ ਸੀਤਲ - ਸ਼ੇਖ ਫਰੀਦ, ਖੋਜ ਪੜਿਤਾ ਬਾਬਾ ਫਰੀਦ ਅੰਕ, ਪੰਨਾ 82
7. ਜਸਬੀਰ ਸਿੰਘ (ਡਾ.)-ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਵਿ ਸਿਧਾਂਤ ਤੇ ਵਿਹਾਰ, ਚੇਤਨਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਪੰਜਾਬੀ ਭਵਨ ਲੁਧਿਆਣਾ ਪੰਨਾ 131
8. ---------ਉਹੀ--------- ਪੰਨਾ 12
9. ਮਹਿੰਦਰ ਕੌਰ ਗਿੱਲ - ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਤੇ ਮਾਨਵ ਏਕਤਾ, ਨੈਸ਼ਨਲ ਬੁੱਕ ਟਰੱਸਟ ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ ਪੰਨਾ 9
10. ਪ੍ਰੋ. ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ - ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਦਰਪਣ (ਭੂਮਿਕਾ)
11. ਜਗਬੀਰ ਸਿੰਘ (ਡਾ.) - ਗੁਰਮਤਿ ਕਾਵਿ ਸਿਧਾਂਤ ਤੇ ਵਿਹਾਰ, ਪੰਨਾ 31
12. ਗੁਰਬਖ਼ਸ ਸਿੰਘ-ਪੰਜਾਬ ਉੱਤੇ ਗਜ਼ਨਵੀ ਤੁਰਕਾਂ ਦਾ ਕਬਜ਼ਾ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ (ਤੀਜਾ), (ਗੰਡਾ ਸਿੰਘ) ਪੰਨਾ 57
13. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ - ਪੰਨਾ 878
14. ਡਾ. ਦਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ - ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀ, ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪੱਤ੍ਰਿਕਾ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ 1982, ਪੰਨਾ 183
15. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ - ਵਾਰ ਸੂਹੀ ਮਹੱਲਾ : 3, ਪੰਨਾ 787
16. ਡਾ. ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਕੌਰ ਰੈਣਾ - ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਸਮੂਹਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਸੰਚਾਰ ਸਾਧਨ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ 2007, ਪੰਨਾ 158
17. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ - ਰਾਮਕਲੀ ਦੀ ਵਾਰ, ਰਾਇ ਬਲਵੰਡ ਤਥਾ ਸਤੈ ਡੂਮਿ (ਆਖੀ ਪੰਨਾ 967)
18. ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਜੀ - ਵਾਰ 29 ਪਉੜੀ॥
19. ਕਿਰਨਦੀਪ ਕੌਰ - ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ਸੰਕਲਪ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ 601

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 84-88
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Where do women stand today? An enquiry

-Avijit Mandal
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Vivekananda College For Women, Kolkata-700008.

Abstract :-

The status of women in a complex society like in India is not uniform. This research paper is on the status of women. The question is in India if women are having same status and rights as we are asserting with regard to Equality, Education, Health, Labour, Employment, Marriage and Family life, Race and Gender related problems, Religion and Culture and so on. The present observation is identified with status of women in Indian society from ancient times till date. It gives emphasis on the situation of women in different fields like family life, social life and work circumstances. It features on female foeticide , low education level of women, women's low nourishment ,their role in leadership, their situation according to Indian convention and the like. In conclusion it finishes with significance of women and role of society for the liberation of women from male dominated society and their persecution and their pressurisation.

Keywords :- Women, Status of empowerment, Equality, Gender discrimination. Women leadership. Social framework.

Introduction :-

India is known as "Mother India" for the reason that a mother first to be spiritual well being of her children and India has long been the spiritual mother to all of mankind .India is that country in this world which has even gone to the length of worshipping her women as living images of the divinity. This has been revealed in the thinking that God's reside where women are honoured , but all religious ceremonies go in vain where women are not so honoured. Unfortunately, in India there is a great gap between theory and practice. In theoretical aspects women has always been so great that to put the same into actual practice has not always been possible. Because in the Sati -daaha, Kulin pratha woman has always been subjected to exploitation and inequality.

Women status in Vedic Period :-

If we want to understand how women and girls were treated in the Vedic period,then we must analyze the ancient Hindu scriptures, hymns, religious texts and various literary work that reflects the

social customs that were prevalent in India. In Vedic times, the women had to face a world full of paradoxes. Historical researches claim that women held equal status in almost all spheres of life in the Vedic period (2500 B.C to 600 B.C).They were received Vedic education and referred to as co-partners of man in all activities of life. They were allowed to take part in "Svayambara" to choose their own partners.. Thus as daughters, sisters, wives and mothers they had been equally honoured with glorious position and places in family,society and state alike. But gradually the position of women deteriorated in subsequent times.

Women empowerment according to Upanisads :-

Vedanta literally means "the end of Veda" as the Upanisads are the end Vedas and the taken together are known as "Vedanta".The essence of the Vedantic wisdom is expressed through four Mahavakyas (great saying) :-

1. Prajnanam Brahman i.e. Brahman is consciousness.
2. Aham Brahman i.e. I am Brahman.
3. Tat Tvamasi i.e.That through art.
4. Ayam Atma Brahman i.e. The Atman is Brahman.

From the Upanisadic point of view, the ultimate reality is Brahman.Brahman is one ,without a second , "Ekam evadvatiyam". It is not woman, it is not man ,nor is it nauter……the jivas have many shapes, coarse or refined, in accordance with his virtue and caused his union with them is seen as different beings, through the qualities of the body.

The Upanisad describes individual as a social being with family, caste, religious and other social relations. In his conversation with Maitreyee, Yajnavalkya says that things and beings are dear to each other due to the love of self(Atman).The love of the self alone is the basis for being becoming dear (priya).Further, the Upanisad enjoin symphonic relationships among family members, teachers and taught. The Upanisad attempts to give a picture of women from several contexts.Woman as wife is the spiritual physical companion of man, without whom he would be lonely and restless. She is essential for performance of religious acts, for be getting children and for happiness.A mother, especially of male children is praised as a goddess. It is stated as when a woman becomes the mother of a male child ,she is glorified as the mother of a hero. The Upanisasds also advise how to get a learned daughter, shows that woman also received the best education .Gargi's contention on metaphysical problems and Maitreyee's receiving wisdom of the "Absolute Self" shows that woman had access to philosophy.Beside when Yajnavalkya refused his family life,he divided the property and gave his two wives before going away. This shows the women had the right to property. It is also noted that Gargi and Maitreyee were not only taught, but they preached the highest philosophical truths regarding

Brahman and Atman (soul),thus they are found in the ancient and celebrated Brihadaranyaka Upanisad's two famous names shining forth brightly in eternal glory.

From the story of Satyakama Jabala,it is proven that some women had high integrity and spoke nothing but truth.It may be recalled that Satyakama Jabala's mother told to him that she did not know who his father was,since she was a maid servant for many .But when Satyakama Jabala ,to become a student went to Rishi Goutama and explained what his mother was said on the latter's request.The Rishi Goutama admitted him as pupil after considering him a Brahmana ,since he spoke the truth. Here we find two points :-

1. Satyakama Jabala spoke the truth. So he acted as Brahmana and was admitted for study .From this it can be decided that whoever spontaneously and always speak truth is Brahmana, irrespective of his parentage.
2. Otherwise it can be concluded that none but an individual with the right parentage would speak truth. Satyakama Jabala spoke truth, hence Satyakama Jabala's parentage was Brahmanical.

In Vedic age, women had the right to property education and Brahman-knowledge. She could choose her own partner.The wife walked before and not behind the husband. The women like men had to undergo the initiation ,the Samskara, Upanayana and Brahmacharya. They were allowed to perform Sandhya rites like the male persons.

Women status according to Buddhism and Jainism :-

When Buddhism and Jainism were spread in ancient India ,both these religions did not create any gender discrimination, so far as education and religious preaching were concerned .So, the position of women in the age of Buddhism and Jainism was little progressive. Degradation started in the Brahmanic period (1500-500 B.C) and it was during the period of Sutras and Epics (500 B.C-500 A.D),that the status of women deteriorated to a great extent due to various socio-political factors and misinterpretations of religious texts.

Position of women in Manusamhita :-

In Manusamhita ,the first law-code for Hindus in India which provided a dependent and thus sub-servient position to women in society. Manu, the earliest exponent of the law said :-

"The father protects a woman during childhood sweet
The husband during youth bright
The sons during the old age feeble
So a woman deserves not freedom's right."

So, the women should be under guard, always under supervision in their childhood by their father, after marriage by their husband and in old age by their sons.Women should not be allowed to

live independently.It was Manu, who had first encouraged child marriage.In Manusamhita, if the girl get married after their monthly period (menstruate) then their parents are likely to go to hell. One important reason getting child married at an early age was the foreign invasions, the female child were often carried away by force by invading races like Turks,Huns,Arabs,Mongols etc.

Women empowerment in modern times :-

The position of women deteriorated still today.Unequal status of women being offensive to human dignity and violates of women right has highlighted today as the fundamental crisis in human development in India as well as in world. Middle ages i.e. between 12th to 18th centuries, the position of women deteriorated for political disturbances in India. Muslims conquered India and social evil like Sati , infanticide ,the voluntary self-immolation came in to existence. There were stray cases of Sati in Mahabharata e.g. Madri committed Sati of the funeral pyre of her husband ,Pandu .Most cases of Sati occurred in Bengal.

Missionaries and British officials from the very early days tried to stop these evil practice time to time. As to oppose the practice of Sati ,Raja Rammohan Roy established Brahma Sabha in 1828,later it came be known as Brahma Samaj in 1843.Keshab Chandra Sen, a religious reformer, had founded Antopur Strisiksha Sabha and the Marriage Act of 1872 for family women. Again the Government of India set up a Committee in 1971,known as the Committee on the status of women to evaluate the changes that had taken place in the status of women and to suggest measures so that women may play their vital role in building of nation. When Sati was abolished a widow was permitted to exist, but her life was miserable. This was the first quarter of the 19th century, some social reformers among them Raja Rammohan Roy,Iswar Chandra Vidyasagar and Dayananda Saraswati advocate the right of a widow to remarry. Again the illegal abortion is still carried out Punjab and other parts of India.

Thus the above evidence showed that women were not treated as human being, women's life had no value. Though women emancipation and social reforms originate in the 19th century, but it took actual shape in 21st century.In the pre–independence period, women's emancipation started at the call of Mahatma Gandhi, Swami Vivekananda, Raja Rammohan Roy, Iswar Chandra Vidyasagar, Dayananda Saraswati and so many other famous persons. Gandhi favoured major reforms to raise the status of Indian women and women to co-operate for welfare of India. His struggle was not confined to any particular group or class, but to Indian women as a whole.

Women are now a day's active in every field. They are politicians, lawyers, doctors, authors, teachers, artists and all professions are opened to them. From the Vedic period,women had to involve in their homes for every domestic works. But now a days, women have got little better position. Today men are also sharing house-hold work and duties equally. Participation of women increased in

education and every field. Single woman can adopt child and also womb child by way of test tube and she can live without male partner. The modern women of the country today do not view marriage as a necessity, but one among many aspects of home, marital comforts, good health and youthfulness.

In spite of these, in India, women are still denied basic education, the domestic violence and poverty continues among them. Dowries, Child marriage, Infanticide is banned by Government of India, but wives battering, harassment and murder for dowry and destroy female foetus are found in everyday newspaper.

Conclusion :-

So, today women have demanded equal rights with men in matters of education, employment, marriage, property, politics and social status. Women have a long way to go to aquire gender justice. Though women are allowed to equal constitutional and legal rights,but they cannot properly enjoy those due to ignorance, superstition, inferiority complex and discrimination in a male dominated society. So, there is need of publicity of the policies along with the change of attitudes towards gender discrimination by developing awareness of human beings.

Bibliography :-

1. Ghosh, S.K. (1989), Indian Women Through the Ages, Delhi, Ashis Publishing House.
2. Kapur, P.(1974), The Changing Status of Working Women in India, New Delhi, Vikas Publishing House.
3. Nair, N.(1993-94) , The Second Sex, Indian Journal of Public Administration.
4. Ghosh, J.C. (1887), Works of Raja Rammohan Roy, Calcutta. Vol.xiii.
5. Kriplani, K. (1975), Gandhi and Womanhood, Indian Horizon, Vol.ix.
6. Swami , N. (1949), The Upanisads, New York, Harper and brothers.
7. Banerjee, A.(2013), Status of Women and Gender Discrimination in India, International Journal of development research ,Vol.iii
8. Rajeswari. M. Sheltar (2015), A Study on Issues and Challenges of Women Empowerment, IOSR-JBM,Vol. xvii

Email:avijitanu1983@gmail.com, Mobile: 9830976023

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 79-94
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Education and Women Empowerment

-Iqbal Kaur
Assistant professor of Physical Education, Bhag Singh Khalsa College for Women,Kala Tibba Abohar

ABSTRACT :-

If you educate a man you educate an individual ,however, if you educate a woman you educate a whole family Women empowered means mother India empowered . -Pandit Jawaharlal Nehru.

Women education is an essential need to change their status in the society and also empowerment Intellectually. Women education in India has been the most important preoccupation of both administration and civil society because educated women can play a very important role in the society for social, economic development, besides political and legal. It is one of the opportunities for women empowerment because it enable them to respond to the challenge to confront their traditional role and changed their lifestyle. Education eliminates inequality and disparities as the means of recovering their status with in and out of their families. The present study reveals how the women empowerment through education and its basic need to their family and the society. Education is a milestone of women empowerment because it enables them to respond to challenges, to confront their traditional role and changed their life. So we never ignore the role of education in reference to women empowerment. Education of women is best way the change the empowerment of women. Education also reduce the inequalities of the society.

INTRODUCTION :-

Empowerment of women is directly concerned with education. Women are the pillar of the society. Women's empowerment begin with the awareness about their rights and capabilities and understanding as to how the show economic and political forces affect them. In fact women are the most important factor of every society. Even though everybody is aware of this fact but nobody is ready to accept this fact. As a result the importance which used to be given to women is declining in today?s society. Empowerment is a multidimensional social process that help people to gain control over their own lives. Empowerment is an active and multidimensional process which enable women to realize their full identity and powers in all sphere of life. The development of future generation mainly depend upon the education of women section. Show the education of the woman is very necessary part of the society. It can help every women to educate their children to be as a good manager of the family as well as the active member of the society.

Women empowerment was introduced at the International women conference at Nairobi in

1985. Empowerment is a way which depend on following points :-

- Equal chances for using all resources of society.
- Economic independence.
- Participation in all decision making in women society.
- Freedom of choice in life partner.
- Allocation of funds to women and women projects increased.
- Feeling and expression of pride and value in the work.
- Increased training program for women empowerment.

Process of women empowerment and strategies :-

Empowering women means it referred to the process of giving women control over their choices and opportunities and resources that allowed them to thrive. Traditional role of women should change. Both men and women need to equal chance to grow economically and play multi-dimensional roles for the successful life. Women and girls need special attention in education so democracy cannot play flourish politically without girls. We should obey the constitutional obligation to provide special focus to girls education. Economic and social progress cannot attain without girls education. women empowerment has five dimensions.

A) Individual or personal :-

There is an individual or personal element of gaining control over one's body and sexuality and ability to protect oneself against sexual violence to the empowerment process.

B) Familiar and political :-

This element entails that women have the capability to analyzes, organize and mobilize for social change.

C) Economic :-

The economic component require that women have access to and control over their productive resources thus ensuring some degree of financially autonomy.

D) Social/cultural :-

This Dimension includes belief that women can act at a personal and social level to improve their individual realities and society in which they live.

E) The cognitive dimension :-

It referred to women having an understanding of the conditions .It involves making choices that may go against culture expectation and norms.

Eduation-A mean for women empowerment :-

Education is empowerment, Education is a fundamental right for all people men and women throughout the world. Education is removes the darkness of ignorance. Educated women benefits the whole society. It has a more significant impact on poverty and development than man education. Women have a significant role in shaping the behavior and mental make-up of the younger generation. Education makes them able to know their rights and gain confidence. Educated parents have good

thought about their children educational attainment. Mother education will influence more in children's life than father's. Thus empowerment means and textual sense of personal control concern with actual social influence political power and legal rights. Education developing the ability to organize and influence the direction of social change to create a more or just social and economic order nationally and internationally. Let's see the difference in literacy rate between men and women given table are as under.

Literacy Rate in India :-

YEAR	PERSONS	MALES	FEMALES
1901	5.3	9.8	0.7
1911	5.9	10.6	1.1
1921	7.2	12.2	1.8
1931	9.5	15.6	2.9
1941	16.1	24.9	7.3
1951	16.7	24.9	7.3
1981	36.2	46.9	24.8
1991	52.1	63.9	39.2
2001	62.38	76.0	54.0
2011	74.0	82.1	65.46

On the the observing the above table we come to know that no point could the literacy rate of women match that of men. From 1901 to 2011 since women occupy a secondary position in our social hierarchy.

Importance of women education :-

An educated mother can only lead a good family. Today women are emerging as leaders in the field of medicine, space, engineering, law, politics and business. In this decade women are entering in the job market in increasing numbers. Through education also benefited because if they become more health conscious not only for them but also for her family. They can understand about the benefit about the small size family. Educated women can take decision independently without pressure from her family and male counterpart. She can take decisions not only for her family but also different economic and political relating to her society and nation. Women participation in panchayat Raj institutions may take many forms. It referred all those activities which show the women involvement in the process and administration that is participation in policy formation and program planning. Education can be effective for women empowerment. The framework of which are-

- Motivate for self-esteem and self-confidence of women.
- Devolving ability to think positively and critically.
- Festering decision making and action through collective processes.
- Ensuring equal participation in empowerment process.
- Providing information , knowledge relating to their rights in our constitution.

Obstacles in women education :-

India is traditionally male dominate country. Women got second position in our culture bond. Number of times education is restricted for rural and middle class girls. In villages parents expects their daughters to help at home with cleaning, cooking, taking care of youngers siblings. Early marriage is also big issue in women education. Child labor, gender discrimination are harmful social norms and dangerous on the way to school.

Some major obstacles are listed below :-

- Social and religious values.
- Insufficient in teaching learning environment.
- Poverty.
- Gender bias in curriculum.
- Lacking of school facilities.
- Parental preferences.
- Working as a domestic servant etc.
- Releasing personal information on websites has put some women's personal safety at risk.
- Gender related barriers involves sexual harassment, unstructured interview process etc.
- According to 1998 report by USA department of commerce ,the chief barrier and obstacle in women education in India are-inadequate school facilities such as sanitary facilities, shortage of female teachers, gender bias in curriculum and also constructive culture attitudes.

Reason why education empowers women and girls :-

Education Decreases women's poverty :-

Education directly correlates with many solution to poverty, including economic growth. Education impacts poverty. Educated women can apply for immigration process and better life survive.

Education gives women more employment opportunities :-

According to data from U.S. Bureau of labor statistics decreases as educational attainment rises. Education have higher earnings and lower rates of unemployment than those with less education. Education give confidence and empowerment. If all women and girls receive a quality education, their employment opportunities will be greatly improved.

Education deal delayed marriage :-

Mostly delaying factors are carrier oriented efforts, higher qualifications, family responsibilities to be fulfilled before being married highly choosy in search of a better partner etc. Education improves women to decide when to become pregnant or married leading to an increases in their socio-economic status.

Education improve women's health :-

When women and girls are educated ,they make smarter decisions about their own health. e.g. more schooling, by providing skills for analysing information and tackling complex problems, could

enable people to better navigate the modern health system. Education could also lead to higher paying jobs higher social status and greater wealth ,all of which have been linked with better health.

Education increases women's political participation. :-

Educated women does not just make for more female politician .It also mean that women care more about participating in elections and political activism .A study out of Gombe State University in Nigeria found that there is a direct relationship between women education attainment and political participating. Women participating in politics means that policies and politics means that policies are not focused solely on the needs and wants of men- female opinion are just as important, and participating in the political system ensure that their voice will be heard. It is not only related to? right to vote? but simultaneously relates to participate in decision making process etc.

Suggestion :-

- Computer and other technical education should be provided to girls based on one centre for cities as well as villages.
- Schools for girls should be at reachable distance. And sufficient infrastructure facilities like toilets should be provided.
- The curriculum must be made such a way which attract girls and help them in their future life. Some occasional Courses should be introduced .One more thing the curriculum must be according to the need of time and flexible.
- The people should be ready to accept the change in terms of girls education. The mindset of society must be changed towards girls education and women jobs.
- More and more female teachers should be appointed in all level of schools in co-education institutions, The number of female teacher should be more than male teachers. Such a option will create confidence in parents and they will feel motivate to send their girls to school.

Conclusion :-

Women education is very important for the empowering women and gender equality. The education of women is the most powerful tool to change the position of society. Education reduce the problem of society. A number of great women have proof themselves wonderfully powerfully and successfully in their life through their individual efforts. Our former President Dr. APJ Abdul Kalam rightly says empowering women is a required field for creating a good nation, when women are empowered society with stability is assured. We should keep in mind that women education is women empowerment. Women can be empowered through education, equal opportunities, equal pay and free to do they want to do. Michelle Obama ,American writer and lawyer and wife of Obama said? As a women ,We must stand up for our self's, As a women we must stand up for each other, As a women must stand for justice for all.

References :-

1. Dhruva Hazarika (2011) women empowerment in India : A brief discussion, international journal of education planning and Administration vol.1, No. 3 pp
2. Roufahmod Bhat (2015) role of education in empowerment of women in India journal of education and practice vol. 6 No.10
3. P.pachaiyappan (2014) education : A tool for empowerment of women journal of education and practice vol.5 No. 30
4. Dr. Kunchi Sikha Bhuyan (2020) the role of education in women empowerment international journal of advanced sciences and technology vol. 29 No. 07
5. K.vasantha Gouri (2017) women education and empowerment in India with refference to Telangana and Andhra Pradesh journal of community guidance and research vol. 34 No. 2 pp 394414
6. Dr. K.p. Meera, Jumma.M.K.(2015) empowering women through education international journal of Humanities and social science Invention vol. 4 No.10
7. International research journal of management,sociology and huminity (2014) vol.5, issue 5.
8. http://Campaignfor education USA.org/blog/detail/5reasons-why education.
9. https://www.hsph.harvard.edu.7news.

Email-Sraniqbal80@gmail.com

Mob- 9855344446

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 95-106
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Research paper on Living beyond life : Decoding Amrita Sher-gill through her Art practice

-Rippendeep Kaur

Assistant Professor, Department of History,
Bhag Singh Khalsa College for Women, Kala Tibba, Abohar, Punjab.

Abstract :-

This paper aims to show a brief critical sketch of India's most rebellious artist of her time i.e. Amrita Sher-Gill (1913-1941), often recognised as India's 'Frida Kahlo', is one of the nation's most celebrated female modern artists. Heavily influenced by Realism, Sher-Gil strived to portray the lives of people living within her local community in pre-colonial era. Although her life was short-lived, Sher-Gil has left a vast body of work behind, and these works have established her as one of the foremost female artists of the century. Appreciably trained in painting and exposed to the great works of Italian masters, her paintings are representative of this period in the history of Modern Art, drawing inspiration from artists like Paul Gauguin and Paul Cezanne. She became heavily influenced by wall paintings in Western India and the aesthetic of European oil painting techniques. Such a strong affinity for Western modes of painting, as a response to traditional art-historical resources, has made Sher-Gil a hypnotic artist to study. The confluence of East and West is evident in her vibrant canvases. This paper tries to trace evolution of her unique style which can be mirrored through her paintings, influenced by Impressionist and 'European' style, also characterised by an exceptional color palette filled with barbaric and bold color. Some of her important paintings are also discussed and magnified in this process to get a glimpse of thought behind creating them.

Keyword:- Amrita Sher-Gill, Paul Gauguin, Paul Cezanne, Karl Khandalavala, Expression, Tribal life, Struggle, Bold Color, Painting, Drawing, Nude.

Family background :-

Amrita Sher-gill's father, Sardar Umrao Singh Sher-Gil Majithia, was a landlord of Mazidha near Amritsar in Punjab and Saraya near Gorakhpur in Uttar Pradesh. Her mother, Marie Antoniette Gottesmann, was Hungarian. When Maria was on a tour to India, she met Sardar Umrao Singh in Punjab. Both fell in love and got married. Umrao Singh was fluent in Sanskrit, English, Urdu and Persian. He was a philosopher and a religious man. He loved photography. Her mother was a famous opera singer and music lover. Amrita was born on January 30, 1913, in Budapest, Hungary. Her childhood

was spent in Hungary. Amrita's childhood was spent in an artistic environment due to her cultured and art-loving family. Therefore, Amrita's talent development went smoothly with them.

Art education and Art journey :-

She loved painting since childhood. When she was five and a half years old, she started drawing her toys with chalk. While seven, she portrayed Hungarian fairy tales. She also drew beautiful pictures of children's costumes. She first came to India when she was eight years old. By then, World War I was over. She was accompanied by her parents and younger sister Indira when she came to India. They came via Paris. Saw the Louvre Museum in Paris. As a child, she saw Leonardo's Mona Lisa. From there she came to Mumbai. Stayed in Mumbai for a few days. From there they moved and stayed in Delhi for a while and moved to Shimla.

There she was educated in a wealthy manner. Some artists were appointed to teach her painting. From the beginning, she was taught art and music. It was natural for Amrita to fall in love with Western classical music. Because her mother was a musician and singer herself. So she expects both girls (Amrita and Indira) to take an interest in music and learn to play the piano and violin. Inspired by her mother, nine-year-old Amrita and her younger sister Indira started studying dance and drama at a major cultural center in Shimla.

Plate 1 & 2 : Amrita with her sister Indira.

From the beginning, Amrita was a girl with extraordinary talent and special interests. And she was very different from her peers. At the age of eight, instead of playing with dolls and toys, she enjoyed reading books. She also preferred to play with older children instead of playing with her peers. One of Amrita's eyeball was slanted. That's why she didn't consider herself beautiful. She also had eye surgery for that. Yet, who knows why, in her mind, there was a feeling of inferiority regarding it. She felt that her parents loved her younger sister Indira more than they did to her. This feeling of inferiority in Amrita did not leave her mind till the end.

Plate 3. ?UNTITLED? by Amrita Sher-Gill.

Inscribed 'BRING TO ME DILAH THE REJECTED ONE' lower centre and further signed, inscribed and dated 'Amrita Rajzotta/10 Loes horambom/Simla, India, 1923, Aprilles' indistinctly on reverse Watercolour and pencil on paper 5 ? x 6 ? in. (13.9 x 16.5 cm.)
Painted in 1923

Amrita was not sent to school for education. She was 11 years old when Major Whit marsh, who lived in Shimla, came home to teach her painting. They taught Amrita realistic style. He told her to do that style of study again and again. Soon she was tired of drawing the same pictures. As a result, Major Saheb was removed. Beven Pateman was then hired to teach Amrita painting. He was a famous fashionable society portrait painter. But their medium was pastel. Which medium Amrita did not like. Here, too, she was not satisfied. She soon stopped going to Pateman for an art class. A remarkable incident that took place here was that Petman was the first person to recognize a fantastic artistic talent in Amrita. He first told this to Amrita's mother and advised her to send Amrita to a good art school in Europe for further training.

For some domestic reasons, Amrita had to move to Italy with her mother and sister. Her mother thought that both the girls would be able to see the great art of the Enlightenment in Italy and would also learn the Italian language while living there. Thus, in January 1924, 11-year-old Amrita entered her second year of high school at the famous Santa Nasilata Art School in Florence. Amrita stayed there for a few months and one day she was expelled from school. Because she had drawn a picture of a naked woman. Amrita was fed up with this situation and she insisted to her mother to return India. In June 1924, Amrita returned to Shimla with her mother and sister. From June 1924 to 1929, Amrita lived in the small village of Saraya in Gorakhpur, Summerhill, Shimla. They had land there. As a teenager, Amrita was influenced by the atmosphere in the village. she got to experience the day-to-day miserable men and simple-minded rural people of the hilly region. This experience lingered in her mind forever.

Amrita, 11, who came to Shimla from Italy, was sent to Jesus and Mary Convent School against her will. It was compulsory for every student to know the religion. She objected to this tradition to her father. She slammed the convent school for forcing such religious views. She went on to study painting and playing piano. Since childhood, Amrita has been self-respecting and egoistic, so she always expected such a life. Amrita was especially happy to create human figures. Because she used to create such pictures based on her imagination. When her uncle Darwin came to India from Hungary

in 1927, she advised Amrita to take the help of a 'model' for proper drawing of a 'human' figure. Her uncle Darwin was an Indologist. But in the beginning he was also a painter. So he knew the technique of painting. Inspired by her uncle, Amrita first started human drawing with the help of a model and was amazed to see the result of this on her paintings. She then initially chose her domestic servants to modeling; which were readily available. She listened to Darwin's comments on the drawings from this model and corrected them as needed.

Amrita's mother was an independent and open-minded woman. Which had a great impact on Amrita's personality too. She lived for her daughters and had to give up her life due to the demise of Amrita afterward. When Amrita was 16 years old, her mother thought this was the right time; to train Amrita, she decided to take the two of them to Paris, the cultural capital of Europe, and in 1929 she moved to Paris. Even today in Europe, the English language does not get the respect that French or other languages ??get. She considered both the girls as her life and that is why she wanted Amrita and Indira to learn French culture. She wanted them to learn to read, write, and speak French. So that she could fulfill this wish, she was eager to introduce Amrita, to musicologist-writer and intellectual over there. But Amrita, who was enjoying herself, did not like it then. Amrita learned French within a month because of her talent. She began to speak French fluently, and she quickly adapted to the atmosphere and life in Paris.

During the same period (1929) when she moved to Paris, she was faced with the question of how to get admission in art school. Then she was first sent to learn art in Académie de la Grande Chaumière. Amrita later studied with Lucien Simon (1861-1945), a professor of the famous École Nationale des Beaux-Arts. Prof. Simon now recognizes the talent in Amrita, just like Bevan Petman. And he said "I will one day be proud that Amrita was my disciple." From 1929 to 1931, Amrita spent three years in art school. During this time she won first prize in the Annual Still Life and Portrait competition. It was during this study period (1932) that her paintings were first exhibited at the French National Art Exhibition (in the Grand Salon). These paintings caught the attention of critics and aficionados and was well received by views. For the second year in a row, she sent a painting called 'Young Girls'. Which was declared 'Best Painting of the Year'. And on the same basis she was awarded a Grand Saloon Fellowship. She was only 19 that year. The suc cess she achieved at such a young age was a record. She was not only the first Indian woman painter but the first Asian to receive this honor. Which is also an example of a testament to her talent.

Plate 4: Young Girls? 1932, by Amrita Sher-Gil. Amrita's sister Indira sits on the left clothed in chic European garb, while the partially undressed figure in the foreground is a French friend, Denise Proutaux. This painting was awarded a Gold Medal at the Grand Salon in 1933.

In her art studies from 1930 to 1932, Amrita drew hundreds of nude paintings of men and women in charcoal through her post-art training. She first used oil paint in 1930. Produced nearly sixty paintings in these three years. Which also includes pictures of self-portraits, nudity, etc.

Plate 5: 'Reclining Nude' by Amrita Sher-Gil.

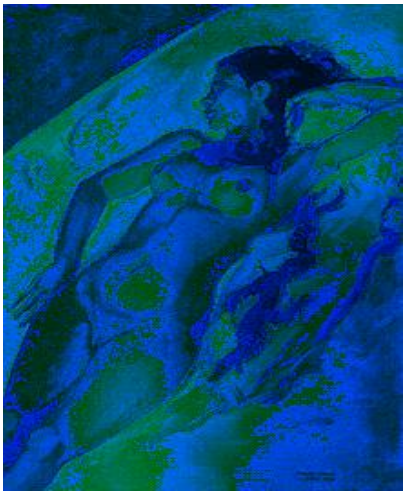

Plate 6: 'Sleep' (her sister) by Amrita Sher-Gil.

It was during this time that Amrita developed a passion for playing the piano. For this she enrolled at the Acole Normal de Music, a famous music school in Paris. But soon she stopped going to music school. Because she understood that her talent is being divided into two different mediums, music and painting, and so she can't do justice to any one fully. It was not so easy to get talented in both the arts. Eventually she gave up music and turned her full attention to painting.

This period of reality in Paris was a nectarine period in Amrita's life. A new hope of freedom and thought sprouted in her life. Amrita changed her habit of entertaining and hanging out. She stopped watching traditional drama and dance. Which was very popular at that time. She changed her lifestyle. Instead she started watching plays by leading progressive playwrights with new perspectives. She started going to the cafe with young friends with new ideas. There was a constant haunt of new-minded friends from various fields. Discussions were held there. Due to her easy-going personality and attractive beauty, confidence and intellectual awareness and aesthetic vision, she became a topic of discussion and popularity at the Exhibition Gallery Theater-Dance Festival and various parties in Paris. She was happy in her life then because of all these things. This happiness is reflected in her self-portrait of that time.

But her mother was worried about Amrita's romantic life. She wanted to marry Amrita to a wealthy Indian young boy. And for that she Introduced Amrita to a young man. But Amrita disliked the young man in terms of marriage. During this time, Amrita became a victim of a disease. Her cousin was a doctor in Budapest. He treated her from that.

The 1930s were the year of many artists, new art journeys like Picasso and Matisse who were famous in the art world that time. So why did Amrita consider the famous 19th century painters Paul

Cezanne (1839-1906) and Paul Gauguin (1848-1903) as her inspiration? This is the first question that arises. In this context, it would be fair to point out that although Amrita was influenced by Gauguin's art, she did not consider Gauguin as her role model. Gauguin himself was living on Tahiti Island in his last days. He saw a strange form on that island of Tahiti and even married a woman from Tahiti. But Amrita did not choose India to stay on this basis. She herself was at first half Indian. But when it came to marriage, she chose a Hungarian man; Not Indian. Her hair was very dark like that of a Punjabi woman. Although Amrita's allegation of sexuality is accepted to a certain extent, her sexuality is not seen in her paintings like Gauguin's. Although sexuality has played a major role in her own personal life (her Parisian nude paintings), she has never portrayed Indian women naked in her paintings. In the field of art, both Amrita and Gauguin avoided unnecessary details in size. Both of them followed the prevailing 'shadow-reduction theory' of the visual artists in France.

Amrita used to love Hungarian culture, filming farmers, villages and common people. For this reason, in Europe, she used to go Hungary every year. She was also interested in literature and admired high quality literature.

She tasted the works of modern French and Hungarian writers. She was especially fond of novels and poems. She was a devotee of literature. She had read the original Hungarian literature and translated some of it into English.

She was a music lover. She enjoyed maximum peace through music. Whenever she feel down, anxious, distraught and distracted, she would play the piano for hours, and she would play it perfectly. She was not satisfied after experiencing many privileged honors and luxurious life. She began to realize that Europe was not the right place for her to live. She saw the golden future of her art in India and she was anxious to return India. Thus, Amrita and her family came to India in November 1934 with a happy and sad heart after experiencing the civilization of these big cities. For a few months, she stayed at Majitha House which was her father's house in Amritsar and later with her uncle in Saraya State (Gorakhpur - Uttar Pradesh). She then spent the rest of June 1938 in Shimla and Saraya.

At that time, Shimla was the capital of India in summer as it was cool place. The civilized people of that time, kings, Maharajas, Nawab's and other rich class people used to gather there. Because of Amrita's charming personality and her passion for various subjects, they were eager to spend every evening with her. Amrita used to start discussion sessions by inviting people from different fields – Pandit's at home. This is why Amrita became a favorite of the upper caste in Shimla. Became their main attraction.

Amrita had sent 10 paintings for the Shimla Fine Art Society's annual art exhibition in December 1935. Five paintings were selected and five were rejected. One among those five selected paintings was declared the 'best' painting in the entire exhibition. A strange thing happened in this exhibition. Which five paintings were rejected of which one painting was on display at the 'Grand Salon' in Paris. Amrita was upset by the unfortunate decision of the selection committee and returned the 'best' award considering it an insult in Shimla exhibition. This incident was discussed not only in Shimla but

all over India. It was considered a revolutionary event in the art world that time. Some newspapers also published articles on the subject.

In November 1936, Amrita organized an exhibition of her paintings at the famous Taj Hotel Gallery in Mumbai. For the first time in India, Amrita's art exhibition was a grand success. Her art was appreciated and discussed all over the country. After this successful exhibition, Amrita organized exhibitions of her paintings in Hyderabad (Andhra) and Allahabad (Uttar Pradesh). The Hyderabad exhibition was inaugurated by Prince of Berar. Sarojini Naidu saw the exhibition and expressed her happiness and satisfaction. She knew that there were no important painters in Indian art. And it was on basis of this appreciation that she (Amrita) confidently stated a few years after her arrival in India that "There are Picasso, Matisse and many other painters in Europe. But in India totally belongs to me."

Plate 7 : A set of three press clippings sent by the artist to R C Tandan. (Amrita Sher-Gil, "Modern Indian Art: Imitating the Forms of the Past", The Hindu, 1 November 1936; "Bombay Art Society's Exhibition", The Times of India, 16 January 1937; "Art Exhibition in Bombay", publication and date unknown)

Amrita used to spend the whole day painting in the natural light coming into her studio. But as soon as it was evening, he would go for a walk with fresh make-up. When she returned, she would again returned to her studio to observe her own paintings. In the first year of her trip to India, Amrita portrayed family members and friends. One of the famous pictures is 'Three Young Women'. During this time she painted themes of poverty and misery. 'Mother India', 'The Beggars', and 'Woman with Sunflower' were some of the famous paintings of this theme.

Plate 8:
'Mother India' by Amrita Sher-Gil, 1935.

From the beginning, Amrita did not believe in 'shot-cuts' in art. The number of paintings she drew on Indian life depended on her limited experience and visions. Amrita traveled from Shimla to Kanyakumari thinking that if she would paint a picture of the soul of the whole country, she should walk around the corners of the country and study the lives of the people living there with her eyes and mind. She carved those scenes in her mind and then drew them on canvas.

Amrita also visited Mumbai during the November 1936 Southern Tour. She met Karl Khandalavala. The young Karl Khandalavala was the first person in Amrita's artistic life; Who kindly tried to understand the nectar of her art. Karl Khandalavala was an expert in the Indian miniature genre. His own collection contained a wealth of excellent miniatures of Rajput and Basoli styles. Amrita made a practical observation of Khandalavala's paintings. She also enjoyed miniatures at the Prince of Wales Museum in Mumbai. Amrita was overwhelmed by all the miniatures she saw and observed.

From Amrita's paintings till date, she had used more color-color combination. For example 'Hill men'. But then in the future she decided to use strong, bright, color combinations from miniatures. Used consistent color scheme.

Plate 9 :
'Hill men' by Amrita Sher-Gil is her most famous painting (1931).

On her way back from South India, Amrita stayed in Delhi for a few days. In Delhi, she filled the exhibition with some paintings. For the first time in Delhi, she personally met Pandit Jawaharlal Nehru. Pandit Nehru came to see her paintings, and for a long time he kept discussing art with her. Pandit Nehru also wrote her a letter praising her paintings.

Plate 10 :
Jawaharlal Nehru, Amrita with Victor Egan.

Amrita had moved to Lahore in November 1937. At that time, Lahore was an important center of art, literature and culture. In November 1937, Amrita organized a solo exhibition of her 30 paintings at the Faletti Hotel. During this time she lived in Lahore. In 1938, Amrita returned to Shimla for a few months in Lahore. From there she would sometimes stay in the village of Sareya. During this time she made fast-paced paintings. He painted on various subjects like 'Afternoon Rest', 'Storyteller', 'Ganesh Puja', 'Mountain Heart', 'Elephant Bathing in Green Lake' etc. During this period, Amrita experimented with ornamental forms for the first time. she used Velbutti carvings to make trees and flowers. In 1938, two self-portraits won prizes at the Delhi Fine Art Exhibition.

Plate 11 'Two Elephants' by Amrita Sher-Gill, 1940.

Plate 12 'Resting' by Amrita Sher-Gill, 1939.

In 1938, Amrita was 25 years old. She wants to live a comfortable life in the future. But day by day, her enthusiasm was usually diminishing. She was having difficulty living a comfortable life due to social fear and irregular thoughts. In such a dilemma, she wanted to get married. But she was worried about not being able to see herself as an ideal wife. Amrita's parents recognized her condition. For this, many proposals of upper class and rich youth were presented to her. But Amrita did not accept any of the proposals. There was no shortage of rich Indian young boys who wanted to marry her.

It was time for her to make an important decision in her life. She made a decision to marry her cousin against the wishes of her parents; The one who cured her. She decided to marry Dr. Victor Egan. who used to live in Hungary. And she had engagement with him a few years earlier. But after this marriage there was a problem that after the marriage Amrita would have to go to Hungary or Victor would have to come to India. Amrita knew that living in Europe would not allow her to practice painting. So she decided to go to Hungary herself and get married there and then return to India with Victor. Egan knew Amrita well and he knew that he could accept Amrita as his wife, so Amrita decided to accept Egan as her husband.

Thus, in 1938, 25-year-old Amrita Went to Hungary to marry Dr. Victor. Where she they got married in Budapest.

Plate 13: Amrita Sher-Gill with Victor.

Plate 14: 'Portrait of Victor Egan' by Amrita Sher-Gill.

Amrita had gone to Hungary after four years. By staying there, she wants to enjoy more and more pleasures in life. She had previously spent a lot of time in Hungary. As she loved to live in village more. So she chose a medieval village called Jebagni. The village was inhabited by a large number of Hungarian folk-artists. The village was also home to some novice artists as well. Whose works was very dear to Amrita. All these painters lived in close proximity to nature. There life and lifestyle were also simple. Similarly, simplicity was in there paintings too. Which impressed Amrita. Like these simple-minded folk-artists, Amrita liked the work of the sixteenth-century Dutch painter Pieter Bruegel (Elder). Bruegel's simple and straightforward influenced on Amrita's painting can be seen on painting 'Rural bazaar' in Hungary. Although Amrita's paintings in Hungary show European influences, they are different from those in Paris. One of the famous paintings - 'Two Naked Women' depicts a woman in black and another in white.

Plate 15 :
'Hungarian Village Market' by Amrita Sher-Gill, 1938.

Plate 16 :
'Two Girls' by Amrita Sher-Gil, 1939.

Due to the growing influence of the fascists in Hungary and the fear of World War II, both Amrita and Victor returned to India in July 1939 via Sri Lanka. On the way from Sri Lanka to Shimla, They visited Mahabalipuram in South India and also went to Mathura in North India. Amrita was fascinated by the Kushana sculptures in the museum at Mathura. Dr. Victor had decided to stay in Shimla. There he was going to practice medicine and Amrita would do her Kala-sadhana. But his plan did not succeed. Victor's medical practice was not running in Shimla and Amrita's paintings were not been sold too. So they had to go to their home in Saraya. Amrita's uncle Sardar Sundarsingh Majithia had a mill at Saraya. That mill had a hospital. There, Dr. Victor got a job as a medical officer.

The two years from July 1939 to September 1941 are considered to be the most important period in the art of Amrita in Saraya village. During this period, she blended the natural background of Mughal and Rajasthani paintings in her own painting style and presented excellent paintings. It shows a very poignant portrayal of an Indian woman. Amrita's entire paintings, which have the most natural background, were created in the village of Saraya. These paintings show the beautiful play of the natural environment and the beautiful intertwining of emotions in human life.

Plate 17 : 'Ancient Story Teller' by Amrita Sher-Gill, 1940. **Plate 18:** 'Haldi Grinders' by Amrita Sher-Gill, 1940.

Plate 19 : 'The Swing' by Amrita Sher-Gill, 1940.

Plate 20 : 'Musicians' by Amrita Sher-Gill, 1940.

Amrita was a unique woman of strange nature. Amrita was able to lead a glorious life in the village of Saraya. Because the necessities of life were available in that village. Her hobbies like horse racing, elephant ride and hunting, etc. were readily available tere. But on the other hand her intellectual appetite was not quenched by friends. Nor was there anyone who could discuss literary art. Who can also exchange personal thoughts on her art. There were no such friends. Apart from this, living in the village of Saraya and selling paintings was a big problem. The paintings did not got sale. Nor anyone Admire these works of art. Not even two words could be heard there on it. She was desperate. That time she wrote a letter to her friend Karl Khandalavala. In it she writes - 'I am literally living a life in hunger for praise of my works. At least should be people who like it or discuss it – do they understand them or not, and so on and so forth.'

During this time she came to Shimla with her husband. After reaching Shimla, the two decided to leave Saraya village and stay in Lahore. Their decision to stay in Lahore was favorable and reasonable because almost all the good doctors in Lahore had left Lahore during the World War. Therefore, in Lahore, Dr. Victor's medical practice was more likely to run smoothly. Moreover, Lahore was a major cultural center of undivided India. Where artists, writers, poets were working for the national movement.

With this in mind, Amrita moved to Lahore with her husband in September 1941. Annoyed, Amrita left the village and came to Lahore in a sad mood. But when she came to Lahore, she felt more refreshed instead. During this time her painting stopped. Because the two of them were trying to run the medical practice well. Soon, as in Shimla, Amrita's circle of friends formed in large numbers in Lahore. Many artists, musicians, literary and other people used to gather at her house. Discussions on various topics used to happen there. Eventually Amrita's house became a meeting place for all of them.

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 107-111
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

STATUS OF WOMEN IN INDIA : A HISTORICAL AND CONTEMPORARY PERSPECTIVE

-Prabhjot Kaur

Abstract :-

The status of women in complex society like India isn't uniform . As of late, the conventional roles of Women have experienced a few changes because of financial needs and a few endeavors were made to convey perceivability and standard women's commitment to the general development and improvement of society. Women throughout the India has experienced oppression at the hand of men from the beginning of time. But it hasn't always remained constant, during some periods of the history such as rig Vedic time, Bhudda's time women were able to taste freedom and equality. Whereas during the time of Mughal empire, women faced hardships like never before. All these incidents in the past has fortified women to fight for their rights and equality. Even though plenty of good changes has been introduced in the lives of women by providing them opportunities they righteously deserve, this fight for equality is still continuing. Efforts should be made by both men and women to revive women's glory and honor by removing the inequality and imbalance they are facing in the society.

Keywords - women status, ancient time, medieval time, modern time.

Women is the magnificent creation of God, a multifaceted personality with the power of benevolence, adjustability, integrity and tolerance. She is the companion of man gifted with equal mental faculty. She is the embodiment of love and affection. The role given to the women in society is a measuring rod and true index of its civilizational attainment. In the words of Rabindranath Tagore, "Woman is the builder and moulder of a nation's destiny. Though delicate and soft as lily, she has a heart, far stronger and bolder than that of man." But it is not considered so, by many people. So that is why status of Indian women has experienced many ups and downs from the ancient time to the present day. The status of women depicts the social, economic and mental condition in a nation. Women have been regarded as a symbol of spirituality in our scriptures. Yet, they have been treated badly and unequally to men.

Social evils such as dowry, sati-system, child marriage, and female infanticide were widely prevalent in the early ages. The spread of education and self-consciousness among women has led to their progress over the period. Women of today are empowered. Also, women are gaining advancements and success in each and every field. Respect and advancements for women status commenced a long time ago and it is

still going on. The status of women in India has been fluctuating. It has gone through several changes during various historical stages. Historically speaking, women in India have passed through two phases of their life – the period of subjugation and the period of liberation. At times she has been suppressed and oppressed and at times she is regarded as the deity of the home. From the Vedic age till today, her status and position has been changing with the passing of time. Therefore, it is necessary to analyze the status of women in the various ages to assess her real position today.

Starting from Vedic Period, one view of women during the Vedic period occupied an exalted position and they enjoyed a fair amount of personal freedom and equal rights with men. But another view holds that birth of a girl was not a welcome event. However she did not suffer due to that reason. She was given all the privileges entitled to a son. No discrimination was made on the basis of education. At least twenty women composed Rig Vedic Hymns. Gargi and Maitreyi were the leading philosophers of the time. Women, in the Vedic era, so excelled in the sphere of education that even the deity of learning was conceived of as a female popularly known as 'Saraswati'. Girls were allowed to enter into the Gurukulas along with boys.

There are also instances of female Rishis, such as Ghosa, Kakhivati Surya Savitri, Indrani, Shradha Kamayani, Yami Shachi, Poulomi, Urvashi etc. The Aryans evidently preferred male child to female child. However, females were as free as their male counterparts. Education was equally open for boys and girls. Girls studied the Veda and fine arts. Women never observed purdha in the Vedic period. They enjoyed freedom in selecting their mates. But divorce was not permissible to them. In the family, they enjoyed complete freedom and were treated as Ardhanginis. In domestic life women were considered to be supreme and enjoyed freedom. Home was the place of production. Spinning and weaving of clothes was done at home. Women helped their husbands in agricultural pursuits also. Husband used to consult his wife on financial matters. Unmarried daughters had share in their fathers' property. Daughter had full legal rights in the property of her father in the absence of any son. The woman was regarded as having an equally important share in the social and religious life because a man without woman was considered as an inadequate person.

In Epic age, in the history of female freedom, may be regarded as a golden age. Women had been accorded an honorable status in the society. Most of the female characters of Ramayana and Mahabharata were well educated. The Ramayana illustrates the Hindu ideal women of India. In Mahabharata we find instances where women gave counsel and advice to men on social and religious issues. Women had an effective role in social and political life of the then society.

While speaking about woman and her relation to man, Manusmriti says "Women must always be honoured and respected by the father, brother, husband and brother-in-law who desire their own welfare, and where women are honoured, there the very Gods are pleased, but where they are not honoured, no sacred rite even could yield rewards". Manu observes that the family, in which women suffer, is bound to be ruined, while the family in which women are happy is bound to prosper. He further enjoins that every person is to maintain peace with the female members of the household. He also advises every householder to treat his daughter as the highest object of tenderness and honour mother as the most venerable person in the

world.It appears that Manu had a very poor opinion about women. According to him women should be guarded against her evil inclinations. Otherwise she will bring sorrow to both the families. He also observes that if a woman is chaste, it is because she has not found a proper man, place and opportunity. He, therefore, calls her a 'Pramada a temptress. So, he wants woman to be under the surveillance of father in her childhood, her husband in her youth and her sons after the death of her husband. He declares in unequivocal terms that no woman deserves independence.

Gautama Buddha, first religious teacher who never shared the Brahmin's view regarding women. According to him, daughters were quite as good as sons were. During this period women got the opportunity to lead a liberal and independent life and they could decide their own path of leading life. Their marriage was no longer a compulsion. The Buddha gave opportunities to women for participating in the religious activities like male in the society. Gautama Buddha provided opportunities to women to admit in the sangha, matha or vihara as Bhikkhuni, although there were separate Bhikhuni Sangha for them which show the example about equality between male and female. In sixth century BC, Jainism also came into existence. Lord Mahavira also had a spirit of consideration of equality between men and women. In reality because of the gender-stereotyping that has taken place for thousands of years in a patriarchal society and the inherent biological differences between male and female, the roles prescribed for men and women are different especially in a social and cultural setup. Nevertheless, the roles played by both of them are equally important for the concerns of wellbeing of their children and family.

In Mauryan period, Brahmanical literature was mostly brutal in the treatment of women and assigned them a very low status in the society. Owing to the suppressed condition of women in the society of his time, it is possible that Emperor Ashoka (304–232 BC), a great devotee of the Buddha, felt the need to appoint a special group of mahamattas who would be concerned mainly with the welfare of women. During this time, women took part of women in religious preaching. Sanghamitra, who was the daughter of King Ashoka, along with her brother Mahendra went to Sri Lanka to preach Buddhism. In the smirti and Purans women are equated as a property which could be given away or taken as a loan. This socio-cultural attitude of equating women as property has a relation with typical patriarchal social system. Because of this, the socio-religious customary law during post Vedic or Brahman period did not allow any proprietary rights to women. The women had her rights only jewels, ornaments or any gifts given to her which is known as stridhana, aprt from these neither she had rights on her fathers property or in-laws property.

During Medieval period, Along-with the invasion of the country by the Muslims, the position of women declined further. The Muslim period witnessed several indicators of low status of women, particularly the Hindu women. The child marriage became a rule to safeguard the chastity and honour of the girls. In many cases the Hindu girls were given in marriage before the age of nine or ten. This clearly indicated that the Hindu girls were denied education. Polygamy and 'purdah' system were 'practiced during the Muslim period. Women were restrained through the 'purdah' system and the movement outside the home was checked. Thus the purdah system affected their education. It also made women dependent on men for

external work. Polygamy was very commonly practiced among the higher class Hindus. The Hindu widow spent her days in the most pathetic condition. The practice of child marriage resulted in rapid increase in the number of child widows. The death of a woman was preferred to her falling into evil hands. The practice of 'Sati' was encouraged and the widows who did not perform 'Sati' were looked down upon by the society. During the fifteenth century, the situation underwent some change. The Bhakti movement organised by Ramanujacharya during this period introduced new trends in the social and religious life of Indian women. The saints like Chaitanya, Nanak, Kabir, Meera, Ramdas and Tulsi stood for the right of women to religious worship. Hence, this movement, atleast, provided religious freedom to women. As a result of this freedom, they secured certain social freedom also. The saints encouraged women to read religious books and to educate themselves. Although the Bhakti movement gave a new life to women, this movement did not bring any substantial change in economic status of women. Hence, women continued to hold low status in the society.

Status of Indian Women began to change radically during the modern period. Historically the period after 1750 A.D is known as the modern period. The status of Indian women during this period can be divided into two stages namely as status of women during the British rule in India and the status of women in post independent India.

During pre independent India, With the dawn of freedom and particularly during India's national struggle the position of women took a turn for the better. Mahatma Gandhi, Pandit Jawaharlal Nehru and Dr. Rajendra Prasad began to think deeply about the urgent need of women's emancipation. They realized so long as women of the country were not uplifted and granted status with men in all walks of life political, economic, domestic, educational India could neither progress nor make any significant advance in any field. Gandhiji gave clarion call for women's participation in the freedom movement. Sarojini Naidu, Mira Ben, Sucheta, Kirplani, Vijay Lakshmi, Aruna Asaf Ali were some of the leading women freedom fighters.

In the present, a large number of women have attained dignity, individuality and respect in their respective field. They are free to join any service. In the post independent India, women have played a significant role, as doctors, engineers, judges. scientists. diplomats, legislators and even as a prime minister. Indira Gandhi, former late prime minister was held in high esteem the world over. Vijay Lakshmi Pandit created a record by becoming the first women President of the United Nations General Assembly. In the last two decades, woman have really become into their own. Women have proved to be more vibrant, dynamic, sincere and perfect in every field. Mother Teresa, P.T. Usha, M.S. Subbulakshmi, Ms. Kiran Bedi, Dr. Padamvati, Mrs. SushmaSwaraj, the great environmentalist and social activist MedhaPatkar and PramillaKalhan have become great names in different fields of their work. Sonali Banerjee of Calcutta became the first Indian woman Marine Engineer and brought fame to our country for crossing the English Channel and twice conquered Mt. Everest.

In present times, a lot has changed since those dark ages of the 1950s for the women. Though at some levels like dowry, crimes like rape, sexual harassment at office or public places, and molestation, eve-teasing, even after over sixty years of independence women are still exploited, which is the shameful

side of our country. Yet one can't deny that the situation has improved since the earlier times. Women, who now represent 48.2% of the population, are getting access to education, and then employment. From 5.4 million girls enrolled at the primary level in 1950-51 to 61.1 million girls in 2004-05. At the upper primary level, the enrolment increased from 0.5 million girls to 22.7 million girls. Dropout rates for girls have fallen by 16.5% between the year 2000 and 2005.

Programs like 'Sarva Shiksha Abhiyan' and 'Saakshar Bharat Mission for Female Literacy' has helped increase the literacy rates from less than 10 percent to more than 50% today. The result of this is that India has world's largest number of professionally qualified women. In fact India has the largest population of working women in the world, and has more number of doctors, surgeons, scientists, professors than the United States. Today names like Arundhati Roy, Anita Desai, Kiran Desai, Shobhaa De, Jhumpa Lahiri can put any other writer to shame. In the field of cinema, women like Rekha, Smita Patil, Shabana Aazmi and Vidya Balan and Konkona Sen are such names who don't play feminised roles, but have asserted themselves over this male-dominated realm. In the field of Politics, from Indira Gandhi to Shiela Dixit, Uma Bharti, Jayalalithaa, Vasundhra Raje and Mamata Banerjee today, women are making their presence felt.

Today, the modern woman is so deft and self-sufficient that she can be easily called a superwoman, juggling many fronts single-handedly. Women are now fiercely ambitious and are proving their metal not only on the home front, but also in their respective professions. Women in Indian are coming up in all spheres of life. They are joining the universities and colleges in large numbers. They are entering into all kinds of professions like engineering, medicine, politics, teaching, etc. A nation's progress and prosperity can be judged by the way it treats its women folk. Despite progress, many women who belongs to rural area lacks education. So it's a long way to go to make everyone realize that women are equal to men, if not better.

References :-

1. https://www.researchgate.net/publication/332912529_SOCIO-CULTURAL_STATUS_OF_WOMEN_IN_INDIA_A_HISTORICAL_PERSPECTIVE.
2. https://www.yourarticlelibrary.com/women/status-of-women-during-the-vedic-period/47391
3. https://medium.com/@apeksha.0503/status-of-women-from-the-past-into-the-future-e9154f7429c1
4. https://www.researchgate.net/publication/339000469_Society_and_Women_in_India_Understanding_relative_importance_of_Women_Empowerment
5. https://www.yourarticlelibrary.com/women/the-position-of-women-during-the-medieval-period/47394
6. https://www.youthkiawaaz.com/2012/03/heres-how-the-status-of-women-has-changed-in-india-since-1950-till-date.
7. https://www.yourarticlelibrary.com/women/status-of-women-in-modern.india.47637#:~:text=Historically%20the%20period%20after%201750,the%20British%20rule%20in%20India%2C&text=(b)%20The%20status%20of%20women%20in%20post%20independent%20India
8. https://www.yourarticlelibrary.com/society/status-of-women-in-vedic-and-post-vedic-period/4397
9. https://www.sentinelassam.com/amp/north-east-india-news/assam-news/status-of-women-in-indian-society.

9815292455, rippanbhullarr@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 112-116
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Portrayal of Women in Indian Art

-Prabhjot Kaur

Assistant Professor in Fine Arts, Sri Guru Teg Bhadur Khalsa college, Sri Anandpur Sahib

Abstract :-

Indian Women have been involved in a constant struggle against oppression by society for centuries. Although countless efforts have been made to spread awareness but even then, they faced terrific gender biased crimes like Dowry, Sati pratha, sexual harassment and domestic violence. But Art has always been one of the most widely used medium for expressing these issues. The history of women artists cannot be separated from the evolution and sustained critiques of Indian feminist thinking since the 20th century. They emphasized gender issues and discrimination in the forms of paintings, sculptures and installations. In this paper we will go through these women artists and their works to define social issues and challenges.

Feminism in India refers to a set of activities aimed at identifying and protecting equal rights and opportunities, democratic, cultural, and social rights for women in India. It is the struggle for women's rights in Indian society.

The artwork of Indian Society has prompted thought about the lives of Indian women. In modern India, paintings have appeared to be visual and socially conscious. By no way all of it: one might argue that India has represented the entire range of international painting styles.

Indian Women have been involved in a constant struggle against oppression by society for centuries. Although countless efforts have been made to spread awareness but even then, they faced terrific gender biased crimes like Dowry, Sati pratha, sexual harassment and domestic violence. But Art has always been one of the most widely used medium for expressing these issues. The history of women artists cannot be separated from the evolution and sustained critiques of Indian feminist thinking since the 20th century. They emphasized gender issues and discrimination in the forms of paintings, sculptures and installations.

To create stronger economies, achieve globally negotiated development goals, and improve the quality of life, women must be empowered to participate fully in economic life in all sectors.

When we discuss the role of women in today's society. It has evolved dramatically over the centuries. Women now hold high positions such as President, Prime Minister, Speaker of the House, and so on. They now engage in a wide range of events, including art, music, science, technology,

politics, and sports.

The Indian Constitution provides all Indian women equality, no state prejudice, equal rights, and equal pay for women. Furthermore, it provides for special arrangements to be created by the state in support of children and women, as well as proposals to be made by the law to create just and sustainable work environment and maternity benefits.

A new day seemed to have dawned with the emergence of women into public life in the dependence movement and in the post-independence era. With the arrival of women into political life during the independence struggle and in the post-independence period, a new day seemed to have dawned.

Mrs. Indra Gandhi, India's Prime Minister, appears to be evidence that women in India have achieved a new position in modern India. Indeed, Indian women have made significant progress. In public life, there are good and capable women. Artists working today who concentrate on the condition of women or the individuality of women in a practical way.

Are defiant to the conventional picture, that is ubiquitous beyond the realm of fine arts—for example, in cinema and advertising—and that persists in painting on a regular basis.

Naren Panchal was included in a study of young Indian artists a few years back, creates nudes of slender proportions. They're wonderful pictures. When it comes to the traditional status of females, the problem with them is that the picture views people in individualistic ways and it has become a silly connecting female and creation.

By its soulful effect, a cliché reign is forced in the finest examples of the style. The feminist emphasis discussed here, on the other hand, is specifically related to women in their social contexts or in their individuality.

Krishna hebbar, another well-known Indian artist, is a master of the expressive and sensuous line, which has long been a cornerstone of Indian art. Some of Hebbar's drawings depict a typical image of woman as earth mother, magnificently abundant, similar to Lakshmi, goddess of wealth.

In one of his portraits, City Life of 1968, the stereotypical picture of female is apparent. The drawing, however, goes further than the conventional image's expression. It eloquently evokes the plight of a disadvantaged woman in modern-day India.

Another rendition of the customary picture of lady found in present day painting. It understands the ornamental upsides of female figures, typically as subordinates to scene. In this manner one discovers "town ladies" depicted by numerous specialists, especially those of the "old school" of the period before autonomy. The Bengali artist Jamini Roy introduced lavish figures of ancestral young ladies at a beginning phase in his vocation. N.S. Bendre, a senior and legitimately regarded Indian craftsman and educator of workmanship currently living in retirement in Bombay has painted summoning of rustic India, Village ladies being the title of one of them. These works of art are breathtaking arrangements, monstrously enlivening. Be that as it may, in them the innovative creative mind lives with stylish shows and forgoes any presenting understanding.

In 70s and 80s Indian painting had come of age. Presenting a confluence and influences from

all over the world, Indian painters had reached a point where they excel in their art and used it to reflect their own realities, their own interpretation, and new contemporary language. Indian art saw the surge of enthusiasm from women artist who were preoccupied with issue of identity and gender differentials. Feminine artist of India broke new ground in the field; these are Amrita Shergill, Arpita Singh, Anjoile Ela Menon, Nalini Malini, Maha Devi Parekh, Anupam Sud, Arpana Caur, Gogi Saroj Pal and Rekha Rodwittiya.

Rekha Rodwittiya's work portrays complex issues of daily routine and experiencing, of estrangement and having a place, of separation and acknowledgment, of accord and dissension. Her work mirrors her affectability towards socio-political mentalities alongside the reflections from before.

Nilima Sheikh is a Delhi-based painter whose art focuses on female-centric themes. Sheikh's work, as a supporter of gender equality, exposes the inequity and horrors that women in India face. 'When Champa Grew Up' (1984), her most famous work, is a collection of 12 tempera paintings that depict a true tale of a young girl who marries. After that, she is tortured and immolated by her husband's family. Sheikh was a history student when she began painting, and her work has always had a traditional feel to it, take inspiration from Mughal and Rajput painters to depict daily life with a literary vigour. Sheikh experimented with a variety of painting styles, ranging from hand-held miniatures to traditional oil paintings.

But, in the process, the artist compels one to look at her own sources differently.

In her paintings, Arpana caur primarily depicts women. The woman's exaggeratedly stretched hand - whether she is holding, moving, or beading - is what instantly hits the spectator in a number of her paintings. It represents the strength and influence of the women depicted in her works. “The works become agents of liberation for Vrindavan's widows and other dispossessed citizens.”

Etchings of the sad-faced brooding feminine profile, the single woman breastfeeding a boy, or a woman lying motionless can be found in Gogi's earlier works, such as her series: Gogi Saroj Pal began a new series of paintings, mythic fantasies about women, in 1989. Her first image is of Kamadhenu, the mythical wish-fulfilling cow who is said to grant all wishes She depicts ladies in fantastical structures illustrative of their battles and qualities.

Among driving contemporary Indian female artists, Nalini Malani is known for her rich, politically charged blended media compositions and drawings, recordings, establishments and theater works. Her experience of the uprooting brought ab.out by the Partition of India impacts every last bit of her work, as do Hindu and Greek folklore, nineteenth century English "jabber" composing, and mid twentieth century test theater. Through this common hodgepodge, and her trademark mixing of deliberation, figuration, and text, Malani fundamentally looks at sexual orientation jobs, race, transnational legislative issues, and the repercussions of uncontrolled globalization and industrialism. Her undertakings are highlighted by what she calls an "unflinchingly metropolitan and internationalist" perspective and by her initial preparing as a painter. A spearheading craftsman, she was among quick

to unequivocally present women's activist issues in her work, during the 1980s. In the mid-1990s, she started introducing imaginative, outwardly and thoughtfully layered theater and establishment pieces.

Anjolie Ela Menon, a well-known modern woman artist, often portrayed unhappy women's faces. She evokes intense feelings and perceptions, effectively removing both the subject of her painting and the viewer from the image.

Burman, Jayasri Jayasri Burman is a contemporary painter whose work combines powerful feminine themes with mythical elements. Burman's paintings are focused on the theme of women.

Potnis depicts the relationship between private and public space in her work, demonstrating how a person influences the external world and how elements from the outside influence an individual. In several of her works, such as 'Still Life,' 'The Kitchen Debate,' and 'Porous Walls,' she often portrays the feelings most prevalent among women in today's world, such as fear and the need for power.' A few of her works, including her solo exhibition 'Time Lapse' from 2012, focus on the passage of time as a central theme. Potnis' art has been seen in prestigious galleries in New York, Warsaw, London, Berlin and Shanghai etc.

Amrita Shergil was India's first professional woman artist, taking Indian art to a world's level and exposing it to western influences. Inspired by Goya, a well-known European painter, her work appears to represent the western influence on Indian subjects.

She was effective in representing and reflecting on her Indian observations through her imported style. She denied the romantic image of female, but also self-conscious social conservatism and the modern Bengal school of Indian art, in the process. Her paintings depict women's unfulfilled desires, which are both quiet and strong.

The women's activist focal point of different craftsmen doesn't present every bit of relevant information about ladies in India yet it can't be rejected that their work enlightens the human circumstance in a changing society still significantly affected by show and custom. These specialists enter and investigate the generalizations through which female being has been addressed.

It is clear that the medium in which Indian women create art has changed over time and with technological advancements. Despite these advancements, the social problems portrayed in their art have not changed dramatically. Women today face prejudices and hardships in the same way as their foremothers did decades ago, but in a new context. Even the domain of art: despite creating excellent work that has garnered international recognition and pushed them to the top of the world of art, Indian women have been and continue to be overshadowed by men.

Conclusion :-

The fate of a women's activist worry in human expressions just as in different fields. A genuine and submitted workmanship mirrors the predicaments and disappointments of Indian culture. However, such a workmanship appears to be likely additionally a devise new and more sure records of female being in India. The Art is beyond perception. It is both a technique and a work of art. Artists use art to

express their feelings, ideologies, and to justify whatever they want. Women's roles in Indian art had been depicted by iconography, subject, However, in today's world, when Indian art speaks a global, universal, multinational language, Indian artists portray the facts of humanity and demonstrate feel the same way.

References :-

1. Status of women in India, pp.60-62
2. Heinrich Zimmer, "The Art of Indian Asia,"1955, p.86
3. G. Vidya Sagar Reddy, "Women empowerment," 2015, p.45
4. Sandip Sarkar, "The Art born of crises, lalit kala contemporary 29,1980, p. 22-25
5. Germaine Greer, "The female Eunuch,"1971
6. https://www.saffronart.com/artists/k-k-hebbar
7. https://www.culturalindia.net/indian-art/painters/amrita-shergil.html
8. https://www.artsy.net/artist/arpita-singh
9. https://www.saffronart.com/artists/anjolie-menon
10. https://www.vadehraart.com/nalini-malani-bio
11. https://jnaf.org/artist/arpana-caur/
12. https://www.brandeis.edu/now/2008/january/tigerbythetail.html
13. https://dhoomimalgallery.com/artist_info.php?id=MTA4

Mb. No. 9988473474
Email- prabhjot41183@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 117-123
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Mai Mussamat 'The Ladder of Success' of Maharaja Ranjit Singh

-Ruchika
Research Scholar, Department of History, Panjab University, Chandigarh.

Women have played an immense role in shaping the course of history with their active participation in polity from ancient times. The history of Punjab is full of great female personalities who have sacrificed their lives against the tyranny of Mughal rule in medieval times and later on give their contribution in making the powerful Sikh empire in the 18th century. Maharani Sada Kaur, who is also known as "Mai Mussmat", deserves the foremost place among these dignified personalities, with whom initial help, Ranjit Singh succeeded in his early conquests and paved the way for the establishment of the Kingdom of Lahore. In this article, the lifelong contribution of the Rani Sada Kaur in the expansion and consolidation of the kingdom of Lahore and, her relations with Ranjit Singh have been discussed.

The main events of the history of India in the early 18th century were the decline of the Mughal Empire, Invasions of Nadir Shah and Ahmed Shah Abdali, and the rise of new successive states. The Sikhs of Punjab, who had fought for their existence after Banda's execution in 1716, now re-emerged to share the spoils of the dying empire. [R.R. Sethi. (1950). The Lahore Darbar.(Ed.). G.L.Chopra. India, Punjab: Punjab Govt. Record Publication, p.1.] It was after Ahmad Shah's last invasion in 1766-67, the Sikh Sardars settled down their principalities on both sides of the Satluj. [J.D. Cunnigham.(1966). A History of Sikhs. (Ed.). H. L. O Garret. India, Delhi: S. Chand & Co., p. 96.] Besides them, Rajput and Muslim rulers, who already existed in Punjab hill states and lower doabs as vassals of the Mughal Empire respectively, became independent during this period and established their autonomous rule in their respective regions. [Veena Sachdeva.(2005). Mastery of the Province of Lahore. T.R. Sharma. (Ed.). Maharaja Ranjit Singh; Ruler and Warrior. Chandigarh, India: Publication Bureau Panjab University.p. 43.]

In the early 19th century, Ranjit Singh, who was one among Sikh chiefs, emerged as a powerful ruler. He conquered all Sikh, Muslim, and Rajput rulers' territories, united them into a single whole, and established the kingdom of Lahore. The young aspiring Ranjit Singh used triple policy with Sikh Sardars after his succession as chief of Sukerchakia misl. He established matrimonial alliances with strong Kanhiya and Nakai misl and used their resources for his early conquests. He established friendly

relations with powerful Sikh Sardars like Fateh Singh Ahluwalia and Jodh Singh Ramgharia and captured the territories of his neighboring chiefs one by one. [Sita Ram Kohli. Ed. (1952). Fatehnama Guru Khalsa Ji Ka. India, Patiala: Mahima Parkash. p. 22.]

Jai Singh Kanhiya, the founder of Kanhiya misl, was the powerful Sikh chief who had the pargana of Batala, Dera Baba Nanak, Kahnuwan, and a large chunk of territory around Hajipur and Mukerian in Jalandhar doab, under his possession.[Hari Ram Gupta. (1944). History of the Sikhs Vol .II.Trans Sutlej Sikhs 1769-1799. India, Lahore, Minerva Book Shop. p.3. See also,Veena Sachdeva. (1993). Polity and Economy of Punjab during the late Eighteenrth Century. India, Delhi . Manohar Publication. pp.19- 20.] Kanhiya misl had on good terms with Sukerchakia misl. Jai Singh Kanhiya and Charat Singh Sukerchakia (grandfather of Ranjit Singh) aided each other in many military campaigns. [Giani Gian Singh. (2006) Raj Khalsa Part-I Rise of Sikh Misals and Khalsa Kingdom Established by Maharaja Ranjit Singh. USA, Northridge CA.p. 20. See also,Veena Sachdeva.(1993). Polity and Economy of Punjab. p.20.]

Nevertheless, during the chieftainship of Mahan Singh Sukerchakia (father of Ranjit Singh), their relations were estranged due to the issue of Jammu booty. [Kanhiya Lal. (1968). Tarikh –i-Sikhan (Pbi.trans. Jeet Singh Seetal). India, Patiala.Publication Beauru Punjabi University Patiala. p. 90. See also, Khushwant Singh. (1963/1999). A History of the Sikhs, Vol.II. India, New Delhi: Oxford University Press p. 171.] Mahan Singh encouraged Jassa Singh Ramgharia against Jai Singh Kanhiya to recover his territories which were occupied by Kanhiya misl . As result, a battle was fought between Ramgarhria Sardar and Gurbux Singh Kanhiya, the eldest son of Jai Singh Kanhiya, at Batala in 1785. Gurbux Singh died in this battle and Jassa Singh Ramgharia accessed the Batala and his old possession. [Indu Banga. (1978). Agrarian System of the Sikhs . India, Delhi. Manohar Publication p.22. See also, Veena Sachdeva.(1993). Polity and Economy of the Punjab. p. 20]

Rani Sada Kaur, the wife of Gurbux Singh held the reins of Kahniya territories in her hands during this crucial period and started her political journey. She was by all accounts a woman of extraordinary ability and excellent diplomat. [G.L.Chopra.(1928). The Punjab As A Sovereign State. India, Lahore: Uttar Chand Kapu &Sons.p.10] To save her territories from the aggression of opponent Sikh Sardars, Sada Kaur betrothed her daughter Mehtab Kaur with Prince Ranjit Singh and ended the rivalry with Sukerchakia misl. [Sohan lal Suri.(2001).Umdat –ut- Tawarikh Vol.II (trans. V.S. Suri). India, Amritsar. GuruNanak Dev University. p.24. The date of marriage is given 1796 in Fatehnama Guru Khalsaji. Sita Ram Kohli. Ed.(1952).

Fatehnama Guru Khalsa Ji Ka. P.22. The marriage had celebrated at Batala in1795. Sohan lal Suri.(2001).Umdat –ut- Tawarikh Vol.II. p.29. See also, Ganda Singh. (1939). A Short Life Sketch of Ranjit Singh, Maharaja Ranjit Singh First Death Century Memorial. India, Amritsar. Khalsa College. p.17] The marriage brought Ranjit Singh under the influence of his mother-in-law Sada Kaur. Her considerable talent enabled her to play a prominent part in Ranjit Singh's affairs. She became the leading personality among the counselors of Ranjit Singh and the most powerful instrument of his

early triumphs. [Henry T. Princep. (1834). Origin of the Sikh Power in the Punjab and Political Life of Muha-Raj Runeet Singh.

India, Calcutta : Millitary Orphan Press p.49. See also, G.L. Chopra. (1928). The Panjab As A Sovereign State. p. 10.] She more than anyone else directed Ranjit Singh's unbounded energy towards unifying Punjab. [Khushwant Singh. (1963/ 1999) The History of the Sikhs Vol.II. p. 189.] She started to give active support to him in his political affairs and campaigns. Ganda Singh called her" the ladder by which Ranjit Singh climbed to greatness in his early years." [Ganda Singh. (1939). A Short Life Sketch of Ranjit Singh, Maharaja Ranjit Singh First Death Century Memorial.India, Amritsar. Khalsa College . p.17]

Ranjit Singh used the military and financial resources of Kanhiya misl for his early military conquests. Sada Kaur had sent her army as well as personally assisted him in his many campaigns. During the invasions of Zaman Shah, Sada Kaur was the woman who was in favor of the encounter and encouraged Ranjit Singh to fight against him. [Khuswnat Singh. (1963/1999) The History of the Sikhs Vol.II. p.193. f.no.2.] The most important conquest of Lahore was only possible with the help of Rani Sada Kaur. Nakkai Sardars and Rani Sada Kaur assisted Ranjit Singh with their army amounted to 25,000 men. [G.L. Chopra. (1928). The Punjab As A Sovereign State. p.10.]. In the battle of Basin, Rani Sada Kaur sent large enforcement to Ranjit Singh for help against allied forces. [N.K. Sinha. (1933/1945). Ranjit Singh.(2nd ed.). India, Calcutta. A Mukherjee & Co.p.13.] She also assisted in his later military campaigns. The conquests of Rajput principalities [Sohan Lal Suri. .(2001). Umdat –ut- Tawarikh Vol.II.p. 201], Attock [Amaranth.(1983/1995). Zafarnama –I- Ranjit Singh .(pbi. Trans. Kirpal Singh). India, Patiala: Publication, Beauru Punjabi University. p.122], and Hazara regions were important among them [Kanhiya Lal. (1968). Tarikh –i-Sikhan.p.165.].

She acted as Ranjit Singh's political mentor and her sagacious advice and role as mediator in making peace with Sikh Sardars had secured the success of Ranjit Singh on many occasions. For example, after the occupation of Lahore, She managed the political and financial affairs of Lahore. She also advised Ranjit Singh to send some wise men to Chet Singh Bhangi for negotiation of peace. Consequently, Chet Singh accepted terms and Ranjit Singh occupied Lahore without any bloodshed. Jodh and Sahib Singh of Khewayati accepted the supremacy of Ranjit Singh by negotiation of Rani Sada Kaur. She also played important role in negotiations with Mai Sukhan, wife of Gulab Singh Bhangi of Amritsar in 1805. At one place, Sohan Lal Suri wrote that Karam Singh Rangarnangalia demanded the payment of troops. At that time, Rani Sada Kaur gave her a set of gold bangles for distribution of salaries that approved the view of her financial support to Ranjit Singh[Ibid.,p. 37,41.]

The reason behind her political and financial assistance to Ranjit Singh was to get help from him in return for maintaining her undisputed status and protecting her estates from rival Sikh chiefs. She got the help of Ranjit Singh against Ramgharia Sardar to capture Miani. However, she failed to occupy the fort because of a flood in the Beas River. In the next year, she defeated the Ramgharia Sardar and recovered the parganas of Batala, Kalanaur, and Qadhian. Giani Gian Singh.(2006) Raj

Khalsa Part-I Rise of Sikh Misals and Khalsa Kingdom Established by Maharaja Ranjit Singh. p.16. See also, Sohan Lal Suri. Umdat –ut- Tawarikh Vol.II.p.33.

Ranjit Singh assisted Rani Sada Kaur against Budh Singh Nakkai. He plundered Nakka and laid siege to Subhanpur. He also made peace between them. [S.L.Suri. (2001). Umdat-ut- Tawarikh Vol. II. p.46-47.] In 1803, the Maharaja defended the territories of his mother-in-law against the aggression of the Raja Sansar Chand of Kangra and Raja Nurpur. Sansar Chand fled into the hills. The lost territories were restored to her with the addition of Naushera from Raja Nurpur. [Ibid., p. 44. See also, Ganda Singh. (1939). A Short life Sketch of Ranjit Singh. p.33. Khuswant Singh. The History of the Sikhs. p.204.] Maharaja captured the fort of Wadni and handover it to Rani Sada Kaur along with the area of Potaki in return for 22 thousand as nazarana. [Kanhiya Lal. (1968). Tarikh –i-Sikhan. p.45.]

Over time, relations between the Rani Sada Kaur and Maharaja Ranjit Singh were estranged. The demand of Sada Kaur for the same treatment with her grandsons Sher Singh and Tara Singh (sons of Mehtab Kaur, daughter of Sada Kaur) as with other princes and issue of delay in allotment of jagirs to them was the main cause of this ill will. [H.T. Princep. (1834). The Origin of the Power of Sikhs. p. 90. see also, Hari Ram Gupta. History of the Sikhs.Vol. III. p.50] Many European scholars like Wade, Murray, Honigberger, who resided in Lahore Darbar during the reign of Ranjit Singh mentioned that the cause of this kind of behavior of Ranjit Singh with Sher Singh and Tara Singh was that he had never fully acknowledged them as his offspring. Ranjit Singh had suspected Mehtab-Kaur's fidelity for some time and she had, in consequence, been living with her mother Sada Kaur. [The report ran, that the boys were procured by Sada Kaur by a carapenter and weaver,and were produced as born to her daughter, the public having for some time previously been prepared for the birth, by reports circulated of Mehtab being with child. H.T. Princep. (1834) The Origin of the Power of Sikhs. p. 63.]

Sohan Lal Suri, the chronicler of Ranjit Singh, Diwan Amar Nath, and Kanhiya Lal did not describe this story in their works. Sohan Lal Suri, in his work, has written about the distribution of alms and charities on the birth of Sher Singh by Ranjit Singh. [Sohan Lal Suri. Umdat- ut- tawarikh Vol.II. p.53. See also, Kanhiya Lal.(1968). Tarikh –i-Sikhan. p.166.] Zafarnama also gives information of a huge amount that Ranjit Singh had sent to Rani Sada Kaur for the marriage of Kunwar Sher Singh. [Amaranth. (1983/1995). Zafarnama–I- Ranjit Singh .(pbi. Trans. Kirpal Singh). India, Patiala: Publication Beauru Punjabi University. pp.70 71] Sita Ram Kohli and Hari Ram Gupta remain silent on this issue. [Hari Ram Gupta (1991). History of The Sikhs Vol.V. India, Delhi. Munshiram Manoharlal. pp.50.51] Khushwant Singh has considered it mere propaganda of Kharak Singh because of his insecurity about Sher Singh's military achievements. [Khuswant Singh. (1999). The History of the Sikhs. p.194.]

Ranjit Singh also started to capture her territories, which arouse hatred and suspension in her mind. [Sohan Lal Suri.(2001). Umdat- ut- Tawarikh Vol.II.p.272. Sardars Desa Singh Majithia, who had gone with his troops along with Misri Khan Rohilla to collect nazarana from the Rajas of Chamba, Mandi, and Suket, took possession of a certain fort belonging to Mst. Sada Kaur near Gharota, and

establishing his Thana there.] According to Sohan Lal Suri, the cause of hostility between Maharaja and Sada Kaur was his treatment of the affairs of Ramgharias as trivial. After the victory of Hazara, Ranjit Singh ordered to give jagirs to Sher Singh and asked Sada Kaur to do the same. This created a misunderstanding between Ranjit Singh and Sada Kaur. Sher Singh also started a conflict with Rani Sada Kaur on the matter of jagirs.

He also sent complaints of rani Sada Kaur's misconduct and her plan to go in protection of Britisher. Ranjit Singh took advantage of this situation. He sent his forces under the leadership of Misr Diwan Chand and the Attariwala, took possession of her entire area, and captured his states. [Sohan Lal Suri (2001) Umdat- ut- Tawarikh Vol.II pp.347-48] However, during this period she wrote a letter to Britisher and gave them the area of adni. Rani Sada Kaur was held in the fort of Lahore for the rest of her life and died in 1828. [Ibid., p.348 - 50.Amarnath. (1995). Zafarnama- I- Ranjit Singh pp.135-136. According to Hari Ram Gupta, Rani Sada Kaur imprisoned in 1821. Desa Singh majithia at head of a strong contingent was dispatched to seize her estates and property. She died in 1828 after her death title of kanwar to sgher Singh but Tara Singh remained neglected.]

Rani Sada Kaur occupies a high position woman of Punjab whose existence is often commemorated in the Sikh history and especially in the time of Ranjit Singh. According to Ross "Sada Kaur was a women of bold and masculine turn of mind" who played an important part making Ranjit Singh the most powerful of all the Sardars of Punjab. However, once he had captured Lahore she had relied more on his help than he on hers had which became cause of her ruin. [Khushwant Singh.(1999). History of the Sikhs. p. 256. f.no.11.

Reference :_

1. R.R. Sethi. (1950). The Lahore Darbar.(Ed.). G.L.Chopra. India, Punjab: Punjab Govt. Record Publication, p.1.
2. J.D. Cunnigham.(1966). A History of Sikhs. (Ed.). H. L. O Garret. India, Delhi: S. Chand & Co., p. 96.
3. Veena Sachdeva.(2005). Mastery of the Province of Lahore. T.R. Sharma. (Ed.). Maharaja
4. Ranjit Singh; Ruler and Warrior. Chandigarh, India: Publication Bureau Panjab University.p. 43.
5. Sita Ram Kohli. Ed. (1952). Fatehnama Guru Khalsa Ji Ka. India, Patiala: Mahima Parkash. p.22.
6. Hari Ram Gupta. (1944). History of the Sikhs Vol .II.Trans Sutlej Sikhs 1769-1799. India,
7. Lahore, Minerva Book Shop .p.3. See also ,Veena Sachdeva.(1993). Polity and Economy of Punjab during the late Eighteenrth Century. India, Delhi . Manohar Publication. pp.19- 20.
8. Giani Gian Singh.(2006) Raj Khalsa Part-I Rise of Sikh Misals and Khalsa Kingdom Established by Maharaja Ranjit Singh. USA, Northridge CA.p. 20. See also,Veena Sachdeva.(1993). Polity and Economy of Punjab. p.20.

9. Kanhiya Lal. (1968). Tarikh –i-Sikhan (Pbi.trans. Jeet Singh Seetal). India, Patiala.Publication Beauru Punjabi University Patiala. p. 90. See also, Khushwant Singh. (1963/1999). A History of the Sikhs, Vol.II. India, New Delhi: Oxford University Press p. 171.
10. Indu Banga. (1978). Agrarian System of the Sikhs . India, Delhi. Manohar Publication p.22.
11. See also, Veena Sachdeva.(1993). Polity and Economy of the Punjab. p. 20
12. G.L.Chopra.(1928). The Punjab As A Sovereign State. India, Lahore: Uttar Chand Kapu & Sons.p.10
13. Sohan lal Suri.(2001).Umdat –ut- Tawarikh Vol.II (trans. V.S. Suri). India, Amritsar. GuruNanak Dev University. p.24. The date of marriage is given 1796 in Fatehnama Guru Khalsaji. Sita Ram Kohli. Ed.(1952).
14. Fatehnama Guru Khalsa Ji Ka. P.22.
15. Sohan lal Suri.(2001).Umdat –ut- Tawarikh Vol.II. p.29. See also, Ganda Singh. (1939). A Short Life Sketch of Ranjit Singh, Maharaja Ranjit Singh First Death Century Memorial. India, Amritsar. Khalsa College . p.17
16. Henry T. Princep. (1834). Origin of the Sikh Power in the Punjab and Political Life of Muha-Raj Runeet Singh. India, Calcutta:Millitary Orphan Press p.49. See also, G.L. Chopra. (1928). The Panjab As A Sovereign State. p. 10.
17. Khushwant Singh. (1963/ 1999) The History of the Sikhs Vol.II. p. 189.
18. Ganda Singh. (1939). A Short Life Sketch of Ranjit Singh, Maharaja Ranjit Singh First Death Century Memorial.India, Amritsar. Khalsa College . p.17
19. Khuswnat Singh. (1963/1999) The History of the Sikhs Vol.II. p.193. f.no.2.
20. G.L. Chopra. (1928). The Punjab As A Sovereign State. p.10.
21. N.K. Sinha. (1933/1945). Ranjit Singh.(2nd ed.). India, Calcutta. A Mukherjee &Co.p.13.
22. Sohan Lal Suri. .(2001). Umdat –ut- Tawarikh Vol.II.p. 201
23. Amaranth.(1983/1995).Zafarnama –I- Ranjit Singh .(pbi. Trans. Kirpal Singh).India , Patiala: Publication Beauru Punjabi University. p.122
24. Kanhiya Lal. (1968). Tarikh –i-Sikhan.p.165.
25. Ibid.,p. 37,41.
26. Giani Gian Singh.(2006) Raj Khalsa Part-I Rise of Sikh Misals and Khalsa Kingdom Established by Maharaja Ranjit Singh. p.16. See also, Sohan Lal Suri. Umdat –ut- Tawarikh Vol.II.p.33.
27. S.L.Suri. (2001). Umdat-ut- Tawarikh Vol. II. p.46-47.
28. Ibid., p. 44. See also, Ganda Singh. (1939). A Short life Sketch of Ranjit Singh. p.33. Khuswant Singh. The History of the Sikhs. p.204.
29. Kanhiya Lal.(1968). Tarikh –i-Sikhan. p.45.
30. H.T. Princep. (1834). The Origin of the Power of Sikhs. p. 90. see also, Hari Ram Gupta. History of the Sikhs.Vol.III. p.50
31. The report ran, that the boys were procured by Sada Kaur by a carapenter and weaver,and were

produced as born to her daughter, the public having for some time previously been prepared for the birth, by reports circulated of Mehtab being with child. H.T. Princep. (1834) The Origin of the Power of Sikhs. p. 63.

32. Sohan Lal Suri. Umdat- ut- tawarikh Vol.II. p.53. See also, Kanhiya Lal.(1968). Tarikh –i-Sikhan. p.166.
33. Amaranth.(1983/1995).Zafarnama –I- Ranjit Singh .(pbi. Trans. Kirpal Singh).India , Patiala: Publication Beauru Punjabi University. pp.70 71
34. Hari Ram Gupta (1991). History of The Sikhs Vol.V. India, Delhi. Munshiram Manoharlal. pp.50.51
35. Khuswant Singh.(1999).The History of the Sikhs. p.194.
36. Sohan Lal Suri.(2001). Umdat- ut- Tawarikh Vol.II.p.272. Sardars Desa Singh Majithia , who had gone with his troops along with Misri Khan Rohilla to collect nazarana from the Rajas of Chamba, Mandi, and Suket, took possession of a certain fort belonging to Mst. Sada Kaur near Gharota, and establishing his Thana there.
37. Sohan Lal Suri(2001) Umdat- ut- Tawarikh Vol.II pp.347-48
38. Ibid., p.348 - 50.Amarnath .(1995). Zafarnama- I- Ranjit Singh pp.135-136. According to Hari Ram Gupta, Rani Sada Kaur imprisoned in 1821. Desa Singh majithia at head of a strong contingent was dispatched to seize her estates and property . she died in 1828 after her death title of kanwar to sgher Singh but Tara Singh remained neglected.
39. Khushwant Singh. (1999). History of the Sikhs. p. 256. f.no.11.

Mob. no. 7696814637
Email.id. Ruchika.rajput112@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 124-135
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Position of Women during Earliest Socio-Religious Reform Movements in Medievl Punjab

-Sarita Rana

Head, Assistant Professor in History,
P.G. Department, Dasmesh Girls College, Mukerian.(Hoshiarpur).

Abstract :-

While scrolling the pages of history, we are able to judge that the condition of women remained unchanged. No doubt we have found a scholars ladies like Apala, Ghosa, Vishavara, Lopamundra, Matri, Gargi and Vakanavi in Vedic as well as later Vedic period. But in real sense in Indian society she has been victims of humiliation, torture and exploitation for as long as we have written records of social organization and family life, In 'smritis' ['remembered' class of religious Literature consisting of Law books, epics and Puranas.] it was written that women could not be accepted as witness in Judicial cases [auja Singh, History of the Punjab, Vol-III, Punjabi University Patiala, 2002, p-263.].

In fact women became the worst victims of instability and their position was at its lowest ebb. They were in chains made up of Infanticide, child marriage, sati, illiteracy and purdah system etc. We have found all the social oppression in Medieval age also. In fact Alberuni traces a woman picture and says, 'If a wife loses her husband by death she cannot marry another man. She was either forced to burn herself alive with the corps of her husband or was forced to cut her hair, wear dirty clothes and do the meanest work in household.' [Loc.Cit.]

If we can trace the picture of women in Punjab then we find all the Gurus [Means 'Preceptor' and for the Hindus has normally indicated a human teacher. 'Guru' Came to be identified with the inner 'voice' of Akal Purakh.] efficiently played a crucial role against these oppressions. In Punjab firstly Gurus were raised their voice against the social evils and upliftment of the women. Especially Guru Nanak [Guru Nanak (1469-1539) : The first Guru of the Sikhs. Sikhs date the foundation of the Panth from his life of teaching and example.] and Guru Amar Das [Amar Dass (1479-1574) :Third Guru, born in Basarke, the son of Tej Bhan Bhalla.], both condemned all the evils reality to women. Guru Nanak was saying in the favour of women:

Bhand Jamiea Bhand Nimea Bhand Mangan Vivah
Bhand Hovea Dost Bhand Chale Rahe
Bhand mua Bhand Bhalian Bhand hove Bandan

So keon manda akhie Jit Jame Rajan [Born of women, brought up by women engaged and

married to women, why should they be belittled who give birth to great men, Sri Guru Granth Sahib, Mahalla, Raag Asa, p-473.].

While condemning Sati Guru Amar Das said, " A sati is not one who burns herself on the funeral pyre of her husband. A sati is one, O Nanak, who dies with the sheer shock of separation. [Hari Ram Gupta, History and Sikhs (The Sikh Gurus 1469-1708) Vol-I, Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi, 1984, p-91.] Guru Nanak was deeply conscious of victimization of women that was prevalent in the society, that is why he was against Purdah and Sati [The burning of a widow on her deceased husband's funeral pyre. The practice was denounced by the Gurus.] system. He brings about the importance of woman in connection with idea of purity. [J.S.Grewal, Four Centuries of Sikh Tradition, Oxford Press, New Delhi, 2011, p-10.] After Guru Nanak, his successors preached his teaching and carried his message to the masses. The institution of Langar [The free kitchen and dining hall or other provision for serving meals, which must be attached to all gurdwaras.] proved a powerful weapon to break the crust of caste, as all the Sikhs, rich or poor, Brahmans or Sudras dined together without any distinction which was organized by Guru Angad Dev. [G.C. Narang, Glorious History of Sikhism, New book societies of India, New Delhi, 1972, p. 30.] In this system, he was presided over by his wife Khivi [Bibi Khivi (1582) : A Khatri of Khadur, wife of Guru Angad.], who 'supplied delicious dishes like rice boiled in milk and ghee' (Var Satta, Balwand, iii). [Teja Singh and Ganda Singh, A short history of the Sikhs, Punjabi University Patiala, 1983, p. 17.] As the number of disciples increased, the expenses of the Langar went up.

The old religions are the soil from which the modern movements spring; while it will be found that the seed has, in the main, been sown by missions. It seems clear that the effective interpenetration of India by the West began about 1800. At this time India was in a pitiable plight. [J.N. Farquhar, "Modern Religious Movements in India", Munshiram Manoharlal,1998, p-1-2.] If we can find that what was the cause of the great awakening which began about 1800 then we find two or three major forces behind it. First one British Government in India, Protestant Missions [Catholic Missions have been continuously of service, especially in education, by they have had no perceptible share in creating the Awakening.] they were shaped by the Serampore men and Duff, and the third force is the work of the great orient lists [J.N. Farquhar, "Modern Religious Movements in India", Munshiram Manoharlal,1998, p-5.]. In India first fresh religious movements appeared in 1828; the intellectual awakening of India began to manifest itself distinctly about the same time; and the antecedents of both go back to some where about the beginning of the century. [ibid. p-29.]

Socio-religious reform movements swept the Indian sub- continent during the late nineteenth and early twentieth century. Of these socio- religious movements, such as the Ahmadiyas, also known as the Qadiani or Mirzai, and the chat Rami are the only indigenous ones, having been born in the Punjab. By the 1872 the Singh Sabha Movement originated in Amritsar. The Brahma Samaj came here from Bengal. The founder of the Arya Samaj, Swami Dayananda, was born in Gujrat and had established his Samaj first in Bombay. All the movements and their leaders sought to bring about changes to make

women aware about their rights as human being so that they could condemn traditional social and religious practices. [Kenneth W Jones, The New Cambridge History of India: vol-1 Socio-Religious Reform Movements in British India ,Cambridge University Press, Cambridge, 1989, pp-1-2] These movements and ideologies and programmers were based on religious scriptures. The reformers had to fight at two levels firstly they faced a struggle against the hegemonic influence of British colonial values and secondary against the traditional social order which permitted 'evil' social practices and customs. [Kenneth W Jones, Arya Dharm: Hindu Consciousness in the 19th century Punjab, Manohar, 1989, p-xii.] With this effort they want to reshape ideas and institutions and to equip the society to meet challenges of the nineteenth and the twentieth century. [Garaldine Forbes, The New Cambridge History of India: Women in Modern India, Cambridge University Press, Cambridge, 1998, pp-14-18]

If we further move modern Era, then Punjab was one of the most important and eventful regions in British India and was the homeland of a number of socio- religious movements. These movements in Punjab were founded with a variety of aims like purifying a particular religion or spreading education and propagating new ideas. These socio-religious movements were talk about equality and eliminating the evil social practices like dowry, child marriage, polygamy, women's property, sati, widow re-marriage etc. [Rudolf Heberle, "Social Movements: Types and Functions of Social Movements" in David L.Sills (ed) International Encyclopedia of Social Science, Macmillian Company, New York,1968, p-438] After the Guru period, the Sikhs had to begin their work the most in auspicious circumstances. The British officials therefore looked with suspicion upon every effort on the part of Sikhs at organizing their community and creating an awakening even for religious and social reform. In this paper I just highlighted major socio-religious movements during 1850-1950 A.D. in Punjab. In this context in Punjab the prominent one are Nirankari (1851), Namdhari (1857), Brahmo Samaj (1828), Dev Samaj (1887), Ahmadiyah(end of the 19th century), Chet Rami (1868), Arya Samaj (1875) and Singh Sabha (1873) etc. This attempt is only highlighted the earliest movement (Nirankari (1851), Namdhari (1857), in medieval Punjab and their contribution of uplifting the position of women.

The first impulse for reform came from the Nirankari movement [G.S.Dhillon, Character and Impact of the Singh Sabha Movement on The History Of Punjab, Ph.D. Thesis, Punjabi University Patiala,1973, pp-32-37.]. The founder of Nirankari movement Baba Dayal, was born at Peshawar in 1783 and may rightly be regarded as the pioneer of socio- religious reform movement among the Sikhs. His father Ram Sahai Malhotra (Khatri) migrated from Kabul due to uncertain political situation. Baba Dayal's mother Ladiki belonged to an illustrious Sikh family. His mother used to take him to Gurudwara Bhai Joga Singh at Peshawar every morning. Punjabi was taught to him by his mother. [Dr. Man Singh Nirankari, The Nirankari, edited by Ganda Singh, The Singh Sabha and other Socio-Religious Movements in the Punjab (1850-1925), Publication Bureau, Punjabi University, Patiala, 1997, p. 2.]

Baba Dayal was started a Nirankari Mission against the social evils in the society. He made the first organized effort to reform Sikh way of life and to revive the socio-religious traditions of the Sikh community. The term 'Nirankari' signifies the formless. His objective was to direct the Sikhs of

the teaching of Guru Nanak and later Sikh Gurus. He taught that women should not be treated as unclean at child birth; disciples should not use astrology or horoscopes in setting the time for ceremonies; the dowry should not be displayed at marriages. [Kenneth W. Jones, The New Cambridge History of India, Socio-Religious Reform Movements in British India, Cambridge University Press, New York, 1994, p. 88.] They also prohibited the use of wine, tobacco and flesh were known for austere ling. Social agenda of the movement was aimed at the emancipation of women, widow remarriage, female infanticide and denunciation of polygamy. Nirankaris led a crusade for emancipation of women and opposed purdah. After his death (1855), Baba Darbara Singh fervently continued the Nirankari Mission and entitled as Nirankari Chalen De Chitha written in Gurumukhi in the form of Hukumnama [Letter of command. For the time of Guru Hargobind such documents were sent to sangats or Individuals, giving instrucation or requesting assistance.]. This Hukumnama is a documentary evidence of the decline in the attitude of the contemporary Sikhs in their adherence and observance to the early Sikhs beliefs and practices (1856). He stress on Anand marriage [The Sikh marriage ceremony. The Nirankari sect claims that it devised or recovered Anand Karaj earlier in the 19th century and that its example was copied by Singh Sabha for the wider Panth. Eventually the Anand Marriage Act which laid down a specific order for Sikhs was passed in 1909.] and issued a Hukamnama. In 1861 first Anand marriage in Amritsar was thus performed of one Bhai Boota Singh with Bibi Karan Devi belonging to village Barnali.

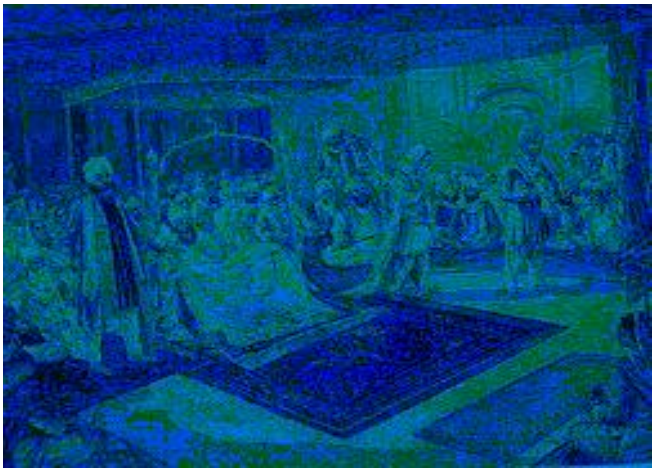

The Nirankari Sikh movement parallels the Brahmo Samaj of Raja Ram Mohan Roy, infighting orthodoxy widow re-marriage particularly attracted its attention. [Kenneth W. Jones, The New Cambridge History of India , p. 7.] Sati is prohibited smoking is forbidden for the Nirankaris. Nirankari are very much opposed to the show of dowry as they maintain that is intended for the use of the daughter and its exhibition to others is improper and useless. They simply read Gurbani [Strictly speaking gurbani refers to the Gurus' works recorded in the Adi Granth. It can also apply, however to the bhagat bani.] and sing Shabad [Word Shabad for Nanak revelation which communicates the message of the nam (the divine name). the word is uttered by mystical Guru to the believer who there by perceives the nam around and within him/her.] (Hymns) on the occasion of births, marriages and deaths. In Punjab Nirankaris were the first religious movement who raised their voice against the social evils regarding women. [The New Cambridge History of India, p. 10.]

Nirankari movement was followed by Namdhari movement or Kuka movement. This movement was started by Baba Ram Singh of Bhaini (1815-1885) in Ludhiana district. He also made an effort to revive the Sikh tradition and claimed that he was instrument in the hands khalsa tradition and claimed

that he was instrument in the hands of Guru Gobind Singh in forming Sant Khalsa. They rid the country of many false practices which had to crept in Sikhism. Namdhari Guru favoured widow remarriage and condemned the evils of female infanticide and child marriage. [Kuldip Singh, Baba Ram Singh and Namdhari Movements, M.Phil Dissertation, Guru Nanak Dev University, Amritsar. P-13.] There are two broad perspectives in which Namdhari has been perceived and analyzed. The popular perspective is that the Namdhari was essentially a socio-religious reform movement and its confrontation with the British Raj was accidental. The second perspective stresses that the ultimate political objective of this movement was to liberate the Punjabis from the British rule. The protagonist of the first perspective enlist a variety of social evils to whom Namdhari Guru Ram Singh addressed and aimed at reviving that social order which was to be free from socio- religious exploitation and discrimination. [Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-36.]

The Namdhari Guru Ram Singh took important steps for the development in his socio- religious career. Infact Giani Gian Singh called Ram Singh the re-incarnation of Guru Gobind Singh. [Giani Gian Singh, Panth Prakash, Language Development, Panjabi University Patiala, 1987, pp-1266-69.] The socio-cultural and demographic context of the Malwa region was radically different from the geo-political context of Hazro in which his spiritual master propagated his mission.[Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-39.] In 1863 was a momentous year in Namdhari Guru's life. It was in this year that he not only exposed social evils doers but also came out with the solution to the social problems confronted by the common Sikhs. The Sikhs, like their counterparts Hindus and Muslims, were caught in a web of social evils. The most inhuman but widely practiced evils were female infanticide, child marriage, dowry system, and brahmanical orthodoxy exploiting the common people [Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p- 57.].

In all these evils woman was the major victim of these evils, the Namdhari Guru resolved to liberate her from the vicious circle of these evils. His resolve took a practical shape when he administered amrit to women on the same pattern as it was administered to the men. The Namdhari Guru broke this male dominated tradition and admitted women to the Sant Khalsa. In 12 April 1857 At Bhaini Sahib a historical declaration was passed by Guru Ram Singh which had seven motives related to women like: Don't kill a girl child, Don,t sell a girl child, accept widow remarriages, impart education to girl child, respect a women, condemned child marriages etc. Baba Ram Singh passed 64 Hukamnamas and 10 Hukamnamas only deals with a women which represented the consciousness of Namdharis regarding the upliftment of women [Dr.Sarbjinder Singh, VishavDharam Bani Granth, Sampardhiya Te Chintak,vol-iii, Punjabi University, Patiala, 2007 p-331. See also Hukamnamas 1, p-100-103, Hukamnamas 4,p-133- 34, Hukanamas 24, p .276-77.].Some of the Hukumnamas are :

1. So far as the culture of India concern, it was always taken far granted the every girl, may it be or blood-related or otherwise is our own daughter. No one is suppose to accept the money of our kith and kin (daughter). It is mandatory alliance of a daughter below 15 or 16. (Hukamnamas: 1, p-100-103.)

2. Female feticide is a crime and who violates it should be socially boycotted. (Hukamnama : 4, p-133-34.)
3. It is again mendatory a girl of 18 and should get married with a boy of 20. (Hukamnama: 23, p-276-77.)

According to Namdhari accounts, it was in the village Siahar that the women of Namdhari Sikhs were administered amrit in a diwan which was organized in the haveli of Baba Bela Singh on 1 June1863. It is said that they were around twenty five women who were administered amrit. Like the Namdhari male Sikhs, these women also kept five Kukas and wore white dresses. [Ibid,p-88]

The name of some women are like, 1.Mata Sada Kaur, Satguru Ram Singh's mother; 2. Bibi Jassan Satguru Singh's wife; 3. Bibi Ram Kaur, wife of Mistari Hari Singh and Satguru Ram Singh's Mami(Aunt); 4.Bibi Khem Kaur, wife of Sant Rann Singh Lambardar of village Handiya; 6.Bibi Karam Kaur,daughter of Dhanna Singh, village Gujjarwal,Ludhiana; 7. Bibi Sahib Kaur, wife of Hukam Singh, Lohgarh(Ludhiana); 8.Bibi Khem Kaur, wife of Narian Singh, village Dittupur; 9. Bibi Man Kaur, wife of Uttam Singh, Siahar Pato; 10. Bibi Daya Kaur, Satguru Ram Singh's daughter ;11.Bibi Bholi, wifeof Bhani Khazan Singh(Ludhiana); 12.Bibi Uttam Kaur, Chak Des Raj(Jalandhar); 13. Mai Bhago,Ludhiana; 14.Mai Tabo, Ludhiana; 15. Bibi Bachitar Kaur, wife of Partap Singh,village Khamano(Ludhiana); 16.Bibi Dhan Kaur ,wife of Granthi Sant Partap Singh, village Khamano. [Tabulated by Pritam Singh Kavi in his work, Istarian Da Pehla Muktidata,cited in Tavarikh Sant Khalsa,pp-554-555.]

Sikh women being administered *Amrit* at village Siahar, district Ludhiana (1 June 1863).

A next step in this way was an introduction of Anand reeti. In this the recitation of Asa-di -var, and Adi Granth [the Adi Granth which is now recognized as authentic and used for worship in gurdwaras is anenormous Volume consisting of nearly 6000 hymns. Its contributors can be divided in to four categories : A) Sikh Gurus : These include the first five guru and the ninth guru, Tegh Bahadur. The largest number (2218) are from the pen of Guru Arjun, followed by Nanak (974), Amar Das (907), Ram Das (679), Tegh Bahadhur (115),and Angad Dev (62). B) Hindu Bhaktas and Muslim Sufis, C) Bhatts or Bards, D) other contributors like Mardana, Sunder,Satta and Balwand.] was placed at some distance. Vedi was constructed and havan was performed. Five Singhs recited gurbani from the pothis: two Singhs were deployed for performing ahuti, amrit was prepared and administered to the boy and girl. It was a

historic day when the ancient vedic mode of marriage was discarded and some marriage were performed according to the Anand-reeti at the village Khotte in June 1863. [Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-57.] No dowry, not even a feast, was allowed on this occasion. According to Namdhari literature, a marriage of six couples was performed. No caste barrier is there even both were belonged to different castes. For examples, the daughter of a carpenter was married in the family of Arora caste.

We have also find some examples like; 1. Bibi Bishan Kaur, daughter of Bhai Joga Singh, village Dhoorkot, district Ferozepur, was married to Bir Singh, son of Bhai Fateh Singh of village, Muthadda, Jalandhar. 2. The daughter of Suba Samund Singh, of village Khotte,was married to a boy belonging to village Thari, district Ferozepur. 3. Prem Kaur, daughter of Bhai Budh Singh, was married in village Dhulete(Jalandhar). 4.Des Kaur, daughter of Sant Fateh Singh, was married in village Daudhar(Ferozepur). 6. Bhai Sundar Singh of village Uboke(Amritsar).

This marriage without any pomp and show, particularly without dowry, was a new thing for the local people. Because these reforms Namdhari Guru and his followers had to face the opposition of the Brahmins, artisans and match-makers who lost the source of their income. They also threatened to the Guru and registered a false report at the police station, Bagha Purana. [M.M.Alluwalia, Kukas: The Freedom Fighters of Punjab, Allied Publishers, New Delhi, 1965,p-50.] The relevance of all this of reform in the mode of marriage can only be appreciated in the context of several rituals, customs and practices which forced women to lead a miserable life in the mid of 19th century in Punjab. The practices of selling and exchanging women had become an accepted ethos of Punjabi rural society. Both these practices showed a deep-rooted socio-economic malady in which the people were caught up. The price of a bride varied from Rs 50 to Rs 500-600 in the late 19th century. This price index multiplied to Rs 2000 to Rs 4000 in the early 20th century. [Cited by Doris R.Jakobsh, Relocating Gender in Sikh History, Oxford,2003,p-11.]

The position of women in society was so pathetic. Sometimes girls sold for marriages were resold by in laws for pecuniary considerations such practices gave rise to the immorality. Consequently both parents and girls suffered humiliations which wrecked their social life. [Jaswinder Singh, Sri Satguru Ram Singh ji De Hukamname, Namdhari Darbar, Bhaini Sahib, Ludhiana,1998,pp- 296-97.] The Namdhari Guru exhorted his followers to boycott those people who indulged in these practices and also convey the message that such people are not allowed to participate any type of congregation. [Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-55.] For uprooting these practices the Namdhari Guru came up with the following solution: Girls should be taught skills of reading and writing; they should be well versed in gurbani which would make them spiritually stronger. Guru also knew that advanced age could reduce the chances of marriages. The longer was the stay of an over-aged daughter in the parents' house the bigger the source of embarrassment she could become for them. [Rahitnama cited by Tara Singh Anjan,pp-65-66.] In the Namdhari Movements Sadha Kaur (mother of Baba Ram Singh) and Mai Jassa (wife of Ram Singh)

contributed fully. They served the panth with soul body in Langar and mission. Infect His aunt Mai Ram Kaur who lived at Ludhiana gave her properly to continue struggle. There were so many women like Bidi Nanda Ji, Rajmata Sahib, Mata Jeewan Kaur, Mata Fateh Kaur etc helped Ram Singh to spread the movements. [Surinder Kaur Kharal, "Swtantarta Sangram Vich Namdhari Desh Bhagat Narian", Satyug Basant Ank, Sri Bhai Sahib,1994, P-57]

To preach the religious and social ideas Ram Singh established 22 subas at village Various Distt. Amritsar which was known as Suba Humka or Mai Mahatmaji. This (lady) Mai preached Sikh religious in Rajas and Maharaja's houses and influenced the other ladies. [Bibi Simarjit Kaur, "Namdhari Samaj Ate. Isterian", Basant Ank,1995, P-99] With all this we can see that the role of women in socio-cultural and religious movements was significance. Rising cost of marriage due to shortage of girls and fear of fragmentation of landholding were some of the factors which as reported in District Gazetteers, led to a practice among Jat and Rajput families to keep one or two men single. It also led to an unethical practice of sharing a wife by two or three brothers.

Such unethical practices were bound to continue as women were required to rear sons and perform domestic chores and work in agriculture fields.[M.L.Darling, The Punjab Peasant and Debt, South Asian Books, Delhi,1978, pp-48-49.] Overall, the birth of girl was considered an ill-omen. This practice was also prevalent even among Sikhs. They were neither groomed or nor properly educated the girl child, if she survived. Namdhari Guru exhorted his followers to stop committing infanticide and selling daughters in the marriage. For him these practices were bigger crimes and sins than the killing of cows.

Namdhari Guru also paid attention to widows who have the most pitiable condition as she was neither accepted by her parents nor in laws. Her very presence was considered an ill-omen. Although the custom of Kareva or Chadar dalna gave some of them an opportunity to the survive in the society. Either she refused than both family communities did not accept her. [Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-57.] For example in the agrarian society, the brother of deceased husband would marry a widow to keep the land holding of the family intact. If the widow had sons from the previous husband, as per custom, she could claim a share in the landed property of the family. However, the widows were treated with contempt and were not given due regard on social occasion. But Namdhari Guru condemned this system openly and declared that if a widow of a Namdhari wanted to marry she could remarry a Namdhari. Widow remarriage was encouraged and by their efforts, in 1909, Anand marriage act was also passed.

Guru was also extremely worried about the menace of prostitution and homosexuality in which the custodians of the khalsa were trapped. The menace of moral depravity assumed dangerous proportions under the British Rule because some of the European civil and military personal were bachelors and those who were married, did not bring their wives and children from England to the places where they were posted. [J.Doris.R.Jakobsh, p-10] The servants, maid servants and prostitutes satisfied the sexual desires of these personal. According to the early 19th century documents, Ludhiana

had a reputation of providing women to all the British requirements stationed there. In a population of not more than 20,000 there were 3,000 prostitutes- that is half the female population was engaged in this occupation. Many of these girls were stolen and brought from surrounding hill country. Girls from district Ludhiana were bartered as well.

Namdhari Guru censured the indulgence of one of his followers. He shacked the society and try to improved the position of women. In wake of social and financial problems of the people, Namdhari Guru Ram Singh reduced the the expenditure on a marriage which was Rs.1.25 for tying the knot of the scarf of the bride and the bridegroom and Rs.2.50 for karah Prasad. According to Namdhari Guru marriage did not merely in terms of sexual gratification but as an institution of procreation for the continuity of social order.

Sikh reformers very much contributed for the upliftment of women. The Nirankari Sikh movement which condemned idol worship, caste system and all Brahmanical rituals. [Shushwant Singh, A History of The Sikhs, Oxford,1963, p-123.] The Nirankari leaders are to Sikhism what Martin Luther was to Christianity, Swami Dayanand it Hinduism. [Ganda Singh, The Singh Sabha and Other Socio-Religious Movements In The Punjab, 1850-1925, Punjabi University Patiala,1997, p-10.] They opposed so many customs like sati, dowry etc. widow remarriage particularly attracted its attention. They asked their follower, by issuing Hukamnamas, to abandon the practice of treating female child as unclean at the time of birth. On the whole,the women of Punjab had an equal share in the re-building of Punjab through Nirankari and Namdhari Movements and played a very crucial role in Socio-religious reform movements. In all the social oppressions 'female education' was given importance and stress was laid on this. Women even started their own Journals like Istri Rattan and others. The educational experiments of the British Government and reformers produced a 'new woman', which proved very useful to uplifts her role in society.

It must be mentioned that these movements were not started particularly for the betterment of women but these movements raised questions regarding the status of women and made effort for their upliftment in one way or the other. Different periodicals like Khalsa Samachar, Istri Satsang, Istri Samachar and Istri Sudhar took up the question of reform among the Sikh women in terms of the removal of ignorance and superstition and educating them about their social and moral obligation towards husband, family and the community.

Both social reform movements played a very essemtial role to the upliftment of women. Both raised their voice against the social evils like Pardah, Sati, Child marriage, widow remarriage and regarding education. After the independence we make constitution and got all the provisions for everybody' rights including women. In present scenario in Punjab we find there is no Purdah or Sati but female foeticide ,infanticide, dowry, eve teasing are still existing.

References :-

1. 'remembered' class of religious Literature consisting of Law books, epics and Puranas.

Fauja Singh, History of the Punjab, Vol-III, Punjabi University Patiala, 2002, p-263.
2. Loc.Cit.
3. Means 'Preceptor' and for the Hindus has normally indicated a human teacher. 'Guru' Came to be identified with the inner 'voice' of Akal Purakh.
4. Guru Nanak (1469-1539) : The first Guru of the Sikhs. Sikhs date the foundation of the Panth from his life of teaching and example.
5. Amar Dass (1479-1574) :Third Guru, born in Basarke, the son of Tej Bhan Bhalla. Born of women, brought up by women engaged and married to women, why should they be belittled who give birth to great men, Sri Guru Granth Sahib, Mahalla, Raag Asa, p-473.
6. Hari Ram Gupta, History and Sikhs (The Sikh Gurus 1469-1708) Vol-I, Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi, 1984, p-91.
7. The burning of a widow on her deceased husband's funeral pyre. The practice was denounced by the Gurus. J.S.Grewal, Four Centuries of Sikh Tradition, Oxford Press, New Delhi, 2011, p-10.
8. The free kitchen and dining hall or other provision for serving meals, which must be attached to all gurdwaras. G.C. Narang, Glorious History of Sikhism, New book societies of India, New Delhi, 1972, p. 30.
9. Bibi Khivi (1582) : A Khatri of Khadur, wife of Guru Angad. Teja Singh and Ganda Singh, A short history of the Sikhs, Punjabi University Patiala, 1983, p. 17.
10. J.N. Farquhar, "Modern Religious Movements in India", Munshiram Manoharlal,1998, p-1-2. Catholic Missions have been continuously of service, especially in education, by they have had no perceptible share in creating the Awakening.
11. J.N. Farquhar, "Modern Religious Movements in India", Munshiram Manoharlal,1998, p-5.
12. Ibid. p-29.
13. Kenneth W Jones, The New Cambridge History of India: vol-1 Socio-Religious Reform Movements in British India ,Cambridge University Press, Cambridge, 1989, pp-1-2
14. Kenneth W Jones, Arya Dharm: Hindu Consciousness in the 19th century Punjab, Manohar, 1989, p-xii.
15. Garaldine Forbes, The New Cambridge History of India: Women in Modern India, Cambridge University Press, Cambridge, 1998, pp-14-18
16. Rudolf Heberle, "Social Movements: Types and Functions of Social Movements" in David L.Sills (ed) International Encyclopedia of Social Science, Macmillian Company, New York,1968, p-438
17. G.S.Dhillon, Character and Impact of the Singh Sabha Movement on The History Of Punjab, Ph.D. Thesis, Punjabi University Patiala,1973,pp-32-37.
18. Dr. Man Singh Nirankari, The Nirankari, edited by Ganda Singh, The Singh Sabha and other Socio-Religious Movements in the Punjab (1850-1925), Publication Bureau, Punjabi

University, Patiala, 1997, p. 2.

19. Kenneth W. Jones, The New Cambridge History of India, Socio-Religious Reform Movements in British India, Cambridge University Press, New York, 1994, p. 88.
20. Letter of command. For the time of GuruHargobind such documents were sent to sangats or Individuals, giving instrucation or requesting assistance. The Sikh marriage ceremony. The Nirankari sect claims that it devised or recovered Anand Karaj earlier in the 19th century and that its example was copied by Singh Sabha for the wider Panth. Eventually the Anand Marriage Act which laid down a specific order for Sikhs was passed in 1909. Kenneth W. Jones, The New Cambridge History of India , p. 7.
21. Strictly speaking gurbani refers to the Gurus' works recorded in the Adi Granth. It can also apply, however to the bhagat bani. Word Shabad for Nanak revelation which communicates the message of the nam (the divine name). the word is uttered by mystical Guru to the believer who there by perceives the nam around and within him/her. The New Cambridge History of India, p. 10.
22. Kuldip Singh, Baba Ram Singh and Namdhari Movements, M.Phil Dissertation, Guru Nanak Dev University, Amritsar. P-13.
23. Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-36.
24. Giani Gian Singh, Panth Prakash, Language Development, Panjabi University Patiala, 1987, pp-1266-69.
25. Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-39.
26. Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p- 57.
27. Dr.Sarbjinder Singh, VishavDharam Bani Granth, Sampardhiya Te Chintak,vol-iii, Punjabi University, Patiala, 2007 p-331. See also Hukamnamas 1,p-100-103, Hukamnamas 4,p-133-34, Hukanamas 24, p .276-77.
28. Ibid,p-88
29. Tabulated by Pritam Singh Kavi in his work, Istarian Da Pehla Muktidata,cited in Tavarikh Sant Khalsa, pp-554-555.
30. The Adi Granth which is now recognized as authentic and used for worship in gurdwaras is anenormous Volume consisting of nearly 6000 hymns. Its contributors can be divided into four categories: A) Sikh Gurus: These include the first five guru and the ninth guru, Tegh Bahadur. The largest number(2218) are from the pen of Guru Arjun,followed by Nanak(974), Amar Das(907), Ram Das(679), Tegh Bahadhur(115),and Angad Dev (62). B) Hindu Bhaktas and Muslim Sufis, C) Bhatts or Bards, D) other contributors like Mardana, Sunder,Satta and Balwand.
31. Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-57.
32. M.M.Alluwalia, Kukas: The Freedom Fighters of Punjab, Allied Publishers, New Delhi, 1965,p-50.
33. Cited by Doris R.Jakobsh, Relocating Gender in Sikh History, Oxford,2003,p-11.

34. Jaswinder Singh, Sri Satguru Ram Singh ji De Hukamname, Namdhari Darbar, Bhaini Sahib, Ludhiana,1998,pp- 296-97.
35. Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-55.
36. Rahitnama cited by Tara Singh Anjan, pp-65-66.
37. Surinder Kaur Kharal, "Swtantarta Sangram Vich Namdhari Desh Bhagat Narian", Satyug Basant Ank, Sri Bhai Sahib,1994,P-57
38. Bibi Simarjit Kaur, "Namdhari Samaj Ate. Isterian", Basant Ank,1995,P-99
39. M.L.Darling, The Punjab Peasant and Debt, South Asian Books, Delhi,1978,pp-48-49.
40. Joginder Singh, Namdhari Guru Ram Singh, National Book Trust India, New Delhi,2010, p-57.
41. J.Doris.R.Jakobsh,p-10
42. Khushwant Singh, A History of The Sikhs, Oxford,1963, p-123.
43. Ganda Singh, The Singh Sabha and Other Socio-Religious Movements In The Punjab, 1850-1925, Punjabi University Patiala,1997, p-10.

saritarajput304u@gmail.com; Mob-9876485081

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 136-141
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

WOMAN EMPOWERMENT : CHALLENGES AND OPPORTUNITIES

-Supriya Jyoti Naryal
Head, Dept. of English, Dasmesh Girls College, Mukerian

Abstract :-

Women have been treated as second rate citizens across the world despite the fact that they constitute about half the population of the world. The situation is almost the same everywhere- whether it is a developed or a developing country. This article specifically deals with the issue of women empowerment , specifically in relation to the challenges faced by the Indian women and the opportunities provided to them. During the ancient times , women were worshipped as Goddesses or "Devi" but with the passage of time , women were relegated to the background who were considered fit for doing only household chores. There are challenges like female infanticide, dowry and bride burning, gender discrimination, sexual harassment, domestic violence and lower status of women in society. Opportunities like educational rights, legal rights, political rights and rich and balanced nutrition can prove fruitful in empowering the women of today.

During the ancient times, women were adored and worshipped as Goddesses, Devi or 'Kanjak'. Not only they were worshipped but some of them also ruled the world like Queen Elizabeth I, Queen Victoria, nearer home, Jhansi ki Rani Laxmi Bai, Razia Sultan,Indira Gandhi. However, in the middle ages, the status of women underwent a huge change. Women were relegated to the background doing only household chores, bearing children, and caring for every family member. This traditional, conservative approach towards women is aptly summed up by Alfred Lord Tennyson in these lines-

Man for the field and woman for the hearth
Man for the sword, and for the needle she…
Man for command, and woman to obey;
All else is confusion.[1]

With the passage of time, spread of education and awareness among the people, the winds started blowing in favour of the women folk or the fairer sex. Women constitute half of the population of the world. There is an imperative need for raising the status of women in the society. This status

can be improved, inevitably, through education, and empowerment.

Women's empowerment is the process of empowering women socially, economically, politically, psychologically and educationally. Women empowerment essentially refers to a feeling of one's own situation backed up with the knowledge ,skills and information which could enable women to gain higher self esteem and facilitate their role as decision makers in the present patriarchal society where women have always been expected to be subsequent to men. Empowerment refers to increasing spiritual, political, social and economic strength of women. It means to develop confidence among women in their own capabilities . This empowerment cannot be brought in the blink of an eye. It can be brought about with positive thinking, perseverance, enlightenment, persistent efforts, learning new skills for improving economic status. The male attitude or male perspective towards females also needs to be changed in a democratic way.

There are many issues and problems faced by women which is a major obstacle in the path of women empowerment. The first and the foremost is selective abortion and female infanticide. This practice is prevalent in India for the past so many years as here , in India , the male child is given preference over the girl child .So people go for selective abortion or if that is not done, then female infanticide is opted for . This is a very common practice in which abortion of female foetus is performed in the womb of the mother after the sex determination confirms that the foetus is a girl. Wide gaps in sex ratio at birth are due to the high incidence of gender- based sex – selective practices. Although, the government has strictly banned this practice now and it is also punishable under the law, but still people go for such test in a hush- hush way. According to World Economic Forum's Global Gender Gap Report 2021 India has slipped 28 places to rank 140 among 156 countries, becoming the third- worst performer in South Asia.[2]

The second problem faced by women is dowry and bride burning .It is a serious problem faced by many women in India. Earlier, dowry was a gift given to a daughter by her parents at the time of her wedding. But when this custom of giving gifts to daughter changed into compulsion, nobody knows. Every year, countless women are demanded to bring dowry at the time of their marriage in order to please the greedy in- laws. If the demands of the in- laws are not fulfilled, many girls are burnt alive by those so called new family of in- laws. The third problem is that of gender discrimination. Gender Discrimination means discrimination made on the basis of the gender of the child in the family. The boy child being preferred in the Indian family scenario leads to the girl child being relegated to the background in the family setup. This leads to many other problems faced by the girl child like disparity in education, inadequate nutrition, lower status in the family. Girls are not given their right to education. Where the boys are sent to school for studies, the girls are taught household chores or are made to

labour at factory sites or brick kilns; wash utensils at people's houses. Female illiteracy is higher in the rural areas as compared to urban region. In the lower income – group families and even some middle class families , girls are given inadequate nutrition in the form of food, vegetables and fruits which greatly hamper their physical, mental and psychological growth. This discrimination is made in order to feed the male child better and to fulfill his needs in all ways possible in a lower – income group family. Such a discrimination adversely affect the health and well being of the females in the form of anaemia, fatigue, severe health problems, stunted growth, acute depression etc.

The fourth problem faced by the women is that of sexual harassment at work and at home. In today's times it is one of the most serious problems faced by the women. She is safe nowhere; neither at home nor at workplace. At home, sexual predators in the form of uncle, neighbour, friend and sometimes a woman's own blood relative is found to be taking advantage of the gullible girl. At workplace, the boss or some pervert colleague harass women by making lewd comments, snide remarks, physically touching and in some cases abduction and even rape is common.

Another issue faced by women in almost all the stratas of society is domestic violence. Domestic violence is so common in India that almost 70% of Indian women have faced violence in their lifetime atleast once. The husband or the relatives of the family deem it their right to make the woman subservient to them and if she denies to surrender, then she is beaten mercilessly and tortured endlessly. Women and girls are more likely to be abused than men and boys and they are at higher risk if they are under 24 years of age, experienced abuse as a child, or if they live in remote or rural areas. Women can be the victim of abuse : physical, sexual or psychological-at some point in her life.[3]

During the COVID-19 Pandemic time, when worldwide lockdown was imposed every where, millions of cases of domestic violence were reported from everywhere around the world. Lower status of women in the society is another hindrance in the path of empowerment of women. Due to their inferior status as compared to their male counterparts, women are shorn of their right to be an equal member in the family. They cannot be the final decision maker like the patriarchal head of the family. Even if they are allowed to be educated, the women can't be the decision maker of their life or career. Decisions of their life such as marriage or career choices are also made by the male head of their family.

The problems are many in the path of empowerment of women but they need to be tackled with persistent efforts ,empathetic reflection and providing them ample opportunities so that they can be strengthened socially, economically and psychologically. Empowerment of women is a necessity for the very development of society since it enhances both the quality and the number of human resources available for sustainable development. The empowerment is a help to support women to

attain equality with men or at least reduce gender gap considerably. This concept of empowerment refers to the process of strengthening the hands of women who have been suffering from various disabilities, process of providing power to women to become free from the control of others and it is the process of providing equal rights, responsibilities and opportunities to women so that they can assume power to control their own life and destiny.

The Government of India has taken some concrete steps in order to safeguard women's interests like :- The Special Marriage Act of 1954 states that the marriageable age of a woman should be 18 and above and for males it was stated as 21 and above. The Hindu Marriage Act prohibits child marriage, polygamy, polyandry and provides equal rights to women to divorce and to remarry. The Hindu Succession Act gave the women the much needed relief in the form of right to parental property and an equal share in the husband's assets. The Dowry Prohibition Act prevents giving and taking dowry which is a punishable legal offence under the law[4]. The laws are many and many more are being made as and when the need arises to empower women during the changing times.

Another place where women participation can work wonders is in the political arena. There is a very low representation of women at all levels of political institutions. Women still face major obstacles in seeking higher positions in society. Political participation is a human right, granted by the U.N.O. But still women occupy very few high ranking posts in politics and bureaucracy. There is still a huge dearth of women politicians in our Indian politics. But here also, women are politically empowered through reservation in the local bodies which has helped in the wider mobilization. On many occasions, it is seen that elected women prove to be better leaders than their male counterparts and they work painstakingly for fulfilling the demands of the general public like widow pension, gas connection, drinking water, schools, health centers, roads etc. India is a country where caste and class plays an important role in politics which should be avoided at all costs. Women have been empowered in the political areas by passing of the Womens' Bill in 2010 which gives 33.3% reservation for women in all levels of Indian politics.[5] This bill can significantly change the demographies of class and caste among women politicians in leadership positions in the Indian political structure. It will help in creating a path for women from the not so privileged background and lower castes to enter state and national level government.

Another important factor which can play a significant role in empowering women is education. Education is a milestone of women empowerment because it enables them to respond to the challenges , to confront their traditional role and change their life so , it is impossible to ignore the importance of education in reference to women empowerment. Literacy rate in India has seen a sharp rise from 18.3% in 1851 to 64.8% in 2001 in which enrolment of women in education has also risen sharply

from 7% to 54.16% . Although, importance is being given to women education nowadays , but still 39% of women are literate whereas 64% of men are educated in comparison.[6] The gap is wide and still a lot needs to be done in order to uplift the women from its sad plight. Furthermore, it is equally imperative that re-education of men and women is also required in order to make them accept new and scientific attitudes towards each other and to themselves. Inspite of the forceful intervention by a bastion of female privilege, feminist critics, constitutional rights, protection laws and sincere efforts by state governments and central government through schemes like "Beti Padhao Beti bachao" schemes and above all, the United Nations enormous pressure with regard to the upliftment of the plight of women in terms of education.The state of education of girls is still in an enigmatic position. Endeavours are also required in the matters relating to gender sensitisation , female dropouts, early marriage, gender discrimination. All these issues are complicatedly related to each other. So the males also need to change their outlook and perspectives towards the female folk.

Educating girls is the most powerful tool of changing the position of women in society. Education also bring a reduction in inequalities and functions as a means of improving their status within the family. There is a need to establish more schools, colleges and universities which are exclusively for women. In order to bring more girls, especially from the poor strata of society in to mainstream education system, the government is providing a package of concessions in the form of providing free books, uniforms, boarding and lodging, clothing for the hostlers, mid-day meals, scholarships, bicycles, cell phones etc and many more attractive schemes.

Another important factor helpful in empowerment of women is to have a good health. In these times of cut-throat competition and perilous life, it is imperative that women should take care of their health. A woman is a mother, a nurturer, a homemaker and a working woman. She has to look after all the needs of her household and its members before thinking about herself. This can lead to the deterioration of her own health. A healthy women can be better empowered whether at home or at work place. One should have her meals on time in addition to the daily requirement of minerals, vitamins and greens. Exercise is highly effective in improving health. Regular exercise provides a great array of health benefits, including lowering blood pressure, reducing cholesterol and cardiovascular disease, and improving cognitive function. A woman should also de -stress herself at regular intervals. When body demands rest, rest should be given to the body. The male counterparts can play a vital role in giving a helping hand to their partners or wives. Household chores can be divided and done together which can leave the women with ample time to follow her intellectual pursuits. In addition, emotional health of women requires equal attention. Women should discuss their problems, communicate with others and like this, de-stress or find a solution to their problems.

As it is said, the health of women and girls determines the health and well – being of our modern world. So the women should be given a chance to rejuvenate themselves in order to face the challenges of life with vigour and zeal.

Women and girls have distinct needs and potential and face different obstacles. They continue to face backlash, humiliation, privation, discrimination and hardships at the hands of their own members of the family and the patriarchal set up of society; despite human rights advances and improvement in certain laws by the government. A conscious and persistent effort is required for empowering women by the law making agencies and the patriarchal attitude of the society. It can be possible through enhanced collaboration with a range of partners and increasing access to knowledge at local, regional, national, and international levels. Thus, it can be said that we have started framing the roadmap for women empowerment but still we have miles to go on this path of empowerment. We hope that in the coming years the dream of women empowerment will be realized and it will prove its worth.

References :-

1. https:wwwgutenberg.org/files/791/791-h/791-h.htm
2. https://epaper.tribuneindia.com/m5/3045941/The –Tribune/TT-01-April-2021#page 7
3. Rosenfield ,A. ; Min, C.; Bardfield, J. Introduction in P. Smith,CL.,editors "Women's global health and human rights"Jones and Bartlett Publishers,2010 p.3-7
4. Boruah, Santi Saya. "Empowering Women in India", Third Concept, An International Journal of Ideas, Vol.35,no. 409, March 2021,p.25
5. Madeswaran,K. "Women Empowerment and Political Awareness,"Third Concept, An International Journal of Ideas, Vol.33, no.392, October 2019, p.47
6. Pathak, Dipak. "Development of Women Education in India", Third Concept, An International Journal of Ideas, Vol.34, no.408, February 2021,p.36

Phone no. 7986299867

Email ID- supriyadadwal81@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 142-148
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्

–डॉ. रीना कुमारी
विभागाध्यक्ष हिन्दी, दसमेश गर्ल्ज़ कॉलेज चक्क अल्लाह बख्श, मुकेरियां (पंजाब)

श्री जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में कहा है– 'बन जाता सिद्धांत प्रथम फिर पुष्टि हुआ करती है।'[1] लगभग एक शताब्दी का उदय हुआ– 'सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्'।[2] खोज के पश्चात् ज्ञात हुआ कि इस वाक्य का सर्वप्रथम प्रयोग विश्व कवि गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने किया था। कुछ लोगों की मान्यता थी कि बंगाल के ब्रह्म समाज में पहले इसका प्रचलन हुआ। हिन्दी में यह वाक्य बंगाल की देन माना जाने लगा। कुछ विद्वानों की सम्मति में 'सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्' न विदेश से आया है, न ही किसी धर्म–सम्प्रदाय से और न ही किसी सूक्ति का अनुवाद है। यह विशुद्ध भारतीय है। भारतीय विचारधारा भगवान् के गुणानुवाद को ही साहित्य में प्रमुख स्थान देती आई है।

भारतीय दृष्टि में ईश्वर सच्चिदानंद रूप है। यह 'सच्चिदानन्द' (सत्, चित्, आनंद) समन्यवादी भारतीय दृष्टि का मूलाधार है। जो नित्य, श्रेष्ठतम्, सत्तायुक्त, धार्मिक, उच्चतम है, वही सत् है। जो चैतन्य, चेतनायुक्त, अग्निमय, ज्ञानमय है हमारी चित्तवृत्ति में समाया हुआ है, जो आत्मवान है, जिसमें चुनने की शक्ति विद्यमान् है, वहीं चित् है और जो हर्षप्रदाता है वहीं आनंद है, सत् भी ब्रह्म है, चित् भी ब्रह्म है और आनंद भी ब्रह्म है। भारतीय दृष्टि इसी ब्रह्म का चिंतन करती हुई आनंद का अनुभव करती है, साहित्य में भी वह इसी ब्रह्मानंद सौहार्दयता के दर्शन करती है। साहित्य के दो पक्ष है– भाव और कला। भाव पक्ष के दो प्रधान तत्व हैं बुद्धि और कल्पना। बुद्धि सत्यम् का प्रतिनिधित्व करती है और कल्पना शिवम् की। साहित्यकार अपनी कृति को यथार्थ के माध्यम से शिवत्व प्रदान करता है। सुंदरता के लिए अलंकार या आभूषणप्रियता भारतीयता का स्वभाव रहा है। भारतीय नारी पुरूष भी देह पर अलंकार धारण करते आए हैं। सुंदरता के लिए ही साहित्य में भी अलंकारों की योजना की गई है। हमारा समस्त साहित्य, वह चाहे काव्य हो, नीति काव्य हो, व्यवहारिकता की कसौटी पर खरा उतरता है। गीता में सत्य, प्रिय और हितकारी वाणी की सराहना की गई है।

'अनुदेगकरं, वाक्यं, सत्यं प्रियहितं च यत्।'[3]

जो हितकारी है, वहीं शिव है और जो प्रिय है वहीं सुंदर है। इसी व्यवहारिक दृष्टि के कारण हमने सहित्य को हित सहित माना है। गोस्वामी तुलसीदास जी भी 'रामचरितमानस' में लिखते हैं :–

''कवित विवेक एक नहिं मोरे।
सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे।।''[4]

बाबू गुलाबराय ने कहा है – 'साहित्य सुंदर को इसीलिए प्रधानता देता है कि कला में विचार के साथ प्रेषणीयता का भाव लगा रहता है। साहित्य में जन–जन का हृदय–द्वार खोलने की सौंदर्य रूपी कुंजी है।' इसी

समन्वय के कारण काव्य देवत्व में प्रतिष्ठित होकर ब्रह्मानंद सहोदर रस का सृष्टा और प्रसारक होता है। कवि अपने साहित्य में अंतर्मुख और बर्हिमुख दोनों का समन्वय करके चलता है। वह साहित्य के जिस भी पक्ष को स्पर्श करता है, उसे चमत्कृत कर देता है। कवि सुमित्रानंदन पंत कहते हैं :–

'वहीं प्रज्ञा का सत्य स्वरूप,
हृदय में बनता प्रणय अपार।
लोचनों में लावध अनूप,
लोक–सेवा में शिव अविकार।'[5]

वैदिक युग से लेकर आज तक भारतीयों का दृष्टिकोण काव्यमय रहा है, वैज्ञानिक और धर्मसम्मत रहा है। पाश्चात्य बुद्धि 'सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्' को उस गंभीरता से ग्रहण नहीं कर सकती जैसे भारतीय करते हैं। इस सिद्धांत का समन्वित रूप दर्शन ही हमारा उद्देश्य है। हम ज्ञान, इच्छा, क्रिया, भावना, संकल्प, भक्ति, कर्म के केन्द्र–बिंदु हैं। कलाकार सत्य और शिव की युगल मूर्ति को सौंदर्य का आवरण पहनाकर उसमें प्राण–प्रतिष्ठा करता है। कवि सत्य का बाहर से नहीं, भीतर से साक्षात्कार करता है। अंग्रेजी कवि कीट्स का कथन है :–

'Beauty is truth, truth is beauty
That all ye know on earth.
And all ye need to know.'[6]

घटना के सत्य को लोकमंगल की भावना से अनुप्रमाणित होकर सुंदर रूप प्रदान करता है। तुलसीदास के राम पिता के वचनों का पालन करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि :–

''रघुकुल रीत सदा चली आई।
प्राण जाई पर वचन न जाई।।''[7]

आज के इस आर्थिक भौतिकवादी युग में हम शिवं को झुठलाने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु यह संभव नहीं। जो हमारी भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों में सामंजस्य स्थापित कर हमें सुसंगठित, सुव्यवस्थित समाज रचना की ओर अग्रसर करें, वहीं शिवं है। आर्थिक शोषण के विरूद्ध आवाज़ उठाने वाले मार्क्सवादी, राम द्वारा रावण वध, कबीरदास जी के साथ वचन :–

''जा मरने से जग डरे, मेरे मन आनंद।
कब मरिहौं कब पाइयों, पूरन परमानन्द।।''[8]

इसमें भी सत्य प्राप्ति के बाद शिवं से लोकमंगल से ओतप्रोत भावना सामने आती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्त की मान्यता है :–

जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान–दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था ज्ञान–दशा कहलाती है, जिस प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस–दशा कहलाती है। इस रस–दशा में आने के पश्चात् ही मनुष्य अपनी पृथक् सत्ता भूलकर अपने हृदय को स्वार्थ संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक–सामान्य भाव–भूमि पर ले जाता है। इस भूमि पर पहुंचे हुए मनुष्य को कुछ काल तक अपनी सत्ता को लोक–सत्ता में लीन कर देना होता है, उस अवस्था को भावयोग भी कहते हैं।''[9]

माखनलाल चतुर्वेदी लिखते हैं – ''लेखक में ऐसी स्फूर्ति होनी चाहिए जो उसके निर्माण को आत्मवेदना

की मूर्ति का स्वरूप दे सके। वह लेखन कला का चतुर कलाकार है जो अपने आत्म–मन्न और आत्म चिंतन को कलम के घाट उतारने के लिए अपनी रोटियाँ बेचकर रात के लैंप में अपनी आँखों और ऊँगलियों द्वारा मस्तिष्क के घुमाव और हृदय की धड़कन से प्रवाहित रक्त चढ़ा देने के लिए बाजार में तेल खरीदता नजर आता है। इसीलिए शुद्ध कला की उत्पत्ति स्वान्तः सुखाय होती है।''[10]

गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं :–

''कहा कहूँ छवि आज की, भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक जब नवें, धनुष–बाण लेऊ हाथ।।''[11]

टॉलस्टाय कहते हैं :–

''कला समभाव के प्रचार द्वारा विश्व को एक करने का साधन है।''[12]

महात्मा गाँधी :– कला से जीवन का महत्व हैं, जीवन में वास्तविक पूर्णता प्राप्त करना ही कला है। यदि कला जीवन को सुमार्ग पर ना ला सके, तो वह कला क्या हुई।''[13]

कलाकार समष्टि से अलग नहीं हैं। उसके जीवन का उद्देश्य है :– ''उस परम लक्ष्य की खोज।''

बाइबल का कथन है :–

''यदि तुम सत्य मानते हो, तो सत्य तुम्हें मुक्त कर देगा।''[14]

साहित्य भाषा, संस्कृति, समाज और शक्ति को उसके मूल स्वरूप से विकसित स्वरूप तक ले जाने वाला सेतु है। यह काल और सीमाओं से परे हैं। सत्यं, शिवम् और सुंदरम् है। शिवम् की बात करे तो महिला सशक्तिकरण इसका सुंदर उदाहरण है। आजकल नारी विमर्श चल रहे हैं। वैदिक काल में नारी सहधर्मिनी, अर्धागिनीं, युद्ध कला निपुण, संगीत, नृत्य, अभिनय, काव्यकला, कृषि कार्य में निपुण मानी जाती थी।

''बिन धरनी घर भूत के डेरा।''[15]

नारी के बिना गृहस्थ का महत्त्व ही समाप्त हो जाता है। व्यास जी ने पत्नी को सबसे अच्छा साथी और मोक्ष प्राप्ति का साधन माना। ऋग्वेद में नारी को परिवार की रानी और आदर्श सेविका माना :–

''सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।
नानान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु।''[16]

अथर्ववेद में भी कन्या यश प्राप्ति की कामना करने की बात कही गई है। वेदों में तो पतिव्रता नारी का पति के साथ घनिष्ठ संबंध बताया है, जो एक दूसरे के पूरक हैं। पति–पत्नी को मानवीय मूल्यों को समझते हुए आचारवान् बनकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में सत्यनिष्ठा के साथ आज्ञापालक एवं सन्मार्ग पर चलना होगा। आधुनिक जीवन में भी विश्व को समरसता के सिद्धांत की आवश्यकता है। हमारी संस्कृति समृद्ध है, इसमें वर्ण व्यवस्था, कर्म सिद्धांत, आश्रम व्यवस्था, संयुक्त परिवार, धर्म की प्रधानता, पुरूषार्थ, अध्यात्म सन्मिलित हैं। यहीं तत्त्व भारतीय संस्कृति से हमें विलक्षण बनाता है। उर्वशी, मेनका, रंभा, उलूपी, हिडिम्बा, शूर्पणखा, ताड़का, अयोमुखी आदि अनार्य महिलाएं मुक्त प्रणयचयन की उदाहरण हैं। वैदिक काल में पति–पत्नी के मृत्यु पश्चात् दूसरा विवाह नहीं करता था। नारी का पुत्री, पत्नी, माता के रूप में सदैव सम्मान था। भारतीय साहित्य में नारी पर केन्द्रित रचनाएँ, अति प्राचीनकाल से होती रही है। बीसवीं शताब्दी में जान स्टुअर्ट मिल, वर्जीनिया वुल्फ आदि साहित्यकारों ने नारी के अधिकारों का समर्थन किया है। बोदां और रोलां बार्थ ने भी नारी–विमर्श की धारणा को बल दिया।

पितृसत्तात्मक समाज में नारी को शोषित, दमित माना गया। ग्रीक, सुकरात, प्लेटो तथा अरस्तू के समय में स्त्रियों और दासों को नागरिकता प्राप्त नहीं थी। उपभोग की वस्तु माना जाता रहा। नारी विमर्श नारी जीवन के सभी पीड़क पहलुओं से मुक्ति दिलाने वाला आन्दोलन है। महिला सशक्तिकरण की कोटि में मीरा, महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, शिवानी, उषा प्रियवंदा, मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भंडारी, मृणाल पांडेय का नाम आता है। स्त्री–विमर्श का प्रारंभ फ्रांसीसी लेखक सिगोन द बुआ की पुस्तक 'द सेकंड सेक्स' (सन् 1949) के प्रकाशन वर्ष मानते हैं। कुछ मैरी एलमन की पुस्तक 'थिंकिंग एबाअट वीमन' (सन् 1968) के प्रकाशन वर्ष से।

नारी मानव–सभ्यता की सहज उत्तराधिकारिणी होने पर वह इनके बाहर, इससे अलग और इसकी आलोचक नहीं बन सकती, वह तो मानव जीवन को पृथ्वी पर लाने का पवित्र कार्य करती है। स्त्री एक व्यक्ति के रूप में विशिष्ट इकाई है, शक्ति है। वह जीवन के विभिन्न मोड़ो पर अनेक जीवन जीती है। अपने हृदय में अनेकों अरमानों का दमन करके समाज कल्याण का कार्य करती है। जैसे शिव जी ने क्षीरसागर से निकले विष का पान करके समाज को विष के प्रभाव से विमुक्त किया था। वैसे ही स्त्री समाज की विषय–वासनाओं, रूढ़ियों, बाह्याडंबरों को आत्मसात् करते हुए समाज कल्याण करती है। वह सती सावित्री होकर भी सीता माता की तरह चरित्र की शुद्धता की परीक्षा देती हैं, नशेड़ी बलात्कारियों, यौन शोषण, तेजाब फेंके जाने पर भी वह अपने अस्तित्व का परिचय समाज को आत्मनिर्भर होकर देती है। वह दुर्गा स्वरूपिणी समाज में महिषासुरों का वध करती है और किरण बेदी, कल्पना चावला, मदर टेरेसा, इंदिरा गांधी के रूप में पैदा होकर शिवं के महावाक्य को पूरा करती है। माँ–बाप के यश के लिए अपने प्रेम तक को न्यौछावर करके किसी अन्य व्यक्ति के साथ विवाह संबंध निभाकर समाज निर्माण का कार्य भी कर जाती है। स्वावलम्बन होकर अपने परिवार को चलाती है और कई बार तो माता–पिता के लिए पुत्र बनकर अपनी भूमिका निभा जाती है। मानव–सभ्यता ने ही स्त्री–पुरूष की गुणात्मक भिन्नता को जन्म दिया है। वे यह भी मानते हैं कि कोई भी दमनकारी संरचना जितना स्त्री को प्रभावित करती है, उतना पुरूष को नहीं। नारीवादी इस यथार्थ को बदलना चाहते हैं। क्रांति ही इसका साधन है।

प्रभा खेतान ने अपनी पुस्तक 'उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति कामना की दस वार्त्ताएँ' में पश्चिम में नारीवाद को लेकर हवाला दिया और अपने अनुभव से नारी स्वतंत्रता की बात की। जयशंकर प्रसाद जी ने भी अपने महाकाव्य 'कामायनी' में मनु और ऋद्धा को शिव और शक्ति की अभेद और समरस स्थिति तक पहुंचा कर काव्य का अंत किया है। शैवदर्शन ही कामायनी का मुख्य रचना–सूत्र है। महादेवी वर्मा जी का काव्य भी सर्वश्रेष्ठ माना गया है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का नाम आंचलिक उपन्यासकारों में बड़े ही गौरवपूर्ण ढ़ंग से लिया जाता है। डॉ. बी.एन. लूनियां ने संस्कृति के निर्माण में स्त्रियों को आवश्यक बताते हुए 'प्राचीन भारतीय संस्कृति' नामक पुस्तक में लिखा :–

''किसी भी सभ्यता और संस्कृति के स्तर धारणाओं, भावनाओं आदि को समझने और उनका मूल्यांकन करने और संस्कृति में स्त्रियों की साधारण दशा, उनके अधिकारों, स्वत्वों और स्तर ऊँचा है उन्हें विभिन्न अधिकार प्राप्त हैं तो उस समाज और संस्कृति का स्तर श्रेष्ठ होगा। प्राचीन भारत में महिलाओं की दशा आधुनिक युग की अपेक्षा अच्छी थी।''[17]

भ्रूण हत्या जैसा दुष्कर्म चर्मउत्कर्ष पर है। नारी का शोषण हो रहा है। धन पिपासा, प्रतिष्ठा की भूख आदि भौतिकवादी समाज ने व्यक्ति के चारों ओर एक खाई पैदा कर दी है जिसे पार करना असंभव है। एकल परिवारों

का प्रचलन बढ़ रहा है। संयुक्त परिवार कम हो रहे हैं। बुजुर्गों को आश्रमों में भेजा जा रहा है। संतान और माता–पिता, पति–पत्नी के संबंध विच्छेद हो रहे हैं। कहीं न कहीं हम ही इस स्थिति के लिए जिम्मेवार हैं क्योंकि हमें धैर्य, सहनशीलता की परिभाषा नहीं याद रही। वेदों में तो इस अलगाव की प्रवृत्ति को रोकने के लिए समरसता का सिद्धांत दिया गया है।

आज प्रगति के युग में अशांति फैली हुई है। समाज की लघुत्तम इकाई परिवारों में से मानवीय मूल्य लुप्त होते जा रहे हैं। विज्ञान उन्नति कर रहा है, समाज का स्तर गिरता जा रहा है। वर्तमान समय में दहेज प्रथा, 'दुल्हन गला घोंटू' रोग बन गया है।

''सोने की चिड़ियां कभी, अपना था यह देश।
जन भक्ति वैराग्य से मंचित था परिवेश।।''[18]

मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है।
अगर चाहते हो सुखी, स्वस्थ, आनंद।
तो दोहन, तुम प्रकृति का, करो तुरंत ही बंद।।

वर्षा के हैं हेतु ये, जीवन के श्रृंगार।
मौन तपस्वी से खड़े, नभ को हो रहे निहार।।

वातावरण विशुद्ध हो, संस्कारित हो लोग।
पूर्ण काम हो जन सभी ऐसा बने सुयोग।।''[19]

निस्वार्थ होकर ही सामाजिक समरसता का देश–बोध अपेक्षित है।

विश्वामित्र मेनका को कहते हैं :–

'मेरे सहभाग में तुम मात्र अप्सरा। देवताओं की भोग्या ही नहीं रही। नई पीढ़ी को जन्म देने वाली नैतिकता। एक पूर्ण स्त्री हो। निर्माण की शक्ति और मैं पूर्ण पुरुष बन गया हूँ।''[20]

अगर आधुनिक समाज में सामाजिक, पारिवारिक और वैचारिक बदलाव आ जाए तो कामकाजी और घरेलू हिंसा की शिकार नारी उन्नति के अधिक अवसर प्राप्त कर सकती है। स्वर्णकार समाज की महिलाओं ने महिला बैंक का संचालन करके लाखों की राशि जमा की और जरूरतमंदों को अल्प ब्याज पर ऋण दे रही हैं। वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलनों और यू.एन.डी.पी. आदि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने महिलाओं के सामाजिक समता, स्वतंत्रता और संस्थाओं ने महिलाओं के सामाजिक समता, स्वतंत्रता और न्याय के राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने में भूमिका निभाई है। विदेशों में महिला रोज़गार भारत की तुलना में अधिक है। भारत का संविधान महिलाओं की समानता का दावा करता है। भारतीय महिलाएं शिक्षा राजनीति, मीडिया कला व संस्कृति, सेवा क्षेत्रों, विज्ञान व प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में भागीदारी करती हैं। सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न योजनाएं चल रही हैं :–

1. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना।
2. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।
3. सुरक्षित मातृत्व आश्वासन सुमन योजना।
4. फ्री सिलाई मशीन योजना।
5. महिला शक्ति केन्द्र योजना।
6. सुकन्या समृद्धि योजना।
7. किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए राजीव गांधी योजना।
8. इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना।
9. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना।
10. स्वाधार घर योजना।
11. महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम।

महिलाएं ऐसी श्रमिक हैं जो जीवन में परिवार और कार्य व्यापार में सामंजस्य बिठाकर अपना बिना थकावट के साहसपूर्ण व्यवहार रखती हैं और समाज में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इनके बिना जीवन असंभव है। नारी ही शिव की प्रेरणा शक्ति है।

सत्यं, शिवं की प्रतिष्ठा तो हो गई, सुंदरम् का साक्षात्कार करना आवश्यक है। जो हर्ष का, आनंद का कारण है वही सुंदर है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं – ''लोक में फैली दुःख की छाया को हटाने में ब्रह्म की आनंद कला जो शक्तिमय रूप धारण करती है, उसकी भीषणता में भी अद्‌भुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी आर्द्रता साथ लगी रहती है। विरूद्धों का यहीं सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौंदर्य है। भीषणता और सरसता, कोमलता और कठोरता, कटुता और मधुरता, प्रचंडता और मृदुता का सामंजस्य ही लोकधर्म का सौंदर्य है।''[21]

सुदंरता के बिना सत्य और शिव के दर्शन नहीं हो सकते। सुंदरता तो भीतर की वस्तु है, बाहर के उपकरण लेकर भी हम भीतर के सौंदर्य को साकार रूप में देख सकते हैं। इसमें समरसता आ जाती है।

''प्रतिफलित हुई सब आँखें, उस प्रेम–ज्योति बिमला से।
सब पहचाने से लगते अपनी ही एक कला हो।।
समस्त थे जद या चेतन, सुंदर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती आनंद अखंड घना था।।''[22]

समस्त कलाओं में साहित्य में सत्यं, शिवं, सुंदर स्वतः समाहित हो जाता है। साहित्य विचारशील आत्माओं की अमर अभिव्यक्ति है। यह यथार्थ जीवन की प्रगति का मूलाधार है। आदि कवि वाल्मीकि से लेकर आधुनिक कवियों में शिवत्व की भावना का सुंदर रूप पाया जाता है। 'काव्यप्रकाश' में लिखी पंक्तियां सत्यं शिवं सुंदरम् की वाणी है।

''काव्य यश से अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिर्वत्तये कान्तासम्मित तपापदेश पुजे।।''[23]

भगवान् सद्‌बुद्धि दे कि हम स्वयं वस्तुओं को कला की कसौटी पर परख सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. यश गुलाटी, बृहत् साहित्यिक निबंध, सूर्यभारती प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1994, पृ. सं. 165
2. वहीं, पृ. सं. 165
3. वहीं, पृ. सं. 167
4. वहीं, पृ. सं. 167
5. वहीं, पृ. सं. 168
6. वहीं, पृ. सं. 171
7. वहीं, पृ. सं. 169
8. वहीं, पृ. सं. 170
9. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त, साहित्यिक निबंध, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, नवीन सं. 2004, पृ. सं. 21
10. https://www.myhindilekh.in
11. https://www.myhindilekh.in
12. https://www.myhindilekh.in
13. https://www.myhindilekh.in
14. https://www.myhindilekh.in
15. डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया, वैदिक वाङ्मय एक विमर्श (वैश्विक शांति और वेद), राधा पब्लिकेशन्स, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 372
16. सरला भारद्वाज, संस्कृत साहित्य में मानवीय मूल्य, पंजाब हिन्दी साहित्य अकादमी, प्र. सं. 2013, पृ. सं. 45
17. डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया, वैदिक वाङ्मय एक विमर्श (वैश्विक शांति और वेद), राधा पब्लिकेशन्स, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 375
18. डॉ. रमेश सोबती, व्यष्टि से समष्टि तक (अन्वेषण) देवेश प्रकाशन, लुधियाना, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 25
19. वहीं, पृ. सं. 26
20. वहीं, पृ. सं. 62
21. डॉ. यश गुलाटी, बृहत् साहित्यिक निबंध, सूर्यभारती प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1994, पृ. सं. 171
22. वहीं, पृ. सं. 172
23. वहीं, पृ. सं. 173

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 149-153
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

शास्त्रीय संगीत द्वारा चरित्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका

–डॉ. गीतांजलि अरोड़ा
सहायक आचार्य, संगीत विभाग, खालसा कॉलेज फ़ॉर वूमैन, सिधवां खुर्द, लुधियाना।

भूमिका :–

प्रत्येक कलाकार का एक व्यक्तित्व होता है जिसमें उसके जीवन के उच्च आदर्शों, शुभ कल्याणकारी मूल्यों की झलक देखने को मिलती है। सिद्ध व समर्पित कलाकार वह है, जिसमें पाप–नाश करने की शक्ति हो और पुण्य जगाने की क्षमता हो। एक कलाकार में त्याग की भावना, कठोर साधना, ईश्वर आराधना, द्वेष रहित मन आदि गुणों को होना आवश्यक है। इसीलिये एक कलाकार में जैसे गुण होंगे, उसकी कला से भी वैसी ही गुणों की अभिव्यक्ति होगी।

हमारा भारतवर्ष बहुत महान है। प्राचीन काल से ही यहां के निवासी नैतिकता की दृष्टि से उच्च रहे है। प्रत्येक युग में संगीत उच्च चरित्र का आधार रहा है, जिसमें पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नारी ने सदैव ही संगीत की साधना द्वारा अनेक विषम परिस्थितियों में भी उच्च चारित्रिक मूल्यों को स्थापित करने का साहस दिखाया है। वीणा पुस्तक धारिणी माता सरस्वती द्वारा संगीत की अनवरत धारा जो बही है, नारी ने सदैव ही उसमें अपना उत्कृष्ट योगदान दिया है। इस शोध पत्र में ऐसी ही महिलाओं के योगदान का वर्णन है, जिन्होंने संगीत के द्वारा उच्च गुणों का निर्माण एवं विकास किया है।

संगीत कला के दो रूप :–

सदैव से ही संगीत के दो रूप प्रचलित रहे हैं एक लौकिक तथा दूसरा शास्त्रीय। ''लौकिक'' संगीत का अभिप्राय ऐसे संगीत से है, जो विभिन्न सामाजिक अवसरों पर सब के मनोरंजन के लिये गाया जाता है। प्राचीन काल में इसे 'देशी' संगीत के नाम से जाना जाता था। संगीत का दूसरा रूप होता है – शास्त्रीय, जिसमें गान की कलात्मकता, एक विशेष पद्धति तथा विशेष प्रकार के भाव से सम्बद्ध होती है। शास्त्रीय संगीत को 'मार्ग संगीत' भी कहते है। शास्त्रीय संगीत पद्धति का ध्येय विश्व की उन्नति और इसका प्रयोग आध्यात्मिक उत्सवों के समय होता था। वैदिक काल में इसे सामगान के रूप में, भरतकाल में ध्रवागान के रूप में, मतंग तथा शार्गदेव के समय गीति रूप में तत्पश्चात् ध्रुवपद के रूप में गाया गया। जहां तक प्रश्न है – महिलाओं के भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान का, तो यह निर्विवाद सत्य है कि महिलाओं ने शास्त्रीय संगीत के प्रचार, प्रसार, सवंर्धन एवं संरक्षण में जो उच्च एवं अदम्य प्रयास किये है, उन्होंने शास्त्रीय संगीत की नींव को और अधिक सुदृढ़ता प्रदान की है।

वैदिक काल :–

सर्वप्रथम वैदिक काल की ओर दृष्टिपात करें तो यहां पर भी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की भागीदारी स्पष्ट दिखती है। वैदिक काल में शास्त्रीय संगीत के रूप में सामागान होता था, जिनका ऋचाओं के रूप में गान होता था। यज्ञों में सामगान का विधान था, विशेषकर सोमयागों का। 'तैत्तिरीय संहिता' में तो कहा गया है कि जिस यज्ञ में सामगान नहीं, वह यज्ञ ही नहीं। यज्ञों के समूह गान की परंपरा थी। उद्गातृ वर्ग के साथ–साथ यजमान और यजमान की पत्नी भी गान करते थे।

प्रत्येक परिवार में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान था। परिवार में संगीत संबंधी प्रत्येक आयोजन गृहलक्ष्मी ही करती थी। नारियों के कारण ही प्रत्येक घर संगीत का सुन्दर केन्द्र बना हुआ था। शास्त्रीय संगीत के तीनों उपकरणों (गायन, वादन एवं नृत्य) में महिलाओं की सशक्त भूमिका थी। वीणा वाद्य इस युग में विशेष लोकप्रिय था, जिसका वादन अधिकतर नारियां ही करती थी। कंठ संगीत एवं नृत्य से भी उनको विशेष प्रेम था। समाज में महिला संगीतज्ञों को उच्च दृष्टि से देखा जाता था। उनका सामाजिक रूप से मान–सम्मान किया जाता था। इन्होंने संगीत के शास्त्रीय एवं आध्यात्मिक रूप के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। फलस्वरूप समाज ने नैतिक एवं चारित्रिक स्तर पर बहुत उन्नति की।

वैदिक युग के संगीत की सबसे बड़ी विशेषता धर्म और संगीत की एकरूपता है। जैसे कि पहले भी संकेत दिया गया है कि इस युग में जो यज्ञ किये जाते, उनमें नारियां सम्मिलित होती थी। इस अवसर पर संगीत को मंत्रों के रूप में गाया जाता था। नारियाँ भी वेद मन्त्रों को कई प्रकार से, कई शैलियों में गाती थी। इस युग में नारियों ने अनेक वेद मन्त्रों की रचना भी की, ऐसा वर्णन ग्रंथों के अध्ययन से प्राप्त होता है। अतः यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि महिलायें मंत्र रचयिता भी हुई हैं, जिसके लिये शास्त्र सम्मत् संगीत का ज्ञान होना आवश्यक है।

पौराणिक काल :–

पौराणिक काल में भी संगीत की स्थिति आदरणीय थी। साधना का क्रम संगीतकारों में जारी था। वैदिक काल के ही वाद्य यन्त्रों का उपयोग किया जाता था। नाटक की प्रथा भी चल पड़ी थी, जो पूर्णतः संगीतमय रहते थे। इनमें भी शास्त्रीय संगीत एवं नारी का परस्पर गूढ़ सम्बन्ध देखने को मिलता है। नाटकों में भी संगीत के शास्त्र संबंधी नियमों का पालन किया जाता था। इनमें भी स्त्रियों की भागीदारी थी। प्रत्येक व्यक्ति अपनी पुत्री अथवा पत्नी को कला प्रदर्शन के लिये मंच पर भेजने में अपना गौरव समझता था। संगीत और शिक्षा दोनों का ज्ञान प्रारम्भ से ही बालक एवं बालिकाओं को कराया जाता था। चूंकि प्रत्येक घर की माता संगीत से पूर्ण परिचित होती थी। अतएव वह अपनी सन्तान को स्वयं ही शिक्षक बनकर संगीत का ज्ञान देती थी। क्योंकि महिलायें स्वयं ही शास्त्र सम्मत संगीत में दक्ष होती थी। संगीत का ज्ञान माता द्वारा ही सन्तान को प्राप्त होता था। जिसका उद्देश्य था – सन्तान को उच्च गुणों का धारणी बनाना।

रामायण काल :–

'रामायण' भारत का प्राचीन सांस्कृतिक महाकाव्य है। आदि कवि वाल्मीकि के अनुसार रामायण का निर्माण गेयाकाव्य रूप में हुआ। रामायण काल में संगीत विषयक समुन्नति तथा प्रसार के सर्वज्ञ दर्शन होते हैं। इस काल में भी महिलाओं का संगीत से प्रेम दिखाई पड़ता है। वैदिक काल की ही तरह हर घर में प्रातःकाल होते ही ईश्वर

आराधना की संगीतमय स्तुति प्रस्फुटित होती थी। श्री रामचन्द्र जी के विवाहोत्सव के शुभ अवसर पर भी संगीत का आयोजन हुआ था। महिलाओं ने मंगल गान गाये थे। वीणा, मृदंग आदि वाद्य मन्त्रों का वादन किया था। नारियां आनन्द विभोर होकर नृत्य में झूम उठी थी। इसी प्रकार 14 वर्ष के बनवास के पश्चात् श्री राम के पुनः आयोध्या लौटने पर भी नारियों ने मंगल गान गाते हुये स्वागत किया था।

ऐसा भी वर्णन प्राप्त होता है कि रावण की पत्नी मंदोदरी स्वयं संगीतज्ञा थी। उनकी दासियों को भी संगीत प्रिय था। रामायण काल में शास्त्रीय संगीत बहुत विस्तृत हो चुका था। संगीत साधना बहुत अधिक रही होगी। वाल्मीकि ने अनेक स्थानों पर नृत्य गान समारोहों का वर्णन किया है, जिसमें स्त्रियों की उच्च संगीत प्रतिभा का दर्शन होता है।

अयोध्या नगरी संगीत शिक्षा का भी महान केन्द्र थी। नारियां अपने अवकाश में नृत्य सीखा करती थीं। संगीत, नृत्य, नाट्य और उसमें नारियों की उपस्थिति के संकेत प्राप्त होते हैं। उच्च चारित्रिक संगीत उनको सात्विक दैविक, जीवन की ओर प्रेरित करता था।

महाभारत काल :–

वेदव्यास द्वारा रचित 'महाभारत' का भारतीय साहित्य में विशिष्ट स्थान है। सम्पूर्ण ग्रंथ में एक लाख श्लोक है, जो कि सभी संगीतमय है। साम तथा गान्धर्व दोनों का प्रचार था। विभिन्न वेदों के शिक्षा ग्रन्थों का निर्माण हो चुका था। यह काल भी संगीत में महिलाओं की अत्यन्त सुन्दर भागीदारी का दर्शन करवाता है। श्रीकृष्ण का संगीत पर पूर्ण अधिकार था। अतः उनके साथ गोपियों का रासलीला करना, वंशी वादन सुनने को आतुर होना उनकी संगीत प्रतिभा का संकेत देता है।

नारियां संगीत द्वारा आध्यात्मिक प्रवृति का विकास करती थी। संगीत ने नारियों को सबल भी बनाया। उनमें आत्मज्ञान का प्रकाश फैलाकर लक्ष्य का निर्देश किया। राजाओं के पाठ्यक्रम में ललित कलाओं के साथ गान्धर्व का अन्तर्भाव था। राजस्त्रियों तथा अन्तःपुर की अन्य महिलाओं के लिये संगीत शिक्षा का विशेष प्रबन्ध था। वृहन्नला रूप धारी अर्जुन की नियुक्ति विराट की राज कन्या तथा राजस्त्रियों की संगीत शिक्षा के लिये किये जाने का उल्लेख महाभारत में है। विराट राज की आज्ञा पाकर वृहन्नला ने विराटसुता को गीत, वादित्र तथा नृत्य की सशास्त्र शिक्षा दी थी। अतः महिलाओं एवं संगीत का परस्पर उन्नत एवं उत्कृष्ट सम्बन्ध इस काल में दृष्टव्य है।

मध्यकाल :–

प्राचीन संगीत कला का संबंध पूर्णतया धर्म के साथ जुड़ा हुआ था। चूंकि संगीत, सभ्यता और संस्कृति की एक परम उदात्त उपलब्धि है इसीलिये समय–समय पर अनेक प्रकार के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक प्रभाव भी इस पर पड़ते रहे।

मध्यकाल में उत्तर भारत पर मुसलमानों के आक्रमण लगातार होने से मानव जीवन की स्थिरता नष्ट हो रही थी। विदेशों से आये हुये श्रृंगारिक एवं भोग–विलास–प्रधान वातावरण का समावेश भारतीय संगीत में होने से संगीत की पवित्रता समाप्त होने लगी। देश एवं जनता के चरित्र में अज्ञानता, विलासिता एवं दुर्गुणों का प्रवेश होने लगा। यद्पि कुछ मुसलिम सुलतान संगीत प्रेमी भी थे। मुसलिम नारियां भी संगीत प्रेमी थी, पर वे सार्वजनिक रूप से संगीत समारोहों में भाग नहीं लेती थी। मुसलिमों के आने से पर्दा प्रथा का प्रवेश भारत में

हुआ। इस प्रथा ने भारतीय नारियों की स्वतन्त्रता में रूकावट डाली। अतः भारतीय नारियों की संगीत शिक्षा एवं संगीत विकास रूक गया। विदेशी संगीत का प्रभाव भारतीय संगीत पर पड़ रहा था। कव्वाली, गज़ल, ख्याल, ठुमरी आदि प्रचलित हो गये थे।

मुगल राज्य के द्वितीय चरण में संगीत का उत्कर्ष प्रारम्भ हुआ। जिसमें महिलाओं में उत्कृष्ट योगदान दिया। ग्वालियर के महाराजा मानसिंह की पत्नी रानी मृगनयनी, जिन्होंने संगीत के उत्थान में जो योगदान दिया, उसके प्रमाण आज भी मौजूद है। बैजू बावरा मानसिंह के दरबारी गायक थे। उनसे रानी मृगनयनी संगीत शिक्षा लेती थी। गूजरी तोड़ी, मंगल गूजरी राग रानी मृगनयनी के नाम पर ही बने। इन्हीं के कारण अन्य नारियां भी गाने बजाने में प्रवीण थी।

इसी प्रकार अकबर काल में उनके दरबार के महान रत्न तानसेन ने भारतीय संगीत की अभिवृद्धि के लिये बहुत प्रयत्न किया। स्वामी हरिदास, सूरदास, बैजू, तानसेन आदि अनेक महान संगीतज्ञों के नाम है, जिन्होंने संगीत की साधना द्वारा अपना नाम अमर कर लिया। प्राचीन काल से ही नारियां संगीत की साधना करती आ रही हैं, परन्तु उनके नामों का उल्लेख बहुत कम वर्णित हुआ है। पर यहां दो ऐसी उच्च कोटि की महिला संगीत साधिकायों का नाम अवश्य वर्णन योग्य है, जिन्होंने भारतीय संगीत को ऊँचा उठाने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। एक थी तानसेन की पुत्री सरस्वती, जो गायन, वादन में सिद्ध हस्त थी। दूसरी थी – मीराबाई जो गायन, वादन, नृत्य में निपुण थी।

अकबर बादशाह के कहने पर तानसेन को दीपक राग गाना पड़ा तो तानसेन की पुत्री ने मेघ राग गाकर उनके जीवन की रक्षा की। यह घटना नारियों की संगीत साधना का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मीरा अति गुणी शास्त्रीय गायिका व कवियत्री थी। झांझ, करताल व इकतारा के रूप में वाद्य प्रयोग और नृत्य के साथ गायन करते हुये, संगीत के तीनों रूपों द्वारा साधना करने का श्रेय मीरा बाई को है। मीरा ने काव्य, संगीत आदि की शिक्षा बचपन से ही पाई थी। उनके पदों में लगभग 90 राग रागिनियों का प्रयोग मिलता है। आपने 'मीरा मल्हार' नामक राग तथा भक्तिपूर्ण गीतों की रचना की। मीरा के संगीत से भारतीय नारियों को सबसे उत्तम लाभ यह हुआ कि जो नारियाँ मुसलिम प्रभाव में जा रही थीं, मीरा के प्रभावशाली संगीत ने उनके अन्दर नवचेतना जागृत की। उन्होंने भारतीय संगीत के कुछ रूप को अपनाना प्रारम्भ किया, जिस कारण उच्च चारित्रिक गुणों का पुनः स्थापन हुआ। इस महिला संगीत रत्न का नाम भारतीय संगीत के इतिहास में सदैव उच्च रहेगा।

आधुनिक काल :–

15वीं शताब्दी के अन्त तक भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव पड़ चुकी थी। अंग्रेजी सभ्यता के कारण भारतीय संगीत पतन की ओर अग्रसर होने लगा था। भारतीय संगीत के पवित्र और आध्यात्मिक रूप को विनष्ट कर दिया गया। घराना परम्परा का जन्म हुआ। कला का मूल्य केवल व्यवसायिक ही रह गया। कुलीन घरानों की प्रतिभाशाली स्त्रियां इस क्षेत्र में आने से संकोच कर रही थी, तब विष्णु द्वय ने संगीत के उत्थान के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किये। संगीत कला में पुनः उच्च नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिये उन्होंने संगीत सम्मेलनों के आयोजन एवं संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना की। तत्पश्चात् अनेक प्रतिभाशाली महिला कलाकारों ने भी अपनी अभ्यास शक्ति, लग्न एवं कठिन परिश्रम के दम पर भारतीय शास्त्रीय संगीत के

प्रचार–प्रसार में उत्कृष्ट योगदान दिया, साथ ही उच्च चारित्रिक गुणों का विकास भी किया। यहां ऐसी ही कुछ विलक्षण महिला कलाकारों का वर्णन करेंगे, जिनका योगदान अद्वितीय है।

शास्त्रीय गायिकायें :–

सुश्री गंगूबाई हंगल, सुश्री हीराबाई बड़ोदेकर, सुश्री केसरबाई केरकर, सुश्री किशोरी अमोनकर, सुश्री कोशिकी चक्रवर्ती, श्रीमती सुलोचना बृहस्पति

शास्त्रीय वादिकायें :–

श्रीमति अन्नपूर्णा देवी (सुर बहार), श्रीमति शरण रानी (सरोद), श्रीमति डॉ. एन. राजम (वायलिन), सुश्री अनुराधा पाल (तबला), डॉ. रेणु जौहरी (तबला), डॉ. सरोज घोष (सितार), डॉ., पुष्पा बसु (सितार), डॉ. पंकज माला शर्मा (सितार) आदि।

शास्त्रीय नृत्यकार :–

सुश्री दमयन्ती जोशी, सुश्री मृणालिनी साराभाई, श्रीमती रूक्मिणी देवी अरून्डेल, सितारा देवी, आदि।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त वर्णन से प्रत्येक युग में संगीत द्वारा उच्च चारित्रिक मूल्यों के विकास में महिलाओं की भूमिका प्रशंसनीय रही है परन्तु कुछ बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. महिला संगीतकारों पर लिखित सामग्री का अभाव है। बड़ी संख्या में महिलायें शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय व उत्कृष्ट योगदान दे रही है। इस विषय पर महिला संगीत कारों पर विशिष्ट सामग्री तैयार और एकत्र की जाये और सुरूचिपूर्ण ढंग से उसका प्रकाशन हो।
2. इससे न केवल शास्त्रीय संगीत के साधकों एवं श्रोताओं की संख्या में वृद्धि होगी, बल्कि शास्त्रीय संगीत के प्रचार, प्रसार एवं विकास में पर्याप्त सहायता मिलेगी तथा भावी पीढ़ी में उच्च चारित्रिक मूल्यों का विकास भी होगा।

अतः इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। भावी शोध छात्र भी इस ओर कार्य करने की ओर प्रेरित हों, ताकि भावी पीढ़ियां महिला कलाकारों के उच्च चारित्रिक गुणों को अपना सकें तथा अपने जीवन को उन्नत बना सकें।

संदर्भ :–

1. संगीत रत्नाकर : शार्गदेव, डॉ. आर.के. श्रृंगे प्रेमलता शर्मा, मुंशी राम मनोहर लाल पब्लिशर्स प्रा.लि, नई दिल्ली, 1978
2. सामगान : उद्भव, व्यवहार एवं सिद्धान्त, शर्मा डॉ. पंकजमाला–कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन, प्र.स. 1996
3. भारतीय संगीत का इतिहास, जोशी उमेश, मानसरोवर प्रकाशन, आगरा, 1984
4. हमारे प्रिय संगीतज्ञ – प्रो. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद 1993

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 154-158
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में मीराबाई का योगदान

–शाहबाज आलम
शोधार्थी (यू0जी0सी0–नेट), विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

मध्यकालीन भारत में कृष्ण भक्ति शाखा की हिन्दी की महान कवयित्री मीराबाई थी। वे भक्ति आन्दोलन के सबसे लोकप्रिय भक्ति–संतों में एक थी। भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित उनके भजन आज भी उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय है और श्रद्धा के साथ गाये जाते हैं। मीराबाई का जन्म मेड़ता जिले के कुदकी नामक ग्राम में 1498 ई0 में हुआ था।[1] उनका विवाह सन् 1516 ई0 में राणा साँगा के ज्येष्ठ पुत्र युवराज भोजराज से हुआ था। भोजराज की मृत्यु 1518–1523 ई0 के बीच में ही कभी अपने पिता के जीवन–काल में ही हो गई थी। वे बचपन से ही बड़ी धर्मालु थीं और अपने पिता एवं पितामह की तरह वैष्णवों के कृष्ण सम्प्रदाय की अनुगामिनी थी।[2] अपने पति की मृत्यु के पश्चात् वे पूर्णरूप से धार्मिक कृत्यों में लग गयी।

मीराबाई अब पूर्ण रूप से भक्तिमय जीवन व्यतीत करने लगीं और भक्ति भावना से ओत–प्रोत हो उठीं। अपनी कृष्ण–भक्ति और भक्तों की आश्रयदाता के रूप में उनकी ख्याति दूर–दूर तक फैल गयी और साधु–संत, स्त्री–पुरूष दूर–दूर से चित्तौड़ आने लगे।[3] राणा विक्रमादित्य वंश की राजकुमारी मीरा का किन्हीं भी अन्य लोगों के साथ, चाहे वे कितने ही भक्त क्यों न हो, इस प्रकार स्वच्छन्दता से मिलना–जुलना पसन्द न था। इसने मीरा को विष द्वारा मारने का प्रयास किया। सौभाग्य से मीरा पर विष का कोई प्रभाव न पड़ा।[4] राणा से तनाव उत्पन्न होने के कारण मीरा अपने चाचा वीरमदेव के पास रहने लगीं। बीरमदेव मेड़ता के सरदार थे। यहाँ भी उनका नित्य का कार्यकाल चलता रहा। वे तपस्या, कीर्तन और नृत्य में भाव विभोर रहने लगी। मीरा अन्य साधु सन्तों और स्त्रियों की मण्डली में भी कीर्तन करती थी।[5] इस प्रकार मीरा ने मेड़ता में कुछ वर्ष काटे, लेकिन जब जोधपुर के राजा मालदेव ने मेड़ता पर आक्रमण कर उसे जीत लिया तो मीरा ने द्वारका की तीर्थ–यात्रा करने का निश्चय किया। द्वारका में उन्होंने अपना सारा जीवन भक्तों की तरह व्यतीत किया।[6]

मीरा के पदों का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर हमें चार–पाँच विशिष्ट धाराओं के पद मिले हैं। सबसे पहले नाथ सम्प्रदाय के योगियों से प्रभावित होकर उन्होंने जोगी के सम्बन्ध में इस प्रकार के पद लिखे –

जोगी मत जा मत जा मत जा पाँव पडू मैं तेरी।

उसके पश्चात् संतों के प्रभाव में आकर उन्होंने सांसारिक नश्वरता के नैराश्य पूर्ण गीत गाये, और वह निराशा इन शब्दों में व्यक्त हुई –

इस देही का गरव न करना, माटी में मिल जाती।
ये संसार चहर की बाजी, साँझ पड़या उठ जासी।।

आगे चलकर इसी प्रभाव के अनुरूप रहस्योन्मुख विरह के पद बनाये फिर भागवत् के प्रभाव से श्रीकृष्ण लीला और विनय के पद गाये। इनके अतिरिक्त कृष्ण काव्य के विप्रलम्भ श्रृंगार का आभास भी उनमें मिलता है और अन्त में कृष्ण के प्रेम में तन्मय होकर उन्होंने माधुर्य भाव से उनकी उपासना करते हुए निर्भय घोषणा की–

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा ना कोई।[7]

हिन्दी साहित्य में महत् गीति–काव्य की रचना करने वालों में मीरा अद्वितीय है। पद–रचना में सूरदास और विद्यापति ने भी अद्‌भुत कौशल प्रदर्शित किया है, परंतु सीधे हृदय पर चोट करने वाली रचना मीरा के कँठ से निसृत हुई है। जहाँ सूर और विद्यापति के पदों में ब्रज को गोपियों अथवा राधा के मिलन वेदनामयी अनुभूतियों की सरस अभिव्यक्ति हुई है। वहाँ मीरा के पदों में स्वयं मीरा की विरह–व्यथा साकार हो उठी है।[8] सूरदास के मुक्तक पदों और गीतियों के भीतर एक कथा के सहारे उन पदों का सौन्दर्य परखा जा सकता है, इसी प्रकार विद्यापति के पदों में भी नायिका–भेद की परम्परा का सहारा लिए बिना उनकी रमणीयता भली प्रकार स्पष्ट नहीं हो पाती। परन्तु मीरा के पदों में कथा की न कोई अंतर्धारा है, न किसी साहित्यिक परम्परा का सहारा है, वहाँ मीरा की भावना सीधे मीरा के हृदय से, उनके अंतर्तम प्रदेश से, निकलती है, इसीलिए उसका प्रभाव भी अधिक पड़ता है। मीरा के पदों में सरलता है, स्पष्टता है और है सीधापन। परन्तु उन पदों की सबसे बड़ी विशेषता है स्वच्छंदता। मीरा की भक्ति–भावना की स्वच्छंदता ने, जिसमें लोक–लाज नहीं थी, समाज का भय नहीं था, काव्य–कला में भी इसी प्रकार की स्वछंदता ढूँढ़ ली थी। भाषा, छंद और काव्य–परंपरा सब में मीरा ने एक स्वाभाविक स्वच्छंदता प्रदर्शित की है।[9]

मीरा ने बहुत से पदों की रचना की थी। वे सभी भजन थें इनमें नरसी म्हारो प्रमुख हैं। मीरा की प्रसिद्धि मुख्य रूप से उनके भजन ही है। इनकी भाषा ब्रजभाषा और राजस्थानी में रचे गये हैं। उनके कुछ पद गुजराती में भी है। ये भजन कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति भावना से ओत–प्रोत है।[10] वे इतने मधुर है कि सुनने के साथ ही विरह, प्रेम और भक्ति की कोमल भावनाएँ उठ आती है। मीरा के सभी भजन कृष्ण को सम्बोधित कर लिखे गये हैं। उन्हें अपने जीवन के हर कार्य में कृष्ण के सामने होने की अनुभूति होती रहती थी। उनके पद भक्ति–भावना और भक्ति आवेश से परिपूर्ण है।[11] मीराबाई द्वारा रचित कुछ रचनाएँ हैं – गीतगोविंद की टीका, नरसी जी का मायरा, राग, सोरठ का पद, मलार राग, राग गोविंद, सत्ययामानु रूसणं, मीरा के गरबी, रूकमणीमंगल, नरसी मेहता की हुंडी, चरीत, स्फुट पद। इनमें से कुछ पद तो मीराबाई द्वारा रचित है एवं लोकप्रचलित जनश्रृतियों अथवा किवदंतियों के आधार पर मीरा के नाम से संद्ध हो गयी है।[12] मीरा के विचार सूफियों के समान है। मीराबाई की तुलना सुप्रसिद्ध सूफी स्त्री राबिया से की जा सकती है। राबिया ईश्वर रूपी पति से कहती है – ''हे नाथ! तारे चमक रहे हैं, लोगों की आँखे बन्द हो चुकी है, राजाओं ने अपने द्वार बंद कर लिये हैं, प्रत्येक प्रेम अपनी प्रियतमा के साथ एकान्त सेवन कर रहा है तथा मैं यहाँ अकेली आप के साथ हूँ।''[13]

''नरसी जी का माहरा'' मीराबाई द्वारा रचित एक प्रमुख ग्रंथ है। इस ग्रंथ में गुजरात के प्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता की पुत्री कुंवरि बाई के सीमान्त के अवसर पर भात भरने की कथा है। सम्पूर्ण ग्रंथ पद में है तथा मिथुला नाम की सखी को सम्बोधित करके लिखा गया है। साहित्यिक दृष्टि से इसका अधिक मूल्य नहीं है। साधारण बोलचाल की भाषा में दो सखियों के संवाद रूप में लिखा हुआ यह ग्रंथ बिल्कुल साधारण कोटि का कहा जा

सकता है। कई स्थलों पर नरसी जी की अलौकिक शक्ति के वर्णन में कुछ रोचकता अवश्य है, पर वह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है।[14] ''गीत गोविन्द की टीका'' नामक ग्रंथ अभी उपलब्ध नहीं है। कुछ विद्वानों की धारणा है महाराणा कुम्भा की रसिक प्रिय टीका को ही मीरा की रचना मान लिया गया है। साहित्यिक दृष्टि से जिन रचनाओं का अधिक महत्व है वे हैं मीरा के फुटकर पद।[15] इन फुटकर पदों का संग्रह जनता में प्रचलित गीतों के आधार पर किया गया है। बंगाल के भी कृष्णानद देव व्यास के 'राग कल्यद्रुम' में सबसे पहले मीरा के पदों का संग्रह मिलता है जो संख्या में लगभग 45 पद थे। ये पद बंगाल, गुजरात और राजस्थान में प्रचलित गीतों से संग्रह किये गये थे। राजपूताने में हिन्दी पुस्तकों की खोज में दो ऐसे संग्रह मिले थे जिनमें मीरा के पद भी संग्रहीत थे। ये संग्रह भी सम्भवतः जनता में प्रचलित के आधार पर हुए थे और ऐतिहासिक दृष्टि से 'रागकल्पद्रुम' से कुछ प्राचीन थे।[16]

मीराबाई के भजन' नामक पुस्तिका में मीरा के नाम से प्रचलित कुछ थोड़े से पदों का संग्रह था जिनमें अधिकांश मीरा की प्रामाणिक रचनाएं न थी। एक वृहत्त काव्य–संग्रह ग्रंथ 'वृहत काव्य दोहन' के नाम से दस जिल्दों में प्रकाशित हुआ जिसमें मीरा के गुजराती पदों का संग्रह था। ये पद संख्या में दो सौ से ऊपर थे। इसके बाद 'मीराबाई की शब्दावली' नाम का एक प्रामाणिक संग्रह ग्रंथ प्रकाशित हुआ जिसमें सब मिलाकर 168 पद है। इन पदों में संतों की परम्परा से प्रभावित पद ही अधिक संख्या में मिलते हैं।[17]

हिन्दी के भक्त कवियों में मीराबाई का नाम विशिष्ट है। इस महान कवि के प्रति हिन्दी संसार की उदासीनता अद्‌भुत अवश्य है, परन्तु आश्चर्यजनक नहीं। जिसकी कविता में साहित्यिक कृत्रिमता का लेश भी नहीं, जिसने जनसमुदाय को आकर्षित करने का कोई प्रयास नहीं किया, केवल अपनी भक्ति भावना के उल्लास में भक्ति और प्रेम के मधुर गीत गाए, अपने विरह–विधुर हृदय का भार ही हलका किया, जिसकी कोई शिष्य परम्परा नहीं, जिसका कोई पंथ अथवा सम्प्रदाय नहीं, उसके प्रति यदि हिन्दी संसार उासीन है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। परंतु हिन्दी प्रान्त के बाहर हिन्दी के इस मधुर कवि का सबसे अधिक मान और प्रचार है – गुजरात और बंगाल में मीरा के पद घर–घर गाए जाते हैं, राजस्थान की तो मीराबाई सर्वस्व ही है। फिर सूर, तुलसी, कबीर और विद्यापति के युग की भक्ति–भावनाओं का जैसा शुद्ध और सुन्दर स्वरूप मीरा के पदों में मिलता है, वैसा अन्यत्र कहीं दुर्लभ और अप्राप्त है।[18] मीराबाई के पद वर्तमान रूप में तीन भिन्न भाषाओं में मिलते हैं। कुछ पदों की भाषा पूर्ण रूप से गुजराती है और कुछ की शुद्ध ब्रजभाषा है, शेष पद राजस्थानी भाषा में पाये जाते हैं, जिनमें ब्रज–भाषा का भी पुट मिला हुआ है।[19] मीरा के मूल पद किस एक अथवा किन–किन भिन्न भाषाओं में लिखे गये थे, परन्तु इस समय उनमें स्पष्ट तीन भाषाएँ हैं। ऐसा भी सम्भव है कि सचमुच ही तीन भिन्न भाषाओं में लिखी गई हो क्योंकि मीरा गुजरात में काफी दिनों रही थी, ब्रज में भी उन्होंने लगभग पाँच–छः वर्ष बिताए थे और राजस्थान में तो वे पैदा हुई थी, वही ब्याही गई थी और जीवन का अधिकांश भाग वही बिताया था।[20]

ब्रजभाषा तथा ब्रज–मिश्रित राजस्थानी भाषा में विरचित मीरा के पदों में भाषा का आडम्बर तनिक भी नहीं है। जायसी, कबीर तथा अन्य संत कवियों की भांति मीराबाई भी परिष्कृत तथा पूर्ण साहित्यिक भाषा नहीं लिख सकती थी, ऐसी बात नहीं है, वरन् इसके विपरीत कुछ पदों में मीरा ने ऐसी परिष्कृत तथा शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है जो पिछले खेवे के कवियों के लिए आदर्श मानी जा सकती है। मीराबाई के जितने

भी पद है जो सरलता और स्पष्टता, मधुरता और कोमलता में हिन्दी साहित्य में अतुल है। सूर और मतिराम, रसखान और धनानन्द की ब्रजभाषा भी इतनी मधुर और स्पष्ट नहीं है। अनगढ़ और बीहड़ चट्टानों पर उछलती हुई जल की धारा जिस प्रकार मधुर संगीत उत्पन्न करती है, मीरा की स्वाभाविक भाव–धारा भी इन अनगढ़ और स्वाभाविक शब्दों में उसी प्रकार का संगीत उत्पन्न करती है। यह स्वच्छंद संगीत धारा केवल मीरा के पदों में ही मिल सकती है जो चमक और अनुप्रास के आडम्बर से उत्पन्न हुई संगीत से कम मधुर नहीं है। मीरा की भाषा में अलंकरण नहीं, वरन् एक स्व आवेग है। भाव की स्वच्छंदता के साथ स्वाभाविकता, परिष्कार के अलंकरण मीरा की भाषा की विशेषता है।[21]

इस प्रकार मीरा का नैसर्गिक व्यक्ति हिन्दी काव्य जगत में शाश्वत बन गया है। उनकी चरम अनुभूतियों की सरस अभिव्यक्तियों ने उन्हें अमरता का वरदान दिया है। मीरा कवि नहीं थी, यह कथन काव्य रस से अनभिज्ञ उन कृत्रिम व्यक्तियों की मूढ़ता का परिचायक है जो सचेष्ट छंद रचना तथा अलंकार विधान को ही कला मानते हैं। मीरा की कला उनकी सरस अनुभूतियों तथा आडंबरहीन सरलता में निहित है। उनका काव्य उनके हृदय की अनुभूतियाँ है, अन्वेदना का चीत्कार मीरा की गम्भीर विरहानुभूतियों में व्यंजित है। जायसी, सूरदास तथा विद्यापति की शास्त्रगत परम्पराबद्ध विरहोक्तियां विदाधता तथा चमत्कार की दृष्टि से चाहे मीरा की कविता विरह–व्यंजना से आगे हो, परन्तु उनका बहिर्मुखी दृष्टिकोण मीरा के आभ्यंतरिक विरह की अनुभूतियों की उत्कृष्टता को स्पर्श भी नहीं कर सकता। मीरा चिर–आकुल विरहिणी थी, उनके गीतों में व्यक्त विरह–भावना अनुपम अतुलनीय है।[22]

मीरा के पदों में सबसे अद्‌भुत और अपूर्व कौशल यही है कि उनकी समस्त रचना कला के आडम्बर से रहित है। जैसा कि गुजराती के प्रसिद्ध लेखक श्री कन्हैयालाल मुंशी ने लिखा है, कलाविहीनता ही मीरा की सबसे बड़ी कला है। वकोक्ति जीवितकार ने कवियों की रूवि और प्रवृति–भेद के अनुसार तीन मार्गों की कल्पना की है। कुछ कवि सौकुमार्य प्रवृत्ति के होते है और उनका मार्ग सुकुमार मार्ग कहा गया है, कुछ कवि वैचित्र्य से रूचि रखते हैं और विचित्र मार्ग के पथिक है, कुछ इन दोनों से मध्यम रूचि के होते हैं और अपनी कविता में इन दोनों का समन्वय करते हैं। हिन्दी–साहित्य के अधिकांश कवि विचित्र मार्ग के पथिक है। रीतिकालीन साहित्य में वकोक्ति और वैचित्र्य का ही प्राधान्य है। भक्तिकाल के अधिकांश कवियों ने मध्यम मार्ग का अवलम्बन किया है। सुकुमार मार्ग के पथिक कवि हिन्दी में बहुत ही कम है और इन कवियों में मीराबाई सर्वांगणी है।[23]

निष्कर्ष :–

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हिन्दी के श्रेष्ठ कवियों में मीराबाई का स्थान बहुत ऊँचा है। गीति–काव्य की रचना करने वालों में हिन्दी के तीन कवि–विद्यापति, सूर और मीरा बहुत सफल हुए हैं। मीरा की रचनाएँ परिमाण में अधिक नहीं है, परंतु जो थोड़ी रचनाएँ प्राप्त है, गेयता और गम्भीरता, सरलता और स्पष्टता में वे अतुलनीय है। मीरा का साहित्यिक मूल्य सूर और तुलसी के समकक्ष कदापि नहीं है क्योंकि उन्होंने सूरसागर की भांति अथाह और असीम रस–सागर का निर्माण नहीं किया और न 'रामचरित मानस' की भांति पवित्र मानस की रचना की, परन्तु गिरिश्रृग से उतरने वाली निर्मल निर्झरिणी के स्वच्छंद प्रवाह और कलकल शब्द में यदि कोई सौन्दर्य है तो मीरा के पदों में हमें वही सौंदर्य मिलता है। मीराबाई का नाम भारत के महान भक्तों में है और इनका गुणगान नाभा जी, ध्रुवदास, व्यास जी, मलूकदास आदि सभी भक्तों ने किया है।

संदर्भ सूची :-

1. श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृ0–50
2. अहमद, लईक, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1976, पृ0–46
3. शुक्ल, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2016, पृ0–145
4. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1985, पृ0–120
5. सिन्हा, सावित्री, मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 1953, पृ0–106
6. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद, राजपूताने का इतिहास, महामहोपाध्याय राय बहादुर साहित्य, अजमेर, 1930, पृ0–770
7. लाल, श्रीकृष्ण, मीराबाई, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1970, पृ0–151
8. मिश्र, गणेशबिहारी, मिश्रबंधु–विनोद, गंगा–पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, 1926, पृ0–266
9. लाल, श्रीकृष्ण, पूर्वोद्धृत, पृ0–175
10. चौबे, झारखण्डे, मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1979, पृ0–408
11. श्रीवास्तव, अशीर्वादलाल, पूर्वोद्धृत, पृ0–51
12. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, नयी दिल्ली, 2018, पृ0–221
13. स्मिथ, मार्गरेट, राबिया दि मिस्टिक, आदम पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2016, पृ0–27
14. सिन्हा, सावित्री, पूर्वोद्धृत, पृ0–131
15. चन्द्र, सतीश, मध्यकालीन भारत (राजनीति, समाज और संस्कृति), ओरियंट ब्लैक स्वॉन प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2015, पृ0–188
16. देवी प्रसाद, मुंशी, मीराबाई का जीवनचरित्र, ललिता प्रसाद शुक्ल (सम्पा0) बंशीय हिन्दी परिषद, कलकत्ता, 1954, पृ0–27
17. लाल, श्रीकृष्ण, पूर्व्रद्धृत, पृ0–85
18. वही, पृ0–87
19. खुराना, के0एल0, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2019, पृ0–107
20. अहमद, लईक, पूर्वोद्धृत, पृ0– 47
21. लाल, श्रीकृष्ण, पूर्वोद्धृत, पृ0–176–178
22. सिन्हा, सावित्री, पूर्वोद्धृत, पृ0–156
23. लाल, श्रीकृष्ण, पूर्वोद्धृत, पृ0–180

मो.–8709110968

E-mail : shahbazalam136136@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 159-163
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

धर्म की वास्तविक अवधारणा

-डॉ. निशा चौहान
पीएच.डी. शोधार्थी एवं सहायक आचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीमा (रोहड़)

शोध सार :-

धर्म अखिल ब्रह्माण्ड के अधिपति द्वारा उच्चारित या निःश्वासित ब्रह्माण्ड के नियमन के लिए उत्तमोत्तम विधान है। भारत के प्राचीन महर्षियों ने धर्म को संकुचित अर्थ में नहीं लिया था। धर्म एक मत या सम्प्रदाय का द्योतक नहीं प्रत्युत वह जीवन का राजमार्ग या आचारण की संहिता माना जाता रहा है। ऋषियों ने वेदों पर आधारित धर्म को सनातन धर्म से सम्बोधित किया था। जो शावत है, वही सनातन है जीवति धर्मों में यह सबसे पुराना धर्म है। भारतवर्ष ने धर्म को मानव जीवन के साथ जोड़ दिया। यह मनुष्य का नियामक बन गया। सुख हो, दुःख हो, समृद्धि हो या विपत्ति हो, लौकिक एवं पारलौकिक विचारधारा हो सर्वत्र धर्म के नियम है। मानव से सम्बन्धित सभी क्रिया कलापों को धर्म ने इस तरह व्याप्त कर लिया कि सम्पूर्ण जीवन ही धर्ममय बन गया है।

धर्म शब्द की व्युत्पति घृष धारणे धातु से 'मन' प्रत्यय लगाने से होती है। 'धरति धारयति लोकम' अर्थात धर्म वह जो संसार को धारण करे। महाभारत में कहा गया है कि धारण करने को शक्ति के कारण धर्म होता है। मानवता जिसे धारण करती है, मानवता जिस तत्व से पतित होने बचती है, वही धर्म है। वेदों में सम्पूर्ण मानव जाति के पूर्ण विकास के सिद्धान्तों को धर्म के नाम से अभिहित किया गया है। इसके उपदेश एवं आदेश में ज्ञान एवं कर्म की शिक्षा देते हैं। जिससे मनुष्य जाति पतनोन्मुख नहीं हो सकती। वैशेषिक दर्शन के रचयित महर्षि कणाद ने कहा है कि जिससे इस लोक में उन्नति और परलोक में मोक्ष की प्राप्ति हो वह धर्म है। अतः जिस धर्म में असीम सृष्टि के कल्याण की भावना निहित हो और विश्व के प्राणिमात्र के प्रति परस्पर प्रेम, मैत्री एवं सौहार्द की भावना अभिव्यक्त हो, जो मानव को मानव से जोड़ती है और उसे विश्वमानव बनाती है वहीं वास्तविक धर्म है।

शोध पत्र :-

भारतीय संस्कृति का मूल आधार धर्म है। भारत धर्मप्राण देश है। धर्म का मर्म वेद एवं धर्मशास्त्र ही बतलाते हैं। मूलतः हमारा धर्म वेद और धर्मशास्त्र द्वारा ही प्रतिपादित है। वैदिक एवं धर्मशास्त्रीय ग्रंथ लोकातीत आर्शचक्षुर्मण्डित द्रष्टाओं की वाणी हैं जो सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक नैतिकता से परिपूर्ण है। वैदिक धर्म मनीषियों के प्रातिभचक्षु साक्षात्कृत तथ्यों का प्रकाश पुंज है जो गहन अन्धकारको भी ज्योतिर्मय बना देता है। वेदों में सम्पूर्ण मानवजाति के लिए पूर्ण विकास (अर्थात् पूर्ण ब्रह्मरूपता) के सिद्धान्त प्रतिपादित है। उन्नयन के इन सिद्धान्तों को धर्म नाम से अभिहित किया गया है वेद आर्यजाति के पठनीय धर्मग्रंथ है, ये ज्ञान का आगार है। इनके उपदेश एवं आदेश हमें ज्ञान एवं कर्म की शिखा देते हैं, जिससे मनुष्य जाति पतनोन्मुख नहीं हो सकती।

धर्म की व्युत्पति एवं अर्थ :-

भारतीय मनिषियों ने धर्म की व्याख्या इस प्रकार की है – धर्म शब्द की व्युत्पति धृज धारणे धतु से 'मन्' प्रत्यय लगाने से होती है। धरति धारयति का लोकम अर्थात धर्म व है जो संसार को धारण रे। वैदिक साहित्य में धर्मन शब्द धार्मिक विधि, धार्मिक क्रिया, निश्चित नियम एवं आचरण सम्बन्धी नियमों के रूप में प्रयुक्त हुआ। उपनिषद साहित्य में वैदिक अर्थों के अतिरिक्त धर्म शब्द वर्णाश्रम धर्म के अर्थ में प्रयुक्त हुआ और इस शब्द से आश्रम के आधार एवं नियमों का बोध होने लगा। ऐतरेय ब्राह्मण में धर्म शब्द समस्त धार्मिक कर्तव्यों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ। कालक्रम से धर्म शब्द का अर्थ व्यापक होता गया एवं आर्य जाति के आचार–विचार का परिचायक बन गया। मानव जीवन के लिए कोई अधिकार हो, कर्त्तव्य हो, अनुशासन एवं आचरण संहिता हो, समस्त नैतिक कार्य धर्म के अर्थ में समाहित हो गए। तैत्तिरीयोपनिषद् ऐसे ही धर्म की शिक्षा देता है। शिष्य को पठनोपरान्त गुरु से 'सत्यं वद धर्म चर..... आदि को शिक्षा मिलती थी।' उपर्युक्त सन्दर्भ में ही उपनिषद् का धर्म श्री प्रयुक्त हुआ है। भगवद्गीता का 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' का धर्म भी इसी अर्थ का द्योतक है। वेद में बुद्धि की पवित्रता देखी जा सकती है। प्रज्ञा का प्रकाश आत्मस्था किया जा सकता है। व्याकरण की दृष्टि से धर्म का अर्थ धारण करना, आलम्बन देना या पालन करना होता है। निरूक्त ने धर्म शब्द का अर्थ नियम बतलाया है। व्याकरण एवं निरूक्त के अर्थों को ध्यान में रखकर धर्म उस नियम को कहा जा सकता है जिसने विश्व को धारण कर रखा है। इस प्रकार ऋषियों की वाणी 'धर्म सर्व प्रतिष्ठित्म' सत्य प्रतीत होती है।

महाभारतकार ने धर्म की बड़ी रोचकता व्याख्या की है – धारण करने से इसे धर्म कहते हैं। धर्म प्रजा को धारण करता है। जो धारण से संयुक्त हो, धर्म है। 'वैशेषिक दर्शन के रचयिता महर्षि कणाद ने धर्म का लक्षण बताया है – 'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः' अर्थात जिससे इह लोक में उन्नति और परलोक में मोक्ष की प्राप्ति हो वह धर्म है। धर्म से सुख की प्राप्ति होती है। सुख भी दो प्रकार के होते हैं – 'इहलौकिक एवं पारलौकिक। कणाद के अनुसार जिस नियम से दोनों प्रकार के सुख प्राप्त हों वही धर्म है।' श्रीमद्भागवतकार ने धर्म का मूल वेद मानकर लिखा है कि वेद ने जो नियम बनाये है वही धर्म है, उसके विपरीत अधर्म है।[8] गौतम सूत्रकार ने कहा है 'वेदो धर्ममूलम्' अर्थात् वेद धर्म का उद्गम है। मनु का वाक्य भी इसी अर्थ की अभिव्यक्ति करता है कि 'वेदोऽखिला धर्ममूलम्' इस कारण महर्षि व्यास ने वेद–विहित कर्म को ही धर्म माना है। भारत के प्राचीन महर्षियों ने धर्म को संकुचित अर्थ में नहीं लिया है। धर्म एक मत या सम्प्रदाय का द्योतक नहीं था प्रत्युत वह जीवन का राजमार्ग या आचरण की संहिता माना जाता रहा है। ऋषियों ने वेदों पर अधारित धर्म को सनातन धर्म से सम्बोधित किया था। जा शाश्वत है, वही सनातन है। जीवित धर्मों में यह सबसे पुराना है।

भारत वर्ष ने धर्म को मानव जीवन के साथ जोड़ दिया। यह मनुष्य का नियामक बन गया। मनुष्य की प्रत्येक स्थिति और अवस्था में धर्म ने प्रकाश बिखेरा है। सुख हो, दुःख हो, समृद्धि हो या विपत्ति हो, लौकिक एवं पारलोकिक विचारधारा हो सर्वत्र धर्म के नियम है। मानव से सम्बन्धित सभी क्रियाकलापों को धर्म ने इस तरह व्याप्त कर लिया है कि सम्पूर्ण जीवन ही धर्ममय बन गया है। मनु ने धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी (तत्व ज्ञान) विद्या, सत्य, अक्रोध ये दस धर्म के लक्षण बताए हैं। श्रीमदभागवत में धर्म सम्बन्धी एक बड़ा ही रोचक प्रसंग आया है। युधिष्ठिर ने ब्रह्मपुत्र महर्षि नारद से पूछा कि वर्ण एवं आश्रम से संयुक्त सनातन धर्म क्या है? नारद जी ने नारायण द्वारा कथिन 30 आचारों का नाम गिनाया– जो धर्म है – सत्य, दया, तप, शौच, तितिक्षा

(क्षमा), ईक्षा (उचित अनुचित का ज्ञान) शम (मन को वश में रखना, दम (इन्द्रियों को वश में रखना), अहिंसा, ब्रह्मचर्य, त्याग (दान), स्वाध्याय (जप आदि), आर्जव, सन्तोष, समदृक सेवा (साधुओं की सेवा), 'ग्राम्येहो परम' (प्रवृति नामक धर्मो से निवृति), विपर्ययेच्छा (निष्फल क्रियाओं को समझना), मौन (बेकार की बाते नहीं करना), आत्मविमर्शन (शरीर से अलग आत्मा का ज्ञान), संविभाग (अपनी आवश्यकताओं से अधिक अनेको प्राणियों में बाँट देना), सभी प्राणियों में अपनी आत्मा को देखना, परमेश्वर के गुणों का श्रवण, कीर्तन, परमेश्वर का स्मरण परमेश्वर की सेवा, यज्ञ, परमेश्वर को प्राणिपात, उसके प्रति दास भाव, परमेश्वर के प्रति मित्रता एवं उसके प्रति समर्पण ये 30 कर्म मनुष्य के लिए श्रेष्ठ धर्म हैं जिनसे परमेश्वर सन्तुष्ट होते हैं।' चतुदर्श विधाओं में धर्म की इतनी विशद् व्याख्या की गई है कि धर्म ग्रंथों के सम्पर्क में आने के बाद मानव जीवन अप्रभावित नहीं रह सकता है। कतिपय विशिष्ट उद्धरणों के द्वारा मैंने यहां सामान्यर्मा का निरूपण करने की कोशिश की है।

सत्य :-

भारतीय धर्म ग्रन्था में सत्य की महिमा गाई गई है। उपनिषद् कहते हैं कि 'सत्यं वद सत्य बोलों सत्य के प्रति प्रमाद नहीं करना चाहिए। महाभारत तो सत्य के उदाहरणों से भरा पड़ा है। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा कि सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं और असत्य से बड़ा पाप नहीं है। सभी धर्मों का मूल सत्य ही है। इसलिए सत्य का लोप कभी न करें। वेद का मूल और धर्म की जड़ सत्य पर आश्रित है। हजारों अश्वमेध यज्ञ इसकी बराबरी नहीं कर सकते।

धृति (धैर्य) :-

धृति (धैर्य) के सम्बन्ध में हमारे धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि आपत्तिकाल में धर्म न छोड़ना धृति है। धैर्यवान् व्यक्ति वैसी इच्छा नहीं करते जो प्राप्त नहीं हो सकती। नष्ट हुई वस्तु के लिए वैसे व्यक्ति शोक भी नहीं करते हैं। प्रतिकूल भाग्य के अतिरिक्त भी विषाद की रेखा धैर्यवान् को विचलित नहीं करते हैं।

क्षमा :-

क्षमा की महिमा भी सत्य की तरह धर्मग्रन्थों में पाई गई है। क्षमा को धर्म का प्रमुख अंग माना गया है। कहीं कहीं तो इसका भी ब्रह्म स्वरूप वर्णन किया गया है। क्रोध से दूसरे के द्वारा की गई निन्दा, अनादर, क्षेप, अनादि दोषों की क्षमा है। क्षमा के सम्बन्ध में कश्यप मुनि ने कहा है कि क्षमा धर्म है, क्षमा सत्य है, वही परमेश्वर है। यह तपस्वियों का तेज है एवं उनका ब्रह्म है। जिसके पास क्षमा है वह किसी का शत्रु नहीं बन सकता। क्रोध तो क्षमशील को उत्पन्न ही नहीं होता।[14]

दम (मन को वश में करना) :-

मनसो महाभारत में दम का निरूपण करते हुए व्यास ने लिखा है कि 'दमन दमः' मन को दुष्ट विषयों से वारण करना दम है। तैत्तिरीय उपनिषद् में दम की बृहत् महिमा गाई गई है। ब्रह्मचर्याश्रम के सभी धर्म का मूल दम है ब्रह्मचारी दम में ही निरत रहते हैं तथा अपने पापों का नाश करते हैं। निश्चय ही दम मोक्ष का कारण है।

अलोभ :-

वेद, पुराण, उपनिषद्, स्मृति एवं अन्य धर्म ग्रन्थों में लोभ से बचने की शिक्षा दी गई हैं लोभ करना पाप है, किन्तु लोभ नहीं करना धर्म है। धर्म कार्य में रत मनुष्य का पतन लोभ के कारण होता है। यह लोभ कई पापों

को जन्म देता है। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से लोभ से उत्पन्न पापों के विषय में कहा है कि क्रोध, काम, मोह, माया, मान (गर्व), स्तम्भ (क्रिया में आसक्ति), पराधीनता, अक्षमा, लज्जा, त्याग, ऐश्वर्यनाश, चिन्ता, अपकीर्ति ये सब लोभ के फल है।

शौच :–

शौच के सम्बन्ध में मनुस्मृतिकार का कथन है कि 'शौचं संकरवर्जनम अशुद्ध वस्तु से सम्बन्ध न रखना शौच है मनुस्मृति में कहा गया है कि मृतिका और जल से तो बाहरी गन्दगी दूर की जा सकती है किन्तु मन को निर्मल करने के लिए सत्य, अहिंसा एवं दम आदि सद्गुणों को अपनाकर लोभ आदि को निकालना होगा। 'कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना धर्मसम्मत है। धर्मकार्यों में विषय–वासना इन्द्रियों के माध्यम से बाधा उपस्थित करती है। मनुस्मृति में इन्द्रिय निग्रह के सम्बन्ध में कहा गया है कि विषयों से इन्द्रियों का कारण किया गया तो सम्पति का मार्ग, नहीं किया तो विपत्ति का मार्ग मिलेगा। इनमें से किसी एक मार्ग पर चलना पुरुष की इच्छा के अधीन है।'

तप :–

तैतिरीयारण्यक में तप के सम्बन्ध में कहा गया है कि तप साधना है। व्रत, उपवास एवं नियम से शरीर को तपाया जाता है। तप के द्वारा ही इन्द्रादि देवता हुए हैं। स्वर्ग जाने का साधन तप ही है। ब्रह्मचारियों के लिए तप वेदाध्ययन है तो गृहस्थाश्रम के लिए दान ही तप है। वानप्रस्थ आश्रमवासियों के लिए उपवास तप है। संन्यासियों के मन की एकग्रता एवं इन्द्रियों का दमन ही तप है।'[19]

दया :–

भागवत् में परमात्मा की प्रीति प्राप्त करने का एक उपाय दया को भी बतलाया गया है कि सब भूतों पर दया, थोड़ी से वस्तु से संतोष एवं सभी इन्द्रियों का दमन, इन तीनों से परमात्मा तुरन्त प्रसन्न होते हैं।

अहिंसा :–

अहिंसा के सम्बन्ध में श्रुति कहती है 'न हिंस्यात् सर्वा भूतानि अर्थात किसी प्राणी की हिंसा न करे। देवल स्मृति कहती है कि अपने प्रतिकूल जो हो वह दूसरे के लिए नहीं करें। जो कार्य स्वयं को कष्ट दे सकता है वह दूसरों को भी दे सकता है, इसलिए अपने आचरण से किसी को दुःख न देना ही धर्म है।'[20]

श्रद्धा :–

श्रद्धा के सम्बन्ध में देवी पुराण में कहा गया है कि धर्मार्जन करने का यह एक प्रमुख सोपान हैं बिना श्रद्धा के किसी कृत्य का फल नहीं मिलता। बृहदारण्यक उपनिषद् में कहा गया है कि हृदय (अन्तःकरण) से श्रद्धा जन्म लेती है। यह हृदय की एक वृति है, इसलिए हृदय में प्रतिष्ठित है। मनु ने भी श्रद्धा के सम्बन्ध में कहा है कि जिनकी जैसे श्रद्धा होती है बुद्धि तदनुरूप हो जाती है। सात्विकी राजसी एवं तामसों श्रद्धा से पुरुष भी सात्त्विक, राजस एवं तामस होता है। इष्ट एवं पूर्त कर्म श्रद्धापूर्वक किए जाएं तो अक्षय फल को देते हैं। वैदिक धर्म की उदारता, सहिष्णुता एवं सत्यवादित के कारण ही भारतीय संस्कृति को गौरव प्राप्त हुआ है। इस प्रकार के वैज्ञानिक एवं आध्यात्मपरक वैदिक धर्म की किसी अन्य धर्म से तुलना नहीं की जा सकती। वास्तव में जो धर्म किसी धर्म का विरोध न करे वही धर्म है। जो धर्म दूसरे धर्म में बाधा डालता है वह धर्म नहीं कुधर्म कहलाता है। भारतीय धर्म में असीम सृष्टि के कल्याण की भावना निहित है और विश्व के प्राणिमात्र के प्रति परस्पर प्रेम, मैत्री

एवं सौहार्द की भावना ही अभिव्यक्त है। जो मानव को मानव से जोड़ती है और उसे विश्व मानव बनाती है। कल : पस्तीक भूल–दिल यही तो सनातन भारतीय धर्म का विण्डिम नाद है।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भ्रदाणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभावग भवेत!''

सदाचार :–

सदाचार को धर्म का अंग मानते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं अहिंसा, सत्य, असत्ये, शौच, इन्द्रिय, निग्रह, दान, दम (मन को वश में करना) दया और क्षम ये सबके लिए धर्म हैं। अपनी अवस्था, बुद्धि, धन, वचन वेश अध्ययन, कुल और कर्म के अनुसार सीधी और धूर्तता रहित चेष्टा से मनुष्य को रहना चाहिए। यज्ञ, आचार, दम, अहिंसा इत्यादि कर्मों का यही परम धर्म है कि योग (ब्रह्म विषयों से अपने चित की वृतियों का निवारण) से आत्मा का प्रत्यय। यह सभी धर्मों में उतम धर्म है। देश, काल, जाति का प्रभाव इस पर नहीं पड़ता, परम पुरुषार्थ (मोक्ष) का यही कारण है। ऋषि वशिष्ठ ने चुगलखोरी, ईर्ष्या, घमण्ड, अहंकार, अविश्वास, कपट, आत्म प्रशंसा, दूसरों को गाली न देना, प्रवंचन, लोभ, अपबोध, क्रोध, प्रतिस्पर्धा छोड़ने को सभी आश्रयों का धर्म बताया है। अतः धर्म का वास्तविक मूल वैदिक धर्म है जो वैदिक साहित्य एवं धर्म शास्त्रों में प्रतिपादित हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. धर्मशास्त्र का इतिहास, पृ 01
2. ऐ० ब्राह्मण, 8/17
3. तैत्तिरीयोपनिषद्, 1/11
4. भवदगीता, 3/35
5. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्मद्रुम), पृ 07
6. महाभारत कर्ण पर्व, 69
7. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्मद्रुम) 7
8. श्रीमद्भागवत –6/1/44
9. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्मद्रुम), पृ. 08
10. मनुस्मृति, 6/92
11. नारद उ० भाग –7/11/2/12
12. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म दुम), पृ0 120
13. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म द्रुम), पृ0 121
14. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म द्रुम), पृ0 122
15. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म द्रुम), पृ0 124
16. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म द्रुम), पृ0 126–127
17. मनुस्मृति, 5/103 18. मनुस्मृति, 2/88
19. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म द्रुम), पृ0 133
20. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म द्रुम), पृ0 135
21. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म द्रुम), पृ0 136
22. धर्मशास्त्र का इतिहास (धर्म द्रुम), पृ0 10

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 164-167
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

साहित्य, समाज और हिन्दी सिनेमा

–डॉ. नसरीन जान

Nishat, Srinagar, Jammu & Kasmir

साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं बल्कि उसका दीपक भी है, वह दशा ही नहीं दिशा भी दिखाता है। दूसरे शब्दों में साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, अपितु उसका प्रयोजन समाज का मार्गदर्शन करना भी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य को 'चित्तवृति का संचित प्रतिबिम्ब' मानते हैं। पंडित बालकृष्ण भट्ट ने साहित्य को 'जन समूह के ह्रदय का विकास माना है'। "मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विचारों ने साहित्य को जन्म दिया तथा साहित्य ने मानव की विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की, उसे सभ्य बनाने का कार्य किया। मानव की विचारधारा में परिवर्तन लाने का कार्य साहित्य द्वारा ही किया जाता है। इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र या समाज में आज तक जितने भी परिवर्तन आए, वे सब साहित्य के माध्यम से आए।"[1] एक साहित्यकार अपने साहित्य के लिए समाज से ही विषय–वस्तु लेता है। वह समाज में व्याप्त विसंगतियों, विकृतियों, कुरीतियों आदि के बारे में लिखता है। वस्तुतः साहित्य समाज से पूर्णतः प्रभावित होता है। किसी भी देश के साहित्य से वहां के लोक जीवन, संस्कृति, सभ्यता और भूतकाल में घटी घटनाओं को जाना जा सकता है। जब से मानव ने सोचना–विचारना, पढ़ना–लिखना और अपने आप को दूसरों पर प्रकट करना सीखा, तभी से साहित्य व समाज में आदान–प्रदान की प्रक्रिया भी प्रारंभ हुई। इस दृष्टि से दोनों का सम्बंध आत्मा और शरीर के जैसे है। जिस प्रकार से आत्मा अमर है उसी प्रकार से साहित्य भी अमर है। योननागोची के शब्दों में "समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है किन्तु साहित्य का नाश कभी नहीं हो सकता।"[2]

वर्तमान युग में मीडिया समाज के मनोरंजन व मार्गदर्शन करने का एक सशक्त माध्यम के रूप में सामने आया है। मीडिया में सिनेमा एक ऐसा दृश्य माध्यम है जिसने संचार व मनोरंजनपरक साधनों में से समाज को सर्वधिक प्रभावित किया। जवाहर लाल के शब्दों में "वर्तमान युग में यदि किसी कला माध्यम का प्रभाव सर्वाधिक है तो निरूसन्देह वे फिल्में हैं।"[3] डॉ. कालिदास नाग सिनेमा को परिभाषित करते हुए लिखते हैं– "अपने वास्तविक अर्थ में सिनेमा केवल गतिशील खिलौने का चित्र मात्र नहीं है प्रत्युत वह जनशिक्षण का बड़ा ही प्रभावशाली माध्यम है।"[4] वस्तुतः फिल्म नाटक का ही विकसित रूप है। यह एक ऐसा नाटक है जो जीवन के रंगमंच पर खेला जाता है तथा जिसकी प्रस्तुति वैज्ञानिक उपकरणों के द्वारा होती है। सत्यजित रे के अनुसार– "एक फिल्म चित्र है, फिल्म आंदोलन है, फिल्म शब्द है, फिल्म नाटक है, फिल्म एक कहानी है, फिल्म संगीत है, फिल्म हजारों अभिव्यक्ति श्रव्य तथा दृश्य आख्यान है।"[5] आज सिनेमा मनोरंजन और ज्ञान को विकसित करने का एक मुख्य साधन बनता जा रहा है। हमीदउद्दीन महमूद के शब्दों में– "सिनेमा जनता तक पहुंचने वाला सबसे अच्छा

माध्यम है।"[6]

साहित्य और सिनेमा दोनों ऐसे माध्यम हैं जिनमें समाज में परिवर्तन लाने की शक्ति सबसे अधिक है। इन दोनों का घनिष्ठ सम्बंध है। गुलज़ार के शब्दों में– "साहित्य और सिनेमा का सम्बंध एक अच्छे अथवा बुरे पड़ोसी, मित्र या संबंधी की तरह एक दूसरे पर निर्भर है।"[7] साहित्य और सिनेमा का मुख्य उद्देश्य आनंद का सृजन करना है तथा दोनों समाज को नई दिशा देने की क्षमता भी रखते हैं जो ऐसा करने में असफल होते हैं वे साहित्य और सिनेमा निरर्थक है। डॉ. राही मासूम रजा के शब्दों में– "सिनेमा साहित्य की एक विधा है इसे भी उन्हीं तकाजों को पूरा करना चाहिए जो दूसरी साहित्यिक विधायें पूरी करती हैं। सिनेमा लोगों को सुख प्रदान करता है तथा इस सुख से वह समाज को स्वस्थ बनाने की लड़ाई लड़ता है। जिस तरह कोई नज़्म, नाविल, कहानी या साहित्य जो इस कर्तव्य को पूरा नहीं करते वह बेकार है उसी तरह जो फिल्म इस कर्तव्य को पूरा नही करती वह त्रुटिपूर्ण है।"[8] जो सिनेमा समाज के साथ नहीं चलता उसे समाज स्वीकार नहीं करता फिर चाहे वह कितने ही बड़े बजट की ही क्यों न हो या फिर कितने ही बड़े कलाकार उसमें अभिनय कर रहे हो। सिनेमा के जैसे साहित्य भी समाज में होने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं से गहरे रूप में जुड़ा रहता है। सिनेमा के माध्यम से जो कहानी प्रस्तुत की जाती है उसमें विभिन्न प्रकार के चरित्र या उनके क्रियाकलाप ही नहीं होते बल्कि वे समाज की विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से अपने को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक फिल्म कहानी कहते हुए उनसे जुड़ी संस्थाओं के स्वरूप, चरित्र और उनके प्रति लोगों और समुदायों की सोच को भी प्रस्तुत करती है। जैसे 'लज्जा' फिल्म में विदेशी तथा भारतीय नारी की व्यथा कथा को व्यक्त किया गया है। इस फिल्म का विषय समाज के विभिन्न वर्गों में रहने वाली अमीर और गरीब हर तरह की स्त्री को पुरुष समाज द्वारा उत्पीड़ित और लांछित किये जाने से संबंधित हैं।

जिस प्रकार से पग–पग पर साहित्य समाज से प्रभावित होता है उसी प्रकार सिनेमा भी समाज से प्रभावित होता रहा है। भारतीय हिंदी फिल्मों ने गांधीवाद, मानवतावाद, मार्क्सवादी समाजवाद आदि को कई रूपों में दिखाया। अलग–अलग दशकों में सिनेमा पर हम विभिन्न प्रकार के प्रभावों को देख सकते हैं।

सिनेमा देखते हुए लोग न केवल अपना मन बहलाते हैं बल्कि समय और समाज के बारे में नए अनुभव भी लेकर जाते हैं। ये अनुभव उनके जीवन और समाज संबंधी उनकी विचारधारा को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित अवश्य करता है। उदाहरणतः बालक मोहनदास करमचन्द गांधी 'सत्य हरिश्चंद' फिल्म के किरधार 'राजा हरिश्चंद' की सत्यनिष्ठा से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने आजीवन सत्य बोलने का प्रण कर लिया। आज लगभग देश के प्रत्येक क्षेत्र में सिनेमा का प्रभाव किसी न किसी रूप में दिखाई दे रहा है। यहाँ तक कि भारतीय राजनैतिक क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। कई फिल्म कलाकार तो संसद और विधानसभा में मंत्री पद पर विराजमान हुए जैसे रेखा, जयाभादुरी, धर्मेंद्र, जयललिता, सुनिल दत्त इत्यादि। आज फैशन के क्षेत्र में भी सिनेमाई कलाकारों का वर्चस्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। बड़े से बड़े फैशन डिजाइनर अपने फैशन शो को प्रसिद्धि दिलवाने के लिए किसी न किसी फिल्मी सितारे को अपने शो का 'शोस्टॉपर' बनाते है। यही नहीं विद्यालयों और महाविद्यालयों में होने वाले उत्सवों अथवा 'अनुवल डे फनक्शनों' आदि को अधिक आर्कषक और मनोरंजनपरक बनाने के लिए बॉलीवुड सितारों को आमंत्रित किया जाता हैं। बल्कि आज के युवा तो फिल्मी कलाकारों के जैसे दिखने के लिए उन्हीं के जैसे हेयर स्टाइल, पौशाक, आदि की नकल करते हैं। इस संदर्भ

में साहित्यकार श्री. प्रसून सिन्हा लिखते हैं– "सिनेमा की नकल उस समय भी लोग करते थे और आज भी करते हैं। लोग अपने जीवन के रहन–सहन के साथ–साथ विचारों से भी खासकर किशोर वर्ग सिनेमा का अनुकरण करते हैं। सिनेमा से दर्शकों का जुड़ाव गहरा है।..... आज भी हमारे मध्य ऐसे कई फिल्मकार हैं जिनकी सोच, तकनीकी क्षमता और प्रस्तुतीकरण शैली में वह ताकत है जो समाज को निश्चित ही एक नई दिशा दे सकती है।"[9]

भारत में फिल्म निर्माण का आरम्भ ब्रिटिश शासन काल में ही हो गया था। यहाँ की पहली फिल्म 1913 में दादा साहेब फालके द्वारा निर्मित एवं प्रदर्शित फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' थी। यह फिल्म आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रर्वतक लेखक भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'हरिश्चंद्र' से प्रेरित थी जो बहुत लोकप्रिय हुई। भारत की प्रथम बोलती फिल्म अर्देशिर ईरानी द्वारा बनाई गई 'आलम आरा' है। प्रारम्भिक सवाक फिल्में पारसी थिएटर से प्रभावित थी जिसमें अतिनाटकीयता और गीत–संगीत का अधिक समावेश था। हिंदी सिनेमा की प्रारम्भिक फिल्में पौराणिक साहित्य से प्रभावित थी। 'सत्य हरिश्चंद्र', 'लंका दहन', 'भक्त प्रह्लाद , 'कालिय मर्दन', 'अयोध्या का राजा' जैसी फिल्मों में धार्मिक ग्रंथों की कथाओं का चित्रण किया गया था। इनके बाद जो फिल्में बनने लगी उनमें सामाजिक कथाओं की कमी खलने लगी जिसकी पूर्ति सिनेमा ने समकालीन साहित्यकारों की साहित्यिक रचनाओं से की। साहित्यकारों में सर्वप्रथम हिंदी सिनेमा में अपनी छाप छोड़ने के लिए मुंशी प्रेमचंद सामने आए।

वर्ष 1933 में उनकी एक कहानी पर मोहन भागनानी के निर्देशन में 'मिल मजदूर' फिल्म बनी। 1934 में इन्हीं की कृतियों पर 'नवजीवन' और 'सेवासदन' फिल्में बनी। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी फिल्में बनने लगी। जैसे उर्दू के लेखक मण्टो की कहानी पर बनी फिल्म 'अछूत कन्या' सुपरहिट रही। इसी प्रकार बांग्ला लेखक शरतचंद्र के उपान्यास 'देवदास' पर हिंदी में चार फिल्में बनी जो सफल भी रही। फलतः हिन्दी, उर्दू तथा बांग्ला भाषा की रचनाओं पर अधिकतर फिल्में बनाई जाने लगी। सत्य जीत रॉय ने प्रेमचन्द की कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' नाम से फिल्म बनाई जो हिट रही। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा पर भी फिल्में बनी। 1965 में आर के नारायण के अंग्रेजी उपन्यास 'गाइड' पर इसी नाम से फिल्म बनी जिसने बहुत लोकप्रियता प्राप्त की। फणीश्वरनाथ रेणु की 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' पर प्रसिद्ध फिल्म 'तीसरी कसम' बासु भट्यचार्य के निर्देशन में बनी। मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक' कहानी पर 'हिना' फिल्म बनाई गई। कृष्ण चंदर की कहानी 'पेशावर एकस्प्रेस' पर 2004 में 'वीर जारा' फिल्म बनी। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य के पाण्डेय बेचन शर्मा, चतुरसेन शास्त्री, यशपाल, धर्मवीर भारती, अमृतलाल नागर जैसे साहित्यकारों की रचनाओं पर भी फिल्में बनाई गई।

साहित्य और सिनेमा दोनों हमें समाज के विभिन्न पक्षों की जानकारी देता है। कई बार तो सिनेमा और साहित्य में हम समाज में चल रहे घटना क्रम के तत्कालीन परिणाम भी देख सकते हैं। उदाहरण स्वरूप स्वतंत्रता के पश्चात् हीरेन गुप्ता ने 'आनंदमठ' फिल्म बनाई जो बकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास पर आधारित थी। इस फिल्म में देश को स्वतंत्र करवाने वाले लोगों के बलिदान को प्रमुख रूप से दिखाया गया, 'तमस' फिल्म भीष्म सहानी के उपन्यास 'तमस' पर आधारित थी जिसमें भारत विभाजन की पृष्ठभूमि में फैली साम्प्रदायिक मनोवृति को प्रमुखता से दिखाया गया है। प्रेमचंद की कहानी 'सदगति' पर प्रसिद्ध निर्माता–निर्देशक सत्यजीत राय ने इसी नाम से फिल्म बनाई जिसमें भारत में हो रहे उच्च वर्ग द्वारा निम्न जातियों का शोषण सामने आया। प्रेमचंद के

विख्यात उपन्यास 'गोदान' पर इसी नाम से 1963 में फिल्म बनी। इसमें तत्कालीन भारतीय जीवन को दर्शाने की पूरी कोशिश की गयी। अमृता प्रीतम के पंजाबी उपन्यास 'पिंजर' पर चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने हिंदी में इसी नाम से फिल्म बनाई।

इसी उपन्यास पर 2001 में 'गदर' फिल्म बनी जिसमें भारत–विभाजन के समय की उस व्यथा को व्यक्त किया है जिसमें मासूम औरतें साम्प्रदायिकता जैसे जहर का शिकार हुई।

कुल मिलाकर कह सकते है कि आज तक हिन्दी साहित्य पर आधारित अनेक फिल्मों का निर्माण हुआ है। साहित्य और सिनेमा सदैव ही एक दूसरे के विस्तार में सहयोग करते रहें और समाज को प्रभावित भी करते रहे हैं। समाज में मूल्यों की स्थापना के लिए साहित्य ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सिनेमा भी समय–समय पर अपने भिन्न उद्देश्यों को लेकर समाज के समक्ष आया है। हिन्दी साहित्य और सिनेमा के कारण आज हिन्दी भाषा विश्वव्यापी भाषा बनती जा रही है। इस प्रकार समाज के विकास में सिनेमा एवं साहित्य दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

संदर्भ सूची :–

1. http://www.pravakta.com
2. http://www.pravakta.com
3. 'आधुनिक हिंदी सिनेमा का सामाजिक व राजनैतिक अध्ययन', राम अवतार अग्निहोत्री पृ. 1
4. 'सिनेमा और साहित्य', हरीश कुमार, पृ. 2
5. http://www.google.co.in
6. 'सिनेमा और साहित्य', हरीश कुमार, पृ. 2
7. 'हिंदी सिनेमा का सच', सम्पादक मृत्युजय, पृ. 39
8. 'हिंदी सिनेमा का सामाजिक संदर्भ', डॉ. भारती एन.के, पृ. 160
9. वहीं।

मो. 99066394444

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 168-172
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

A General Study : New Media and Political Communication

-Vikash Berwal

Research Scholar, Department of Communication Management and Technology
Guru Jambheshwar University of Science & Technology, Hisar-Haryana

Government in the West is increasingly regarded as an interdependent system of self-organized networks, with specific norms of collaboration and substantial autonomy from the state. While J. Kooiman defines state governance as a wholeness of state and public cooperation as regards the solution of different social problems and creation of possibilities, he draws attention to interactions understood as a specific form of action undertaken by actors of political communication in order to not only solve problems but also to create new courses of action.

It is becoming increasingly necessary to have interaction principles that are based on specific worldview categories and moral ideals as well as collaborating institutes. Thus, there is an issue with the transparency of political communication when it comes to agreeing on issues between government and non-governmental institutions. Non-state players' demands for the efficiency of political decision-implementation processes have political and communicative justifications. Interests must be mutually shared in order for communication to be successful. Another aspect of society's democratization is the need for more openness in government acts. Citizens' involvement and collaboration in the political arena transform political communication into a sort of assessment tool of the amount and quality of democracy in a society, from participation in different public organizations to online discussions and petition signatures Crozier, M. (2007).

According to the state, information sources are a separate source of legitimacy. Certain politicians who are able to connect well with various participants in the political process also play an important role in the development of an information society. A growth in confidence in society and civic engagement in political processes is due to these factors in particular; a lack of civil awareness might lead to a legitimacy crisis Hale, H. (2013).

On top of all that, the ability to raise and address important political and social problems as well as anticipate probable dangers while making choices, especially controversial ones, is a manifestation of authorities' communication potential. As well as creating a favorable authority profile, a competent use of Internet resources increases the ability to predict governance processes.

It used to be that political communication consisted of gathering, sharing and interpreting information with the goal of achieving a consensus on some political action or other. It was also believed that the meaning of a recipient's communication would remain mostly intact. A one-way information exchange mechanism was perceived as a result of linear logic. A new instrument for ensuring the preparation, formulation, and execution of political

decisions is now available: the political communication tool. Nowadays, an instructive message is created by a group of communicators working together Kaid, L., & Holtz-Bacha, C. (2008).

Governments with their own online information resources must adapt to both technology's constant evolution and the demands of important communication actors who actively use these tools. Two categories of communicants can be identified among the recipients of political communication: recipients of political information and consumers of public services. Different communication technology, methods and issues are involved.

Modern academics expect densely reorganized communication technology in political communication. Despite the fact that nightly TV news audiences and newspaper circulation are falling (showing a lack of trust in «traditional» media-sources), the number of Internet users receiving information online continues to increase. There is a significant increase of political and administrative "material" on the internet Kooiman, J. (1999).But when new communication technologies develop, the relationships between actors change. Rapid access and transparency are required as the amount of information grows. Aside from that, the multi directionality of information sharing demands that authorities include other parties in communication links.

In the transformation of political communication (including the process of shaping citizens' political preferences), so-called «new social media», a combination of online technologies and practices including such tools as blogs, podcasts, video- and audio-hosting, and social networks Neuman, R. (2015, December 17), play a larger role. Readers like the option of leaving comments in a conversation format. In certain cases, blogs can be utilized as personal dialogue diaries or journal entries. Podcast is a method of distributing digital audio and video files through the Internet to personal computers and portable media devices, which became popular due of the iPod. Due to its technological and communicative user friendliness, Twitter has become one of the most extensively utilized social networks in recent years.

It's fairly uncommon for people to use the phrase "new media" to refer to "new mass media organizations," which confines the term's meaning to "new forms of mass media presence" in today's world. New media differs from conventional media, such as the press, analogue TV, and radio, in part because of its digital nature and interaction [7].

In today's world, anyone with basic technical skills may make their own media edition in whatever format they like. It does appear that new media represents a whole business with its own target market and specialists, though. There is now digital video, blogging and podcasting available to consumers as well as mobile phones with camera capabilities as well as wikis for information sharing. An end-product can also incorporate open resources, free software, etc. in addition to these technologies. Wikipedia, Facebook, MySpace, YouTube, and Flickr O'Connor, B., Balasubramanyan, R., Routledge, B. R., & Smith, N. A. (2010). are some examples of Internet resources with «users'» material.

Digitally presenting "old media" is nearly impossible, whereas new media is programmed; secondly, new media is built on modular concepts, but old media is not. The pieces preserve their individuality as well as their basic features when combined into a single big structure;

As a result of their ability to be altered, the new media can exist in an infinite number of versions. Lastly, because the new media can be modified, they can exist in an infinite number of variations without direct human

control. There is a precise composition to the old media. This allows users to discern between content and interface, and, as a result, tailor the interface to their needs. Varying scale and degree of specification is another example of variability.

Also conceivable is the conversion from one format to another of internet content. In the digital age, conventional material has acquired a dual character. Starting with a person who makes a link between them and other things, or a machine that links them with other media based on pertinent criteria (format, kind of files, etc.).

Moreover, the connection between audio, video, and electronic text inside the global network blurs the borders between interpersonal communication and mass communication. Information is also presented differently. In human civilization, "narrative" has been supplanted by "database management," in which information is organized according to hierarchical, objective, or other principles of classification.

The new media are consequently more responsive than the traditional media. They are more open and less closed, shorter and less verbose, and dynamic, as opposed to passive. The term "users" has replaced "audiences" in today's new media. An "image" replaces words in the new media. And lastly, although before, material creation was limited to the producer, the new media allows anybody, regardless of their experience or education, to do so. In both old and new media, information is transmitted, but how and in what form it is transmitted is changing. In the age of new media, information may be transferred from one source to another and reach the target audience. Because of this, the old and new media may coexist and interact Pashigorova, L. (2010).

This year saw a rise in the study of new social media activities as a means of political communication the initial focus of this research was on the usage of social media during elections Rhodes, R. A. (1994). Some international academics have shown that political communication on the Internet and in person have a relationship. The use of social media in this context contributes to the deepening of people' political engagement by giving knowledge about the political realm or by sending signals that motivate citizens to perform certain political activities Sakoyan, A. (2005, July 2). New media are frequently employed in social projects, as well as in the arts and entertainment industries. "Open Democracy" is an example of an electronic edition that uses forums and social networks to create a huge debate platform that involves its audience in online conversations. Politicians mostly use Twitter to advertise their political viewpoints, rather than to advocate for political action, according to an analysis of messages posted by members of the US Congress.

Twitter and Facebook are used by politicians to promote their political ideas, mobilize voters, and connect with the public. A different type of social media was used to mobilize the people against existing political systems: social media. The Arab Spring is a great example of this in action. Massive protests in Egypt, Tunisia, and Libya in 2011 were organized with the help of Twitter and Facebook. In 2012, Russian protest organizers made use of social networks such as Vkontakte, Facebook, and Twitter. In particular, Twitter and Facebook appear to be a monitoring target because of their systematized databases. Many individuals believe that the importance of social media has been exaggerated. Power shortages and economic suffering had a larger part in the political crisis in Moldova than people' actions, which were coordinated with the help of new social media Snyder, J. (2002). Understanding the mobilization potential of social networks, on the other hand, demands a continual awareness of them.

Consider the political climate in which social networks function when deciding the proportion and relevance of social networks. In Russia, having an account on any social network is a bad idea. In 2014, there were just 53 territorial authorities in the Russian Federation with active social media accounts, compared to the 50 governors of the United States, who all had active profiles on Twitter. It is important for leaders in areas to provide information about regional events, local developments, and forthcoming elections, among other topics. A politician's actions can be traced back to comparable messages on social networks. However, regional leaders rely less on network opportunities for direct communication with the people.

Social media communication is used differently by the political opposition. Direct communication or private messages are used by opposition candidates to emphasize their personality and create a direct relationship with potential donors. Texts for newspapers, internet, and mobile phones are generated using a range of technologies, and their tone, style, and communication techniques differ. There's a new (virtual) communication style with authorities because the information environment is fundamentally changing. The political possibilities of citizens and institutions are transformed into real authority statuses, which have an impact on how social values and public resources are distributed Styns, O., & Van Fucht, D. (2008).

Conclusion :-

Using contemporary information technology in politics, however, has both benefits and drawbacks. As a result, in the setting of a quick and loosely controlled expansion of informational space, there are rising expectations for users' professionalism and qualification in the search and use of political information.

The united audience is divided into a plethora of groups that communicate according to the network principle as the number of multidirectional vectors of horizontal political communication flows rises. Regardless of the political context and specifics of political culture, analysis of social networks reveals a series of common significant problems related to the credibility of posted information, especially since user data can be hidden by personal settings in most networks (for example, Facebook and Vkontakte). Furthermore, it is well recognized that consumers' capacity to detect disinformation is largely determined by their level of trust in the message sender. However, the real motivations for a network member to publish a message remain unclear.

If you submit intentionally misleading information, you can manipulate other users' opinions and actions. False accounts on social media sites, such as Twitter, may be used to disseminate any incorrect information.

As well as dependent on contemporary information and communication technology, it is also characterized by a variety of variables, from the authority's role to choices made and implemented. They each outline a similar style of political communication that ranges from interaction to information avoidance. It's no surprise, then, that new media may be turned into strong information and mobilization resources of oppositional and even deconstructive components, as the experience of the color revolution has shown. In practice, attempts to create norms of interaction behavior from the top-down tend to have the opposite consequence, with value standards imposed from the bottom-up.

Politicians' ability to communicate effectively and efficiently is determined by advantageous conditions, such as increased qualifications of electronic message authors and increased attention by authorities to electronic resources for consumer interaction. To demonstrate this, authorities' official websites have expanded their relevant

parts, and the quality of their responses has improved. A substantial role for new media may and should be played in the development of Internet norms of behavior and a distinctive electronic communication culture between the government and the society.

Reference :-

1. Crozier, M. (2007). Political communication, 24(1), 1-18.
2. Hale, H. (2013). The Journal of Post-Soviet .Democratization, 21(3), 481-505.
3. Kaid, L., & Holtz-Bacha, C. (2008). Encyclopedia of political communication. UK SAGE, London.
4. Kooiman, J. (1999). PMR.
5. Neuman, R. (2015, December 17). What are new media, or digital globalization? http://smm.artoxmedia.ru/wiki/new-media.html
6. O'Connor, B., Balasubramanyan, R., Routledge, B. R., & Smith, N. A. (2010). From tweets to polls: linking text sentiment to public opinion time series. In Proceedings of the International AAAI Conference on Weblogs and Social Media. Menlo Park, CA: The AAAI Press.
7. Pashigorova, L. (2010). Business. Society.
8. Politicians in social networks. Dossier. (2015, October 21). http://itar-tass.com/info/1442493
9. Rhodes, R. A. (1994). Political quarterly, 65, 38-51.
10. Sakoyan, A. (2005, July 2). New media. Boundaries of the phenomenon. http://polit.ru/article/2011/08/05/new_media/
11. Snyder, J. (2002). From voting to violence: democratization and nationalist conflict. W.W. Norton, New York,.
12. Styns, O., & Van Fucht, D. (2008). Science Journal of VolSU, 8(7), 98-100.

Postel Address: Vikash Berwal S/O Sh. Dharam Vir Singh,
Near Tata Tawer, Sisar Road, V.P.O. Sorkhi, Teh. Hansi, Dist. Hisar (Haryana)
Pin Code: 125033
Contect No: 9416216824
E-mail: cvdrive90@gmail.com

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Mukeriya Webinar Visheshank 2021 Page No. : 173-179
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

A Critical Study on Freedom Struggle and Values of Journalism

-Rohtash

Research Scholar, CMT, G.J.U. S&T Hisar, Haryana

Abstract :-

The fulfillment of Independence for any nation to a great extent owes to assorted factors, for example, social, political, and monetary nature, as well as various ways of thinking. During a period of 200 years, both the media and journalism have contributed to the attainment of Indian autonomy. A lack of communication among Indians during the British rule was a serious concern. Under the umbrella of communication, journalists began to play an increasingly significant role in helping Indians in their struggle for independence. In addition to ignorance, Indians felt that they were unable to read and record the pioneers' writings, which contained a wealth of information that was vital to their development News coverage in the press and the media has effectively sparked feelings and unique sensations of nationalism and nationalism among Indians to help the cause of independence throughout the chance battle.

Newspapers and journals were utilised by the pioneers to spread their ideas and encourage others to join India's battle for independence. During the struggle for independence, the pioneers faced still another challenge: establishing authority and numerous restrictions. The British government enacted punitive legislation, such as the vernacular press act, to curb freedom of expression. Political dissidents and journalists are engaged in a struggle against these rallies. The author of this article wants to analyse how journals have worked toward achieving Indian autonomy, as well as how they have played an important role in teaching their fellow Indians.

Keywords :- Journalism, Communication, Freedom Struggle, Indian independence, Press.

Introduction :-

"Be passionate about what you write, believe in your ability to convey timeless ideas, and let no one tell you what what you're capable of."? Christina Westover

During the period of the big liberation war, the country had a plethora of newspapers. Dadabhai Naoroji and Gyaneneshun, among others, pushed societal reform by increasing public arousal in their works Bangadoot and Rastiguftar. In 1857, Payam-e-Azadi was first distributed in Hindi and Urdu, mobilising people to oppose the British. The magazine was quickly confiscated, and anyone discovered with a copy was charged with subversion. In 1957, the first Hindi daily, Samachar Sudhavarashan, and two Urdu and Persian periodicals, Doorbeen and Sultan-ul-Akhar, were tasked with disseminating Bahadur Shah Zafar's 'Firman,' which exhorted Indians to push the British out of India. This was followed by Lord Canning's well-known Gagging Act, which limited the publishing of newspapers and magazines.

Important Role of Media in Struggle :-

A few publications were crucial in the battle against the British. This included the Hindi Patriot as well! It was founded in 1853 by the inventor and dramatist Grish Chandra Ghosh, and it rose in prominence under the editorship of Harish Chandra Mukherjee. In 1861, the journal published "Neel Darpan," a play that called for people to cease harvesting crops for the advantage of white merchants, and issued a call to action against the British. As a result, the Neel Commission was established. Ishwar Chandra Vidyasagar took over the magazine after that. The newspaper was outspoken in its opposition to the government's excesses and advocated that Indians be recruited to high-ranking government jobs. The second contemporary of this newspaper was The Indian Mirror, which was extremely popular among the educated people.

This led to preliminary and conviction procedures against the owners of Amrita Bazar Patrika, a weekly newspaper supplied from Jessore. Calcutta received the Patrika after it was relocated there in 1871, and a new Act was established to suppress it and other local publications.

Role of Marathi press :-

The Maharashtra chief minister, Mahadev Govind Rande, wrote to Gyan Prakash exactly as he did to Indu Prakash. Both of these journals sparked the disheartened masses' con-study. Kesari, Tilak's weekly Marathi publication, began on January 1, 1881. This was followed by a week-by-week journal in English, which Agarkar and Chiplunkar both began to keep. Maratha's magazine was combined with Nam Joshi's "Daccan Star." After their efforts against the British and Diwan of Kolhapur, both Agarkar and Tilak were jailed.

One of the most important media outlets for spreading the notion of opportunity growth is Tilak's Kesari. Aside from that, it raised public awareness about the counter parcel development of Bengal. Tilak broke the Sedition Law in 1908. In the end, he was exiled from the nation for a considerable period of time. Nagpur and Banaras were the first cities to begin translating Kesari into Hindi.

Press and the First Session of Congress party :-

It was said that Indian National Congress editors had a high status at the time of the organization's formation. A number of Indian newspaper editors sat in the front row during the first-ever Congress meeting in Bombay in December 1885. During this Session, the editor of The Hindu, The first historically noteworthy goal was presented by Subramanya Iyer. In order to achieve this aim, it was suggested that the government establish a committee to probe the operations of Indian organisations. The second goal was promoted by Chiplunkar, a Poona writer, who asked the Congress to support the nullification of the India Chamber, which ruled the country from Britain. Dadabhai Naoroji, a well-known writer at the time, championed the third objective. Dadabhai Naoroji provided the fourth goal.

It has been edited by several Congress Presidents, and its distribution has been spearheaded by others. Ferozeshah Mehta, who founded the Bombay Chronicle, and Pandit Madan Malaviya, who transformed Hindustan day by day, deserve particular attention. Allahabad's pioneer was also distributed with his aid. Pioneer's first executive director was Moti Lal Nehru. Lala Lajpat Rai distributed the Punjabi, Bandematram, and People from Lahore books. Gandhiji distributed Navjeevan, Harijan, Harijan Sevak, and Harijan Bandhu during his visit to South Africa. In addition to Subash Chandra Bose, C. Rather of writing columns, R. Das created journals like Forward and Advance, which became well-known. Jawaharlal Nehru established the National Messenger.

Revolutionary Movement and the Press :-

It began, without a doubt, not with weapons and bombs, but with newspapers. Among the first to be mentioned in this context is Barindra Kumar Ghosh's Yugantar distribution, which was also modified by him. During the Ghadar group's coordination in America, Lala Hardayal began circulating the diary 'Ghadar'. As soon as this journal was published in English, it was distributed widely across India and to other areas of the world where Indians lived. Before anything else, the diaries' replicas were smuggled out of Delhi in mysterious packages. For this aim, it was also intended to sneak the printing press into India. An international battle broke out at the time, making it hard to get printing equipment from other nations. The United States deported Hardayal to India shortly after his confirmation. Translator of the Hindustan Ghadar into Hindi and fervent follower of Pandit Ramchandra. Ghadar party workers were taken prisoner by the American government after the United States entered the conflict. Pandit Ramchandra's adversary, who had learned how to get a firearm, fatally shot him when the way was open. Ramchandra's death prompted this study's conclusion.

An Indian Sociologist from London began distributing his diaries in 1905. It is used to distribute information about political events taking place at India House in London, as well as other political news. In 1909, these two printers were sentenced to jail. He then travelled to Paris and began distributing the newspaper. He had a flight to Geneva later that day. He kept writing in his diary for a few more years after that. Lal Hardayal, Madam Cama, and Sardar Singhraoji Rana introduced our Vandematram and Talwar to Paris.

Following Yugantar, Vandematram played a critical role in the independence fight. On August 6, 1906, C. R. Das, Bipin Chandra Pal, and Subodha Chandra Malik founded this newspaper. As a result, its manager, Aurobindo Ghosh, proofreader and manager of Yugantar B.N.Dutt, was required to attend a preliminary hearing. Undoubtedly, they looked to the government for assistance for a considerable period of time. The diary Kavi Vachan Sudha was started by Bhartendu Harish Chandra in 1868. To alleviate the suffering of Indians, it adopted a venting strategy. A sonnet was written in honour of the Prince of Wales during his tour of India. The sonnet might also indicate that the Prince of Wales should be beaten up, according to British experts.

The public authorities' assistance to diaries like Kavi Vachan Sudha was discontinued because of what the public authorities considered to be disturbing content. He quit his position as a Magistrate with privileges. Pratap Narain Mishra and Bal Krishna, two of his closest associates, began distributing two important political diaries.

There are two important political diaries that were distributed by Pratap Narain Mishra and Bal Krishna Bhatt. In 1910, the Pradeep was ordered closed for promoting the independence cause. It was first published on May 17, 1878 as a weekly in Calcutta. It made a significant contribution to the struggle for freedom. The notebook exposed a British strategy to conquer Kashmir. Swantrantra, Ramanand Chatterjee's Modern Review, Pravasi Patra in Bengali, and Vishal Bharat in Hindi were among the other Calcutta-based publications that played an important role in the independence struggle.

Ganesh Shanker Vidyarthi was one of the earliest Hindi writers to be known for his passion. In 1913, he took Pratap out of Kanpur week by week. In 1931, he performed the most important penance for the sake of Hindu-Muslim harmony. Agra's hero, Sainik, was sent to Western Uttar Pradesh by Krishna Dutt Paliwal. Master Sharadhanand, a prominent member of the Congress government, founded the Hindi daily Vir Arjun and the Urdu periodical Tej, both of which are published today. The publications continued to be distributed by Vidyavachaspathi and Lala Deshbandhu Gupta after Swami Sharadhanand was assassinated. Congressional staffers were colossal in stature.

These individuals played a crucial part in supporting Pakistan's autonomy, such as Mahashaya Khushal Chand, who disseminated the journal Milap in Lahore and Mahashaya Krishna, who began publishing Urdu publications. Sardar Dayal Singh Majitha disseminated the Tribune on the advice of Surendra Nath Bannerjee in 1881, while enrolled in an article-writing school taught by Sheetala Kant Chatterjee. Bipin Chandra Pal was also the editor of this journal for a short time. Kalinath Rai was the paper's supervisor in 1917.

Nearly all Indian cities have a diary on which to record the results of any chance fights. A. To enhance assailant patriotism, G. Horniman created the Bombay annal. He would attend Satyagraha demonstrations and participate. Goverdhan Das, a reporter for his newspaper, was convicted to three years in prison for disseminating photos of Jallianwala Bagh gore. However, his sickness did not prevent him from being arrested at the same time and being sent to London as a result. Amritlal Shet's Gujarati newspaper Janmabhumi was utilised as a megaphone by Kathiawad's aristocracy in their public fight. The Gujarati diary Saanjvartman, edited by Sanwal Das Gandhi in 1942, played a significant part in the Quit India movement. Unsurprisingly, Junagarh's Nawab was driven from the country not long after the autonomous administration was created. In addition, their press was closed and the paper's assets were taken, which led to their arrests.

In Bihar, public publications were launched by Sachidanand Sinha, who began the distribution of Searchlight under the editorship of Murtimanohar Sinha. The weekly yogi and the Hunkar also had a vital role in the overall arousal.

Review of Literature :-

On national freedom movement and the role of the media, several studies have been performed. Some selected works on national independence struggle are reviewed in this paper.

Nagaraj K.V., (1989), reported in its article that several types of press were employed throughout India's struggle for independence, including press on degrading conditions for women and women's settlement structures, as well as press on legitimateness. Media attention has focused on European dress, social unrest, community harmony, early marriage, child marriage obstacle legislation, the Sharada Bill, the elimination of untouchability, and the economic situation.

Anjaria (2015) in his book "A History of the Indian Novel" Binkim Chander Chatterji began publishing a Bengali-language newspaper in 1872, under the name The Bengali Journal. Thiaga (1938). Described in "Introduction to journalism" As part of its mission to educate the public about the significance of Hindu religious traditions, the publication included articles on Veda, Vedanta, and Puranas. It sought to establish a bridge between intellectuals and the uninformed in order to assist the uneducated understand the importance of information. As a result of this event, Bengali nationalism was formed. As a result of Chatterji's work, Bengali literature was given new life and vigour in freedom struggle.

Singh, A (2011). The coverage of the major events, starting with the Quit India campaign and concluding with the liberation of our nation, was extensively researched and evaluated. As for the newspaper she picked, it was The Tribune, one of the first newspapers to be published in the United States. Previous editions of the Tribune, she says, would be intriguing to read to see what they had to say about the public's feelings during the independence struggle. A look at The Tribune's front page material from 1942 (the Quit India Movement) through 1947 reveals both its editors' viewpoint on events and their own. The public was able to follow the events as they unfolded because of the Tribune's coverage.

Iyengar.R (May 3, 2017) The Indian Press was severely restricted during the British Empire, as described in her article. A decade before the 1857 mutiny, the British government was growing more concerned about press freedom. Through the use of words and symbols, the media sparked a patriotic uprising. Lord Lytton enacted the "Gagging Act" in response to this in order to limit and regulate the content of Indian publications. A permission from the government was now required for all Indian publications. Also, it made sure that the British government was not attacked in any way.

Mohit (1955). In his book "A history of India Journalism" explained anti-British nationalists in India sought to protect their freedom of expression, public interests, and national sentiments, among other things. Until very recently, the country's major instructional instrument was the vernacular press. Indigenous people rebelled and were stripped of their basic rights in 1857, which led to an awakening among the population as a whole. The only way to propagate the national awakening was through the freedom of the press. India's journalists had been hindered by a multitude of obstructive laws, rules, and other impediments. Upper and middle-class readers read English newspapers in the cities. The American edition of this newspaper did not make any money, but the British version did, thanks to advertising and other means.

Chandra, Bipin (1981).describes in his book "Modern India National Council of Educational Research and Training". The Indian press was emancipated when the national journalists stood up to British political propaganda and kept the public's emotions alive.

Need of study :-

The Indians gained their independence from British rule at the expense of a large number of potential heroes who perished. Conversations, discussions, meetings, and forums will be used to discuss and appreciate this. Particularly for the country's youth, as well as academics, authors of today, and citizens, the future of public reporting and opportunities will be crucial. Investigation examines role of public reporting in freedom fight.

Methodology :-

This research paper is based on the critical analysis. Qualitative analysis is used to get the results of this paper.

Objectives :-

- To study the role of newspapers during the freedom struggle.
- To study the Regulations and Acts of British Indian government.

Discussion :-

Indian independence was fought on the front lines by a variety of political opponents, and their work as journalists and editors opened the door for a majority of Indian citizens to take part in the battle for self-determination. Among the Indian leaders who embraced the duty of instructing the Indian people to take active roles in the battle for independence were Raja Ram Mohan Roy, Lokamanya Balaji Gangadhar Tilak, Sisal Kumar Ghosh, and Subramaniam Iyer.

Born into an Orthodox Brahmin family and raised in Radha Nagar, West Bengal, Raja Ram Mohan Roy excels in Hindi, Sanskrit, and Persian Arabic and Bengali languages, among many others. Nehru considered him to be the father of the Indian Press. As he fought against the British Raj, he hoped for good news coverage. In addition, he edited many periodicals. In 1821, he founded the Calcutta magazine "Sambad Kaumudi," or "Moon of Intelligence," to combat Christian Missionary attacks on Vedanta philosophy. 1822 saw the launch of his Persian-language daily "Mirat UL Akbar", which he shuttered in protest of the Press Regulations Act of 1823. Every Friday,

the Mughal Empire's official newspaper was distributed. Week after week, different national and international events were given ample prominence and increased inclusion. To the teachings of the Christian faith, his Brahmanical monthly acted as an antidote A school of progressive Hindu journalism that dominated Bengal till 1891 was represented by "The Inquirer" and "Gyan Auneshin", both of which were intimately associated with Ram Mohan Roy. In 1828, he created the Braho Samaj in Calcutta, which is still active today. "Sati", polygamy, and underage marriages were among his social reform efforts. Also, he spoke out against women's property rights being violated. Press freedom was particularly important to him, since, he believed, it might serve as a bridge between governments and the people they serve.

A social reformer and freedom fighter, he was known as the father of Indian independence. He was the first to call for India's absolute independence. To win ultimate freedom from the British, his Indian countrymen were urged to struggle. Swaraj is part of his birthright; he intends to obtain it. To instil patriotism in his fellow Indians, Tilak distributed two periodicals, "Kesari" and "Maratha" in Marathi. During his speech, Tilak clearly presented the notion of Kesari while severely criticising the rising desire of Indian citizens to serve the British authority. "Lion" was another name for his material. In addition, he utilised straightforward and simple language to oppose British propaganda. Tilak organised large-scale Ganesh and Shivaji festivities in 1893 in order to foster nationalist sentiment in young Maharashtrians. For allegedly aiding the Chapekar brothers in the murder of Rand, Pune's pest control officer, he was sentenced to one and a half years in jail. When faced with a famine and disease epidemic, Tialk was not ashamed to call up the public's lack of reliability. As a result of this conviction, Tilak was sentenced to six years in jail in Burma. To him, journalism has always been a vehicle for comprehensive analysis of situations. When the British government accused him of treason, he appeared in court for 21 hours and 10 minutes to defend himself. A newspaper's impact on public opinion is undeniable, he asserted.

Sisir Kumar Ghosh was another journalist whose work rocked the British Raj's foundations. As a result of his ability to think critically and act boldly, he was able to stand up to the British authorities. Despite the fact that the media was still in limbo in the 18th century, Sisir founded the Amrita Bazaar Patrika on February 20, 1868, in honour of his mother Amrita. Primarily, the newspaper was created to advocate for the rights of Indigo shipping personnel who had been exploited. In response to the fast spread of the Plague, Amrita Bazar Newspaper was transferred to Calcutta and began publishing news and views in two languages, namely Bengali and English, every week. There were numerous instances in which Ghosh was accused of sedition and punished for his bravery as a journalist.

Conclusion :-

Not for profit, but to increase knowledge of freedom, nationalism, and patriotism among the people of India, was the primary goal of the press during the Indian independence struggle. The press became more patriotic during the pre-independence period, and it had a greater reach and perspective among the people. It also fueled the country's well-known library movement. Residents may examine publications, essays, and diverse parts of the library and debate them in depth in libraries in cities and towns, as well as in some remote villages. There was an increase in political knowledge among Indian citizens as a result, which led to increased political engagement in India's independence movement.

References :-

- Anjaria, U (2015): A History of the Indian Novel in English: (Edited) Cambridge University Press.
- Bandyopadhyay, Sekher. (2004): Plassy to Partition: A History of Modern India: Orient Longman. New Delhi
- Bhattacharyya, S. N. (1965). Mahatma Gandhi The Journalist. Asia Publishing House; Bombsy; Calcutta
- Chandra, B.(1981): Modern India National Council of Educational Research and Training
- Chakravartty, N (1998), mainstream journal
- Das Gupta, BN, (19800 the Life and Times of Raja Rammohan Roy, Ambika Publication, New Delhi, 1980.
- Gandhi,M.K.,(1896), times of Bombay
- Gandhi,M.K.(1903),Indian opinion
- Gandhi, M. K. (1921). Hind Swaraj or Indian home rule. Chapter I, GA Natesan and Company, Madras.
- Gandhi, M.K. (1933), To the Reader, Harijan, 17 February, 1933
- Gandhi, M.K. (1948), Mahatma Gandhi Memorial Number, Indian Opinion, March 1948
- Gandhi, M. K., (1950), Satyagraha in South Africa, NavajivanPqbIishing House, Ahmedabad,, p. 14Z,
- Gandhi: M. K. (1956) An Autobiography or The Story of My Experiments with TruthNavajivan Publishing House, Ahmedabad, p.47
- Gandhi: M. K. (1956) An Autobiography or The Story of My Experiments with TruthNavajivan Publishing House, Ahmedabad, p.286
- Gandhi, M., & Gandhi, M. K. (2008).The essential writings. Oxford University Press
- Gupta, V.S. & Aggarwal, V.B. (2012). Handbook of journalism and Mass Communication. New Delhi: Concept Publishing Company.
- Iyengar, R. (May 3, 2017). A Pre-Independence History of Press Freedom in India. The Indian Express Iyengar, A.S. (1950). All Through the Gandhian Era, Hind Kitabs Ltd, Bombay
- Lauterer, J. (2006). Community journalism: Relentlessly local. Univ of North Carolina Press. Madanjit, V. (1903), Indian Opinion, 4 June, 1903
- Moitra, M. (1955): A history of India Journalism: National Book Agency Private Limited, Calcutta
- Munshi, K.M. (1948). Gandhi: The Master, Rajkamal Publication Ltd, Delhi, p 43
- Natarajan, S. (1962). A History of the Press in India, Asia Publishing House, Bombay
- Natarajan, J. (2017). History of Indian Journalism. New Delhi: Publication Division Ministry of Information and Broadcasting Government of India.
- Nagaraj, K.V. (1989). Role of Press in Indian Nationalist Movement in Karnataka (1556 – 1947). Patrika Vritti, Bangalore, Published by KPA
- Soman,P (2017). "Role of raja ram mohan roy and the abolition of sati system in India – a study", International Journal of Development Research, 7, (08), 14465-14468.
- Singh, A.R. (2011). From Quit India to Freedom: News Becomes History on the Pages of the Tribune, Vol II, Issue 1. Journal of History & Social Sciences
- Shanker, R. (1969), The Story of Gandhi, Children's Book Trust, New Delhi
- Shivnarain, S. (1992).Gandhian Perception of the Harijan Problems (Doctoral dissertation, Aligarh MuslimUniversity).
- Swaminathan, K. (1998). Relevance of Gandhi: And Other Essays. Gandhigram Trust
- Suntharalingum, R.(1958):Politics and national awakening in South India ,1852- 1891: Rawat Publication. Jaipur & Delhi
- Thiaga, Rai, S.P. (1938): Introduction to journalism: The Educational Publishing House Madras

Internet sources

- https://www.hindujagruti.org/articles/41_lokmanya-tilak.html
- https://wecommunication.blogspot.com/2017/10/raja-ram-mohan-roy-indian-journalism.html
- http://www.universityofcalicut.info/SDE/Hisotry%20of%20Journalism%20in%20India%20dt.25.3.pdf

Rohtash

Research Scholar, C.M.T G.J.U. S&T Hisar, Haryana, Pin Code -125001

Email - rohtashnimi@gmail.com

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

शोध–पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर रो मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव–10, कृतिदेव–21 में व अंग्रेजी के **Arial, Times New Roman** में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी **Email ID : grsbohal@gmail.com** पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :–उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज **7x9.5** पर टाईप कराकर **JPG** या **PDF** फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र; टेलीफोन, मोबाईल नं., ई–मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

- शोध पत्र 2000–2500 शब्दों (4–6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।
- पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीगती गिना देवी शोधश्री राग्मान प्रदान किया जायेगा।
- शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।
- सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट : सहयोग/सदस्यता राशि 1100/– रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/– रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन राहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115